सबअ
सनाबिल शरीफ

मीर सैय्यद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी

रज़वी किताब घर
423, मटिया महल जामा मस्जिद दिल्ली-6

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

بسم الله الرحمن الرحيم

बफ़ैज़े हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म हज़रत
अल्लामा शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा
क़ादरी नूरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु

सबअ़ सनाबिल शरीफ़

जिसे बारगाहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि
वसल्लम में शर्फ़े क़बूल हासिल हुआ।

मुसन्निफ़

मीर सैय्यद अब्दुल-वाहिद बिल-ग्रामी

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

423, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006 ★ Phone : 011 - 23264524

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

विषय सूची

उनवानात		सफ़ा
अर्जे नाशिर		4
मुक़द्दमा –	अज़ प्रोफ़ेसर डॉक्टर मुहम्मद अय्यूब क़ादरी	6
पहला सुंबुला –	अक़ीदों और मज़्हबों में	31
दूसरा सुंबुला –	पीरी मुरीदी और उसकी हक़ीक़त और माहियत के बयान में	83
तीसरा सुंबुला –	तर्के दुनिया, क़नाअत, तवक्कुल – और तबत्तुल के बयान में	159
चौथा सुंबुला –	दुर्वेशों की इबादतों और अच्छी आदतों का बयान उन्हीं में वुज़ू पर हमेशगी है	196
पांचवां सुंबुला –	ख़ौफ़ और उम्मीद में	244
छठा सुंबुला –	हक़ाइक़े वहदत और आसारे मुहब्बत व मारिफ़त के ज़ुहूर में	260
सातवां सुंबुला –	फ़वाइदे मुतफ़र्रेक़ा में	303

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अर्ज़े नाशिर

अल्लाह तबारक व तआला के फ़ज़्ल व करम और हुज़ूर पुरनूर सल्ललाहु अलैहि व सल्लम की रहमत से रज़वी किताब घर ने इशाअते कुतुब का काम ख़िदमते दीन के जज़्बे से शुरू किया है और इन्शाअल्लाह इसी जज़्बे के तुफ़ैल मंज़िलें तय की जाएंगी।

औलियाए किराम ने अपनी ज़िन्दगियां दीन की तबलीग़ करने, लोगों को खुदाए वाहिद के दर पर झुकाने और उन्हें पाकीज़गी और नेकी की तालीम देने में गुज़ार दीं। ज़रूरत है कि उन्हीं तालीमात को आम किया जाए, वही जज़्बे दिलों में बेदार हों और उसी तरह क़ुलूब की सफ़ाई हो। इस मक़्सद को हासिल करने के लिए औलिया अल्लाह का ज़िक्रे ख़ैर, उनकी तालीमात और फ़ैज़ को आम करना चाहिए।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह और दूसरे बुज़ुर्गाने चिश्त ने जिस तरह तअल्लुक़ बिल्लाह की कैफ़ियतें पैदा कीं, जिस तरह दीने इस्लाम को लोगों की रूह व जान में समोया, इससे दुनिया वाक़िफ़ है। रज़वी किताब घर इन्शाअल्लाह औलियाए चिश्त के अज़्कार व अफ़्कार पर मुश्तमिल लट्रेचर की इशाअत करेगी। हज़रत मीर अब्दुल–वाहिद बिल–ग्रामी की शोहर–ए–आफ़ाक़ तस्नीफ़ "सबअ सनाबिल शरीफ़" इसी मक़्सद से छापी जा रही है। सूफ़ियाए किराम का इस सिलसिले में उलमाए दीन से मुकम्मल इत्तिफ़ाक़ वाज़ेह किया गया है। पीरी मुरीदी की ज़रूरत और अहमियत बयान की गई है। महबूबाने बारी तआला की खुसूसियात और हक़ाइक़ व मारिफ़त के आसार के अलावा हज़रत अली कर्रमल्लाहु

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

वज्हहू से लेकर सिलसिल–ए–आलिया चिश्तीया के सब अकाबिर का ज़िक्र किया गया है।

रज़वी किताब घर ने इस किताब के मुन्दरजात की अहमियत व इफ़ादीयत के अलावा इस वजह से भी इसे शाए करने की सआदत हासिल की है कि अकाबिर के बयान के मुताबिक़ इस तस्नीफ़ को बारगाहे हबीबे किब्रिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में मक़्बूलियत की सनद मिल चुकी है और इसे ज़्यादा से ज़्यादा हाथों तक पहुंचाना और इसमें मौजूद हक़ाइक़ व मआरिफ़ से लोगों को मुस्तफ़ीद करना ज़ाते महबूब बारी (अलैहिस्सलातु वस्सलाम) की खुश्नूदी का बाइस हो सकता है।

हज़रत शैखुल–हदीस मुफ़्ती मुहम्मद ख़लील खां बरकाती मारहरवी मद्दा ज़िल्लहू ने इस तस्नीफ़े लतीफ़ को उर्दू में मुन्तक़िल किया है। और अब रज़वी किताब घर इसे हिन्दी में शाया कर रहा है। मशहूर मुहक़्क़िक़ व अदीब जनाब डॉक्टर प्रोफ़ेसर मुहम्मद अय्यूब क़ादरी ने उस पर फ़ाज़िलाना मुक़द्दमा लिखा है। बाज़ दोस्तों ने अमल के ज़रिए और बाज़ ने ज़बान से हिम्मत बढ़ाई है। उन सबके लिए दुआ है कि उनकी कोशिशों का अज्रे आक़िबत में उनकी बेहतरी की सूरत में मिले। क़ारेईन किराम से इस्तिदुआ है कि किताब से इस्तिफ़ादे के बाद बुज़ुर्गाने चिश्त की अरवाह को ईसाले सवाब करें और रज़वी किताब घर के अरकान के लिए दुआ करें कि उन्हें ऐसे मज़ीद नेक काम करने की तौफ़ीक़ मिले।

मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमा व सैय्यदी व मुर्शिदी मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा खां हुज़ूरे मुफ़्ती–ए–आज़म हिन्द अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान की नज़रे करम का मुतमन्नी हूं।

मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

मुक़द्दमा

प्रोफ़ेसर डॉक्टर मुहम्मद अय्यूब क़ादरी
सदर शोअ्बए उर्दू फेडरल गवर्नमेंट उर्दू कॉलेज कराची

पूरब की सर ज़मीन इल्म व फ़ज़्ल और शेअ्र व अदब के एतबार से निहायत ज़र खेज़ रही है। यहां सब उलूम व फ़ुनून के वह सोते फूटे कि गुलशने मआरिफ़ व अदब में बहार आ गई और यह ख़ित्तह अफ़ाज़िल व अकाबिर का मसकन व मरकज़ बन गया। जौनपुर, लखनऊ और इलाहाबाद तो ख़ैर मरकज़ी शहर थे वहां दर्सगाहें और दारुल–उलूम क़ाइम थे। इन बिलादे अज़ीमा से आलमगीर शोहरत के मशाहीर उठे। शहरों के अलावा चिरैया कोट, काकोरी, सन्दीला, मोहान, मुबारकपुर, कछौछा, ख़ैराबाद, लाहरपुर, बिल–ग्राम वग़ैरह न जाने कितने ऐसे क़स्बात व क़रयात थे, जहां माहेरीने उलूम व फ़ुनून और अस्हाबे इल्म व फ़ज़्ल दर्स व तद्रीस और तस्नीफ़ व तालीफ़ के हंगामे बरपा किए हुए थे। यही वजह है कि शाहजहां बादशाह ने पूरब को शीराज़ कहा था।

बिलग्राम एक छोटी सी बस्ती है। शमसुदीन अल्तमिश के अह्दे इक़्तिदार में मुसलमानों के क़दम यहां पहुंचे और उस सरज़मीन पर इस्लामी तहज़ीब व तमद्दुन का अलम लहराने लगा। मुसलमानों के बहुत से क़बीले यहां आकर आबाद हुए। उन्हीं में सादाते फ़रीदीया का भी एक ख़ानदान था जिसमें नामवर उमरा, अमाइद, उलमा, सूफ़िया, शोअ्रा और उदबा गुज़रे हैं, और यह रिवायत कुछ ऐसी साअते सईद में क़ायम हुई कि बिल–ग्राम की सरज़मीन हर दौर में कोई न कोई गौहरे आबदार पैदा करती रही है।

मीर अब्दुल–वाहिद बिल–ग्रामी आसमाने इल्म व फ़ज़्ल और तसव्वुफ़ व सुलूक के वह नैय्यरे आज़म थे कि जिनके इल्म व मारिफ़त की

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ज़ियाबारियों से एक आलम रौशन हो गया। वह अपने दौर के नामवर शैख़े तरीक़त और मशहूर मुसन्निफ़ व शाइर थे।

मीर अब्दुल–वाहिद के वालिद मीर इब्राहीम बिन कुतबुद्दीन बिन माहिर बिन मीर बुढ बिल–ग्रामी थे मीर बुढ वह बुज़ुर्ग थे जो बिल–ग्राम से तर्के सुकूनत करके बाड़ी चले गये। उनके पोते मीर क़ुतबुद्दीन (फ़ 904 हिज.) ने सांडी को अपनी क़रारगाह बनाया। उनके फ़रज़न्द मीर इब्राहीम (फ़ 934 हिज.) थे जिनको हज़रत शैख़ सफ़ी से बैअत व ख़िलाफ़त हासिल थी।

मीर अब्दुल–वाहिद 912 हिज. या 915 हिज. में सांडी में पैदा हुए। हज़रत मीर बिल–ग्रामी के जद्दे आला मीर बुढ के ज़माने से उनका ख़ानदान बाड़ी व सांडी में मुक़ीम था लिहाज़ा तालीम व तहसीले उलूम इसी इलाक़ा में उनके बुज़ुर्गों के ज़ेरे तर्बियत हुई होगी। उनके इल्मी आसार व सवानेह से अन्दाज़ा होता है कि उन्होंने उलूमे मुतदावला की पूरे तौर से तहसील की थी और अपने हम अस्र असहाबे इल्म व फ़ज़्ल में मुम्ताज़ थे। वह अपने शैख़े तरीक़त शैख़ सफ़ी के भी मोरिद अल्ताफ़े ख़ास रहे और उन से ज़ाहिरी व बातिनी इस्तिफ़ादा बअहसन वजूह किया। शैख़े वक़्त शैख़ हुसैन साकिन सिकन्दर ने भी ख़ूब तर्बियत फ़रमाई और मीर बिल–ग्रामी को ज़ाहिरी व बातिनी उलूम से बहरावर किया।

हज़रत तहसीले उलूम में बुलन्द हिम्मत रखते थे। बाज़ मुश्किल मसाइल के हल के लिए मीर बिल–ग्रामी ने दुनिया की सैर का मन्सूबा बनाया मगर वह उनके मुर्शिद शैख़ सफ़ी रहमतुल्लाह अलैह की ख़ास तवज्जोह की बदौलत हल हो गये।

मीर बिल–ग्रामी ने तसव्वुफ़ व सुलूक के मनाज़िल उस दौर के नामवर शैख़े तरीक़त शैख़ सफ़ी साई पूरी से तय किए। हज़रत शैख़ की मीर बिल–ग्रामी पर ख़ास नज़रे इनायत थी। मीर बिल–ग्रामी अट्ठारह साल के थे कि शैख़ सफ़ी का 933 हिज. में विसाल हो गया। उनके ख़लीफ़ा ख़ास शैख़ हुसैन बिन मुहम्मद बनी इस्राईल साकिन सिकन्दर (फ़ 976 हिज.) ने मीर बिल–ग्रामी की तर्बियत फ़रमाई और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

खिरक़-ए-खिलाफ़त से सरफ़राज़ किया।

शैख़ हुसैन ने सिलसिल-ए-चिश्तीया के अलावा मीर बिल-ग्रामी को सिलसिला कादरीया व सुहरवरदीया में भी खिलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया।

मीर बिल-ग्रामी इत्तिबाए शरीअत का बहुत ख़्याल रखते थे और इस बारे में किसी रू रिआयत को रवा नहीं रखते थे। उनके मिज़ाज में तवाज़ु व इंकिसार बग़ायत दरजा था। खिरक़ा खिलाफ़त के हुसूल के बाद किसी को मुरीद नहीं किया। जब मुर्शिद ने मुन्दरजा ज़ेल अल्फ़ाज़ में ताकीद फ़रमाई तो सिलसिला का इजरा किया।

"ऐ नेक बख़्त मुर्शिदाने इज़ाम का तालिबाने सादिक़ को अपने सिलसिला बैअत में दाख़िल करने का मक़्सद यह नहीं होता कि उनकी नजात अपने ज़िम्मा कर लें, बल्कि उनका मक़्सद यह होता है कि अपने दीनी अहबाब बहुत से बना लें ताकि इस गरोहे कसीर में से जो अल्लाह के मक़्बूल बन्दे नजात पाने वाले हों, उनके तुफ़ैल में हम भी नजात पा जाएं। पस इस काम में देर न करनी चाहिए।

उसके बाद मीर बिल-ग्रामी ने सिलसिला बैअत शुरू किया और मख़्लूक़े ख़ुदा की इस्लाह व तर्बियत फ़रमाई। तसव्वुफ़ व सुलूक में मुज्तहेदाना हैसियत रखते थे जैसा कि उनकी तसानीफ़े लाइक़ा से ज़ाहिर होता है।

मीर गुलाम अली आज़ाद बिल-ग्रामी का ख़्याल है। यह वाक़या 979 हिज. का है जब कि मुल्ला अब्दुल-क़ादिर बदायूनी इश्क़े मजाज़ी के नतीजा में मकन पुर से ज़ख़्मों से चूर हो कर आए थे जैसा कि ख़ुद उन्होंने अपनी तारीख़ में लिखा है।

मुल्ला बदायूनी यह भी इत्तिला देते हैं कि मीर बिल-ग्रामी हर साल शैख़ हुसैन रहमतुल्लाह अलैह के उर्स में शिर्कत करते थे और कन्नौज में सुकूनत पज़ीर थे।

मीर बिल-ग्रामी कभी-कभी मारहरा और उसके क़ुर्ब व जवार के क़स्बात में भी तशरीफ़ ले जाते थे।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मीर बिल–ग्रामी के फ़रज़न्द मीर अब्दुल–जलील (फ़ 1057 हिज.) ने मारहरा में सुकूनत इख़्तियार करके उस क़स्बा को रुश्द व हिदायत का मरकज़ बना दिया और कम व बेश चार सौ साल से उस ख़ानवादा में सिलसिला बैअत व इरशाद जारी है और नामवर सूफ़िया व मशाइख़ और अस्हाबे इल्म व फ़ज़ल पैदा हुए हैं।

मीर बिल–ग्रामी कुछ मुद्दत कन्नौज में भी रहे वहां उन्होंने मुहल्ला अहमदी टोला के उस्मानी शुयूख़ में अक़्दे सानी फरमाया था। जैसा कि मुल्ला अब्दुल–क़ादिर बदायूनी ने तवत्तुन क़न्नौज का ज़िक्र किया है।

मीर बिल–ग्रामी ने सौ साल से ज़्यादा उम्र पाई। वह सिकन्दर लोदी के अहद में पैदा हुए और जहांगीर के ज़माना में उनका इंतिक़ाल हुआ इस तरह उन्होंने 9–10 बादशाहों का ज़माना पाया।

1. सिकन्दर लोदी	894 हिज.	923 हिज.
2. इब्राहीम लोदी	923 हिज.	932 हिज.
3. बाबर	932 हिज.	937 हिज.
4. हुमायूं	937 हिज.	963 हिज.
5. अकबर	963 हिज.	1014 हिज.
6. जहांगीर	1014 हिज.	1037 हिज.

मीर बिल–ग्रामी बाहमा व बेहमा ज़िन्दगी गुज़ारते थे उनकी तमाम ज़िन्दगी रुश्द व हिदायत, तालीम व तज़्कीर, इस्लाह व तर्बियत और तस्नीफ़ व तालीफ़ से इबारत रही। उनकी ज़िन्दगी में सियासी सरगर्मियों का सुराग़ नहीं मिलता। अल्बत्ता अकबर के अहद में बादशाह से मुलाक़ात का ज़िक्र मिलता है।

ख़ानदानी तज़्किरा नवेस मौलाना मुहम्मद मियां क़ादरी मारहवी की दरबारे अकबरी में हाज़िरी को ज़रा तफ़्सील से इस तरह लिखा है।

"इसका मुफ़स्सल वाक़या यूं है कि एक रोज़ अकबर बादशाह के सामने क़व्वाल हज़रत कुद्दिसा सिर्रुहू (मीर बिल–ग्रामी) की रुबाई गा रहे थे।

बादशाह पर उसके सुनने से एक आलमे वज्द व रिक़्क़त में रोने तक

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

नौबत पहुंची और हिज़ारे दरबार से पूछा कि इस रुबाई का मुसन्निफ़ कौन है। नवाब सदर जहां ने अर्ज़ किया कि मेरे पीर हज़रत मीर अब्दुल-वाहिद बिल-ग्रामी इसके मुसन्निफ़ हैं। हज़रत का आवाज़-ए-बुज़ुर्गी व कमाल तो पहले ही से बुलन्द हो रहा था और नवाब सदर जहां की ज़बानी, अब और हज़रत के फ़ज़ाइल व कमालात मालूम करके बादशाह हज़रत की ज़ियारत का कमाल दरजा आरज़ूमन्द हुआ और नवाब मज़्कूर की मारिफ़त अपने एक मोतमदे सलतनत को मआ चन्द और ख़ुद्दाम को हज़रत की ख़िदमत में भेज कर कमाले तमन्ना और निहायत आरज़ू से हज़रत से तशरीफ़ लाने की दर्ख़्वास्त की। आख़िर हज़रत ने भी बादशाह का इसरार तमाम और शौके माला कलाम देख कर मुलाक़ात का मक़सद फ़रमाया। बरवक़्त मुलाक़ात बादशाह ने बेहद ताज़ीम और कमाले एहतराम व तक्रीम से इस्तिक़्बाल किया और निहायत अदब से अपने नज़्दीक अपने तख़्त पर हज़रत का इज्लास कराया और हज़रत के फ़ुयूज़ से बहरा अन्दोज़ हुआ।"

मीर ग़ुलाम अली आज़ाद बिल-ग्रामी और मौलाना मुहम्मद मियां क़ादरी हर दो में से किसी ने इस सिलसिला में किसी तारीख़ी मआख़ज़ का हवाला नहीं दिया है। मौलाना मुहम्मद मियां ने मुलाक़ात का हाल इस तरह लिखा है कि गोया यह चश्म दीद है। मुल्ला अब्दुल-क़ादिर बदायूनी जिनकी मीर बिल-ग्रामी से मुलाक़ाते हैं वह इस सिलसिला में बिल्कुल ख़ामोश है। मालूम ऐसा होता है कि मीर सदर जहां पहानवी की तहरीक व कोशिश से यह पांच सौ बीगा ज़मीन मिली होगी और इस सिलसिला में मीर बिल-ग्रामी ने सदर जहां को ख़त भी लिखा था जिसका तफ़्सीली ज़िक्र आगे आ रहा है।

मीर बिल-ग्रामी ने अपनी ज़िन्दगी ही में इस ज़मीन को अपनी औलाद और ख़र्च ख़ानक़ाह में तक़्सीम फ़रमा दिया। इसमें से चार सौ बीघा ज़मीन उन्होंने अपने फ़रज़न्दों और पचास बीघा पोतों को दे दी और पचास बीघा ख़र्च ख़ानक़ाह के लिए वक़्फ़ फ़रमा दी।

हज़रत मीर अब्दुल-वाहिद बिल-ग्रामी ने सौ साल से ज़्यादा उम्र

https://t.me/AhlesunnatHindiBooks

Scanned with CamScanner

पाई। 3 रमज़ान 1017 हिज. शबे जुमा को अपने आबाई वतन बिल–ग्राम में इंतिक़ाल फरमाया और वहीं तदफ़ीन अमल में आई।

मीर बिल–ग्रामी ने यके बाद दीगरे दो अक़्द किए और दोनों से साहिबे औलाद थे। पहली बीवी से मीर अब्दुल–जलील (फ़ 1057 हिज0) और एक साहबज़ादी बीवी मरयम थीं। पहली बीवी क़ाज़ी शैख़ अब्दुद्दाइम उस्मानी बिल–ग्रामी (मुहल्ला क़ाज़ी पूरा) की साहबज़ादी थीं दूसरी बीवी क़न्नौज की थी। उनके बतन से तीन साहबज़ादे, मीर फ़ीरोज़ (फ़ 1066 हिज.) मीर यहिया और मीर तैयब (फ़ 1066 हिज0) और एक बेटी बीबी शाहा थीं।

मीर बिल–ग्रामी शेअ़्र व शाइरी का आला ज़ौक़ रखते थे। मब्दाए फ़ैय्याज़ ने यह मलिका उन्हीं वदीअत किया था। जब वह शेअ़्र व सुख़न की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाते थे तो ख़ूब लिखते थे। शाहिदी तख़ल्लुस था। ख़्वाजा हाफ़िज़ शीराज़ी से मुतअस्सिर थे और मानवी तलम्मुज़ रखते थे।

मौलाना मुहम्मद मियां क़ादरी मारहरवी ने मीर बिल–ग्रामी का कलाम मुख़्तलिफ़ रिसालों और बयाज़ों से तलाश करके अपनी किताब असहहुत्तवारीख़ (जिल्द अव्वल) में जमा कर दिया है।

शाहिदी बिल–ग्रामी का दीवान ख़ानक़ाहे बरकातिया मारेहरा के कुतुबख़ाना में मौजूद था उसके तलफ़ होने के बारे में मौलाना मुहम्मद मियां क़ादरी मारेहरवी लिखते हैं।

"हमारे हज़रत (मीर अब्दुल–वाहिद बिल–ग्रामी) का यह दीवान इस वक़्त हमारे पास नहीं। एक मज्मूआ में जिसमें हुज़ूर साहिबुल–बरकात (शाह बरकतुल्लाह मारहरवी) का दीवान भाशा मुसम्मा बेही पैम प्रकाश भी शामिल था जिल्द बंधा हुआ था। यह मज्मूआ हज़रत वालिद साहब क़िबला (शाह इस्माईल हसन मारेहरवी) ने सीतापुर में एक अरस–ए–दराज़ गुज़रा, मौज़ा पैंतीपुर ज़िला सीतापुर के रहने वाले एक हिन्दू हिन्दी दां को इसलिए दिया कि वह पैम कास को हिन्दी नागरी ख़त में लिख दें और फिर वह मज्मूआ उन ही के पास रह गया। हमें अब तक वापस नहीं मिला। और इस तरह हज़रत (मीर बिल–ग्रामी) का यह दीवान भी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हमारे पास से जाता रहा।"

मीर अब्दुल-वाहिद बिल-ग्रामी हिन्दी में भी शेअ्र कहते थे चुनांचे काशिफ़ुल-अस्तार और असहहुत्तवारीख़ में बतौर नमूना कुछ कलाम नकल हुआ है मगर फ़ारसी रस्मुल-ख़त में लिखने की वजह से बड़ी हद तक मसख़ हो गया है।

मीर बिल-ग्रामी को तस्नीफ़ व तालीफ़ से ख़ास मुनासिबत थी। उनका ख़ास मौज़ूअ् तसव्वुफ़ था। उन्होंने नहव की मशहूर किताब काफ़िया की शरह तसव्वुफ़ के बयान में लिखी। मीर बिल-ग्रामी की तसानीफ़ में मुन्दरजा ज़ेल किताबों के नाम मिलते हैं।

1 दीवान।
2. साक़ी नामा।
3. शरह गुलशने राज़।
4. शरह मुस्तलहात दीवाने हाफ़िज़।
5. शरहुल-काफ़िया फ़ित्तसौव्वुफ़ (तालीफ़ 970 हिज.)
6. हक़ाइके हिन्दी (तालीफ़ 974 हिज.)
7. शरह नुज़्हतुल-अरवाह (तालीफ़ 985 हिज.)
8. शरह ग़ौसिया (तालीफ़ 987 हिज.)
9. मकातीबे सलासा।
10. हल्ले शुबहात।
11. मुनाज़रा अंबा व ख़रपज़ा।
12. शरहे मुअम्मा क़िस्सा चार बिरादर।
13. तफ़्सीर मुफ़ीज़ुल-मुहब्बत।
14. मज्मूआ औराद।
15. सबअ् सनाबिल (तालीफ़ 969 हिज.)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned with CamScanner

दीवाने शाइरी का ज़िक्र हो चुका है। साक़ी नामा, शरह गुलशने राज़ और शरह मुस्तलाहात दीवाने हाफ़िज़ का ज़िक्र किताबों में मिलता है। ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा में भी यह किताबें नहीं हैं। अब हम बक़िया किताबों पर इज़्हारे ख़्याल करते हैं।

शरहुल-काफ़िया फ़ित्तसव्वुफ़ :

अरबी नह्व की मशहूर व मुतदावल किताब काफ़िया है जिसके मुअल्लिफ़ अल्लामा जमालुद्दीन अबू अमर उस्मान बिन उमर अल-मअ़रूफ़ बेही इब्नुल-हाजिब अल-मालकी (फ़ 646 हिज.) हैं यह किताब मुसन्निफ़ के ज़माना से लेकर आज तक दाख़िले निसाब रही है और इस किताब की सैंकड़ों शरहें लिखी गई हैं उनमें मुल्ला जामी की शरह सबसे ज़्यादा मशहूर है। मीर बिल-ग्रामी ने काफ़िया की शरह हक़ाइक़ व तसव्वुफ़ के बयान में लिखी है इस किताब के मुताला से उनके उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी में जामईयत का अन्दाज़ा होता है। हक़ाइक़ व तसव्वुफ़ के बयान के बावजूद सलासते अल्फ़ाज़ व रब्त मआनी को कहीं हाथ से नहीं जाने दिया है।

मौलाना अब्दुर्रशीद नौमानी साहब ने शरह काफ़िया को जामिया इस्लामिया बहावलपुर के मुजल्ला में शाए किया है चुनांचे वह इस किताब पर इस तरह इज़्हारे ख़्याल करते हैं।

"अल्लामा अब्दुल्लाह बिल-ग्रामी भी इस मतन (काफ़िया) के शारेहीन में शामिल हैं। लेकिन उनकी उफ़्तादे तबअ़ ने इस बारे में एक नई राह निकाली है जो शारेहीन काफ़िया में से किसी को आज तक न सूझी थी यानी मतन नह्व से तसव्वुफ़ के मसाइल का इस्तिख़राज किया है और उनकी इस शरह को देख कर यह मालूम होता है कि गोया इब्ने हाजिब की किताब फ़न्ने नह्व का मतन नहीं बल्कि इल्मे तसव्वुफ़ का ख़ुलासा है जिसको फ़ाज़िल शारेह अपने ज़ोरे बयान से मुफ़स्सल व मुदल्लल करते चले जा रहे हैं। यह वह बात है जो ख़ुद मुसन्निफ़े किताब शैख़ इब्नुल-हाजिब के हाशिया ख़्याल में भी न आई होगी। अल्लामा बिल-ग्रामी की यह कारगुज़ारी ज़ोर तबाई के लिहाज़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

से किसी तरह भी फ़ैज़ी की तफ़्सीर बेनुक़्त से कम नहीं। भला नह्व के मसाइल से तसव्वुफ़ के मसाइल का निकालना कोई आसान काम है। यह ख़िदमत सिर्फ़ वही शख़्स अंजाम दे सकता है जिसको कुदरत ने गैर मामूली तबाई व ज़हानत से नवाज़ा हो।"

मीर बिल-ग्रामी ने काफ़िया की शरह अपने दो याराने बासफ़ा ज़ैनुल- आबेदीन व जमालुद्दीन पिसराने बहाउद्दीन की फरमाइश पर 970 हिज. में लिखी।

गुलाम अली आज़ाद बिल-ग्रामी ने लिखा है कि मीर अब्दुल-वाहिद बिल-ग्रामी के ततब्बुअ़ में दो और बुजुर्गों ने इस नौअ़ की कोशिश की और काफ़िया की शरह मआरिफ़ व सुलूक के बयान में लिखी है। मीर अबुल-बक़ा जौनपुरी ने अरबी में शरह लिखी है और मुल्ला मोहन बिहारी ने फार्सी में मीर अबुल-बक़ा मीर बिल-ग्रामी के हम अस्र हैं और मुल्लाह मोहन का ज़माना उनके बाद का है। मीर गुलाम अली आज़ाद की नज़र से यह शरहें गुज़री हैं।

हक़ाइके हिन्दी :

यह किताब फार्सी ज़बान में जमादिल-ऊला 974 हिज. में तमाम हुई। इस किताब में मीर बिल-ग्रामी ने अपनी ज़हानत व तबाई का इस तरह सुबूत दिया है कि हिन्दी नज़्मों और गीतों में जो अल्फ़ाज़ मुतदावल व मारूफ़ हैं, उनमें से बाज़ के वह मआनी व इशारात बयान किए हैं जो उन से अह्ले बातिन मुराद लेते हैं उसकी तशरीह व तफ़्सील मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में निहायत लताफ़त से बयान फरमाई है।

हक़ाइके हिन्दी चार जुज़ का रिसाला है और ख़त्ती नुस्ख़ा ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा में महफ़ूज़ है। इस किताब का मुताला उर्दू ज़बान के तद्रीजी इर्तिक़ा के एतबार से भी मुफ़ीद है कि कितने हिन्दी अल्फ़ाज़ को मीर बिल-ग्रामी ने अपनी शरह व तहक़ीक़ का मौज़ूअ़ बनाया है।

शरह नुज़्हतुल-अरवाह :

नुज़्हतुल-अरवाह (फार्सी नज़्म) फ़ख़्रुस्सादात सैय्यद हुसैन बिन मुहम्मद अल-मअ़रूफ़ अमीर हुसैनी गज़नवी (फ़ 717 हिज.) की तालीफ़-

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

है। मीर बिल–ग्रामी ने 985 हिज. में तसव्वुफ़ व सुलूक में उसकी निहायत मबसूत शरह लिखी है।

नुज़्हतुल–अरवाह में हकाइक़ व मआरिफ़ व सैर मनाज़िल सुलूक को निहायत ईजाज़ व इख़्तिसार से रुमूज़ व इशारात और तशबीहात व इस्तिआरात के साथ बयान किया गया है मगर मीर बिल–ग्रामी ने अपने तबह्हुरे इल्मी से उन रुमूज़ व इशारात की तौज़ीह और हकाइक़ व मआरिफ़ की तशरीह में ख़ूब दादे तहक़ीक़ दी है और तौजीहात लाइक़ा और तावीलाते फाइक़ा से हर मौज़ूअ् पर ख़ूब वज़ाहत की है।

मशहूर ईरानी दानिशवर मुहम्मद हुसैन तस्बीही लिखते हैं।

"नुज़्हतुल–अरवाह एक मुद्दत तक शारेह (मीर बिल–ग्रामी) के मुताला में रही है। उसके बाद उन्होंने उसकी शरह लिखी है। फ़ार्सी नस्र में फ़ार्सी अश्आर कुरआनी आयात, अहादीसे नबवी और कलिमाते मशाइख़ शामिल हैं उसकी तक़्सीम (अबवाब व फ़ुसूल) नुज़्हतुल–अरवाह के मतन की असास पर की गई है शारेह पहले मतन लिखते हैं और फिर उसकी शरह में कहीं–कहीं अपने अश्आर भी लिखते जाते हैं।"

नुज़्हतुल–अरवाह के तीन नुस्ख़ों का इल्म हो सका है।

1. ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा (ज़िला ईटा, यू.पी. भारत) में एक नुस्ख़ा महफ़ूज़ है। यह नुस्ख़ा बरोज़ पंजशंबा 17 मुहर्रमुल–हराम 1140 हिज. मुताबिक़ नहुम साल जुलूसे मुहम्मद शाही का मक्तूबा है।
2. दूसरा नुस्ख़ा किताब ख़ाना गंज बख़्श (मरकज़ तहक़ीक़ाते फ़ार्सी इरान व पाकिस्तान) इस्लामाबाद में है। इसमें 159 (वरक़) हैं। ख़त शकिस्ता है। कातिब का नाम और तारीख़े किताबत दर्ज नहीं है।
3. तीसरा नुसख़ा राक़िमुल–हुरूफ़ ख़ाकसार मुहम्मद अय्यूब क़ादरी के ख़ानदानी ज़ख़ीरा कुतुब में था जो हज़रत वालिद माजिद मौलाना मौलवी मशीयतुल्लाह क़ादरी कुद्दिसा सिर्रुहू (फ 1959 ई.) ने हज़रत शाह मेहदी मियां साहब मारहरवी कुद्दिसा सिर्रुहू को नज़्र किया था जिसकी कैफ़ियत हज़रत क़िबला गाही कुद्दिसा सिर्रुहू ने अपनी एक

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

क़ल्मी याददाश्त मुअर्रिख़ा 9 मार्च 1927 ई. में इस तरह तहरीर फ़रमाई है।

"आज हज़रत शाह मेहदी मियां साहब क़िबला दामत बरकातुहुम सज्जादा नशीन दरगाह आलिया मारहरा शरीफ़ बमईयत बिरादरे मुकर्रम हज़रत मौलाना हकीम अब्दुल–माजिद शाह क़ादरी बदायूनी साहब ग़रीब ख़ाना पर तशरीफ़ फ़रमा हुए। कुतुबख़ाना को मुलाहिज़ा फ़रमाया और इज़्हारे मसर्रत किया। इस आसी पुर मआसी ने हज़रत शाह मेहदी मियां साहब क़िबला की ख़िदमत में शरह नुज़्हतुल–अरवाह मुअल्लिफ़ा हुज़ूर सैय्यद अब्दुल–वाहिद बिल–ग्रामी क़ुद्दिसा सिर्रुहुल–अज़ीज़ मक्तूबा नहुम सफ़रुल–मुज़फ़्फ़र 1235 हिज. बमक़ाम बरैली बदस्त नूरुद्दीन कातिब नज़्र गज़रानी हज़रत मियां साहब क़िबला ने शर्फ़े क़ुबूलियत बख़्शा।"

शरह ग़ौसिया :

यह एक अरबी मतन ग़ौसिया की फ़ार्सी मन्ज़ूम शरह है जो 9 ज़ी क़अ्दा 987 हिज. को मुकम्मल हुई। हज़रत शाह हमज़ा मारहरवी रहमतुल्लाह ने मीर बिल–ग्रामी की तसानीफ़ के क़ल्मी मज्मूआ के एक वर्क़ पर यह याददाश्त तहरीर की है कि उन्होंने सैय्यद महमूद बिल–ग्रामी के दस्तख़त से शरह ग़ौसिया मन्ज़ूम फार्सी में देखी। सैय्यद महमूद बिल–ग्रामी, मीर अब्दुल–वाहिद बिल–ग्रामी के मुरीद और दामाद थे।

इस बयान की ताईद मीर बिल–ग्रामी के फ़रज़न्द मीर यहिया की एक यादाश्त से भी होती है जो उन्होंने अपने रिसाला मीज़ानुल–आमाल में लिखी है। उसमें वह लिखते हैं कि हज़रत शैख़ अब्दुल–क़ादिर जीलानी क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने ग़ौसिया में लिखा है।

मकातीबे सलासा :

मीर बिल–ग्रामी के तीन फार्सी मक्तूबात का एक मज्मूआ ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा में महफ़ूज़ है जो मुन्दरजा ज़ेल तीन हज़रात को लिखे गये हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

1. मक्तूब बनाम मुफ़्ती अल्ला दाद दानिशमन्द (लखनऊ)
2. मक्तूब बनाम मुफ़्ती शैख़ अब्दुल–अज़ीज़ (क़न्नौज)
3. मक्तूब बनाम नवाब मीर सदर जहां (पहानी)

पहला मक्तूब सिमाअ् के मस्अला पर लिखा गया है। मुफ़्ती साहब सिमा के मन्किर थे।

मीर बिल–ग्रामी ने निहायत वज़ाहत और ख़ुश उस्लूबी के साथ इस मस्अला पर रौशनी डाली है। क़ुरआन, हदीस और अइम्मा के इरशादात को पेश किया है। लहजा और अन्दाज़ निहायत मअ्क़ूल और मुसालेहाना है। मौलाना अब्दुर्रशीद नौमानी लिखते हैं।

"अल्लामा बिल–ग्रामी ने मुफ़्ती साहब को जिस अन्दाज़ में ख़िताब किया है इससे मालूम होता है कि वह उनकी जलालते इल्मी के ग़ैर मामूली मोतरिफ़ थे। यह मक्तूब लाइक़े मुताला है ज़रूरी नहीं कि मस्अला सिमा में अल्लामा बिल–ग्रामी से इत्तिफ़ाक़ किया जाए लेकिन इख़्तिलाफ़ी मसाइल में अल्लामा का जो अन्दाज़े ख़िताब है वह लाइक़े इत्तिबा है। अगर हमारे ज़माना के उलमा भी इख़्तिलाफ़ी मसाइल पर इसी अन्दाज़ से क़लम उठाएं तो कोई वजह नहीं कि आपस में इस नागवारी का मुज़ाहरा हो जिस से आजकल हम दो चार हैं।"

मौलाना अब्दुर्रशीद नौमानी ने शरह काफ़िया के साथ इस मक्तूब को भी शाए कर दिया है।

मीर बिल–ग्रामी का दूसरा मक्तूब शैख़ अब्दुल–अज़ीज़ क़ाज़ी क़न्नौज के नाम है। मालूम होता है कि मीर बिल–ग्रामी और क़ाज़ी क़न्नौज के दर्मियान बाज़ मसाइले तसव्वुफ़ में कुछ मुज़ाकरा व मुबाहिसा हुआ है और इस सिलसिला में मीर बिल–ग्रामी ने क़ाज़ी क़न्नौज को ख़त लिखा है।

मीर बिल–ग्रामी का तीसरा मक्तूब नवाब मीर सदर जहां ख़ां पहानवी के नाम है जो अह्दे अकबरी के मशहूर आलिम, मुफ़्ती, सदरुस्सुदूर और शाही मन्सबदार थे। वह एक मरतबा सिफ़ारत पर तौरान भी गये थे और मीर बिल–ग्रामी से इरादत व अक़ीदत रखते थे

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

अकबर बादशाह के अहद में मीर अब्दुल वाहिद बिलग्रामी के लिए पांच सौ बीघा की मआफी मन्ज़ूर हुई। उसका फरमान नवाब मीर सदर जहां पहानवी के ज़रीआ अम्ज़ा हुआ। मालूम ऐसा होता है कि यह ख़त उसी सिलसिला में लिखा गया है।

मगर पांच सौ बीघा मुआफ़ी मीर बिल–ग्रामी के लिए मुक़र्र हुई और नवाब मीर सदर जहां की कोशिशें बार आवर हुईं। मौलाना मुहम्मद मियां क़ादरी मारहरवी ने यह मक्तूब भी असहहुत्तवारीख़ (जिल्द दोम) में नक़ल कर दिया है।

रिसाला हल्ले शुबहात :

सुलूक के इब्तिदाई दौर में मीर बिल–ग्रामी को उलूमे शरीअ़त व तरीक़त में बाज़ मुश्किल मसाइल दर पेश हुए। उन्होंने नामवर उलमा व मशाइख़ से रुजूअ़ किया मगर तशफ़्फ़ी न हुई लिहाज़ा इरादा किया कि जहां नूरदी करके उन मसाइल को हल करना चाहिए चुनांचे चल खड़े हुए मगर बातिनी इशारा पर हज़रत शैख़ सफ़ी की ख़िदमत में हाज़िर हुए और तमाम शुकूक व शुबहात के वाफ़ी व शाफ़ी जवाबात पाकर मुत्मइन हो गये और यह रिसाला हल्ले शुबहात लिखा।

मुन्दरजा ज़ेल नौअ़ के सवालात हैं।

1. पीर के सामने मुरीद का इस तरह रहना जैसे ग़स्साल के हाथों में मैयत।
2. मुख़ालिफ़ते नफ़्स बइत्तिबाए शरीअ़त क्यों?
3. वली और शोअ़्बदा बाज़ की पहचान और करामत व इस्तिद्राज का फ़र्क़।
4. नमाज़ में जो हुज़ूरे क़ल्ब है। शरीअ़त, तरीक़त और हक़ीक़त के एतबार से उसकी तारीफ़।
5. अल्लाह और रसूल को ख़्वाब में देखने की अलामत।

ग़रज़ इस तरह के त्रिपन सवालों के जवाब इस रिसाला में क़लम बन्द हुए हैं जिन में बाज़ तवील भी हैं। रिसाला के आख़िर में मुस्तलहाते सूफ़िया बिल–ख़ुसूस ख़्वाजा हाफ़िज़ शीराज़ी के मुस्तलहात अशआर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मसलन ज़ुल्फ़, महताबे रुख़, बोसा, बुलबुल और क़मरी वग़ैरह की तशरीह और मुरादी मआनी का बयान है। मीर बिल-ग्रामी ने अक्सर मवाक़े पर तरीक़त व मारिफ़त के मुश्किल मसाइल का हल शरीअ़त में ढूंढा है और यह हक़ीक़त वाज़ेह फ़रमाई है कि ज़ाहिरी मुआमलात ही में नहीं बल्कि सैरे बातिन में भी कोई शख़्स शरीअ़त की पैरवी किए बग़ैर वसूले इलल्लाह की मंज़िले मक़्सूद और मरतबा तक़र्रुब पर फाइज़ नहीं हो सकता।

मुनाज़रा अंबर व ख़रपज़ा :

यह एक मुख़्तसर सी फ़ार्सी नज़्म बसूरत मस्नवी है जिस में आम और ख़रपज़ा अपनी-अपनी तअल्ली और बड़ाई बयान करते हैं और आख़िर में मीर बिल-ग्रामी को हकम बनाते हैं। इस नज़्म में भी उन्होंने सालिकैन के लिए तसव्वुफ़ व सुलूक के नेकात मल्हूज़ रखे हैं।

मीर बिल-ग्रामी ने एक हदीस की रौशनी में फ़ैसला ख़रपज़ा के हक़ में किया और दोनों ने उनके फ़ैसला को क़ुबूल करके सलामत रवी का सुबूत दिया।

मौलाना मुहम्मद मियां क़ादरी ने इस नज़्म को असहहुत्तवारीख़ (जिल्द अव्वल) में पूरा नक़ल कर दिया है।

शरह मुअम्मा क़िस्सा चार बिरादर :

किसी बुज़ुर्ग ने सुलूक के बयान में चार भाईयों का एक मुअम्मा तहरीर फ़रमाया था मीर बिल-ग्रामी ने इस मुअम्मा की शरह फ़ार्सी ज़बान में इस तरह लिखी है कि सुलूक के मनाज़िल व मदारिज का मुकम्मल नक़्शा आंखों के सामने आ जाता है और मालूम होता है कि सालिक किस तरह इस राह में दाख़िल होता है कैसे-कैसे हालात से उसे गुज़रना पड़ता है और आख़िर में वह किस तरह फाइज़ुल-मराम होता है। इस किताब का ख़त्ती नुस्ख़ा ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा में मौजूद है।

तफ़्सीर मुफ़ीज़ुल-मुहब्बत :

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हज़रत शाह आल अहमद अच्छे मियां मारहरवी रहमतुल्लाह अलैह की किताब आईने अहमदी में तफ़सीर मुफ़ीजुल-मुहब्बत का एक इक्तिबास दर्ज है। जिससे मालूम होता है कि यह किताब उनके सामने ज़रूर थी और उसका पूरा नाम तफ़सीर मुफ़ीजुल-मुहब्बत व मौरिसुल-मारिफ़त है और यह किताब तफ़सीरे हुसैनी से मुक़्तबिस है।

मीर बिल-ग्रामी 'अल्लाह नूरुस्समावाते वल-अर्ज..................अलख़ की तफ़सीर में रकमतराज़ हैं।

मज्मूआ औराद :

ख़ानकाहे बरकातिया मारहरा में मीर अब्दुल-वाहिद बिल-ग्रामी का एक मज्मूआ औराद क़ल्मी सूरत में महफ़ूज़ है उसके मुतअल्लिक़ मौलाना मुहम्मद मियां क़ादरी लिखते हैं।

'जिस में हज़रत ने कुछ औराद व वज़ाइफ़, बाज़ आमाल व तावीज़ात और बाज़ अकाबिरे सूफ़ियाए मिस्ल इमाम अहमद ग़ज़ाली व शैख़ुल-मशाइख़ नज्मुद्दीन कुबरा कुददस्त असराहुम के सुलूक व तसव्वुफ़ में बाज़ मुस्तक़िल रसाइल व फ़वाइद और ख़ुद अपने नज़्म फ़रमाए हुए शजरा हाए तरीक़त व नसब व दीगर फ़वाइद जमा फ़रमाए हैं नीज़ हज़रत जद्दे अकरम सैय्यदना शाह हम्ज़ा क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने भी अपने मुरत्तिब फ़रमूदा मज्मूआ आमाल में हज़रत मीर क़ुद्दिसा सिर्रुहू के बाज़ आमाल व नुक़ूश वादईया व औराद जमा किए हैं।'

मौलाना मुहम्मद मियां क़ादरी ने उन में से बाज़ चीज़ें अपनी किताब असहहुत्तवारीख़ (जिल्द अव्वल) में नक़ल भी की हैं।

सबअ़ सनाबिल :

मीर बिल-ग्रामी की तसानीफ़ में सबअ़ सनाबिल सबसे ज़्यादा मशहूर व मक़बूल है। उन्होंने इस किताब में तसव्वुफ़ व सुलूक के अहम और बुनियादी नेकात बयान किए हैं और शरीअ़त व तरीक़त के तअल्लुक़ को बयान किया है और वाज़ेह तौर पर बताया है कि तरीक़त में शरीअ़त की पाबन्दी लाज़मी और ज़रूरी है और इस दौर में मुस्लिम मुआशरा में जो दीनी बेराह रवी और अक़ाइद में जो फ़साद शुरू हो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

गया था उसकी इस्लाह व दुरुस्ती के लिए यह किताब लिखी है।

सबअ़ सनाबिल का पहला सुंबुला (बाब) मुफ़ज़्ज़ला और तफ़्ज़ीलीयत के रद में है। मीर बिल–ग्रामी ने इस मस्अला पर सैर हासिल बहस की है। और कोई पहलू तिशना नहीं छोड़ा है। हमारे इस ख़्याल से यह उस वक़्त का ज़ेरे बहस मौज़ूअ़ होगा और मुस्लिम मुआशरा इससे दो चार होगा क्योंकि हुमायूं बादशाह ने ईरान में इमामिया मज़हब इख़्तियार कर लिया था और उसके नतीजा में शाह ईरान ने हुमायूं को फौजी मदद दी थी। हुमायूं का सबसे मोतमद और कार गुज़ार अमीर बैरम ख़ां ख़ानख़ानां भी उन ही अक़ाइद का पाबन्द था। हुमायूं के सरदार अमीर और फौजी भी बड़ी तादाद में इमामिया मसलक रखते थे नौबत यहां तक पहुंची कि मज्लिसे हुमायूनी के एक आलिम मुल्ला हमीद संभली ने बरमला हुमायूं बादशाह से उस पर इज़्हारे ख़्याल किया।

"और शैख़ मौसूफ़ ने भी सच कहा था। हुमायूं के अक्सर हम्राहियों के नाम ऐसे ही थे बल्कि गदा अली, मिस्कीन अली, ज़ुल्फ़ अली, पंजा अली, दुर्वेश अली, मुहम्मद अली वग़ैरह नाम जो जा बजा तारीख़ों में आते हैं। वह उन्होंने नहीं लिए यह लोग बाबर के साथ ईरान से आए होंगे या हम्साइयों के हम्राह होंगे। हज़ारा जात काबुल के लोग भी तमाम शीआ हैं।"

मीर बिल–ग्रामी ख़ास क़न्नौज का एक वाक़या लिखते हैं जिससे हालात का अन्दाज़ा हो सकता है। "मशहद के एक सैय्यद हिन्दुस्तान आए। बादशाह से मुलाक़ात की बादशाह ने उन्हें क़न्नौज में मददे मआश दे दी। क़न्नौज के अकाबिर मुलाक़ात के लिए आए नमाज़ का वक़्त था उन लोगों ने उन सैय्यद के सामने नमाज़ अदा की वह बैठे रहे अकाबिरे क़न्नौज ने पूछा कि ऐ अमीर! आपने नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी। वह ख़ामोश रहे और उनके सवाल पर कोई तवज्जोह नहीं की जब वह लोग चले गये, तो हाज़िरीन ने कहा कि मैं अली मुर्तज़ा का फ़रज़न्द हूं। विलायत में पचास हज़ार आदमी मेरी परस्तिश करते हैं और यह मरदक मुझे नमाज़ को कहते हैं। सारे सादात आम व ख़ास चाहे मुरतकिब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कबाइर हों ख़्वाह मुब्तलाए हराम व तारिके सौम व सलात वह सब जन्नत में जाएंगे और ख़ात्मा बख़ैर होगा।"

मीर बिल–ग्रामी इस वाक़्या को नक़्ल करके लिखते हैं कि मुझे उसका भी रद करना है। सबअ़ सनाबिल 969 हिज. में तालीफ़ हुई। सबअ़ सनाबिल सात सुंबुलो (बाब) पर बतफ़्सील ज़ैल मुनक़सिम है–

पहला सुंबुला :

अक़ाइद व मज़ाहिब के बयान में है। इसमें मीर बिल–ग्रामी ने मज़्हबे अह्ले सुन्नत व जमाअ़त के अक़ाइदे हक़्क़ा का इसी तरह ज़िक्र किया है जैसा कि उलमा व अइम्मा दीन की कुतुब मोतमेदा में बयान हुआ है और सूफ़ियाए किराम व अह्ले बातिन का इन अक़ाइद में उल्माए दीन व अइम्माए शरीअ़त ज़ाहिर से इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद क़ाइम दिखाया है। ज़ात व सिफ़ात बारी तआला, रूयते बारी तआला दर आख़िरत, अक़ाइदे मुतअल्लेक़ा नुबुव्वत, कुतबे समाविया, बहिश्त व दोज़ख़, अज़ाब व सवाब, लौह व क़लम, हौज़, सिरात, मीज़ान, शफ़ाअ़त, हूर व क़ुसूर, अज़ाबे क़ब्र, सवाले नकीरैन, हश्र व नश्र और क़यामत वग़ैरह का ज़िक्र किया है।

दूसरा सुंबुला :

पीरी मुरीदी और उसकी हक़ीक़त के बयान में है इसमें मुरीद और पीर के औसाफ़ का बयान है और ताकीद की है कि पीर और मुर्शिद को हर हाल में मुत्तबेअ़ सुन्नत व शरीअ़त होना चाहिए। शरीअ़त व तरीक़त में कोई तफ़ावुत नहीं है। दुनियादार पीरों को मुतन्नबह किया है और मदारिया सिलसिला को मुन्क़ता क़रार दिया है। तरीक़त के शराइत बयान किए हैं। मुरीदों की तर्बियत के लिए मक़ामाते सुलूक तय कराने का दस्तूरुल–अमल मुक़र्रर किया है और मक़ामाते सुलूक की तफ़्सील बयान की है।

तीसरा सुंबुला :

तर्के दुनिया, क़नाअ़त और तबत्तुल के बयान में है मीर बिल–ग्रामी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ने आयात, अहादीस और उल्माए ज़ाहिर व बातिन के इरशादात से मुहक़्क़िकाना व सूफ़ियाना अन्दाज़ और निहायत दिल नशीन पैराया में दुनिया और मताए दुनिया की मज़म्मत और उसका हैच होना बयान किया है। साथ ही साथ यह भी बताया है कि कौन सी दुनिया मज़्मूम और कौन सी दुनिया मुस्तहसन व महमूद है। बुजुर्गाने दीन, दुनियादार होने के बावजूद दुनिया से बेतअल्लुक़ हैं। अह्लुल्लाह का बरताव दुनिया के साथ कैसा होना चाहिए। बुजुर्गाने दीन का शोहरत से बचना, नजासते बातिनी के अक़्साम और क़नाअत के शर्फ़ बयान किया है।

चौथा सुंबुला :

दुर्वेशाने ख़ुदा आगाह और उनके हुस्ने अख़्लाक़ के बयान में है। इसमें मीर बिल–ग्रामी ने महबूबाने ख़ुदा की ताअत व इबादत उनके अख़्लाक़े करीमा व महासिने जमीला, दवामे वुज़ू, हुज़ूर सलात, सौम, जूअ, अकले हलाल, क़्याम, दवामे ज़िक्र, सिद्क़ व इख़्लास, एहसान व ईसार वग़ैरह का आयात व अहादीस व इरशादाते उल्माए शरीअत व तरीक़त से इस्बात और उनकी तशरीह की है और उनकी तारीफ़ व तौसीफ़ व तरतीब व तरकीब को औलिया व सुल्हा की सीरते करीमा के वक़ाए व हिकायात से दिल नशीं किया है और तालिबे कमाल को बताया है कि उसे अपनी ज़िन्दगी किस सांचे में ढालनी चाहिए।

पांचवां सुबुंला :

ख़ौफ़ व रजा के बयान में है उसमें मीर बिल–ग्रामी ने ख़ुदा तआला के क़हर व ग़ज़ब से ख़ौफ़ व ख़शीयत और उसकी रहमत और करम से उम्मीदवार होने की ज़रूरत व अहमीयत बयान फरमाई है और उसकी अमली तफ़्सीर व तशरीह अकाबिर मशाइख़े तरीक़त और उल्माए दीन के इरशादात और उनकी सीरते करीमा से दिखाई है।

छठा सुबुंला :

हक़ाइक़े वहदत और ज़ुहूरे आसारे मअ़रिफ़त व मुहब्बत के बयान में है इसमें मीर बिल–ग्रामी ने उन हक़ाइक़े वहदत और आसारे मुहब्बत व

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मारिफ़त का बयान फरमाया है जो मक़ामाते सुलूक की तक्मील और उन अख़्लाक़े करीमा से मुत्तसिफ़ होने के बाद सालिक के ज़ाहिर व बातिन पर नूर अफ़्गन होने लगते हैं।

सातवां सुंबुला :

फ़वाइदे मुतफ़र्रेका के बयान में है इसमें मीर बिल–ग्रामी ने अपने सिलसिल–ए–आलिया चिश्तीया मीनाइया के अकाबिर शुयूख़ यानी हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से लेकर ख़्वाजा कुतबुद्दीन काकी रहमतुल्लाह अलैह तक सतरह शुयूख़ का मुख़्तसर ज़िक्र किया है। और इसी पर किताब का इख़्तिताम हुआ है।

मीर बिल–ग्रामी ने सबअ् सनाबिल में मुन्दरजा ज़ेल किताबों का हवाला दिया है जिस से इस किताब की अहमीयत व इफ़ादीयत और हज़रत मीर के उस्अते मुताला का अन्दाज़ा होता है।

कुरआने करीम, मज्मूआ अहादीस, अवारिफ़ुल–मआरिफ़, क़साइदे ख़ाक़ानी, मज्मए सुलूक (शैख़ सअ्द) ख़ज़ाना जलाली (मख़्दूम जहानियां जहां गश्त) रिसाला मक्कीया (कुतबुद्दीन दमिश्क़ी) हिदायतुस्सअ्दा, शरह रिसाला मक्कीया (शैख़ सअ्द बुड्ढन) सिलकुस्सुलूक (ज़ियाउद्दीन नख़शबी) इहयाउल–उलूम (ग़ज़ाली) शरह आदाबुल–मुरीदीन, तफ़्सीर हुसैन वाइज़ काशफ़ी, शाहनामा फ़िर्दौसी, मन्तक़िन्तैर (अत्तार) लुब्बे लुबाब, मस्नवी मौलाना रूम रहमतुल्लाह अलैह, कश्फ़ुल–असरार, बहरुल–हक़ाइक़, फ़वाइदुस्सालेकैन, मआलिमुत्तन्ज़ील, एजाज़ुल–बयान (शैख़ सदरुद्दीन क़न्नौजी) मअ्दनुल–हक़ाइक़ शरह कन्ज़ुद्दक़ाइक़।

मीर ग़ुलाम अली आज़ाद बिल–ग्रामी मआसरुल–कराम में तहरीर फरमाते हैं।

"हज़रत मीर अब्दुल–वाहिद बिल–ग्रामी कुद्दिसा सिर्रुहू की मशहूर तरीन तस्नीफ़ किताब सबअ सनाबिल शरीफ़ में है जो सुलूक व अक़ाइद के बयान में है। एक बार रमज़ानुल–मुबारक 1135 हिज. में मुअल्लिफ़े औराक़ (ग़ुलाम अली बिल–ग्रामी) ने दारुल–ख़िलाफ़ा शाहजहानाबाद में हज़रत शाह कलीमुल्लाह चिश्ती कुद्दिसा सिर्रुहू की ज़ियारत की।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हज़रत मीर अब्दुल–वाहिद कुद्दिसा का ज़िक्र आया। शैख़ ने हज़रत मीर के मनाक़िब व फ़ज़ाइल देर तक बयान किए और फरमाया : एक शब मैंने मदीना मुनव्वरा में बिस्तरे ख़्वाब पर आलमे वाक़या में देखा कि मैं और सैय्यद सिबग़तुल्लाह बुरूजी एक साथ दरबारे अक़्दस रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में हाज़िर हुए और देखा कि वहां सहाबा किराम और औलियाए इज़ाम की भी एक बड़ी जमाअत मौजूद है और उनमें एक साहब हैं कि हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन से तबस्सुम और शीरीं लबी के साथ बातें फरमा रहे हैं और उनके हाल पर निहायत तवज्जोह व इल्तिफ़ात फरमाते हैं। जब मज्लिसे मुबारक तमाम हो चुकी तो मैंने सैय्यद सिबग़तुल्लाह से पूछा कि यह कौन साहब थे कि हुज़ूरे अक़्दस उन से इस क़द्र इल्तिफ़ात फरमाते हैं। उन्होंने जवाब दिया, मीर अब्दुल–वाहिद बिल–ग्रामी और उनके ज़्यादा एहतराम का सबब यह था कि उनकी तस्नीफ़ सबअ़ सनाबिल जनाब रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में मक़्बूल हुई।

सबअ़ सनाबिल 1299 हिज. में मतबा निज़ामी कानपुर में हज़रत शाह फ़ज़्ले रहमान गंज मुरादाबादी रहमतुल्लाह अलैह के फरज़न्द व सज्जादा नशीन शाह अहमद मियां की तहरीक और मौलवी अब्दुर्रहमान ख़ां शाकिर मालिक मतबअ़ के हुस्ने इंतिज़ाम से शाए हुई है।

बक़ौल मौलाना मुहम्मद मियां क़ादरी मारहरवी इस मत्बूआ एडीशन में बाज़ ग़लतियां भी रह गई चुनांचे वह लिखते हैं।

"तस्हीह में बहुत एहतमाम मद्दे नज़र रखना बताया गया है मगर अफ्सोस है कि बाज़ जगह बाज़ अहम अग़लात रह गई हैं मसलन स. 43 सुंबुला अव्वल शर्त पीरी मुरीदी में इस जुमले में कि "सुन्नी मुतअस्सिब बाशद" पीर पक्का सुन्नी हो बजाए मुतअस्सिब के बेतअस्सुब हो गया है मत्बूआ में क़ल्मी से यह और बाज़ और फ़र्क़ देख कर हजरत मौलाना अब्दुल–क़ादिर साहब बदायूनी कुद्दिसा सिर्रहू हज़रत क़िबला व काबा वालिदे माजिद मद्दा ज़िल्लुहूम अल–अक़्दस (शाह इस्माईल हसन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मारहरवी रहमतुल्लाह अलैह) से इस किताब का क़ल्मी पुराना नुस्ख़ा इसलिए ले गये थे कि उस से मत्बूआ का मुक़ाबला करा कर सेहत नामा शाए कर दिया जाएगा मगर फिर जहां तक फ़क़ीर को इल्म है वह सेहतनामा अब तक शाए न हुआ और अफ़्सोस यह है कि वह हमारा क़ल्मी नुस्ख़ा बदायूं ही में रह गया और अब न मालूम उसका क्या हश्र हुआ।"

शादान 1347 हिज. में मौलाना मुहम्मद मियां क़ादरी मारहरवी रहमतुल्लाह अलैह को सबअ़ सनाबिल का एक ख़त्ती नुस्ख़ा मुम्बई से दस्तियाब हुआ था जिसकी किताबत 20 ज़िल–हिज्जा 1282 हिज. रोज़ यंशंबा तमाम हुई।

सबअ़ सनाबिल का एक ख़त्ती नुस्ख़ा सुबहानल्लाह कलेक्शन (मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़) में मौजूद है जो सतरह सनह जुलूसे मुहम्मद शाही का मक्तूबा है।

राक़िमुल–हुरूफ़ की नज़र से सबअे सनाबिल का एक ख़त्ती नुस्ख़ा मौलवी सूफ़ी अब्दुल–हमीद अशरफ़ी साकिन क़स्बा ओझयानी ज़िला बदायूं (फ़ 1945 ई.) के ज़ख़ीरा इल्मिया में नज़र से गुज़रा। मुख़्तलिफ़ कुतुब ख़ानों की फ़ेहरिस्तें देखने से मुम्किन है कि सबअ़ सनाबिल के ख़त्ती नुस्ख़ों का और भी सुराग़ लग सके। ज़रूरत है कि उन तमाम नुस्ख़ों के मुक़ाबला के बाद सबअ़ सनाबिल का फ़ार्सी मतन फिर से शाए होना चाहिए।

मक़ामे मुसर्रत है कि हामिद एण्ड कम्पनी लाहौर ने सबअ़ सनाबिल के उर्दू तरजमा की इशाअत का एहताम किया है जो मुल्क के नामवर मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद ख़लील ख़ां क़ादरी बरकाती दामत बरकातुहुम ने किया है।

मुहम्मद अय्यूब क़ादरी

24 रजबुल–मुरज्जब 1401 हिज.

29 मई 1981 ई. बरोज़ जुमा

ए–174/एन. ब्लॉक, शुमाली नाज़िमाबाद, कराची, नम्बर 33

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तमाम हम्द उस ख़ुदावन्द के लिए जिसने ज़मीने क़ुलूब को बारिशे फ़ज़्ल व करम से ज़िन्दा फरमाया और उससे रुश्द व हिदायत का ग़ल्ला पैदा किया। उसे गुलिस्ताने मारिफ़त और बोस्ताने मुहब्बत से आरास्ता किया। उसमें हिकमत के चश्मों को बहाया और मुशाहिदाते वहदत के फलों से बहरावर किया चुनांचे इरशाद फरमाया :

तरजमा : और उनके लिए एक निशानी मुर्दा ज़मीन है। हमने उसे ज़िन्दा किया, और फिर उस से अनाज निकाला तो उसमें से खाते हैं और हम ने उसमें बाग़ बनाए खुजूरों और अंगूरों के और हमने उसमें कुछ चश्मे बहाए कि उसके फलों में से खाएं।

बहुत बाग़ और मेवे दिल के अन्दर हैं और उसके लुत्फ़ का अक्स इस पानी और मिट्टी पर है।

और नामी दुरूद व गिरामी सलाम उस रसूल पर जो गुल्ज़ारे इनायत की बहार, और आली मरतबा बाग़ीच–ए–हिदायत हैं और वह बरकत वाले अरबी दरख़्त हैं कि न पूरब के हैं न पच्छिम के। अल्लाह तआला उन पर दुरूद और सलामती नाज़िल फरमाए और उनके तमाम अस्हाब व अह्ले बैत और जुमला उम्मत पर कि उन्हीं की रिसालत के साफ़ और शीरीं पानी के परवरिश पाए हुए और उन्हीं के दरियाए हिदायत के सैराब किए हुए हैं। सबको एक ही पानी दिया जाता है और फलों में हम एक को दूसरे से बेहतर करते हैं। उन सब पर अल्लाह तआला की रज़ाएं हैं।

अम्मा बअ़्द करम वाले रब के लुत्फ़ व फ़ज़्ल पर नाज़ां, फ़क़ीर बेसरो सामां अब्दुल–वाहिद इब्राहीम कहता है कि वह ज़राअत करने वाले जो अपनी जड़ों और शाख़ों से भरे हुए और रंग व ख़ुशबू के फलों से लदे हुए हैं और वह काश्तकार जो दिलों की ज़राअत गाह हैं सआदते अज़ली का बीज रखते, और असल फ़ितरत की ज़मीनों पर तुख़्मे मुहब्बत अबदी बोते हैं। वह लोग कि उनकी खेती बादलों के पानी से नहीं है बल्कि तमाम परवरिश करने वालों के परवरदिगार की परवरिश से है

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

इसलिए कि ज़मीन का सब्ज़ा आबे बारां का पाला और बढ़ाया हुआ है और रब्बुल-अरबाब का परवरिश किया हुआ है तो वह सब्ज़ाज़ार दीने गुल्ज़ार, ज़मीन के गल्ला से है और यह नेकियों के पाक दिलों से वल-बलदुत्तैय्यबु यख़्रुजु नबातहू बेइज़्ने रब्बेही। और जो अच्छी ज़मीन है उसका सब्ज़ा अल्लाह के हुक्म से निकलता है।" इस एक से चमनिस्ताने आफ़ाक़ के आब व गुल में रौशनियां हैं और इस दूसरे से गुलिस्ताने अख़्लाक़ के जान व दिल में तजल्लियां। दो बाग़ीचों के बूटे जो तने से ज़ाहिर होते हैं और यह तअल्लुक़ात के तोड़ देने से। उनका पांव शाख़ पर है और उनका चेहरा कुशादगी और फ़राख़ी में।

उनकी कहावत जो अपने माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उस दाना की तरह है जिसने उगाईं सात बालें। हर बाली में सौ दाने और अल्लाह उस से भी ज़्यादा बढ़ाए जिसके लिए चाहे और अल्लाह वुस्अत वाला इल्म वाला है।"

मैंने चन्द ख़ूशे उनके मुबारक अंबार से उठा लिए और कुछ बालें उनकी नेकी के गेहूं से चुन लीं ताकि अपनी मुफ़्लिसी का सामान बना लूं और उसके ज़ौक़ व शौक़ में दुनिया की ख़ुशबुओं पर माइल न हों।

च्यूंटी गर्मी में इकट्ठा कर लेती है ताकि जाड़े में बा फ़राग़त रहे। अल्लाह तआला हमें दारे ग़ुरूर से निगहदाश्त और मकाने सुरूर पर तरक़्क़ी की तौफ़ीक़ बख़्शे।

तरजमा : यानी ऐ दिल तू अगर मरदाने ख़ुदा के अख़्लाक़ से हिस्सा पाने वाला नहीं तो एक मरतबा बुज़ुर्गों की आदतों का दिल लगा कर मुताला कर। चूंकि सालेहीन के ज़िक्र के वक़्त रहमत का उतरना साबित है लिहाज़ा तू हर वक़्त दीन के जवांमर्दों का ज़िक्र कसरत से किया कर। कभी तो उनके हालों की अच्छाई का दिल से शौक़ ज़ाहिर कर और कभी उनके अख़्लाक़ की पाकी पर आंखों से आंसू निछावर कर। या अल्लाह मैं गुनहगार होते हुए अल्लाह वालों से सफ़ाई रखता हूं तो

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

इस सफ़ाई को मुझ बुरे की बख़्शिश का सहारा बना दे और उन लोगों की दरगाह में जिन्हें न कोई डर है न ग़म। इस ग़ुलाम को दोज़ख़ के अज़ाब से आज़ाद कर दे और मुझ ना अहल की लियाक़त का लिबास अगर अज़ राहे फ़रेब है तो तू वही कर जो मूसा अलैहिस्सलाम से ठट्ठा करने वालों के साथ किया।"

जानना चाहिए कि मौलाना हुसैन वाइज़ रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी तफ़्सीर में बाज़ आयतों के माना अह्ले बातिन की इस्तेलाहात के मुताबिक़ नकल किए हैं और अह्ले मारिफ़त और ख़ुदा वालों का अन्दाज़े गुफ़्तगू इख़्तियार किया है। इस फ़क़ीर ने बहुत सी काम की बातें वहीं से ली हैं और अल्लाह वालों की बरकतों के लताइफ़ मुख़्तलिफ़ मक़ामों से चुने हैं। फ़ाइदा हासिल करने और शौक़ पूरा करने के लिए न कि ख़्यानत और चोरी के तरीक़ा पर। अल्लाह तआला का क़ौल है।

"और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की ख़बरें सुनाते हैं जिस से तुम्हारा दिल ठहराएं और बाज़ कलाम मशरब के मुताबिक़ जो फ़क़ीर के दिल पर ज़ाहिर हुआ है उसे भी जा बजा लिखा है।"

यानी यह दो चार बातें जिन्हें मैंने तहरीर किया है उन्हें दिल के गिर्दा गिर्द नक़्श व निगार बनाया है उसे अपने लिए काफी समझ रखा है कि गहरी अन्धेरों का चिराग़ है और जब मैंने उन ख़ूशों को चुन लिया तो अपनी जानिब से भी कुछ लिख दिया जो क़ुरआन व हदीस के मुवाफ़िक़ और दीन के उसूल और फ़रोग़ के मुताबिक़ है। मेरा ख़िताब तुझ से नहीं है। यह मैं अपने ही दिल से बात कर रहा हूं बल्कि तेरे सामने तो यक़ीन की खेतियां हैं। जब मैं दस्तरख़्वान बिछाऊं तो तू उसमें से ख़ूशों को चुन और अपना फाइदा ढूंढ कि यह सब क़ुरआन व हदीस ही की बातें हैं बेहूदा चीज़ें नहीं। उनमें से ले लेना आर की बात नहीं है इसलिए बड़े-बड़े बुज़ुर्गों की कही हुई बातें हैं। यह चन्द चुने हुए वह ख़ूशे हैं जो वक़्त के दामन पर अभी नमूदार हुए हैं और

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

जिनको दर्द वालों के अंबार और पाक मर्दों के पाक खेतों से लिया है। दिल ने गौर व फ़िक्र के बाद उन चन्द खूशों के मुनासिब, उनका नाम (सबअ) सनाबिल रखा है और इस किताब का साल तस्नीफ़ 969 हिज. है।

फ़ेहरिस्ते किताब सबअ सनाबिल

पहला सुंबुला अकीदों और मज़्हबों में।

दूसरा सुंबुला पीरी मुरीदी और उसकी हक़ीक़त और माहियत के बयान में।

तीसरा सुंबुला दुनिया के छोड़ने, थोड़ी पर सब्र करने, अल्लाह पर भरोसा करने और आलम से मुंह मोड़ने में।

चौथा सुंबुला फ़कीरों की बन्दगी और उनके उम्दा अख़्लाक़ में।

पांचवां सुंबुला खौफ़ व उम्मीद में।

छठा सुंबुला वहदत की हक़ीक़तों और मारेफ़त व मुहब्बत के आसार।

सातवां सुंबुला मुख़्तलिफ़ फ़ाइदों में।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

पहला सुंबुला अकीदों और मज़्हबों में :

ऐ तालिबे सादिक़ यह समझ ले कि जो शख़्स किसी चीज़ का तलब करने वाला होता है। उस पर सबसे पहले यह बात जरूरी है कि उस चीज़ की माहियत और हक़ीक़त को जाने ताकि उसकी तलब और रग़बत उस चीज़ में पूरी–पूरी तरह हो और किसी शख़्स को यह हरगिज़ मुनासिब नहीं है कि सूफ़ियों की राह व रस्म पर चले जब तक कि उनके अक़ीदों और उनके तरीक़ों को न पहचाने इसलिए कि बहुत से दावेदारों से अह्ले हक़ का हाल पोशीदा ज़ाहिरी और बातिनी है और चलने वालों की ज़्यादती की वजह से सूफ़ियों का रास्ता और तरीक़ा बिदअतों और गुमराहियों से मिल चुका है। पस ऐ हक़ के तलब करने वाले वह उलमा जो दीन के रास्तों पर चलते हैं उनके तीन गरोह हैं। अव्वल मुहद्देसीन, दोम फ़ुक़्हा और सोम सूफ़िया। उनमें से उल्माए हदीस ने कुरआन शरीफ के मतालिब, पर मलका पाने के बाद रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़ाहिरी क़ौल व फ़ेअ्ल में एहतमामे ताम को इख़्तियार किया और (हक़ तो यह है कि) यही चीज़ दीन और इस्लाम की बुनियाद है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है।

जो रसूल तुम्हें दे उसे लो और जिस से मना करे उस से बाज़ रहो।" पस वह लोग हदीस शरीफ़ के सुनने उसके नक़्ल करने, उसके लिखने, सही को ज़ईफ़ से जुदा करने, आहादे मुतवातिर और मशहूर हदीसों में फ़र्क़ करने और हदीसों को कुरआन शरीफ़ के मुताबिक़ करने में मस्रूफ़ रहे हैं। इसलिए कि रसूले ख़ुदा अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया है।

यानी जब तुम से मेरी कोई हदीस बयान की जाए तो अगर वह कुरआन के मुवाफ़िक़ हो कुबूल करो वरना उसे छोड़ दो।" तो दरअसल यही लोग दीन के रखवाले हैं।

और फ़ुक़्हाए इस्लाम के गरोह ने अस्हाबे हदीस के इल्मों को पूरा हासिल करने के बाद एक और ख़ुसूसियत और फ़ज़ीलत हासिल की कि फ़िक़्ह व हदीस में अपने फ़हम और इस्तिंबात की कुव्वत और गहरी नज़र से, दीन के अहकाम और हुदूद में तर्बियत दी और नासिख़ व मन्सूख़, मुतलक़ व मुक़ैय्यद, मुज्मल व मुफ़स्सिर, ख़ास व आम और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मुहकम व मुतशाबेह को एक दूसरे से मुम्ताज़ किया। पस यह लोग दीन के सरदार और शरअ् के अलम्बरदार हैं कि उनका इज्तिहादे शरीअ़त के उसूल में से एक असल है कुरआन व हदीस के मानिन्द।

अब रहा सूफ़िया का गरोह तो वह उन दोनों गरोहों से उनके अक़ीदों और उनके इल्म के मानने में उनसे मुत्तफ़िक़ है और उनके आसार व रिवायात में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं रखता मगर शर्त यह है कि उनके यह मआनी और मतालिब नफ़्स की पैरवी से दूर और सहाबा की पिसरवी पर मौक़ूफ़ हों चुनांचे वह तमाम अहकाम जिन पर यह दोनों गरोह एक ज़बान हैं सूफ़ियों का गरोह भी उनके साथ है और जिन मस्अलों में यह दोनों गरोह इख़्तिलाफ़ रखते हैं गरोहे सूफ़िया ने उसमें से बेहतर और बरतर को क़बूल किया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है। फ़बश्शिर इबादियल्लज़ीना यस्तमेऊनल–क़ौला फ़यत्तबेऊना अहसनहू। पस मेरे उन बन्दों को ख़ुशख़बरी दीजिए जो बात को सुनते हैं फिर अच्छी बात पर अमल करते हैं। यहीं से वह कहावत चली है कि –

"यानी तरीक़त बएतबार असल शरीअ़त ही है न कि उसका ग़ैर।" लेकिन फ़रई मस्अलों में उनके इख़्तिलाफ़ को बुरा भी नहीं जानते इसलिए कि फ़रमाया है रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि "इख़्तिलाफ़ु उम्मती रहमतन।" यानी मेरी उम्मत का इख़्तिलाफ़ भी रहमत है।" बाज़ लोगों ने किसी सूफ़ी से पूछा कि वह कौन से आलिम हैं जिनका इख़्तेलाफ़ रहमत है। फ़रमाया : .

तरजमा : "यानी यह वह लोग हैं जो कुरआन शरीफ़ को मज़बूती से थामे हुए रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इत्तेबा और अस्हाबे रसूल की इक़्तिदा करते हैं।" लिहाज़ा दीन की फ़ुरूई बातों में इख़्तिलाफ़े रहमत है और उसूले दीन में बिदअत और गुमराही।

यानी ऐ सच्चे दिल से ईमान लाने वाले शरीअ़त के तीन उसूल हैं। कुरआन शरीफ़, हदीस शरीफ़ और मुतक़द्दमीन का इज्मा और मुस्लिम में महारत रखने वालों का क़्यास भी उन तीनों से मिला हुआ है तो तू अगर उन तीनों से क़दम बाहर निकालेगा तो दीन और इस्लाम के रास्तों से अलग जा पड़ेगा। लिहाज़ा हम पर फ़ुक़हा के अक़ीदों और उनके तरीक़ों के ज़िक्र से किताब का शुरू करना ज़रूरी हुआ कि वह हमारे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

एतक़ाद में शरीअ़त के उसूलों में से है। पैग़म्बरे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि मेरी उम्मत तिहत्तर फ़िर्क़ों पर तक़्सीम हो जाएगी। उनमें नजात पाने वाला सिर्फ़ एक गरोह है। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह वह कौन लोग हैं फ़रमाया अह्ले सुन्नत व जमाअत।

यक़ीन जान कि यह तीनों गरोह कि अह्ले सुन्नत व जमाअत से हैं इस बात पर इत्तिफ़ाक़ रखते हैं कि अल्लाह तआला वाहिदे हक़ीक़ी है अपना कोई शरीक, कोई साथी कोई हम्मता कोई मानिन्द और कोई मिसाल नहीं रखता इसलिए कि उन चीज़ों की समाई तो वाहिद अददी में समझ में आती है और वाहिदे हक़ीक़ी उनमें से किसी की गुंजाइश ही नहीं रखता और वह जिस्म भी नहीं है इसलिए कि जिस्म दो या ज़्यादा चीज़ों से मिल कर बनता है और न वह जौहर है इसलिए कि जो हर किसी न किसी चीज़ में क़रार ज़रूर पकड़ता है। और अर्ज़ भी नहीं इसलिए कि एक अर्ज़ दो ज़मानों में बाक़ी नहीं रह सकता और इबारतें और इशारे अल्लाह तआला की हक़ीक़त के बयान तक नहीं पहुंच सकते और फ़िकरें और निगाहें उसको पा नहीं सकतीं। कि अल्लाह तआला का वजूद ज़मान और मकान से भी साबिक़ है और वह कैफ़ियत व कमीयत से पाक है कि ज़ो कुछ उन चीज़ों में समा सकता है वह वाहिदे अददी होता है न कि वाहिदे हक़ीक़ी। फिर उलमा ने इस बात पर भी इत्तिफ़ाक़ किया है कि अल्लाह तआला की सिफ़ात भी उसकी ज़ात की तरह न जौहर हैं और न अर्ज़।

कश्फ़ व मुराक़बा के इमामों और पेश रूवों के नज़्दीक ज़ात और सिफ़त वह मुतरादिफ़ अल्फ़ाज़ हैं जिनके माना एक ही हैं और तरीक़त के सरदारों और असरारे वहदत के निगहबानों ने जो कुछ नुबुव्वत के ताक़ से चुना और अल्लाह तआला की तालीम व तारीफ़ से देखा और जाना है वह यह है कि अल्लाह तआला की (सिफ़ात न ऐने ज़ात हैं न ग़ैरे ज़ात यानी) सिफ़ात एक तरह उसी की ज़ात हैं और एक तौर पर उसकी ज़ात की ग़ैर ऐन ज़ात तो इसलिए कि वहां कोई दूसरा ऐसा मौजूद ही नहीं जो उसका ग़ैर बन सके और ग़ैर ज़ात इसलिए कि उनके मफ़ाहीम अलल–इत्लाक़ मुख़्तलिफ़ हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

और हई व आलम मुरीद व कादिर, इन नामों में से हैं कि उनके माना ज़ाते क़दीम के साथ क़ाइम और साबित हैं और अह्ले बसीरत के नज़्दीक हक़ीक़ते अस्मा ही माना क़दीम हैं और यह अल्फ़ाज़, उन अस्मा पर अलामतें। और इस किस्म को सिफ़ाते सुबूती कहते हैं और यह चारों इस्मे उलूहियत के चार रुक्न हैं और मुइज़्ज़, मुज़िल्ल, मुही, मुमीत, मोअ्ती, माने ज़ार्र और नाफ़े यह सब निस्बत से ज़ाहिर होते हैं और इस किस्म को सिफ़ाते इंसानी कहते हैं और सलाम, कुद्दूस और गनीयुन। यह ऐबों, बुराइयों और एहतियाज के सल्ब करने के लिए हैं और इस किस्म को सिफ़ाते सल्बी कहते हैं और तमाम अस्मा और सिफ़ात का मज्मूआ इन्हीं तीन में मुन्हसिर है। हां सिफ़ाते इज़ाफ़िया से अव्वल व आख़िर और ज़ाहिर व बातिन। उनके मुतअल्लिक उलमा ने फरमाया है कि वह अव्वल है। ऐन आख़िरीयत में। आख़िर है ऐने अव्वलीयत में; ज़ाहिर है ऐने बातनीयत में और बातिन है ऐने ज़ाहिरीयत में।

और उलमा ने इज्मा किया है कि कुरआन शरीफ़ में जो चेहरा हाथ नफ़्स और सुनने देखने के मुतअल्लिक इरशाद हुआ है और जनाबे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको बरक़रार रखा है वह अल्लाह तआला के लिए साबित है लेकिन न इस तरह कि उसकी कोई मिसाल दी जाए और न यूं कि उसे बेकार जाना जाए और अर्श पर मुस्तवी होने की सिफ़त मालूम है मगर उसकी कैफ़ियत ना मालूम उस पर ईमान लाना वाजिब है और कुरेद करना बिदअत। रही सिफ़ते नुज़ूल इसमें भी उलमा का मज़्हब यही है। फ़रमाया नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि रब तबारक व तआला आधी रात के बाद आसमाने दुनिया पर नुज़ूल फरमाता है फिर इरशाद फरमाता है क्या है कोई मांगने वाला कि मैं उसे दूं और क्या है कोई दुआ करने वाला कि मैं कुबूल करूं और क्या है कोई मग़्फ़िरत चाहने वाला कि मैं उसे बख़्शूं उस पर भी इज्मा है कि कुरआन ख़ुदाए तआला का पैग़ाम है और ख़ुदा का कलाम क़दीम है। मख़्लूक़ नहीं। हमारे सहीफ़ों में लिखा हुआ है। और हमारी ज़बानों पर पढ़ा हुआ और हमारे दिलों में महफ़ूज़ है मगर उन जगहों पर कहीं से नाज़िल नहीं हुआ। (महज़ कुदरते ख़ुदावन्दी का करिश्मा है।)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

इस पर भी इज्मा है कि अल्लाह तआला का दीदार सर की आंखों से जन्नत में होगा। मोअ्तज़िल, ज़ैदी और ख़ार्जी इस मसअला में हमारे ख़िलाफ़ हैं और दीदार के मुन्किर। इस पर भी इज्मा है कि जो कुछ अल्लाह तआला ने जन्नत व दोज़ख़, लौह व क़लम, हौज़ व कौसर व पुल–सिरात, शफ़ाअत व मीज़ान, हूर और जन्नत के महल्लात, क़ब्र का अज़ाब और मुंकर नकीर का सवाल और मरने के बाद दोबारा उठने के मुतअल्लिक़ बयान किया है। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी ख़बर दी है उनका ज़बान से इक़रार और दिल से मानना ज़रूरी है।

उस पर भी ईमान लाना ज़रूरी है कि जन्नत और दोज़ख़ बाक़ी और रहने वाली हैं और जन्नत वाले हमेशा ऐश व आराम में रहेंगे और जहन्नमी हमेशा– हमेशा अज़ाब में। इस पर भी इज्मा है कि अल्लाह तआला बन्दों के कामों का भी पैदा करने वाला है जैसा कि उनकी ज़ातों का। फरमाया अल्लाह तआला ने वल्लाहु ख़लक़कुम वमा तअ्मलूना। और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे आमाल को। लेकिन कसब करने वाला बन्दा है।

इस पर भी इज्मा है कि तमाम मख़्लूक़ अपनी मौत के वक़्त पर मरती है और फरमांबरदारी नाफरमानी ईमान लाना और कुफ़्र इख़्तियार करना यह सब अल्लाह तआला के क़ज़ाए क़द्र से है लेकिन ख़ुदाए बरतर व बुज़ुर्ग बन्दों के कुफ़्र और गुनाहगारी से राज़ी नहीं। और इस हक़ीक़त के बाद अल्लाह तआला पर किसी शख़्स को कोई हुज्जत नहीं।

उलमाए अह्ले सुन्नत ने हर मुसलमान की इक़्तिदा में नमाज़ जाइज़ क़रार दी है ख़्वाह सालेह हो ख़्वाह फ़ासिक़ (अलबत्ता फ़ासिक गोलिन को इमाम बनाना गुनाह है उसके पीछे नमाज़ पढ़नी मकरूहे तहरीमी है कि पढ़नी गुनाह है और फेरनी वाजिब। हां अगर जुमा में दूसरा इमाम न मिल सके तो जुमा पढ़े कि वह फ़र्ज़ है और फ़र्ज़ अहम इसी तरह अगर उसके पीछे न पढ़ने में फितना हो तो पढ़ लें और एआदा करें फ़तावा रज़विया) नेकियों के सबब से अह्ले सुन्नत ने महज़ अपनी अटकल से किसी ख़ास शख़्स को क़तई जन्नती नहीं कहा अगरचे वह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बहुत ज़्यादा हों और न किसी खास शख़्स की बदकारियों के बाइस उसको जहन्नमी क़रार दिया अगरचे बदकारियां बकसरत हों। तमाम अह्ले सुन्नत अल्लाह तआला की नाज़िल फरमाई हुई किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए हैं, कि तमाम नबी और रसूल दूसरी मख़्लूक से बेहतर और जनाबे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम रसूलों और नबियों से अफ़ज़ल व बरतर हैं और अल्लाह तआला ने पैगम्बरी आप पर ख़त्म फ़रमाई है।

इस पर भी अह्ले सुन्नत का इज्मा है कि नबियों के बाद दूसरी तमाम मख़्लूक़ से बेहतर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हैं। उनके बाद हज़रत उमर फारूक़, उनके बाद उस्मान जुन्नूरैन और उनके बाद अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम हैं और उन सबके बाद वह लोग हैं जो अशर-ए-मुबश्शरह में बाक़ी बचते हैं। उन दसों को रसूले ख़ुदा अलैहिस्सलातु वत्तहीया ने जन्नत में दाख़िले की बशारत दी है और बिल-यक़ीन फ़रमाया कि अबू बकर जन्नत में है, उमरे फ़ारूक़े जन्नत में हैं। उस्मान जन्नती हैं। अली जन्नती हैं। तलहा जन्नती हैं। जुबैर जन्नती हैं। सअद बिन अबी वक़ास जन्नती हैं। सईद बिन ज़ैद जन्नती हैं। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ जन्नती हैं और अबू उबैदा बिन जर्राह जन्नती हैं। रिज़वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन।

शरह अक़ाइद में लिखा है कि तीन शख़्स और हैं जिनके जन्नती होने और ईमान पर ख़ातमा होने की यक़ीनी ख़बर जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है। एक हज़रत फातिमा को, उनको जन्नत की औरतों की सरदार कहा है। दूसरे हज़रत हसन तीसरे हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम कि उन दोनों को जन्नत के जवानों का सरदार फरमाया है और आदाबुल-मुरीदीन की शरह में लिखा है कि एक रोज़ जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि मेरी उम्मत से सत्तर हज़ार आदमी बिला हिसाब जन्नत में जाएंगे पस हज़रत उकाशा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु खड़े हो गये और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह मुझे भी उन्हीं में कर दीजिए। इरशाद हुआ कर दिया।

इस पर भी इज्मा है कि तमाम पैगम्बर अलैहिमुस्सलाम तमाम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

फ़रिश्तों से बेहतर हैं और फ़रिश्तों को आपस में एक दूसरे पर फ़ज़ीलत है जिस तरह पैगम्बरों और मुसलमानों में बाहम दीगर। इस पर इत्तिफ़ाक़ रखते हैं कि कामिल ईमान यह है कि आदमी ज़बान से इक़रार दिल से तस्दीक़ और आज़ा से अमल करे लिहाज़ा जो शख़्स ज़बान से इक़रार न करे वह काफ़िर। जो दिल से न माने वह मुनाफ़िक़ और जो आज़ाए बदन से काम न ले वह फ़ासिक़ है। नीज़ अल्लाह तआला का दिल से पहचानना और ज़ुबान से (बिला वजह) इक़रार न करना दुनिया में मुफ़ीद नहीं। हां वह ईमान जो ज़बानी इक़रार से साबित होता है। किसी ज़्यादती और कमी को क़बूल नहीं करता अल्बत्ता हाथ पैरों वग़ैरह के कामों में ज़्यादती और नुक़्सान पाया जाता है और दिल से तस्दीक़ में कमी नहीं ज्यादती ज़रूर है।

इस पर अमल इज्मा है कि मज़्दूरी, तिजारत और सनअत मुबाह है जबकि नेकी और परहेज़गारी पर मदद की ख़ातिर हो मगर शर्त यह है कि रोज़ी हासिल करने की जगहों को ही रिज़्क़ के हासिल करने का सबब न जाने। इस पर भी इज्मा है कि हलाल का हासिल करना फ़र्ज़ है और दुनिया हलाल से ख़ाली भी नहीं। नीज़ जिस तरह हलाल रिज़्क़ है हराम भी रिज़्क़ है और इस मस्अला में मोतज़ेली हमारे ख़िलाफ़ हैं। वह कहते हैं कि हराम रिज़्क़ नहीं।

अल्लाह तआला के लिए दोस्ती और उसी के लिए दुश्मनी ईमान के बेहतरीन कामों में से है। इस पर भी इज्मा है कि अल्लाह वालों की करामतें पैगम्बरों के वक़्त में भी ज़ाहिर हो सकती हैं और दूसरे वक़्तों में भी।

जानना चाहिए कि मज़्हबे अह्ले सुन्नत व जमाअत के तमाम उलमा को मुहद्देसीन फ़ुक़्हा और सूफ़िया हैं। इन तमाम अक़ीदों से मुत्तफ़िक़ हैं जो अभी मज़्कूर हुए मगर ऐ सच्चे सुन्नी तुझे बहुत सी बातों में ग़ैब पर भी ईमान लाना ज़रूरी है इसलिए कि अल्लाह तआला को तो देख नहीं सकता। और फ़रिश्ते न तुझे महसूस हैं न वह तेरी नज़र में समाए हुए और तमाम नबियों और रसूलों ने पर्दा फ़रमाया और रहमत की आराम गाहों में आराम कर रहे हैं और आख़िरत की तमाम बातें और क़यामत की हालतें आने वाली चीज़ें हैं लिहाज़ा तू इन सब पर बे देखे ईमान ला

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

और यह सब अल्लाह तआला के सिखाने और बतलाने पर मौकूफ़ है।

यानी वह अक़ीदे जो मुसलमानाने अहले सुन्नत की राह हैं सब इल्मे लदुन्नी पर मौकूफ़ हैं।

शरीअते मुहम्मदी और दीने अहमदी वह बे ऐब और सीधा रास्ता है जिस पर हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनफ़्से नफ़ीस और अपनी उम्मत में से लाखों वलियों सालेहों शहीदों और हक़ पसन्दों को लेकर चले। उसे शुकूक व शुबहात के ख़स व ख़ाशाक और कांटों से पाक किया। उसकी निशानियों और मंज़िलों को मुक़र्रर और वाज़ेह किया। हर क़दम पर एक निशान क़ायम किया और हर सराए में तोशा राह रखा। और डाकुओं से हिफ़ाज़त के लिए एक क़वी क़ाफ़िला सालार हमराह किया। तो अगर कोई हवस का बन्दा, दीन में नई बातें तराशने वाला, किसी दूसरे रास्ते पर बुलाए मुसलमानों को चाहिए कि उसकी बात पर कान न धरें और सच्चे दीन की हिमायत में उसको धुतकार देना अपने फ़राइज़ में शुमार किया।

आख़िर यह अहले बिदअत व ज़लालत वही तो फ़िरक़ा है जो अपने ख़राब अक़ीदों को सीने में छुपाए रखता है और ज़ाहिर में मुसलमानों में घुला मिला रहता है। और ख़ुद को आगाह आलिमों की सूरत में ज़ाहिर करता है और जब मौक़ा पाता है ईमानी अक़ीदों को बिगाड़ने और इस्लामी सुतूनों को ढ़ाने के लिए नई बुनियाद क़ायम करता है और सादा लौह मुसलमानों के पाक दिलों को फ़ितरी पाकी से फेर देता है। ख़ुद को इस्लामी सुपर के पर्दा में छुपाता और मख़्लूके ख़ुदा की नज़रों से छुप कर लोगों को बिदअत और गुमराही की जानिब बुलाता है और यह इस्लाम के सादा दिल मुसलमान जो नेक और बद और सुन्नत व बिदअत को नहीं पहचानते, उनकी फ़साहत भरी इबारतों और बलाग़त से पुर कलिमों पर, भूल कर दीन के दुश्मन और शैतान के साथी बन जाते हैं। और जब उल्माए दीन और बुज़ुर्गाने इस्लाम के इल्म की रौशनी से उनकी गुमराही की तारीकियां छट जाती हैं तो ला मुहाला यह लोग अहले शरीअत को अपना दुश्मन बना लेते हैं और अल्लाह वाले उलमा, जो हक़ीक़तन आसमाने इस्लाम के सितारे हैं, लोगों को इन इंसानी शैतानों से महफ़ूज़ रखते है और उनके नूरानी सांस, शिहाबे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

साकिब की तरह शरीअ़त के उन उचक्कों को चारों तरफ़ हांक देते हैं और उनको पथराव और संग अन्दाज़ी से मुतफ़र्रिक़ कर देते हैं।

पस ऐ भाईयो! ख़ूब जान लो कि सुन्नत के भेदों की गहराइयों को जानना और बिदअ़त के निशानों की अन्दरूनी बातों को मालूम करना मुम्किन ही नहीं जब तक ईमान और इस्लाम की रौशनी और मुहब्बत व ताज़ीम की रहबरी मयस्सर न हो। और उनका समझ लेना अक़्ल के एहाता से बाहर है इसलिए कि अक़्ल तो सिर्फ़ दुनियाए हिकमत में उलट फेर कर सकती है कारख़ान–ए–क़ुदरत में उसे हरगिज़–हरगिज़ कोई दख़ल नहीं। यही वजह है कि यह अक़्ल जब क़ुदरत के कारख़ानों की कोई बात सुनती है तो या तो उसके मुहाल होने का हुक्म लगा देती है और कहती है कि जो चीज़ समझ में न आए वह क़ुदरत के तहत में भी नहीं या उसको ज़ाहिर से फेर देने और बदल देने में जल्दी करनी है कि फ़लां इशारा से यह चीज़ मुराद है। अल्लाह तआला का क़ौल है। अल्लाह की बातों को उनके ठिकानों से हटा देते हैं और भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी गई।" तो ज़माने के उन आक़िलों की शिकायत फ़िज़ूल है और अगर अक़्ल अपनी हुदूद में रहती और क़ुदरत के कारख़ानों के मुक़ाबले में अपनी आजिज़ी का इक़रार करती तो ग़लती में कभी न पड़ती।

फ़सले इमामे आज़म अबू हनीफ़ा कूफ़ी रहमतुल्लाहे तआला अलैह से लोगों ने मज़हबे अह्ले सुन्नत व जमाअ़त के मुतअल्लिक़ पूछा तो फ़रमाया–

यानी मज़हबे अह्ले सुन्नत यह है कि तुम हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा को, फ़ज़ीलत दो और हज़रत उस्मान ग़नी और मौलाए अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से मुहब्बत करो और मोज़ों पर मसह को जाइज़ जानो।" इससे आपका मतलब यह था कि हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु और मौलाए अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू फ़ज़ीलत में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से अगरचे कम हैं मगर ख़ुद उनमें कोई नुक़्सान और कमी नहीं और शैख़ैन यानी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की मुहब्बत ख़तनैन यानी हज़रत उस्माने ग़नी और मौलाए अली की मुहब्बत के बराबर है उसमें कोई फ़र्क़ और कजी नहीं। और इन्शाअल्लाह तआला हम इस मस्अला को अनक़रीब ही साफ़–साफ़ बयान करेंगे।

यानी इन चारों ही से मुहब्बत करना भलाई है और शैख़ैन को फ़ज़ीलत देने में तेरे अंजाम की बेहतरी। उन चारों से सच्ची मुहब्बत रख, लेकिन शैख़ैन की फ़ज़ीलत ज़्यादा मान। और अगर तेरे दिल में शैख़ैन से मुहब्बत कम है तो समझ ले कि तेरी बुनियाद रफ़्ज़ में मज़्बूत होती चली जा रही है। जुमला सहाब–ए–किराम ताबईन तबअ़ ताबईन और तमाम उल्माए उम्मत का इसी पर इज्मा है और यही इज्मा मुतक़द्देमीन व मुतअख़्ख़ेरीन अगलों और पिछलों की किताबों में लिखा हुआ और शाए हुआ है। फ़िर्दौसी ने शाहनामे में कहा है।

"यानी पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस से रास्ता ढूंढो और दिल की तारीकियां उस पानी से धो डालो कि उस साहिबे कुरआन व वही और मालिके अम्र व नही ने फ़रमाया है कि तमाम रसूलों के बाद आफ़ताब किसी ऐसे शख़्स पर न चमका जो अबू बकर से बेहतर हो और उमरे फ़ारूक़ ने इस्लाम को रौनक़ दी और इस आलमे इस्लाम को बाग़ व बहार की तरह सजाया। इन दो के बाद उस्मान ग़नी हैं जिनका शर्म और दीन में ख़ासा हिस्सा है और चौथे हज़रत अली हैं जो फ़ातिमतुज़्ज़हरा के शौहर हैं और उनकी तारीफ़ जनाब रसूले ख़ुदा ने यूं फ़रमाई है मैं इल्म का शहर हूं अली उसके दरवाज़े और पैग़म्बरे ख़ुदा का यह फ़रमाना सही रिवायत से साबित है।" इसी मज़्मून को मख़्दूम शैख़ सअ़दी ने यूं फ़रमाया है कि –

यानी अव्वल मरतबा हज़रत अबू बकर का है जो बुज़ुर्ग और रसूले ख़ुदा के ख़ास फ़रमांबरदार हैं और उमरे फ़ारूक़ सरकश देवों के जालों के लिए पंजा हैं और उस्मान ग़नी रातों को जागने वाले हैं और हज़रत अली बादशाह दुलदुल सवार हैं।" मख़्दूम क़ाज़ी शिहाबुद्दीन ने तैसीरुल–अहकाम में लिखा है कि कोई वली किसी पैग़म्बर के दरजा तक नहीं पहुंच सकता इसलिए कि अमीरुल–मुमिनीन अबू बकर सिद्दीक़ पैग़म्बरों के बाद तमाम वलियों से बेहतर हैं। जैसा कि हदीस से साबित

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

है और वह भी किसी पैग़म्बर के दरजा तक न पहुंचे और उनके बाद अमीरुल–मुमिनीन उमर बिन–ख़त्ताब हैं। उनके बाद हज़रत उस्मान बिन अफ्फ़ान और उनके बाद अमीरुल–मुमीनीन अली बिन अबी तालिब हैं रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम तो जो शख़्स हज़रत अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु वज्हहू को ख़लीफ़ा न माने वह ख़ार्जी है और जो शख़्स कि उन्हें हज़रत अमीरुल–मुमिनीन अबू बकर और उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा पर फ़ज़ीलत दे वह राफ़ज़ीयों में से है यहां तक कि तैसीरुल–अहकाम की बेऐनेही इबारत फ़ार्सी है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है।

यानी अबू बकर नमाज़ और रोज़ों पर कसरत की वजह से सबक़त नहीं ले गये लेकिन उस चीज़ की वजह से जो उनके दिल में डाल दी गई है।" और इसी लिए उन से वह बातें ज़ाहिर हुईं जो किसी दूसरे से ज़ाहिर न हुईं चुनांचे हम उनके बाज़ हालात बयान करते हैं।

अव्वल यह कि एक रोज़ रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम अपने अस्हाब के साथ मक्के में बैठे हुए थे फरमाया कि अनक़रीब हिजरत होगी लेकिन ऐसे वक़्त में कि किसी को ख़बर न हो। यहां तक कि एक रोज़ आधी रात को जिब्रीले अमीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह ख़ुदा का इरशाद है कि मक्का से हिजरत कीजिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठ खड़े हुए और चल दिए, जब दरवाज़े पर पहुंचे देखा कि अबू बकर मौजूद हैं। फरमाया ऐ अबू बकर तुम्हें किस ने ख़बर दी, अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह उस रोज़ आपने फरमाया था कि हिजरत ऐसे वक़्त में होगी कि किसी को पता न चलेगा। उसी रोज़ से अपने घर नहीं सोया हूं और तमाम रात हुज़ूर के दरे दौलत पर हाज़िर रहता हूं।" पस यह तपाक और जां सोज़ी उसी शय अज़ीम की निशानियों में है। जिस को अबू बकर सिद्दीक़ के दिल में काफ़ी मिक़्दार में रखा गया था और यह हालत किसी और से ज़ाहिर न हुई।

इसी तरह एक मरतबा जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिस्सलातु वस्सलाम अपने अस्हाब के साथ मदीने में तशरीफ़ फरमा थे कि यह आयत नाज़िल हुई कि –

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तरजमा : आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया।

तमाम अस्हाब उसको सुन कर बहुत ज्यादा खुश और मस्रूर हुए कि अल्लाह का शुक्र है कि उसने हमारे दीन को कामिल कर दिया और अपनी मारिफ़त और तौहीद को पूरा किया और हमारे दीन पर कि इस्लाम है राज़ी हुआ।' सब खुश थे और शुक्र अदा कर रहे थे और अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु ज़ार व क़तार रोने में मस्रूफ़। जब उन से उस रोने का सबब पूछा गया तो फ़रमाया कि मुझे इस आयत से फ़िराके यार की बू आती है इसलिए कि अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हमारे दीन को कामिल और नेमत को तमाम करने की ख़ातिर भेजा था और सब हमारे दीन को कामिल कर दिया और मारिफ़त और तौहीद की नेमत हमें अता फ़रमा दी तो अब अल्लाह तआला उन्हें हम में न रखेगा चुनांचे ऐसा ही ज़ुहूर में आया।

और यह दानाई व फ़ेरासत भी उसी अमरे अज़ीम के आसार से थी जो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के दिल में रासिख़ फ़रमाई गई थी कि यह हाल किसी और से ज़ाहिर न हुआ और चन्द रोज़ के बाद जब जनाबे रसूले ख़ुदा अलैहिस्सलाम वत्तहीया ने पर्दा फ़रमाया तो तमाम अस्हाब को ऐसा ग़म व अफ़्सोस हुआ कि अपनी ज़िन्दगी उनको दूभर मालूम होने लगी और जमाले जहां अराए मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेग़ैर उनको जीना अच्छा मालूम न हुआ और अपने-अपने ग़म रसीदा दिल और बहती आंखें लेकर गोशा नशीन हो गये और दुनिया की तरफ़ से अपने दरवाज़ों को बन्द कर लिया। चुनांचे हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने यह क़सम खाई कि जो शख़्स मेरे सामने यह कहेगा कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वफ़ात पाई, मैं उसे जान से मार दूंगा। तीस हज़ार अस्हाब तशरीफ़ रखते हैं मगर किसी को यह ख़्याल नहीं आता कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के मुतअल्लिक़ कुछ कहे मगर उस वक़्त हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु मिम्बर तशरीफ़ ले जाते हैं। रब तआला की हम्द व सना

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बयान की उसके बाद फरमाया कि –

यानी तुम में जो शख़्स मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की परस्तिश करता था वह जान ले कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वफ़ात पाई लेकिन जो शख़्स मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रब की बन्दगी करता था तो बेशक रब्बे मुहम्मद जल्ला व उला ज़िन्दा है और वह फ़ौत नहीं होगा।" यह भी वह चीज़ है जिसका इज़हार दूसरे अस्हाब न कर सके।

नीज़ आपने मुरतदीन से यहां तक जिहाद किया कि इस्लाम महफ़ूज़ हो गया। उसका वाक़या यूं है कि जब मुख़ालेफ़ीने इस्लाम ने यह देखा कि तमामी सहाबा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के गम व हसरत में मुब्तला हैं और किसी दूसरे कलाम में मशग़ूल नहीं तो सब ने जमा हो कर यह मश्वरा किया अस्हाब की तरफ़ बढ़ कर हमला करें और दीने मुहम्मदी के अहकाम को ज़ेर व ज़बर कर दें। सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने तमाम सहाबा को बुलाया और फरमाया कि ऐ दोस्तो! रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़िराक़ की मुसीबत तो हम में अज़ सरतापा समा चुकी है कि हमें बेग़ैर आपके ज़िन्दगानी नहीं भाती लेकिन जब तक हमारी ज़िन्दगी है हम न मर सकेंगे। और इस मुसीबत को हम क़ब्र में ले जाएंगे। हमारी जान हमारा घर और हमारा माल व मताअ् दीने मुहम्मद पर क़ुरबान हो उस वक़्त मुख़ालेफ़ीने इस्लाम ने बिल–इत्तिफ़ाक यह ठानी है कि दीने इस्लाम के अहकाम को मुन्तशिर बल्कि मअ्दूम कर दें। अगर हमने इस काम में तन आसानी और बेतवज्जेही बरती तो कल क़यामत में जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुंह कैसे दिखाएंगे और हक़ तआला के क़हर व एताब को क्या जवाब देंगे। अल्लाह तआला का क़ौल है।

तरजमा : और नहीं हैं मुहम्मद मगर रसूल उन से पहले बहुत से रसूल गुज़र चुके तो अगर वह वफ़ात पाएं या शहीद कर दिए जाएं तो क्या तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे।"

मर्द बनो और मर्दों की तरह सामने निकलो और दीने इस्लाम की हिफ़ाज़त में चुस्ती और फ़ुरती दिखलाओ। आपके इस फरमान पर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तमाम सहाबा मुस्तइद हो गये और राब बयक दम मुख़ालेफ़ीन पर टूट पड़े और मुरतदीन को वासिले जहन्नम किया। अल–क़िस्सा दीने इस्लाम की मुहाफ़िज़त का शर्फ़ सबसे पहले आप ही को नसीब हुआ।

और यह भी उसी अमरे अज़ीम की निशानियों में से है जिसे अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु के सीन–ए–मुबारक में साबित फरमा दिया गया था और आपका यह एहसान और उसका शुक्रिया क़यामत तक इस उम्मत के मुसलमानों पर बाक़ी रहेगा।

रिवायत है कि जिस रोज़ आपने अपना तमाम सामान अल्लाह तआला की रज़ा के रास्ता में क़ुरबान कर दिया था। आप एक सब्ज़ कम्बल ओढ़ कर हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया "आगे बढ़ो।" आप आगे बढ़ गये, फिर इरशाद फरमाया "और आगे बढ़ो।" आप और आगे बढ़ गये। इसी तरह हुज़ूर यह कलिमा बार–बार इरशाद फ़रमाते रहे और आप हर मरतबा बढ़ते रहे यहां तक कि आप का जानो हुज़ूरे अनवर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बराबर हो गया। हुज़ूर ने इरशाद फरमाया "अबू बकर मेरे और तुम्हारे दर्मियान सिर्फ़ इतना ही फ़र्क़ है कि मैं नबी बना कर भेजा गया हूं।"

और यह भी उसी अमरे अज़ीम के निशानों में से है जिसे सिद्दीके अकबर रज़ि अल्लाहु अन्हु के मुबारक दिल में पैदा कर दिया गया था। उसके बाद एक आराबी खड़ा हुआ और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सिद्दीके अकबर को यह तमाम मरतबे इसलिए मिले हैं कि वह रज़ाए इलाही में अस्सी हज़ार दीनार ख़र्च कर चुके हैं। अगर हम भी इतने ही दीनार सदक़ा कर दें तो इस दरजा तक पहुंच जाएंगे आपने इरशाद फरमाया "नहीं"। फिर यह हदीस फ़रमाई कि–

यानी अगर अबू बकर का ईमान मेरी तमाम उम्मत के साथ तौला जाए तो अलबत्ता अबू बकर के ईमान का पल्ला भारी रहे।" और यह भी उसी अमरे अज़ीम के आसार से है जो आप के दिल में जमा दिया गया था। उसके बाद फिर हुज़ूर ने आपसे दरयाफ़्त फ़रमाया कि "अपने बच्चों के लिए छोड़ आए।" जवाब दिया "अल्लाह और उसका रसूल" इतने में हज़रत जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलाम सब्ज़ कम्बल ओढ़े हुए

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हाज़िरे ख़िदमत आए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह फ़रमाने ख़ुदा है कि अबू बकर से पूछिए क्या मैं तन्हा पसन्द न था कि मेरे नाम के साथ रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम भी मिला लिया।' तमाम पाकी अल्लाह ही को ज़ेबा है। हम उसकी हम्द बकसरत बयान करते हैं। यह कौन सी मंज़िल है और क्या रुतबा और क़ुर्बत है कि अल्लाह तआला रसूल का नाम लेने पर हज़रत अबू बकर रज़ि. से ग़ैरत फ़रमाता है अक़्ल व ख़िरद यही पर ताक़ते परवाज़ खो बैठती है और इस बन्द-ए-आजिज़ के ज़ेहन में यह बात आती है कि इस एताब का राज़ यह हो कि ऐ अबू बकर तुम्हारी मारिफ़त का क़दम इस हद तक पहुंच चुका है कि रसूल को हम से जुदा नहीं देखते इसलिए कि वह फ़ना फ़िल्लाह हैं और हम उनमें जल्वा फ़रमा। पस इलाहिदा ज़िक्र क्यों किया? इसी लिए कहा गया है कि अर्श से लेकर फ़र्श तक हर चीज़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गुलाम है और जब हक़ ने तजल्ली फ़रमाई तो (अब ख़ुदा से जुदा) मुहम्मद कहां। सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

यह भी बात दिल को भाती है कि अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने जो जवाब दिया वह अह्ल व अयाल के मरतबा के एतबार से ना था अपनी ज़ात के एतबार से इसलिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दरयाफ़्त फ़रमाया था कि अपने अह्ल व अयाल के लिए क्या छोड़ा। हां अगर यह फ़रमाते कि अपने नफ़्स के लिए क्या छोड़ा उस वक़्त अपने मारेफ़त के मक़ाम से जवाब देते और कहते कि सिर्फ़ ख़ुदा।'

काश कोई और मंज़र भी उस पर्दा से ज़ाहिर हो कि सिरा पर्द-ए-क़ुदरत में हज़ार हैरतज़दह मनाज़िर मौजूद हैं और जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को सब्ज़ कम्बल ओढ़े देखा तो दरयाफ़्त फ़रमाया कि भाई जिब्रील यह लिबास तो ख़ाक पर बसने वालों ही का ख़ासा है तुम्हारा इससे क्या वास्ता? अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह आज एक ख़ाकी मुवाफ़िक़त में तमाम आसमानी रूहानियों, और हज़ीर-ए-क़ुद्स के तमाम फ़रिश्तों को उस लिबास से मुशर्रफ़ फ़रमाया गया है। सुबहानल्लाह।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की कि ऐ खुदा मेरी आरज़ू यह है कि गुदड़ी पहनू। इरशाद हुआ हमारे दोस्तों के लिबास की आरज़ू कर रहे हो क्या तोहफ़ा लाए हो। मूसा अलैहिस्सलाम के पास जो कुछ था फ़कीरों को बांट दिया। फिर गलीम को ओढ़ा उस वक़्त किसी फ़रिश्ता ने कलीमुल्लाह की मुवाफ़िकत में गलीम न ओढ़ी। उस वक़्त तुम्हारी समझ क्या बतलाएगी जबकि हक़ तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि मेरे दोस्तों के लिबास की तमन्ना कर रहे हो।" यही ना कि अबू बकर भी उसके उन्हीं दोस्तों में से हैं कि जिनके लिबास की आरज़ू मूसा अलैहिस्सलाम ने की। और यह कि अल्लाह तआला के जितने दोस्त गलीम पोश हैं फ़रिश्तों ने किसी की मुवाफ़िकत में कम्बल न ओढ़ा। पस इस एतबार से हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु उसके तमाम दोस्तों पर सबक़त ले गये। ऐ दोस्त यह हरगिज़ न समझ बैठना कि अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़ज़ीलत में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर फ़ौक़ियत रखते हैं इसलिए कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने मसाकीन के गरोह के साथ सोहबत की तमन्ना की है कि -

"ऐ अल्लाह मुझे मिस्कीन की ज़िन्दगी दे। मुझे वफ़ात के वक़्त मिस्कीन रख और मेरा हश्र मिस्कीनों के गरोह में फरमा।"

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम से इरशाद हुआ।

ऐ दाऊद जब तुम कोई हमारा चाहने वाला देखो उसकी ख़िदमत इख़्तियार करो।" और उस जगह न मिस्कीनों के गरोह की फ़ज़ीलत रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर साबित होती है। और न सच्चे चाहने वालों का फ़ज़्ल हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर साबित होता है अगर असरार की यह गहराइयां और लताइफ़ की यह बारीकियां तुम्हारी समझ में न आएं तो एतेराज़ में जल्दी न करो। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि -

"ऐ मुसलमानो! अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ।" उस जगह यह बात मालूम होती है कि हर ईमान से ऊपर एक ईमान और है और हर इस्लाम से बाला एक और इस्लाम। पस ईमान वह बुलन्द इमारत है कि उसके ज़ीना में बेशुमार सीढ़ियां हैं और इस्लाम वह आली शान महल है कि जिसकी सीढ़ी में बेशुमार पायदान हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बाला ख़ाना की तरफ़ तो सैंकड़ों दर्जे हैं तुझे एक पाया मिला है तू तो खुश है। (यह क्यों)

और फ़रमाया अल्लाह तआला ने कि "फ़ौका कुल्ले ज़ी इल्मिन अलीमुन।" हर जानने वाले पर एक और जानने वाला है।" यही वजह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु रोज़ पूछते थे कि 'या रसूलुल्लाह ईमान क्या चीज़ है।' और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनको उनके दरजा से बढ़ कर ईमान बतला दिया करते थे और अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु रोज़ाना खुद को उसी दरजा पर पहुंचा देते और फिर सवाल करते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके ईमान के मक़ाम से बढ़ कर दूसरा मक़ाम बता देते और इसी तरह रोज़ाना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ का ईमान बढ़ता रहा और इस मरतबा पर पहुंचा कि हुज़ूर अलैहिस्सलात वस्सलाम ने फ़रमा दिया कि अगर अबू बकर का ईमान मेरी तमाम उम्मत के ईमानों के साथ तौला जाए तो अल्बत्ता उनका ईमान वज़नी ठहरे। और उस जिन्स से हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु की फ़ज़ीलत की वज्हें हैं। कहां तक लिखूं और मैं हूं कौन कि इस जगह कोई दख़ल दूं।

अब मज़्हबे अह्ले सुन्नत व जमाअत को बयान करता हूं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा को हज़रत उस्मान ग़नी और हज़रत मौलाए अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा और तमाम अस्हाब पर फ़ज़ीलत हासिल है। एक रोज़ जिब्रील अलैहिस्सलाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे और अमीरुल-मुमिनीन उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु आ रहे थे। हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह यह उमर हैं जो तशरीफ़ ला रहे हैं। इरशाद फ़रमाया हां फिर फरमाया भाई जिब्रील उमर को आसमान वाले भी पहचानते हैं? हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह उस ख़ुदाए बरतर की क़सम जिसने आपको हिदायते मख़्लूक़ के लिए मबऊस फ़रमाया उमर आसमान पर ज़्यादा मशहूर हैं बमुक़ाबला ज़मीन के। इरशाद फ़रमाया कि उमर के कुछ फ़ज़ाइल बयान करो। अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह।" अगर मैं नूह अलैहिस्सलाम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

की उमर लेकर आपके रू-ब-रू उमरे फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाइल ब्यान करना चाहूं तो पूरे ब्यान न कर सकूंगा और जब उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु मज्लिस मुबारक में तशरीफ़ ले आए, तो रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया! ऐ उमर अगर मैं मबऊस न फ़रमाया गया होता तो अल्बत्ता तुम पैग़म्बर होते।" मगर इन तमाम फ़ज़ाइल के बावजूद हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु की नेकियों में से एक नेकी हैं। यहीं से यह बात समझना चाहिए कि दुनिया में न मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सा मुर्शिदे हुवैदा हुआ और न अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु जैसा मुरीद ज़ाहिर।

ऐ अज़ीज़ अगरचे शैख़ैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा को हज़रात ख़तनैन (हज़रत उस्मान ग़नी व मौला अली) रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा पर कमाले फ़ज़ीलत और ज़्यादती व फ़ौक़ियत का एतक़ाद रखना चाहिए मगर न इस तरह कि ख़तनैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा के कमाल फ़ज़ाइल में कोई क़ुसूर और नुक़्सान का ख़तरा भी तेरे दिल में समाने पाए बल्कि उनके और तमाम अस्हाब के फ़ज़ाइल, बशरी अक़्लों और इंसानी फ़िक्रों से बहुत बुलन्द व बाला हैं इसलिए कि उनमें से हर एक के फ़ज़ाइल इस क़द्र हैं कि अगर जिब्रीले अमीन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की उम्र लेकर बयान करना चाहें तो पूरा न कर सकेंगे। तो अपनी फुसफुसी अक़्ल और तारीक दिल के साथ यहां क्या दख़ल दे सकता है। अपनी हद पर ठहरना चाहिए ताकि तू अपने ईमान को न खो बैठे।

मैं जानता हूं कि यह बात सुनने वालों के कबूलियत वाले कान में न आएगी। यानी यह कि एक को कमाल व फ़ज़्ल में, दूसरे पर बाला व बरतर समझना और इस दूसरे को कि जिस पर फ़ज़ीलत दी गई है कमतर और नाक़िस न जानना क्योंकर हो सकता है। ऐ अज़ीज़ एक समाअ़त के लिए वल-क़यस्समआ वहुवा शहीद। (उसने कान ठीक दिए और हाल यह है कि उसका दिल भी हाज़िर है) के मक़ाम पर हाज़िर आ। ताकि एक मिसाल पेश करूं। मसलन आफ़ताब के चौथे आसमान पर है और छोटा नज़र आता है और उसकी चौड़ाई, लम्बाई और गहराई को अक़्ल से मुतऐयन और मुक़द्दर नहीं किया जा सकता और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अगर इस फ़राख़ी व उस्अत का तुझे इल्म हो जाए तो इज़्तिरार व हैरत में डूब जाए और उसकी मिक्दार का अन्दाज़ा न कर सके। ऐ अज़ीज़ मश्रिक़ व मग़्रिब का दर्मियानी फ़ासला जितना है उससे एक सौ साठ गुना मसाफ़त, सूरज की उस्अत व फ़राख़ी की है। तू उसे अपनी अक़्ल से मुऐयन व मुक़द्दर कर लेना बड़ा दुशवार मरहला है (बस इतना समझ लो) सूरज की तेज़ रफ़्तारी का आलम यह है कि आंख झपकते हज़ारों मील तय कर लेता है। मन्कूल है कि एक रोज़ हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हाज़िर थे। आपने दरयाफ़्त फरमाया कि जिब्रील ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त हुआ या नहीं? जिब्रील ने अर्ज़ किया "नहीं हुआ। हो गया।" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया। यह क्योंकर? अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह जिस वक़्त आपने दरयाफ़्त किया था। वक़्ते ज़ुहर न हुआ था। और जब मैंने अर्ज़ किया कि नहीं हुआ तो इतनी ही देर में सूरज हज़ारों मील आसमान पर तय कर गया और ज़ुहर का वक़्त हो गया।" लिहाज़ा आफ़ताब की उस्अत की मिक्दार मालूम करना और उसकी सैर की तेज़ी की कैफ़ियत जानना, नक़्ले सहीह ही से मालूम हो सकती है न कि अक़्ले फ़सीह से।

यही हाल है ख़ुल्फ़ाए राशिदीन के फ़ज़ाइल का कि बेवक़ूफ़ उसमें अपनी अक़्ल और फ़िक्र से कलाम करते हैं और अगर उसकी हक़ीक़त और माहियत मालूम कर लें तो मुतहैय्यर और परेशान रह जाएं और उनको मुतऐयन और मुक़र्रर न कर सकें। अब आफ़ताब की उस्अत आसमान की उस्अत के मुक़ाबला में क़्यास करो कि क्या होगी। आफ़ताब आसमान में ऐसे ही गर्दिश करता है जिस तरह समुन्द्र में कश्ती चलती है और पहले आसमान की उस्अत दूसरे आसमान की उस्अत के मुक़ाबला में मुख़्तसर है और ऐसे ही दूसरा आसमान तीसरे के मुक़ाबला में और इसी क़्यास पर सातवें आसमान तक। यह भी याद रखो कि ज़मीन से आसमान तक पांच सौ साल का रास्ता है और एक आसमान से दूसरे आसमान का फ़ासिला भी इसी क़द्र है फिर यह सातों आसमान, सातों ज़मीनों के साथ मिल कर कुर्सी की उस्अत के मुक़ाबला में ऐसे हैं जैसे गुंबद के मुक़ाबला में ढाल। अल्लाह तआला ने फरमाया।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

वसेआ कुरसीयहुस्समावाते वल–अर्ज़े। उसकी कुर्सी आसमानों और ज़मीनों से वसीअ् है।" फिर कुर्सी की फ़राख़ी अर्शे आज़म की फ़राख़ी के साथ यही हुक्म रखती है। फिर अर्शे आज़म की निस्बत ख़ुल्फ़ाए राशिदीन के दिलों की उस्अत के साथ। (किस के वहम व गुमान में आ सकती है। बस) इसमें मुख़्तसर सी बात यह है कि अर्शे आज़म इस जैसे सौ और अर्श बल्कि जो कुछ उनमें है अगर यह ख़ुल्फ़ाए आरेफ़ीन के दिल में गुज़र करें, उनको ख़बर भी न हो। अल्लाहु अकबर कबीरा। अल्लाह ही बुज़ुर्ग व बरतर है।

ग़रज़ जिब्रील अलैहिस्सलाम ने इसी बिना पर यह बात कही थी कि अगर मैं उन दिलों के फ़ज़ाइल को उम्रे नूह अलैहिस्सलाम लेकर बयान करना चाहूं तो बयान न कर सकूंगा इसलिए कि यह दिल वह दिल हैं कि अर्शे आज़म की अज़मत और वसीअ् तरीन कुर्सी की उस्अत उन दिलों की अज़मत व उस्अत के मुक़ाबला में अपना बिस्तर समेटती रहे और जब मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ौक़ा कुल्ले ज़ी इल्मिन अलीम। (हर जानने वाले पर एक और आलम है) के मुक़्तज़ा पर उन दिलों में से एक के फ़ज़्ल और फ़ौक़ियत का दूसरे पर हुक्म किया तो उन दिलों में जिन पर फ़ज़ीलत का हुक्म किया गया है। क्या कमी और नुक़्सान हो सकता है कि तू उसको जाने। इसलिए कि यह दिल अर्श से ज़्यादा अज़मत और कुर्सी से ज़्यादा उस्अत वाले हैं। इसी वजह से उल्मा ने यह तज्वीज़ फरमाया है कि शैख़ैन की फ़ज़ीलत तो ख़तनैन पर ज़्यादा है मगर न इस तरह कि ख़तनैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा के फ़ज़ाइल में कोई कमी या नुक़्स लाहिक़ हो। अल–क़िस्सा यह वह असरार हैं जिनको मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला की दरगाह से हासिल किया और फिर उनको अपने अस्हाब पर कश्फ़ फ़रमाया। और यह वह अहकाम हैं जिन्हें अस्हाब के दिलों में अमानत के तौर पर रखा और तमामी अस्हाब ने ख़्वाह ख़ुल्फ़ाए राशिदीन हों या अह्ले बैत से हों या और उनके अलावा, इन असरार व अहकाम पर इत्तिफ़ाक़ किया और यह बयाने दीन में इस क़द्र ठोस है। अगर इन हुक्मों में से एक हुक्म या उन भेदों में से एक भेद सही तौर पर तुझ तक पहुंचे तो तुझे चाहिए कि उसकी तस्दीक़ करे और उस

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

नेमत पर अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करे और कमी या ज़्यादती का एक ज़र्रह भी उसमें रवा ना जाने।

यानी हमने बेहतरीन अकीदे बयान कर दिए और दरियाए मारेफ़त के मोती चुन दिए हैं। अगर तू मारिफ़ते इलाही के दरिया में गोता ज़न है तो खुद ही उन लाजवाब मोतियों की क़द्र जान लेगा।"

ऐ अज़ीज़! सहाबा के दिलों की कुशादगी और उनके सीनों की फ़राख़ी हर आन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत की तासीर से होती रही यहां तक कि उनके सच्चाई और खुलूस से भरे हुए दिल रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ल्बे मुबारक के आफ़ताब के मुकाबला में आ गये और हर घड़ी हर साअत उन पर दीनी अनवार और यक़ीनी असरार का इस क़द्र फ़ैज़ान होता रहा कि तहरीर व तक़रीर में नहीं आ सकता और वह हदीस जो मख़्दूम शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी कुद्दिसा सिर्रुहू ने अवारिफ़ में नक़ल की है कि –

यानी अल्लाह तआला ने मेरे दिल में कोई चीज़ इल्क़ा न फरमाई मगर मैंने वह अबू बकर के दिल में डाल दी।" वह तमाम अस्हाब के हक़ में है और अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु का ख़ुसूसियत का ज़िक्र फरमाना उनके मज़ीद फ़ज़्ल व शर्फ़ की वजह से है और ऐसे ही वह हदीस कि अना मदीनतुल–इल्मे व अलीयुन बाबुहा। मैं इल्म का शहर हू और अली उसका दरवाज़ा। उसमें अली मुर्तज़ा का ज़िक्र उनके मज़ीद फ़ज़्ल व शर्फ़ की वजह से है वरना तमाम सहाबा उस शहर के दरवाज़े हैं इसलिए कि दीन के तमाम उलूमे उम्मत के जुमला उलमा को उन्हीं दरवाज़ों से पहुंचे हैं। और वह जो रसूले खुदा अलैहिस्सलातु वत्तहीया ने इरशाद फ़रमाया है कि या अबा बकरिन लैसा बैनी व बैनका फरकुन इल्ला इन्नी बुइस्तु। ऐ अबू बकर मुझ में और तुममें सिर्फ़ यही फ़र्क़ है कि मैं मबऊस फ़रमाया गया हूं।" और वह इरशाद कि ऐ उमर अगर मैं मबऊस न फरमाया गया होता तो तुम पैगम्बर होते।" यह भी तमाम अस्हाब ताबईन, तबअ् ताबईन और उम्मत के तमाम उलमा के हक़ में वारिद है। इसी लिए हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फरमाया है। कि उल्माए उम्मती का बुनियाद बनी इस्राईल यानी मेरी उम्मत के उलमा बनी इस्राईल के अंबिया की तरह हैं।" नीज़ हुज़ूर ने ख़ास

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned with CamScanner

कर हज़रत अबू हनीफा कूफ़ी रज़ि अल्लाहु अन्हु के हक़ में इरशाद फरमाया है कि–

"अगर मैं मबऊस न फरमाया गया होता तो नौमान बिन साबित को नबी बना कर भेजा गया होता और वह मेरी उम्मत के चिराग़ हैं। मेरी उम्मत की शमअ हैं। मेरी उम्मत की मशअल हैं।

पस जब कि सहाबा का इज्मा जो नबियों का वस्फ़ रखते हैं इस अम्र पर हुआ कि शैख़ैन को फ़ज़ीलत हासिल है। और अली मुर्तज़ा खुद भी इस इज्मा से मुत्तफ़िक़ और इसमें शरीक हैं तो तफ़्ज़ीली अपने एतक़ाद में ज़रूर ग़लती पर हैं। अरे हमारी इज़्ज़त व आबरू तो अली मुर्तज़ा के नाम पर कुरबान, और हमारी जान और दिल अली मुर्तज़ा के क़दमों पर निसार, वह कौन सा अज़ली बदबख़्त है जिसके दिल में अली मुर्तज़ा की मुहब्बत न हो। अल्लाह तआला की बारगाह का वह कोई रांदा हुआ होगा जो अली मुर्तज़ा की तौहीन रवा रखेगा मगर तफ़्ज़ीलीयों ने यह ढोंग रचाया है कि मुर्तज़ा के साथ मुहब्बत का नतीजा सिर्फ़ यही है कि उन्हीं शैख़ैन पर फ़ज़ीलत दी जाए मगर यह नहीं समझते कि उनके साथ मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि उनकी मुवाफ़िक़त की जाए न कि मुख़ालिफ़त जब खुद अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़ और हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हुम की फ़ज़ीलत को अपने ऊपर रवा रखा और उनकी इक़्तिदा की, और उनके ज़माना ख़िलाफ़त में उनके हुक्मों पर अमल किया तो अब मुहब्बत की शर्त यह है कि राह व रविश में उन से मुवाफ़िक़त रखें। न यह कि मुख़ालिफ़ बरतें।

मगर यह तफ़्ज़ीलिए तो यह समझते हैं कि अली मुर्तज़ा और तमाम सहाबा ने हक़ पोशी अख़्तियार की या सच्ची बात कहने से ख़ामोश हो बैठे या शैख़ैन और उस्मान ज़ुन्नूरैन ज़बरदस्ती मसनदे ख़िलाफ़त पर बैठ गये और ख़्यानत बरती। उन्हें न ख़िलाफ़त का कोई हक़ पहुंचता था और न उस पेशक़दमी का। हालांकि यह चीज़ खुद उन से मुहाल महज़ है। वल्लाह क़सम है कि उन से ज़र्रह भर भी ज़बरदस्ती और हक़ पोशी सादिर न हुई और राई बराबर भी कोई फ़र्क़ या हक़ से तजावुज़ उन से रूनुमा न हुआ इसलिए कि अगर उनमें एक राई भी फ़र्क़ या हक़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

से तजावुज़ पाया जाता तो अल्लाह तआला हरगिज़ कुरआन शरीफ़ की आयतों में उनकी तारीफ़ न फ़रमाता और उनमें एक भी, अगर ज़र्रा बराबर अह्दे शिक्नी बरतता तो मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उम्मत की हिदायत, अस्हाब की इक्तिदा पर मुक़र्रर न फ़रमाते वह रसूल कि ख़ुदाए बरगुज़ीदा ने अपनी रुबूबियत उनकी मुहब्बत पर ज़ाहिर फ़रमाई और यह अट्ठारह हज़ार आलिम उन्हें के तुफ़ैल में पैदा फ़रमाया और उनको तमाम नबियों से अफ़्ज़ल बनाया वह अपने अस्हाब के मुतअल्लिक ख़बर देते हैं कि अस्हाबी कन्नुजूमे बेऐय्येहिम इक्तदैतुम इह्तदैतुम।" मेरे सहाबा सितारों की मानिन्द हैं। तुम जिसकी पैरवी करोगे राह पाओगे।"

फिर अल्लाह तआला ने उनके दीन और इस्लाम के मनाकिब यूं बयान फ़रमाए।

तरजमा : यानी आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत तमाम कर दी और तुम्हारे लिए दीने इस्लाम को पसन्द फ़रमा लिया।" यह मल्ऊन और रू सियाह उन सहाबा के इज्मा के ख़िलाफ़ जुरअत करता है। और ख़ुदा के रसूल के फ़रमान से बाहर निकलता है फिर भी यह गुमान करता है कि मैं तो मुर्तज़ा से मुहब्बत करता हूं। यह भी अजीब अहमक़ है कि मुर्तज़ा की मुख़ालिफ़त को उनके साथ मुहब्बत समझता है इसलिए कि अल्लाह और रसूल का फ़रमान और सहाबा का इज्मा क़बूल नहीं करता और फ़ासिद अक़ीदा और बातिल तसव्वुर को इमाम बनाए फिरता है। यह सिवाए तह–ब–तह कुफ़्र और पर्दा दर पर्दा गुमराही के कुछ नहीं। वह रिवायतें और वह मस्अले जो इज्माए उम्मत के मुख़ालिफ़ और मनाकिज़ हैं सरासर ग़ैर मस्मूअ़, नाक़ाबिले क़ुबूल और महज़ ग़लत हैं। इसलिए कि इमाम आज़म अबू हनीफ़ा कूफ़ी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया है कि अगर मेरा क़ौल सहाबा के इज्मा के ख़िलाफ़ पाओ तो मेरा क़ौल फोड़ दो और इज्माए सहाबा पर अमल करो।

सहाबा का इज्मा–ए–दीन की बुनियाद रोशनियों का मतला और यक़ीन की कुंजी है तो जो शख़्स इस इज्मा से इंकार करता है उससे ख़ुदा और मुस्तफ़ा जल्ला व उला व सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेज़ार

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हैं और वह अल्लाह तआला के दरबार से जल्द ही मरदूद हो जाता है। उसकी बदबख़्ती की गिरह को नहीं खोला जा सकता इसलिए कि उन अस्हाब बा सफ़ा का इंकार ख़ुदा व मुस्तफ़ा का इंकार है तो जिस का रास्ता सुन्नत के ख़िलाफ़ है उसकी गर्दन में लानतों के तौक़ हैं। याद रखो कि बाज़ राफ़्ज़ी यह एतक़ाद रखते हैं कि जिब्रील अलैहिस्सलाम को वही पहुंचाने में ग़लती हो गई इसलिए कि उन्हें मुर्तज़ा पर वही पहुंचाने के लिए भेजा गया था और वह मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हुए। हां तअज्जुब है जिब्रील अलैहिस्सलाम पर कि तमाम नबियों और रसूलों पर वही लेकर आते रहे किसी जगह ग़लती न की और जब नबियों और रसूलों के सरदार अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर वही के लिए भेजा गया तो यहीं ग़लती कर बैठे। और अगर बफ़र्ज़े मुहाल उन से ग़लती हो भी गई तो ख़ुदाए तआला के इल्म में ग़लती न थी वह उन्हें उस से बाज़ रखता। फिर अल्लाह तआला ने जनाबे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र हर ज़माने के पैग़म्बर से किया और हर किताब में तहरीर फ़रमाया। क्या यह भी वहम परस्ती और ग़लती ही थी और हां वह जो बारह नबियों ने यह तमन्ना की है कि काश हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत से होते। यह कौन सी मुशब्बह और ग़लती की जगह है। यह अक़्ल का पौदा औबार के गहरे समुन्द्र में इस बुरी तरह डूबा है कि अगर उसके इस औबार की तफ़्सील के लिए एक दरियाए वसीअ को रौशनाई बनाएं तो यंफ़िदुल–बहरू वह दरिया ख़ुश्क हो जाए।

यानी अगर किरामन कातेबीन उसकी बदबख़्ती को लिखें तो उसके लिए एक वसीअ दरिया की रौशनाई बनाएं।

राफ़्ज़ीयों का यह भी अक़ीदा है कि यह बात तमाम अस्हाब को मालूम थी कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने वही पहुंचाने में ग़लती की है मगर उन्होंने जान बूझ कर हक़ पोशी की और सच्ची बात कहने से ख़ामोश रहे। इसी वजह से वह अस्हाब पर तबर्रा करते हैं। हां–हां जो लोग कजरवी और गुमराही के जंगल में भटक रहे हैं। रुश्द व हिदायत की तरफ़ उनकी रहबरी कौन कर सकता है और अदबार व शक़ावत की वादियों के गुमराहों को कौन सआदत की राह दिखा सकता है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

यानी अगर आसमान पर दो पेशावर मौजूद हों। एक दर्ज़ी हो दूसरा नूर बाफ़ तो दर्ज़ी न सिएगा मगर बादशाहों के कुबा और जोलाहा न बुनेगा मगर काले कम्बल। तो तफ़्ज़ीली राफ़ज़ी जब यह देखते हैं कि शैख़ैन की फ़ज़ीलत कुरआन व हदीस, इज्माए सहाबा और इत्तिफ़ाके उलमा की मुस्तहकम बुनियाद पर कायम है तो वह अपने अक़ीदे छुपाते हैं और हर जगह उनके इज़्हार में कोशिश नहीं करते। हां जब उन्हें कहीं उलट-फेर का मौका हाथ आता है तो इस्लामी सुतूनों को, मुसलमानों के बुनियादी अक़ीदे को फ़ासिद बता कर, ख़राब करते हैं जैसा कि गुज़र चुका।'

कभी राफ़ज़ी यह बकता है कि जब अबू बकर सिद्दीक़ मसनदे ख़िलाफ़त पर बैठे तो अली मुर्तज़ा मौजूद न थे। कभी यूं कहता है कि शैख़ैन का ख़िलाफ़त में मुक़द्दम होना उनकी सन रसीद की वजह से था न कि उनके फ़ज़ाइल की बिना पर। और कभी इस हदीस से जो सेहत को नहीं पहुंची है हुज्जत लाता है कि अल-ख़िलाफ़तु मिन बअ्दी सलासूना सनतन वक़द तम्मत बेअलीइन। ख़िलाफ़त मेरे बाद तीस बरस तक रहेगी और वह अली पर तमाम होगी।" और कहता है कि दूसरे जांनशीनों की ख़िलाफ़त में कमी थी और वह अली मुर्तज़ा की ख़िलाफ़त से तमाम कामिल हुई। इसी वजह से पीरी मुरीदी के तमाम चौदह सिलसिले उन्हीं से मिलते हैं। किसी और से नहीं।"

अज़ीज़े मन! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यह चारों ख़लीफ़ा अपनी तमाम कामलीयत के साथ खुलफ़ाए राशिदीन, खुलफ़ाए बरहक़ और बरअसल हैं। यह चारों ही उसका हक़ रखते थे कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मसनदे ख़िलाफ़त पर यके बाद दीगरे बैठें। चुनांचे वह नुबुव्वत की मसनदे ख़िलाफ़त पर बैठे। ख़ाक़ानी कहता है।

यानी यह चारों इमारते पयम्बरी की चार हदें हैं और चारों अंबिया की रूहों के उन्सुर हैं। उन चारों यारों की मुहब्बत के बेग़ैर उस पंज रोज़ा ज़िन्दगी में इस फ़ना की छः दरी में गुज़ारा नहीं हो सकता।

रही यह बात की बैअत के तमाम सिलसिले अली मुर्तज़ा तक पहुंचते हैं और किसी और ख़लीफ़ा तक नहीं पहुंचते। उसकी वजह यह है कि

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

उन हज़रात ने किसी शख़्स को अपना ख़लीफ़ा नहीं बनाया है कि उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जगह बिठाते इसलिए कि जब तक रसूल के ख़लीफ़ा मौजूद हैं ख़लीफ़ा के ख़लीफ़ा को यह हक़ नहीं पहुंचता कि वह रसूल की जगह बैठे और चूंकि मौला अली रज़ि अल्लाहु अन्हु पर ख़िलाफ़त ख़त्म हुई। उन्होंने मजबूरन हज़रत हसन रज़ि को अपना ख़लीफ़ा बनाया और अपनी जगह बिठाया फिर उन से यह सिलसिले पैदा हुए जो सब मौला अली तक पहुंचे है तो अली मुर्तज़ा की ख़िलाफ़त की बारी का मुअख़्ख़र होना यह सबब बना तमाम सिलसिलों के आपकी जानिब लौटने का और अगर इन हज़रात मे से कोई और मुअख़्ख़र होता तो तमाम सिलसिलों का मुरज्जा वही ठहरता।

यहां तक तो तुम्हें यह मालूम हो गया कि यह तफ़्ज़ीली राफ़ज़ी इसी किस्म की बेहूदगियां बकते हैं। लेकिन उनके बाज़ मुक़्तदा यह कहते हैं कि अली मुर्तज़ा हमारे दादा हैं इस वजह से हम उन्हें तमाम ख़ुलफ़ा से अफ़्ज़ल मानते हैं और किसी दूसरे को उन पर फ़ज़ीलत नहीं देते लेकिन मेरे भाई! फ़ज़्ल देने की फ़ज़ीलत उन फ़ुज़लाए सादात के हाथ में तो नहीं है कि जिसे चाहें फ़ज़्ल दें और एक को दूसरे से अफ़्ज़ल जानें बल्कि यह तो अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहता है अता फ़रमाता है। ऐ अज़ीज़ तू उनके फ़ज़ाइल को क्या जान पहचान सकता है।

ख़ुलफ़ा के फ़ज़ाइल अगर जिब्रील अलैहिस्सलाम एक हज़ार बरस तक कहते हैं तो पूरा न कर सकें तो अपनी तंग हौसला अक़्ल को लेकर पीछे ही गिर पड़ेगा इसलिए कि सिवाए ख़ुदा के उनके फ़ज़्ल को कोई दूसरा नहीं जानता।" वह आरिफ़ाने कामिल, जिनके मक़ामाते क़ुर्ब में जिब्रील अलैहिस्सलाम नहीं ठहर सकते।

यानी फ़रिश्ता अगरचे दरबारे ख़ुदा वन्दी में क़ुर्बे ख़ास रखता है मगर ली मअल्लाहे। के मक़ाम पर नहीं मार सकता।" उन्होंने कश्फ़ और ऐनुल-यक़ीन से देखा और जाना है कि उनमें बाहम फ़ज़्ल व कमाल का फ़र्क़ वही है जो इज्माए सहाबा से साबित है। यहां किसी के इरादे और इज्तिहाद का दख़ल नहीं है किसी और तरह कोई तसर्रुफ़ कर सके तो अगर अपनी रकीक अक़्ल और तारीक तबीअत लेकर उनके फ़ज़ाइल में दख़ल देगा तो सिवाए गुमराही और कुफ़्र के तुझे कुछ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हासिल न होगा।

तफ़्ज़ीलियों के बड़े बूढ़े ऐसे ही झगड़ों में पड़ गये हैं और उनके हर फ़ासिद मुक़द्दमा का काफी व शाफ़ी जवाब भी मौजूद है जिसके आगे उन्हें कुछ बन नहीं पड़ता अल्बत्ता उनका एक अक़ीदा जिसमें वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पनाहगाह और आप ही की बारगाहे रिसालत पनाह को अपना भागने का ठिकाना बना लेते हैं हम उसे एक फ़सल में लिख कर इन्शाअल्लाह इस बहस को ख़त्म करते हैं।

फ़सल : रवाफ़िज़ के बाज़ सरग़ने अज़ली क़ज़ा व क़द्र और लम यज़ली हुक्म व हिक्मत को अली मुर्तज़ा के फ़ज़्ल के हाथों पर गुरू रख कर, अल्लाह तआला की बेनियाज़ी से लापरवाह हो कर बैठे हैं कि गोया कि वह (मआज़ल्लाह) अल्लाह तआला की औलाद हैं। उन्हें न क़ुरआन व हदीस की परवाह है और न इज्मा की। उनके अक़ीदों के दोहराने की ज़रूरत नहीं।

यानी क़ुरआन और हदीस को जो शख़्स अपना इमाम तस्लीम नहीं करता, मैं उससे दर गुज़र करता हूं इसलिए कि यह सब कुफ़्र और गुमराही है। जैसा कि एक सैय्यद मुशहदी विलायत से हिन्दुस्तान से पहुंचे और एक बादशाह के मुलाज़िम हो गये। बादशाह ने उनकी ख़ुशनूदी के लिए उनको क़न्नौज अता किया। वह क़न्नौज गये। जब क़न्नौज के बुज़ुर्ग उनसे मुलाक़ात के लिए आए तो नमाज़ का वक़्त था। सबने आपके रूबरू नमाज़ अदा की और यह नमाज़ से (गोया) दस्तबरदारी हासिल कर चुके थे। क़न्नौज के उन बुज़ुर्गों ने दरयाफ़्त किया कि जनाबे वाला ने नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी? यह ख़ामोश रहे और उनके सवाल पर कोई तवज्जोह न की और जब वह लोग चले गये तो हाज़रीन से बोले कि मैं अली मुर्तज़ा की औलाद से हूं। मेरे मुल्क में पचास हज़ार लोग मुझे मानिन्दे ख़ुदा पूजते थे। उन लोगों को देखो कि मुझे नमाज़ का मुकल्लफ़ बनाते हैं।

यानी हुक्मे अज़ली से दुनिया में कौन बाज़ी ले जा सकता है जबकि अल्लाह तआला के हुक्म के आगे तमाम नबियों की भी गर्दनें झुकी हुई हैं। हैदर का फ़रज़न्द कैसे उसके हुक्म से बाहर हो सकता है। हां मगर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

यह वही हो सकता है जिसके गुमान में हज़रत अली मुर्तज़ा खुदाए तआला से बेनियाज़ हो चुके हैं।

हां उन रवाफ़िज़ में एक गरोह वह भी है जो कुरआन व हदीस की तरफ रुजूअ़ करता है लेकिन अपनी ख़ता और ग़लती से बिल्कुल बेख़बर। हमारी इन चन्द बातों में उन्हीं से बहस है बतरीके मुहब्बत व ख़ुलूस न कि अज़राहे अदावत और मुख़ालिफ़त। इसलिए कि जिस ज़माना में मैं यह रिसाला सबअ़ सनाबिल लिख रहा था हमारे वतन के यह सादात एक मस्अला ज़ाहिर करते थे जो मज़्हबे इस्लाम के मुख़ालिफ था और एक अक़ीदा बयान किया करते जो अक़ाइद इल्मे कलाम और ख़ातमा बिल-ख़ैर से ख़ारिज था। वह कहते थे कि जिस तरह अशरा मुबश्शरह रज़ि अल्लाहु अन्हुम के लिए दुख़ूले जन्नत और ख़ातमा बिल-ख़ैर का क़तई हुक्म है इसी तरह दुनिया के तमाम सादात ख़ास व आम के लिए दुख़ूले जन्नत और ख़ैरियते ख़ात्मा का क़तई हुक्म है अगरचे वह गुनाहे कबीरा के मुर्तकिब हों या हराम में मुब्तला। तारिके नमाज हों या रोज़ों से बरी। इसलिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद हैं।" लेकिन वह (यह नहीं समझते) कि अशर-ए-मुबश्शरह के लिए अगरचे दुख़ूले जन्नत और ख़ैरियते ख़ात्मा का क़तई हुक्म था मगर इसके बावजूद वह बेख़ौफ़ और बेग़म न थे और उन्होंने ख़ौफ़ व हैयत के मक़ाम को न छोड़ा था जबकि नाम के इन सादात ने मक़ामे ख़ौफ़ व हैयत छोड़ कर बेख़ौफ़ी और लापरवाही के पैरों पर खड़े हो कर शोर व गुल मचा रखा है इसी लिए मुझे इस मस्अला में चन्द बातें कहने की ज़रूरत पेश आई।

यानी अगर मैं यह देखूं कि अन्धा है और कुवां। और ख़ामोश रहूं तो मेरा गुनाह है ताकि इस किताब के क़ारी मुझे माज़ूर रखें और यह न कहें कि फुलां शख़्स को क्या हो गया कि सादात के लिए ऐसी बात लिख दी। हाशा वकला कि मैं औलादे रसूल खुदा से मुहब्बत का हक अदा करने से क़ासिर रहूं।

यानी रसूलुल्लाह की औलाद से मुहब्बत करना नबी ही से मुहब्बत करना है तो जिसे यह मुहब्बत न हो वह अजनबी है। उनमें अगरचे ख़ास भी हैं और आम भी लेकिन वह सब मुहब्बत और ताज़ीम के मुस्तहिक़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned with CamScanner

थे। यह फकीर भी सादात ही से है तो जो बात अपने और अपनों से कहेगा बजुज़ इख़्लास और ख़ैर ख़्वाही के कुछ न होगा (तो कहना यह है कि) फरज़न्दी की जो (बज़ाहिर) निस्बत उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ है इस निस्बत की शराफ़त को दर्मियान में आड़ बना लेते हैं और जो निस्बत (ज़ाहिरन) उन्हें अली मुर्तज़ा के साथ है उसके शर्फ़ और फ़ज़्ल पर फूल कर इस निस्बत पर ऐसा इतराते हैं गोया कि अल्लाह तआला की बेनियाज़ी से लापरवाह हैं। कहते हैं कि सैय्यद अगर कबाइर का मुर्तकिब, और शराब नोशी का आदी हो। या बज़ाहिर काफिर बुतपरस्त और ज़ुन्नार बांधने वाला हो या ईसाइयों की तरह तीन खुदा माने या दहरीया की तरह साने आलम का इंकार करे। गरज़ जो कुछ हो उस के ईमान को कुफ़्र और शिर्क की बातों से कुछ नुक़सान नहीं पहुंचता और उसके दीन को ज़ना चोरी और बाक़ी गुनाहे कबीरा से कुछ ज़रर नहीं होता। और यह सब कुछ अली मुर्तज़ा के साथ वाली निस्बत पर फूल कर कहते हैं और रसूले खुदा अलैहि व अला आलेही वस्सलातु वत्तहीया के शर्फ़ और फ़ज़्ल को बहाना बनाते और वसीला तराशते हैं। कुफ़्र और ईमान को नहीं पहचानते और अल्लाह तआला के क़हर से नहीं डरते। मुख़्तसर यह कि सादात को अली मुर्तज़ा के साथ फरज़न्दी की निस्बत है और क़वी, इसलिए कि सुल्बी फ़रज़न्द हैं। नीज़ उन्हें रसूले खुदा अलैहिस्सलातु वत्तहीया से भी फ़रज़न्दी की निस्बत है मगर यह ज़ईफ है कि आपकी साहबज़ादी के फ़रज़न्द हैं। अब यह अक़ीदा जो ज़ाहिर करते हैं या तो फ़ज़्ले मुर्तज़ा पर भरोसा उसकी बिना है या जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शर्फ़ पर आसरा उसकी बुनियाद। हम इन्शाअल्लाह तआला इन दोनों को बयान करेंगे। अच्छा तो अगर यह अकीदा अली मुर्तज़ा के फ़ज़्ल पर एतमाद करते हुए है और शर्फ़े रसूले खुदा सिर्फ़ बहाना है तो यह लोग अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहू को तक्लीफ देते और रंज पर रंज पहुंचाते हैं।

भाईयो! देखो कि आग एक नूरानी जौहर है मगर आतिश परस्तों की हिमाक़त की वजह से अपने सीने में काला धुवां रखती है और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

आफ़ताब कि नैयरे आज़म है आफ़ताब परस्तों गुस्सा की बिना पर गुस्सा के वक़्त ज़र्द पड़ जाता है। सिर्फ़ इस ख़ौफ़ की वजह से कि कल कुर्सी–ए–अदालत के सामने हाज़िर हो कर क्या जवाब दूंगा। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की लग्ज़िश गेहूं के दाना की वजह से वाक़े हुई। गेहूं का सीना अल्लाह तआला की हैबत से फट गया है और खुजूर का दरख़्त जिसकी पैदाइश आदम अलैहिस्सलाम की बक़िया मिट्टी से हुई। इसलिए कि फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि-

तरजमा : यानी अपनी फूफ़ी खुजूर का एहतेराम करो इसलिए कि वह आदम की बची हुई मिट्टी से पैदा की गई है।

वह भी जलाल वाले रब की हैबत से दर्मियान से शक़ की गई है। ईसाईयों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को इतना बढ़ाया कि उन्हें बन्दगी के दाइरा से अलाहेदा कर दिया और खुदा का बेटा कहने लगे। ईसा अलैहिस्सलाम ने दरगाहे ज़ुल–जलाल की हैबत और उस मुहाल की तोहमत की शर्म की वजह से आबादी तर्क कर दी और बयाबानों, जंगलों, मैदानों और पहाड़ों में सैयाहत करते रहते। इसी बिना पर आपका नाम मसीह हुआ और जब अल्लाह तआला ने उन पर एताब किया और फ़रमाया कि –

तरजमा : "ऐ ईसा क्या तुमने लोगों से कह दिया था कि तुम मुझे और मेरी मां को खुदा के सिवा अपना माबूद बना लो।"

तो आपको इस तोहमत पर बहुत ज़्यादा शर्म आई और आप दुनिया से चौथे आसमान पर तशरीफ़ ले गये। और आज भी ईसाई उन्हें खुदा का बेटा कहते हैं और आसमान पर भी उन्हें तक्लीफ़ पहुंचाते हैं। क्या यह भी जानते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम ने चौथे आसमान पर क्यों मक़ाम किया और अर्श पर क्यों न गये। उसकी वजह यह है कि सूरज चौथे आसमान पर है और आफ़ताब को पूजने वाले उसे माबूद जान कर पूजते हैं पस ईसा अलैहिस्सलाम भी चौथे आसमान पर रहे ताकि इस क़दीम तोहमत और इस अज़ीम बुहतान की नहूसत चौथे आसमान से न बढ़े।

नक़ल है कि एक रोज़ ख़्वाजा ख़ैरुन–नस्साह एक कलीसा में चले

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

गये (देखा) कि ईसाईयों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मरयम अलैहिस्समस्सलाम की तस्वीरें कलीसा की दीवारों पर बना ली हैं और उनको पूज रहे हैं। शैख़ ने ज़ोर से एक आवाज़ दी।

"तरजमा : क्या तुमने लोगों से यह कहा था कि तुम मुझे और मेरी मां को खुदा के सिवा माबूद बना लो।"

फ़ौरन ही वह सूरत कलीसा की दीवार से नीचे गिर पड़ी और उसके हर ज़र्रह से यह आवाज़ आई थी। ला वल्लाहे ला वल्लाहे। "नहीं खुदा की क़सम नहीं।" सुबहानल्लाह ईसा अलैहिस्सलाम तो इस तोहमत की शर्म की वजह से चौथे आसमान पर तशरीफ़ ले गये और उनकी तस्वीर का ख़ाका दीवार से गिर पड़ा। पस मुफ़ज़्ज़ला के सादात क़ो फ़ज़्ले अली मुर्तज़ा पर एतमाद करके अपने ख़ातमा बिल-ख़ैर होने का क़तई हुक्म थोपते और कुछ भी हों मगर अपने ईमान को अशर-ए-मुबश्शरह के ईमानों के बराबर जानते हैं तो यह भी अली मुर्तज़ा को रंज पहुंचाते हैं और फिर उसको मुहब्बत और ताज़ीम जानते हैं। सिर्फ़ यही वजह थी कि मौला अली ने वफ़ात के वक़्त अपने ताबूत को एक ऊंट पर बंधवा दिया था। ताकि ऊंट उन्हें ऐसी जगह ले जाए जो किसी को मालूम न हो। और अपनी क़ब्र शरीफ़ को मदीना मुनव्वरा में रखना पसन्द न फ़रमाया। इसलिए कि बातनी नूर से यह जान लिया था कि अगर मेरा मज़ार मदीना ही में रहा तो खुदा मालूम यह मुफ़ज़्ज़ला क्या शोर व गुल मचाएं और क्या आफ़त बपा करें। रही यह बात जो वह कहते हैं कि आपको ज़गत-ए-क़ब्र यानी क़ब्र शिगफ़्ता होने का अन्देशा था। लिहाज़ा ऐसा किया तो यह ख़बर अगर वाक़ई दुरुस्त भी हो तो भी बईद नहीं, इसलिए कि मुक़र्रबाने बारगाहे इलाही को तइना ही फ़ज़्ल व शर्फ़ और करामत का मक़ाम मिलता है, जितना ख़ौफ़ व हैबत और नदामत उन्हें होती है और चूंकि उनमें ख़ौफ़, हैबत और नादमत ज़्यादा होती है वह दुनिया वालों से फ़ज़्ल व शर्फ़ में सबक़त ले जाते हैं और अल्लाह तबारक व तआला की जितनी मारिफ़त उन्हें होती जाती है उसकी बेनियाज़ी से इतने ही हरासां होते जाते हैं और कुर्बत व दरजात की फ़िज़ा में जिस क़द्र क़रीब होते जाते हैं दश्त हैरत व इस्तेजाब में

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

इसी क़द्र गुम होते चले जाते हैं। तो यह लोग कुदरत के कोहे काफ़ के सीमुर्ग़ हैं कि ख़ुद को संगाना (एक छोटा परिन्दा) से भी कम जानते हैं मगर मारिफ़त में हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की सिफ़त रखते हैं कि च्यूंटियों के दरवाज़ा पर बैठते हैं और उनके हालात से वाक़िफ़ रहते हैं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर बूढ़ी औरत का दरवाज़ा खटखटाते कि ऐ औरत मुझे अपनी दुआ में याद रखना। ग़ौर करो कि यह कैसी नाक़ाबिले हल बात है कि आफ़ताब ज़र्रह से फरियाद कर रहा है। बस यूं जान लो कि शिकार करने वाले शेर, शिकार गाह में च्यूंटी से भी दोस्ती रखते हैं। तो यह भी होता है मगर उस शिगाफ़े क़ब्र के दफ़ा के लिए तो सिर्फ़ इतना काफी था कि आप हाज़िरीन को नसीहत फ़रमा देते कि मुझे क़ब्र में न रखना एक संगीन ताबूत में रख कर एक तरफ़ रख देना। मगर आपने तो फ़रमाया कि ताबूत को एक ऊंट पर मज़बूत बांध कर उसकी नकील छोड़ देना। तो शीआ अगरचे उसे भी पसन्द न करेगा मगर यह फ़रमान बज़ाहिर यही बताता है कि आपने उन मुफ़ज़्ज़ला से गुरेज़ फ़रमाया था और एक ऊंट की पुश्त पर (तुर्बत में) सवार हो कर ऐसे मक़ाम पर तशरीफ़ ले गये कि फिर लोगों ने आपका कोई निशान और कोई ख़बर न पाई। जबकि आपने अपनी ज़ाहिरी हयात में भी मुफ़ज़्ज़ेला के गरोह से चन्द बार शिकायत भी फ़रमाई है चुनांचे बुस्ताने फ़क़ीह अबुल्लैस में मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से रिवायत है कि आपने फ़रमाया कि –

तरजमा : यानी आख़िरी ज़माने में एक फ़िर्क़ा पैदा होगा जो अपने आप को हमारे गरोह की तरफ़ मन्सूब करेगा हालांकि वह हमारे गरोह से न होगा। उनका एक बद लक़ब होगा। लोग उन्हें राफ़ज़ी कहेंगे तो जब तुम उन से मिलो उनको क़त्ल कर डालना इसलिए कि वह मुर्तद हैं।" इसी बुस्तान में है कि मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने फ़रमाया।

यानी मेरे बारे में दो आदमी हलाक होंगे। एक तो मुहब्बत में हद से गुज़र जाने वाला, दूसरा मुझ से हद से ज़्यादा बुग्ज़ रखने वाला।

पस मुहब्बत में हद से गुज़रने वाला यही राफ़ज़ी है कि मौला अली

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

को शैख़ैन पर फ़ज़ीलत देता और आपकी तमाम औलाद के लिए कि सादात हैं उनके कसीर फ़ज़्ल पर एतमाद करके ख़ातमा बिल–ख़ैर का यक़ीन रखता है और आपसे बिला वजह बुग़्ज़ रखने वाला वह ख़ार्जी है कि आपको रसूले ख़ुदा का ख़लीफ़ा ही नहीं जानता।

ऐ अज़ीज़ अगर बुतों की ज़बान होती तो वह हर आन उन बुत परस्तों पर जिन्हों ने पत्थर और लकड़ी के बुतों को माबूद बना लिया है लानतें भेजते रहते। मन्कूल है कि जब ख़्वाज–ए–जहां ख़्वाजा मुईनुल–हक़ वदीन चिश्ती कुद्दिसा सिर्रुहू मक़ामे अजमेर पहुंचे। एक रोज़ आप एक जगह तशरीफ़ रखते थे और वहीं पर पत्थर के दो बुत नसब थे एक मर्द की सूरत और दूसरा औरत की शक्ल हैं। उसी वक़्त राजा ख़्वाजा के देखने के लिए हाज़िर आया। आपने फ़रमाया तू कौन है? कहा कि इस मुल्क का राजा मैं ही हूं। फ़रमाया क्यों आया? जवाब दिया कि क़दम बोसी के लिए। इरशाद फ़रमाया कि ऐ राजा तुम लोग उन बुतों को माबूद बना कर पूजते हो क्या उनकी वजह से कोई मुश्किल भी टली या कोई एआनत और मदद पहुंची? राजा ने जवाब दिया कि तमाम चीज़ें उसी के नूर की जल्वा गाह हैं और हर जल्वा गाह में उसका ज़ुहूर है। तो हम उसी जल्वा गाह को वसीला बना कर अल्लाह तआला के ज़ुहूर पर तवज्जोह करते हैं।" आपने इरशाद फ़रमाया कि अगर पत्थर के मज़हर में ज़ुहूरे हक़ की तरफ़ मुतवज्जोह होते हो तो पत्थर को मख़्लूक़ की सूरत क्यों तराशते हो। अगर इंसान को वह जल्व–ए–रूह अल–कुदुस का मज़्हर है वह जमादात को पूजे तो वह अपनी हस्ती से ग़ाफ़िल है ख़ुद को बरबाद कर रहा है।

अगर रूहुल–कुदुस तुझे ऊपर से चमकाए तो तेरा अम्र हक़ तआला का अम्र हो तो ख़ुद को दोनों जहां का मक़्सूद ठहरा ले। दोनों आलम तुझे सज्दा करें और तू मस्जूद हो। अरे ग़ाफ़िल तुझे तो फ़रिश्तों ने सज्दा किया है तू उन बुतों को क्यों कर सज्दा करता है।"

राजा यह सुन कर ला जवाब हुआ। ख़्वाजा ने उस बुत को जो मर्द की सूरत में था बुलाया और फ़रमाया "ऐ शादी गुलमटे!" उसने कहा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

'हाज़िर हूं।' इरशाद हुआ 'यहां आ' वह चला आया। फिर आपने उस बुत से जो औरत की शक्ल था, फ़रमाया ऐ लखमी लौंडी! उसने जवाब दिया 'हाज़िर हूं।' इरशाद हुआ 'इधर आ' वह भी आ गई। आपने दोनों से फरमाया कि यह काफिर तुम्हें इख़्लास व मुहब्बत से पूजते हैं और मुहब्बत और लगावट की गिरह तुम्हारे साथ बांधते हैं। तुम उन से खुश हो या नहीं? उन्होंने जवाब दिया कि ऐ ख़्वाजा अगर पत्थरों की ज़बान होती तो उन पर लानतों की ख़ाक उड़ाते और अगर भाग सकते तो बयाबान की तरफ़ निकल जाते।

ऐ नख़्शी! वह लोग किस क़द्र ज़ालिम हैं जो पत्थरों को अपना माबूद बनाए हुए हैं। अगर बुतों की ज़बान होती तो अपने पूजने वालों से हर दम लड़ाई लड़ते रहते। ऐ हमारे मख़्दूम वह जो ख़ुदाए तआला ने अपने कलाम में इरशाद फरमाया है कि वक़ूदुहन्नासु वल–हिजारतु। कि जहन्नम के ईंधन आदमी और पत्थर हैं।' तो वह 'आदमी' हमारी इबादत करने वाले हैं और वह 'पत्थर' हम ही हैं कि उनकी वजह से हम जहन्नम का ईंधन बने हैं ऐ हमारे मख़्दूम और हमारी जाए पनाह! बाज़ पत्थरो पर इसी हसरत की वजह से हमेशा रोना और चिल्लाना तारी रहता है और उनके अन्दर से पानी के चश्मे बहते रहते हैं। और बाज़ों के जिगर इसी नदामत से ख़ून हो चुके हैं कि उस से लअ्ल व जवाहिर बनते हैं और बाज़ उस पशीमानी की बदौलत आग में फुक चुके हैं कि उनके ज़ख़्मों से लोहा बरामद होता है और बाज़ पत्थर पिघल कर नमक हो चुके हैं।'

ऐ भाई जब जमादात अपने पुजारियों से इस क़द्र ग़मगीन हैं तो ग़ौर का मक़ाम है कि अली मुर्तजा कर्रमल्लाहु वज्हहू को उन मुफ़ज़्ज़ला से किस क़द्र ग़म और तक्लीफ़ पहुंचती होगी कि वह तो अपने बाज़ अक़ीदों में उन्हीं बन्दों के दाइरा से इलाहिदा शुमार करते हैं। हालांकि यह बात ज़ाहिर है कि जिस किसी पर मख़्लूक़े ख़ुदा होने का दाग़ लग चुका उसे बन्दा होना ज़रूर है।

तरजमा : नफ़रत नहीं करता ईसा बिन मरयम उस से कि वह ख़ुदा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

के बन्दे हों और न उसके मुक़र्रब फ़रिश्ते।"

तो बन्दा हरगिज़ हुक्मे अज़ली पर कि क़तई है सबक़त नहीं ले जा सकता और सादात मुफ़ज़्ज़ला अली मुर्तज़ा के फ़ज़ाइल और कमालात पर एतेमाद करके अपने लिए ख़ैरियत खात्मा का जो क़तई हुक्म करते हैं उस से तो यही मालूम होता है कि उनके अक़ीदों में मुर्तज़ा अली के कमालात हुक्मे अज़ली पर सबक़त ले गये हैं हालांकि यह खुद मुहाल है लिहाज़ा ख़ातमा बिल-ख़ैर होने का क़तई हुक्म लगाना भी मुहाल साबित हुआ।

और वह जो मौला अली ने फरमाया है कि "आख़िर ज़माना में एक क़ौम ज़ाहिर होगी जो हमारे गरोह की जानिब अपने आपको मन्सूब करेगी हालांकि वह हमारे गरोह से न होंगे उनका एक बद लक़ब होगा। लोग उन्हें राफ़ज़ी कहेंगे पस जब तुम उन से मिलो तो उनको क़त्ल कर डालना इसलिए कि वह मुश्रिक हैं।" तो इस क़ौल में आपने राफ़ज़ीयों को मुश्रिक फरमाया है इसलिए कि वह लोग अज़ली हुक्म की क़तईयत के साथ दूसरा हुक्म शरीक करते हैं। और यह बाइसे तक्लीफ़े मुर्तज़ा व मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है और जो उन्हें ईज़ा देता है वह वाजिबुल क़त्ल है खुद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी उनके क़त्ल का हुक्म फरमाया है चुनांचे बुस्ताने अबुल्लैस में रिवायत है कि फरमाया नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने -

तरजमा : यानी आख़िर ज़माने में एक क़ौम होगी जिस को राफ़ज़ी कहा जाएगा। वह लोग हक़ीक़ी इस्लाम छोड़ देंगे अल्बत्ता नाम ज़बान से इस्लाम का लेंगे। पस तुम लोग उनको क़त्ल करना इसलिए कि वह मुश्रिक हैं।" चुनांचे कहा जाता है कि हारून रशीद ने उन लोगों को इसी हदीस शरीफ़ के मातहत क़त्ल कराया। और हज़रत आमिर शोअ़बी से यह मन्कूल है कि-

रफ़ज़ ज़िन्दक़ा की सीढ़ी है। मैंने किसी राफ़ज़ी को न देखा मगर यह कि वह ज़िन्दीक़ निकला।"

और अगर ख़ातमा बिल-ख़ैर का हुक्म क़तई जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भरोसा पर लगाते हैं इसलिए कि खुद

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

को मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद से शुमार करते हैं तो यह भी बातिल है इसलिए कि हुज़ूर ने हज़रत फ़ातिमा से आपकी सुल्बी और हक़ीक़ी साहबज़ादी हैं इरशाद फ़रमाया।

"कि फ़ातिमा इस पर भरोसा मत करना कि मैं रसूलुल्लाह की साहबज़ादी हूं अमल करो, अमल करती रहो, अमल में सरगरम रहो।"

पस यह ख़िताब उन सादात पर कि न सुल्बी फ़रज़न्द हैं और न हक़ीक़ी बदरजा औला वारिद है। और हां देखो तो यह तो हुज़ूर सब से इरशाद फ़रमा रहे हैं कि "इस पर मत इतराओ कि हम रसूले ख़ुदा के फ़रज़न्द हैं अमल करो, अमल करो, अमल करो।" मन्क़ूल है कि जिस रोज़ आयत व अन्ज़िर अशीरतकल–अक़्रबीन। नाज़िल हुई।" यानी अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराइए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमाम अह्ले बैत को बुलाया और हर इक को अज़ाबे इलाही से डराया और ख़ौफ़ दिलाया। सबसे पहले आपने हज़रत फ़ातिमा से फ़रमाया "ऐ मेरी आंखों की ठन्डक इस पर भरोसा मत करना कि मैं रसूलुल्लाह की साहबज़ादी हूं, अच्छे अमल करो, अच्छे अमल करो।" उसके बाद अमीरुल–मुमिनीन हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन से फ़रमाया कि ऐ मुहम्मद के जिगर के टुकड़ो!

जन्नत फ़रमांबरदारों के लिए है अगरचे वह गुलाम हबशी हो और दोज़ख़ नाफ़रमान के लिए है अगरचे वह सैय्यद क़ुरैशी हो।"

उसके बाद अज़्वाजे मुतह्हरात से फ़रमाया कि तुम्हारे लिए यही आयत काफ़ी है जो तुम्हारे हक़ में नाज़िल हुई है कि

"ऐ नबी की अज़्वाज तुममें से जो कोई एक खुला हुआ जुर्म करेगा उस पर दुगना अज़ाब किया जाएगा और यह अल्लाह तआला पर आसान है।" उस पर अह्ले बैत से एक शोरो गुल उठा।

ऐ भाई अगर तमाम अंबिया और रसूल मिल कर एक ऐसे बन्दा की शफ़ाअत करें जिस से अल्लाह तआला राज़ी नहीं तो कुछ फ़ाइदा न हो चुनांचे मख़्दूम शैख़ सअ़दी ने फ़रमाया है।

अगर अल्लाह तआला एक बन्दा नाफ़रमान से राज़ी न हो तो तमाम

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

पैगम्बरों की शफ़ाअत से भी कुछ फाइदा न होगा। तो ऐसे मक़ाम में जहां अंबिया और पैगम्बर ख़ौफ़ खाते और घबराते हों वहां इस निस्बत का पैवन्द क्या काम दे सकता है।

उस वक़्त कि फ़ेअ्ल और क़ौल के मुतअल्लिक़ सवाल करेंगे तो ऊलुल-अज़्म के बदन ख़ौफ़ से थर्राएंगे तो ऐसे मक़ाम पर जहां अंबिया घबराएं तो उज़्रे गुनाह में जो रखता हो बयान कर।

फ़िर सादात को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो निस्बत आज उन्हें ख़िलाफ़े शरअ् उमूर से बाज़ नहीं रखती कल उन्हें हलाकत और अक़ूबत से कैसे रोक सकती है और वह जो कहा जाता है कि सादात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रज़न्द हैं और उन पर फ़ज़्ले रसूल और शर्फ़े नबी की वजह से दोज़ख़ की आग हराम है तो अगर वाक़ई उन पर आतिशे दोज़ख़ हराम है। तो दुनिया की आग जो उस आग का अक्स है बदरज-ए-औला हराम होगी। आओ इम्तेहान कर लें अगर उन्हें दुनिया की यह आग न जलाएगी तो हम यक़ीन कर लेंगे कि उनकी बात तहक़ीक़ शुदह है। वरना यह बात ग़लत और ख़ता है इस पर एतमाद भी न करना चाहिए न कि एतक़ाद में लाई जाए। बल्कि अगर दुनिया की आग उनके किसी हिस्स-ए-बदन को न जला सके तब भी शरीअ़ते मुहम्मदीया उनके ख़ातमा बिल-ख़ैर होने पर क़तई हुक्म नहीं लगाएगी।

चुनांचे शहनशाहे बाबर के ज़मान-ए-हुकूमत में चन्द मुग़ल पीर दस्तगीर मख़्दूम शैख़ सफ़ी क़ुदिसा सिर्रुहू की मुलाक़ात के लिए हाज़िर आए और सियादत की सेहत में बात छिड़ गई और मुग़ल इस बात पर इसरार करने लगे कि हिन्दुस्तान में कोई सैय्यद नहीं और हर चन्द कि मख़्दूम ने उन्हें बहुत समझाया और माक़ूल किया मगर वह न माने और बहुत गुफ़्तो शुनीद के बाद कहने लगे कि हमारे मुल्क के सादात, साबितुन्नसब परहेज़गार, दीनदार और ज़ाहिद व इबादत गुज़ार हैं और उनकी सियादत की सेहत की अलामत यह है कि उनके बाल को लोग जलती हुई आग में रखते हैं और वह नहीं जलते। मख़्दूम ने जवाब दिया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हिन्दुस्तान में भी ऐसे ही सैय्यद मौजूद हैं। मुग़लों को बहुत तअज्जुब हुआ और दिल में कहने लगे कि मख़्दूम शैख़ ने शेख़ी से बात कही है। फिर कहने लगे कि उनमें से एक को बुलाइए। आपने मुअल्लिफ़ के चचा को जिनका नाम ताहिर था और जिन्हें लोग सैय्यद ताह कहते थे बुलाया चूंकि आपका जिस्म मुबारक ताहिर था लिहाज़ा आप का एक मुबारक बाल लेकर देर तक आग में रखा ज़र्रह बराबर भी उसे आग न लगी और जब आग से निकाला उसी तरह ठण्डा था उसे गर्मी न पहुंची थी। तमाम मुग़ल पशीमां और शर्मिंदा हुए। कभी हज़रत मख़्दूम का मुबारक पांव पकड़ते और कभी मेरे चचा के क़दमों पर गिरते और उज़्र व माज़रत करते लेकिन ऐसे सैय्यद आज दुनिया में सुर्ख़ गन्धक की तरह नायाब हैं और ऐसे बेश क़ीमत लअ्ल दुनिया की कान में कहां नज़र आते हैं। बहरहाल शरअ् मुहम्मदी ऐसों पर भी बिल–ख़ैर ख़ातमा का क़तई हुक्म नहीं लगाई न कि वह सादात जिनके बालों और बदन के हिस्सों को यह आग जला देती है।

मेरे भाई अगरचे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़ज़ाइल व शर्फ़ के कमालात अहले मारिफ़त के दिलों में नहीं समा सकते और उनके सच्चे दोस्तों के निहां ख़ानों में मंज़िल नहीं बना सकते, इसके बावजूद उनके इन नसब वालों में अपना कामिल असर नहीं दिखा सकते ख़्वाह वह आबा व अज्दाद हों या औलाद दर औलाद। चुनांचे अबू तालिब में इस नसब ने कोई असर नहीं किया हालांकि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके बारे में बलीग़ कोशिश फ़रमाते रहे लेकिन चूंकि ख़ुदाए क़ुद्दूस जल्ला व उला ने उनके दिल पर रोज़े अव्वल ही से मुहर लगा दी थी लिहाज़ा जवाब दिया। "मैं आर पर नार को तरजीह देता हूं।" जैसा कि मशहूर है। मन्क़ूल है कि जब अबू तालिब का इंतिक़ाल हुआ मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़बर पहुंचाई कि हुज़ूर के गुमराह चचा का इंतिक़ाल हो गया।

बैयत : कभी ऐसे गौहर पैदा करने वाले घराना में अबू तालिब जैसों को (ख़ालिके बेनियाज़) पत्थर फेंकने वाला बना देता है। ज़्याई बख़्शी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ने मक्तकुस्सुलूक में लिखा है कि जब अबू तालिब का इंतिकाल हुआ पैगम्बरे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके जनाज़े के पीछे-पीछे तशरीफ ले जा रहे थे और बार-बार उसकी जानिब नजर फरमाते और अपना दस्ते मुबारक अपनी चादर पर मारते। सहाबा ने उनके दफन के बाद आपसे सवाल किया कि हुजूर का जनाजा की तरफ और चादर मुबारक पर हाथ मारने में क्या राज़ था? इरशाद फरमाया अज़ाब के फरिश्ते पहुंच चुके थे और चाहते थे कि उन्हें जनाज़ा पर से उठा ले जाए। मैं उन्हें हर बार अपनी चादर मुबारक की कसम देता कि थोड़ी देर ठहरो।

ऐ बख़्शी नेकी के क़ाबिल बन जाओ कि बद बख़्ती का दस्तरख़्वान कोई खाना नहीं देता। अगर तू खुद नेक नहीं है तो तुझे नेक निस्बत भी फाइदा नहीं पहुंचा सकती।

ऐसा ही हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिद माजिद का वाक़या मन्कूल व मरवी है कि एक आराबी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि मेरा बाप कहां है इरशाद फरमाया "दोज़ख़ में" इस जवाब से हुज़ूर ने उसके चेहरा पर कुछ ख़शूनत महसूस की तो इरशाद फरमाया कि मेरे वालिद, तेरा बाप और हज़रत इब्राहीम का चचा एक जगह हैं।" मख़्दूम शैख़ सअद ने मज्मउस्सुलूक में तहरीर फरमाया कि मैंने यह कलाम उम्मुल-मआनी में देखा किसी और किताब में मेरी नज़र से न गुजरा कि "नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अमीरुल-मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से फरमाया। अली तुमने सुना कि कल खुदाए तआला ने मुझे कैसी बुजुर्गी अता फरमाई। अर्ज़ किया कि नहीं या रसूलुल्लाह। फरमाया कल मैंने (करमे खुदावन्दी का) दामन थामा और अपने वालिदैन और अबू तालिब की बख़्शिश चाही फरमान जारी हुआ कि हमारे यहां का फैसला तो अटल है कि जो मेरी वहदानियत पर और तुम्हारी रिसालत पर ईमान न लाए और बुतो को झूठा न माने उसे जन्नत अता न फरमाऊंगा और न उसे दोज़ख़ से छुटकारा दूं" मगर आप फलां शोअ्बा यानी टीला पर तशरीफ ले जाएं और अपने वालिदैन और अबू तालिब को आवाज़ दें वह

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

ज़िन्दा हो कर आपके रू-ब-रू हाज़िर आएंगे आप उन्हें ईमान की तरफ़ बुलाएं वह आप पर ईमान लाएंगे तो मैं अज़ाब से उन्हें छुटकारा दूंगा। मैंने ऐसा ही किया और बुलन्दी पर गया और मैंने कहा ऐ मेरी मां, ऐ मेरे बाप, ऐ मेरे चचा, तीनों बदन मिट्टी से सर और बदन झाड़ते उठे। मैंने उन से कहा कि मैं जिस चीज़ के साथ मबऊस फरमाया गया हूं तुम्हें उसकी हक़ीक़त मालूम है और खुदा की वहदानियत भी तुम पर साबित है और बुतों का बातिल होना भी तुम से पोशीदा नहीं है सबने जवाब दिया कि बेशक हमें बित्तहक़ीक़ यह मालूम हो चुका कि अल्लाह तआला एक है और बुत बातिल हैं और आप उसके रसूले बरहक़ हैं। उस पर उन पर मग़्फ़िरत की खुसूसियत भी उन्हीं के लिए है किसी और को उन पर क़यास नहीं करना चाहिए। यही हुक्म है औलाद का कि अंसाब का पैवन्द उन से गुनाहों के सुदूर के बावजूद उनके हक़ में कुछ असर नहीं कर सकता।

मख़दूम जहांनियां कुद्दिसल्लाहु रूहहू ने ख़ज़ान-ए-जलाली में लिखा कि नेकियों और बदियों में शर्फ़े मकान, शर्फ़े ज़मान और शर्फ़े नफ़्स का भी ऐतबार है। मकान जैसे मक्का मुकर्रमा कि उसमें एक नेकी सौ हज़ार (एक लाख) नेकियों का सवाब रखती है और एक बदी सौ हज़ार बदियों के बराबर होती है और शर्फ़े ज़मां जैसे माहे रजब और रोजे जुमा। कि ऐसे ज़माना में एक नेकी सत्तर नेकियों की मूरिस है और एक बदी सत्तर बदियो के अज़ाब की मूजिब। और शर्फ़े नफ़्स जैसे फ़ातिमी सैय्यद और उलमा। कि अगर यह एक नेकी करें तो दूसरों के मुकाबले मे दो गुना सवाब हासिल करें और अगर एक गुनाह करें तो दूसरों से बढ़ कर अज़ाब में मुब्तला हों।" यहीं से यह बात मालूम होती है कि सैय्यद अगर आलिम भी हो तो उसको फरमांबरदारी और नाफरमानी में सवाब और अज़ाब का हिस्सा दो गुने से भी ज़्यादा है।

ऐ बिरादर तमाम मसाइले एतक़ादिया इल्मे कलाम से तअल्लुक रखते हैं और यह मस्अला जो तू कहता है कि बावजूद कुफ़ और शिर्क सादिर होने के। सादात के क़तई ख़ैरियत ख़ातमा में कोई ख़लल और रुकावट नहीं, यह मस्अला इल्मे कलाम की किसी किताब में नज़र न

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

आया। मख़्दूमे जहानियां कुद्दिसल्लाहु सिर्रुहू कि उनकी सियादत और फ़रज़न्दी का सुबूत रौज़-ए-रसूल से साबित और मुक़र्रर है। एक रात अपने ख़ातमा बिल-ख़ैर होने की दुआ कर रहे थे। फरमान जारी हुआ कि अगर शैख़ अख़ी जमशीद तुम्हारे ईमान की सलामती के लिए दुआ करें तो हम मक़्बूल फरमाएं। लिहाज़ा मख़्दूम ने हज़रत शैख़ से दुआ के लिए इल्तिजा की जिसका क़िस्सा मशहूर है। तो अगर सादात के लिए ख़ैरियत ख़ातमा यक़ीनी साबित होता तो मख़्दूम जहांनियां क्यों अपने ईमान की सलामती की दुआ अल्लाह के दरबार में करते। क्या उन्हें यह मस्अला मालूम न था? यूं ही एक सैय्यद साहब मख़्दूम जहानियां की ख़िदमत में शबो रोज़ रहते थे। एक रोज़ उन्होंने मख़्दूम शैख़ जहानियां से कहा कि आपके इस्लाहे कार की ख़ातिर एक बात कहना चाहता हूं लेकिन फिर सैय्यद राजू जो क़िताल के डर से नहीं कहता इसलिए कि वह क़िताल हैं मुझे जान से मार डालेंगे। अगर आप मेरे ईमान की मुहाफ़िज़त फरमाएं तो मैं अपनी जान आपके काम की मस्लेहत में दे डालूं और वह बात कह दूं। मख़्दूम जहानियां ने फरमाया कि तुम्हारे ईमान की हिफ़ाज़त अच्छी तरह करूंगा। जो बात कहने की है कहो। उस वक़्त उन सैय्यद ने वह बात कह डाली। जब मीर सैय्यद राजू क़िताल को मालूम हुआ कि यह मस्लेहत और यह राय उन सैय्यद से वाक़े हुई है तो आपने बद्दुआ फरमाई, उनका इंतिक़ाल हो गया। आपने फरमाया कि अगर मेरे भाई की पनाह, ईमान की हिफ़ाज़त के लिए न ली होती तो मैं ईमान भी सल्ब कर लेता।" यह क़िस्सा मशहूर है। तो अगर सैय्यद से ज़वाले ईमान मुम्किन नहीं है तो हज़रत सैय्यद राजू क़िताल क़ुद्दिसल्लाहु रौहा ने कहां से फरमा दिया कि मैं उनका ईमान सल्ब कर लेता। और मख़्दूम शैख़ जहानियां क़ुद्दिसल्लाहु सिर्रुहू ने यह क्यों न फरमाया कि तुम सैय्यद हो तुम्हारे ईमान का ज़वाल मुहाल है, मेरी हालत की क्या ज़रूरत है।

बिरादरम ईमान बेहतरीन सरमाया और बड़ा क़ीमती मताअ़ है और जिसका दिल अल्लाह तआला ने ईमान की रौशनी ने चमका दिया उसे यक़ीन है कि निस्बतों की मशअ़ल की रौशनी, गुमराही और नाफरमानी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

की आंधी के गुबार में मांद पड़ जाती है और सियादत के चिराग़ का नूर ज़लालत और बिदअत की हवा में नहीं ठहरता। और अगर उसको इस्लाम के ताक़ और ईमान के आबगीना में महफ़ूज़ रखें और सुन्नत के तेल और फ़रमांबरदारी की बत्ती से उसमें इज़ाफ़ा करते रहें तो यहदिल्लाहु लेनूरेही मन यशाओ। (अल्लाह राह देता है अपने नूर की जिसे चाहे) की तजल्लियां उस पर पड़ीं और वह बुझता हुआ चिराग़ रौशनी से दमकने लगे और तुम्हारे हाथ नूर अला नूर की दौलत आए।

वह ख़ुदाए क़ुद्दूस जो काफ़िर की सुल्ब से पैग़म्बर और पैग़म्बर की पुश्त से काफ़िर को पैदा फ़रमाता है। अगर उसकी बख़्शिश काफ़िरज़ादे को बहिश्त में पहुंचा दे तो तू किस से फ़ैसला कराने बैठेगा और अगर उसका जलाल और ग़ज़ब पैग़म्बर की औलाद को दोज़ख़ की जानिब ले जाए तो तू किस से झगड़ेगा। ठीक बात को ग़लत बात से मत बदलो और इस फ़आल लेमा यूरीद यानी क़ादिरे मुतलक़ की हुकूमत और हिक्मत से लड़ाई मोल मत लो।

कभी रौशनी से आग पैदा होती है कभी आग से रौशनी। इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, आज़र बुत परस्त से पैदा हुए और कनआन नूह अलैहिस्सलाम से। सिरका हलाल होने से उसमें उस से क्या कमी हुई कि वह शराब से बना। और शराब की शान उस से क्या बढ़ जाती है कि उसकी असल अंगूर है।

यहीं से यह भी जानना चाहिए कि अह्ले बैत की तीन क़िस्में हैं। पहली क़िस्म असल अह्ले बैत दूसरी क़िस्म दाख़िल अह्ले बैत और तीसरी क़िस्म लाहिक़ अह्ले बैत। असल अह्ले बैत तेरह नफ़र हैं। नौ अज़्वाजे मुतह्हरात और चार साहबज़ादियां। और दाख़िले अह्ले बैत तीन नफ़र हैं। अली मुर्तज़ा और हसन और हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुम और लाहिक़ अह्ले बैत वह लोग हैं जिनको अल्लाह तआला ने नापाकियों और गुनाहों से कुल्लियतन पाक कर दिया है और उनको कमाले तक़्वा और पाकीज़गी इनायत फ़रमाई है। ख़्वाह वह सादात हों या सादात के अलावा। चुनांचे हज़रत सलमान फ़ार्सी रज़ि अल्लाहु अन्हु अगरचे सैय्यद न थे लेकिन नापाकी से कमाले तहारत की वजह से

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अम्र को अल्लाह तआला से मुहाल जानते हैं। गरज़ साबित हुआ कि अज़्वाजे रसूल के अलावा जो लोग कि अह्ले बैत में दाखिल या लाहिक़ है ख़्वाह सादात हों या ग़ैरे सादात, उनका हुक्म बिला किसी फ़र्क़ के वही है जो अज़्वाजे मुतह्हरात का है यानी इताअत व इबारत में उन्हें दो गुना सवाब है दूसरे के मुक़ाबला में। और गुनाहों और बदकारियों में दूसरों के बमुक़ाबिल दो गुना अज़ाब। यही वह बात है जब कि मख़्दूम जहानियां कुद्दिसल्लाहु सिर्रुहू ने ख़ज़ान-ए-जलाली में लिखा चुनांचे उनका कलाम ऊपर गुज़र भी गया और उसमें न अज़्वाज की तौहीन है न उनके दर्जों में तन्क़ीस। बल्कि यह सबके उनके बुलन्द दरजात और आली मक़ामात का समरा है।

ऐ बिरादर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अह्ले बैत अगरचे नजासतों और गन्दगियों से बहुत पाक व साफ़ थे मगर उनमें वह गुरूर और घमण्ड न था। ऐसे ही अशर-ए-मुबश्शरह को अपने ख़ातमा बिल-ख़ैर होने का यक़ीन था मगर वह ख़ैरियत ख़ातमा का दावा न किया करते थे। बल्कि सब अल्लाह तआला की बेनियाज़ी के ख़ौफ़ और हैबत से कांपते और थर थराते रहते और ख़ातमा बिल-ख़ैर होने की यही अलामत है। तो तुझे अपनी ख़ैरियत ख़ातमा का दावा और अपनी पाकीज़गी व तहारत पर गुरूर और घमण्ड कहां से आया कि तू इन हज़रात से भी बढ़ा जा रहा है। अमीरुल-मुमिनीन अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया है कि अगर कल क़यामत के रोज़ यह फरमान हो कि हम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम उम्मत को बहिश्त में भेजेंगे और एक शख़्स को दोज़ख़ में, तो मेरे ख़ौफ़ की यह हालत है कि मैं डरता हूं कि कहीं वह शख़्स मैं न हूं। अमीरुल-मुमिनीन उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हज़रत हुजैफ़ा से दरयाफ़्त किया कि कहीं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे मुनाफ़ेक़ीन के साथ तो ज़िक्र नहीं किया। इसी तरह कभी- कभी आप कअब अहबार रज़ि अल्लाहु अन्हु से फरमाते। 'ऐ मुसलमानों के सरदार मुझे दोज़ख़ से डराओ। इसी तरह तमाम अशर-ए-मुबश्शरह और बाक़ी तमाम अस्हाब और अह्ले बैत अगरचे खुदाए कुद्दूस की सिद्क़ और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

इख़्लास से इबादत करते और तहारत व पाकीज़गी में मुन्तहा तक पहुंच चुके थे मगर उनका ख़ौफ़ और हैबत, उस दिन की तहदीद से कि "सादिकों से उनके सिद्क का सवाल किया जाएगा।" बहुत ज़्यादा रहता और इस ख़ौफ़ से कि मुख़्लेसीन हमेशा ख़तर–ए–अज़ीम पर रहते हैं हमेशा कांपते रहते। और तू कि ख़ैरियते ख़ातमा का दावा करता है और लोगों के सामने गला फाड़ता फिरता है। अल्लाह तआला की बेनियाज़ी की मारिफ़त ही से बेबहरा है।

ऐ बिरादर तेरी ख़ैरियत ख़ातमा को किसी ने न ग़सब किया है न उस पर ज़बरदस्ती किसी का कब्ज़ा है। लोगों के सामने क्या दावा करता है और उन से क्या लड़ता है। तेरा दावा और तेरी लड़ाई शरीअ़त के उसूल से है इसलिए कि क़ुरआन शरीफ़ और हदीस करीम और सहाबा के इज्मा ने हर साहिबे ईमान के बिल–ख़ैर ख़ातमा का हुक्म मुबहम बयान फ़रमा दिया है ख़्वाह सादात हों या ग़ैर सादात। और तू कि यक़ीन के साथ ख़ातमा बिल–ख़ैर होने का हुक्म करता है तो शरअ़ शरीफ़ ही से लड़ाई मोल लेता है और जो चीज़ की शरीअ़त में साबित नहीं है उसे कोई मुसलमान हरगिज़ क़ुबूल न करेगा। अगर तेरी इबरत की आंख खुली है तो पहले अंबिया अलैहिमुस्सलाम ही के हालात पर नज़र डाल ले कि नूह अलैहिस्सलाम ने सैकड़ों बरस तक अपने बेटे के लिए कोशिश की और एहतमामे कुल्ली किया कि किसी तरह वह मुसलमान हो जाए मगर कुछ फ़ाइदा न हुआ। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने चचा के लिए (जिसे वह बाप कहते थे) बहत्तरी कोशिश की कि वह बुत परस्ती से बाज़ रहे और मुसलमान हो जाए मगर कुछ न हुआ। मूसा अलैहिस्सलाम को कि आप पैग़म्बरों के सरदार हैं ख़ास कर फ़िरऔन की जानिब भेजा। गया और उनकी दावत की ताईद और कुव्वत पहुंचाने के लिए नौ मोजिज़े भी अता फ़रमाए मगर फ़िरऔन पर कुछ असर न हुआ और फ़िरऔन मलऊन पांच सौ साल तक ख़ुदाई का दावा करता रहा। मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू तालिब के लिए कितनी कोशिश फ़रमाई मगर मुफ़ीद और सूद मन्द न हुई तो ऐसी जगह जहां अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कोशिशें और उनका एहतमाम बार आवर न हुआ। उस जगह फ़रज़न्दी की निस्बत क्या काम आ सकती है।

अगर अल्लाह तआला किसी बन्दा से राज़ी न हो तो तमाम पैग़म्बरों की की कोशिश भी मुफ़ीद नहीं होती।

ऐ बिरादर! अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साहबज़ादों में से एक भी ज़िन्दा रहते और उनके बेटे और पोते पैदा होते तो वह रसूल के हक़ीक़ी फ़रज़न्द होते तो उन हक़ीक़ी फ़रज़न्दों के होते हम सादात के गरोह कि उनकी साहबज़ादी की औलाद हैं। कोई भी फ़रज़न्दे रसूल न कहता मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन हक़ीक़ी फ़रज़न्दों को भी मना फरमाते कि अपनी पैग़म्बर ज़ादगी पर भरोसा न करता। जैसा कि आपने हज़रत फ़ातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा को नहीं फरमाई। तो चूंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हक़ीक़ी और सुल्बी फ़रज़न्द न रहे, सादात को कि आपकी साहबज़ादी की औलाद हैं, उनके क़ाइम मक़ाम कर लिया गया। और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रज़न्दों में शुमार होने लगे तो वह पैग़म्बर ज़ादगी पर भरोसा करने की नही जो हज़रत फ़ातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा से थे उन पर भी वारिद हुई इसलिए कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मामूर फरमाए गये हैं। अन्ज़िर अशरतकल--अक़रबीन। (आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराएं) के हुक्म पर।

अब तो तुझे मालूम हुआ कि रसूल अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ जितनी निस्बत क़रीब होती चली जाएगी अज़ाबे इलाही से डराना और उसकी तहदीद उतनी ही बढ़ती जाएगी इसलिए कि अह्ले बैत के जुर्मे आमाल के तराज़ू में आमी लोगों के कुफ़्र से बढ़ कर हैं और अल्लाह पाक ने अवाम को उनके गुनाहों पर मग़फ़िरत की बशारत दी है और अह्ले बैत और सिद्दीक़ों की मासियत पर अपनी ग़ैरत से ख़ौफ़ दिलाया है कि –

"ऐ दाऊद गुनाहगारों को बशारत दे दो कि मैं बख़्शने वाला हूं और सिद्दीक़ीन को यह जता दो कि मैं बड़ी ग़ैरत वाला हूं।" और हुज़ूर के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

क़राबत वालों और अह्ले बैत को जुर्म और मासियत से मना फ़रमाया है हालांकि उनकी तरफ़ से कुफ़्र और शिर्क ख़्याल में भी नहीं आता कि उससे मना फरमाया जाए इसलिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़्वाज और नबियों की बीवियों की तरह नहीं। अल्लाह तआला का इरशाद है। यानी ऐ नबी की बीवियो! तुम दूसरी औरतों में से हर एक की तरह नहीं। अगर तुम परहेज़गारी करती हो तो बात चीत में मुलाइमत मत करो कि दिल का रोगी कुछ ललचाए। और अच्छी बात कहो अपने घरों में रहो और पहली जाहिलीयत का सा बनाव सिंघार मत करो। नमाज़ें पढ़ो और ज़कात देती रहो और अल्लाह और उसके रसूल के कहने पर चलो। बिला शुबह अल्लाह तआला यह इरादा फ़रमाता है कि ऐ अह्ले बैत तुम से पलीदगी को दूर फरमा दे और तुम्हें अच्छी तरह पाक कर दे।"

बाज़ राफ़ज़ी आयत इन्ना युरीदुल्लाहु अल–आयह। को पहली आयत से जुदा मानते हैं। तफ़्सीर मा तुरीदी में है कि "बाज़ ने कहा कि यह आयत पहली आयत से मक्तूअ् है, इसलिए कि पहली आयत अज़्वाज के बारे में है और यह आपके अह्ले बैत के हक़ में और यह राफ़ज़ीयों का क़ौल है।" लेकिन उलमाए अह्ले सुन्नत व जमाअत दोनों आयतों को बाहम मरबूत मानते हैं इसलिए कि अज़्वाजे मुतह्हरात तो असल अह्ले बैत हैं और बाक़ी दूसरों में से बाज़ दाख़िले, अह्ले बैत हैं, बाज़ लाहिक़ अह्ले बैत, जैसा कि ऊपर गुज़र चुका। पस उनकी पलीदगी यही है कि अल्लाह और रसूल की फरमांबरदारी से जी चुराएं और कोताही ज़ाहिर करें कि उनका यह क़ुसूर आम लोगों के कुफ़्र और शिर्क से बढ़कर रहे हैं।

दोस्तों और इख़्लास में डूबे हुओं का ज़र्रह बराबर गुनाह कुफ़्र से बदतर होता है, इसी तरह उनकी इबादत का एक ज़र्रह अल्लाह तआला के नज़्दीक पहाड़ के बराबर होता है। तो इन बेहतरीन मुर्दों की इताअत और नाफरमानी दोनों का बोझ पहाड़ से ज़्यादा होता है। ला मुहाला उन दोनों का अज्र और एताब क़्यामत के दिन दूने से ज़ाइद होगा।

मोमिन अपना गुनाह पहाड़ की तरह जानता है कि उस पर गिरा आ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रहा है और मुनाफ़िक़ अपनी सरकशी को मक्खी की तरह समझता है कि उससे उड़ जाएगी।

ऐ भाई! अल्लाह वाले अपनी इताअत और इबादत को अगरचे बेक़द्र और बेक़ीमत जानते हैं मगर अल्लाह तआला के नज़दीक वह बेश क़ीमत होती है और लग्ज़िशों और गुनाहों को जितना वह बांझल और बुरा समझते हैं वह इतने ही हल्के और छोटे रह जाते हैं। हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु के दोनों रुख़्सारों पर दो काली लकीरें पड़ गई थीं ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि दोस्तों का रोना मासियत का रोना नहीं गिरयए मारिफ़त है कि वह अपने वजूद को सर से पैर तक नाक़िस और ऐबी जानते हैं। वजूदुका ज़ंबुन वला युक़ासु बेही ज़ंबुन।" कि तेरा वजूद ख़ुद एक गुनाह है इसके बराबर किसी गुनाह का क़्यास नहीं किया जा सकता।" और अपने नुक़्स और ऐबों पर जितनी मारिफ़त बढ़ती जाती है उतनी ही गिरया व ज़ारी में तरक़्क़ी होती जाती है। अगर गुनहगार और आसी अपने गुनाहों को नदामत के पानी से न धोता रहे तो वह हलाक हो जाए।

नक़ल है कि एक मरतबा सुफ़ियान सूरी और शैबान राई एक जगह जमा हुए। हज़रत सुफ़ियान सूरी तमाम रात रोते रहे। इमाम शैबान ने दरयाफ़्त किया कि ऐ सुफ़ियान इतना क्यों रोते हो अगर गुनाहों के सबब रोते हो तो अल्लाह तआला की नाफ़रमानी मत करो। आपने जवाब दिया कि मेरे रोने का सबब अपने ख़ातमा का ख़ौफ़ है। इसलिए कि मैंने और चन्द लोगों ने एक शैख़ मुज्तहिद से चालीस साल का इल्म हासिल किया और उन्होंने साठ बरस तक ख़ाना काबा की मुजावरी की थी लेकिन जब जान दी तो कुफ़्र पर दी ख़ातमा बिल-ख़ैर नसीब न हुआ।" जवाब दिया कि ऐ सुफ़ियान वह उसके गुनाहों की शामत थी अगरचे जो तुम कहते थे वह भी उसमें था लेकिन जुर्म कोशी भी थी (निदामत व तौबा के बग़ैर) तुम अल्लाह तआला की नाफ़रमानी और उसके हुक्म की किसी आन मुख़ालिफ़त न करो।

मरवी है कि इब्राहीम नख़ई एक फ़क़ीह के शागिर्द थे। लोगों ने उनके मरने के बाद उन्हें ख़्वाब में देखा कि मजूसियों की टोपी सर पर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रखे हुए हैं लोगों ने उसका सबब पूछा। फ़क़ीह ने जवाब दिया कि जब मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस्म शरीफ़ आता मैं दरूद शरीफ़ न पढ़ता। उसी की नुहूसत से मारिफ़त और ईमान सल्ब कर लिया गया।

कोई क्या जाने कि क़लमे क़ुदरत ने क्या लिख दिया। हर शख़्स का अंजाम मुबहम है। अज़ली भेदों में ग़ौर करना किफ़ायत नहीं और न किसी की मौत का बिल-यक़ीन हुक्म उस से मालूम होता है। गुलाम हबशी अगरचे फरमांबरदार हो या क़ुरैशी सैय्यद अगरचे गुनहगार हो, अगरचे सैय्यदुल-अबरार अलैहिस्सलातु इला यौमिल-क़रार ने (बहस्बे ज़ाहिर) यह हुक्म फरमा दिया कि फ़लां जन्नत में जाएगा और फ़लां दोज़ख़ में लेकिन इताअ़त और सरकशी का राज़ इल्मे ग़ैब की चादर में पोशीदा है और अब (कि वही का सिलसिला मुन्क़ता हो चुका) कोई नहीं बता सकता कि हिक्मते अज़ली ने से रांद-ए-बारगाह किया और लुत्फ़े लम यज़ली ने किसे अपनी तरफ़ बुला लिया। (बस यूं समझ लो) कि दीन की राह चलने के लिए दो पांव हैं। ख़ौफ़ व रिजा और बग़ैर पैरों के रास्ता चलना मुम्किन ही नहीं। ईमान का ज़र्फ़, उम्मीद और ख़ौफ़ का मकाम है और मज़्रूफ़ उसी वक़्त तक रहता है जब तक ज़र्फ़ ठीक रहे। अगर तू उम्मीद पालता रहे और ख़ौफ़े ख़ुदा छोड़ दे तो तूने अपनी सियाह दिल से ज़र्फ़े ईमान को तोड़ दिया और जब ज़र्फ़ टूट गया तो मज़्रूफ़ भी ग़ारत हुआ कि बात चीत (कि मानिन्द मज़्रूफ़ है) आवाज़ और हरफ़ों ही से होती है (कि मिस्ल ज़र्फ़ हैं।) इसी तरह जिसे ख़ौफ़ नहीं वह कुफ़्र में है जिस तरह तरीक़-ए-मुर्जीया कि सरासर बेदीनी व बद-अक़ीदगी है। मुर्जीया का दीन ज़मान-ए-अक़्दस में न था मगर तू उसे अपनी फ़ुज़ूल अक़्ल में पाल रहा है। तमाम मुर्जीया काफ़िर और बेदीन हैं उनकी बदअक़ीदगी का हाल शरीअ़त से अयां है।

ऐ गरोहे सादात रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहु अलैहि व सल्लम की निस्बते फ़रज़न्दी के शर्फ़ पर घमण्ड और ग़ुरूर मत करो कि तमाम निस्बतें दुनिया में जान पहचान के लिए हैं। आख़ेरत की बुज़ुर्गी सिर्फ़ तक़्वा पर है। अल्लाह तआला का इरशाद है-

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तरजमा : ऐ लोगो! हमने एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है और हमने तुम्हें कुंबे और क़बीले में तक़सीम किया ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। तुममें सबसे ज़्यादा करामत वाला वह है अल्लाह के नज़्दीक जो तुम सबमें ज़्यादा परहेज़गार रहे।" लिहाज़ा दीनी इज़्ज़त का सुबूत तक़्वा से है न कि सियादत से और न रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फ़रज़न्दी के ज़ाहिरी पैवन्द से। हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया है। अगर किसी शहर में मेरा कोई फ़रज़न्द है और दूसरे लोग उससे ज़्यादा परहेज़गार हैं तो वह मेरा नहीं।" अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है। इन्नमा यतक़ब्बलुल्लाहु मिनल–मुत्तक़ीन। अल्लाह ताआला परहेज़गारों ही से क़बूल करता है।" तो क़बूल का इंहिसार तक़्वा पर रखा न कि निस्बत और सियादत पर। और फ़रमाया। कि लोगों तोशा बना लो और तहक़ीक़ कि बेहतरीन ज़ादे राह तक़्वा है।" यहां भी आख़िरत का तोशा तक़्वा फरमाया न सियादत और न निस्बत। और फ़रमाया इन्ना औलियाउहू इल्लल–मुत्तकून। इसके दोस्त नहीं मगर मुत्तक़ीन।" तो बन्दा कि अल्लाह तआला के साथ दोस्ती तक़्वा पर मुंहसिर है न कि अंसाब पर। रिसाला मक्कीया में है कि यह नज़्म क़ुरआनी और इसी तरह से और इबारतें हस्र का फ़ाइदा देती हैं।

मसअला पर ग़ौर करो और देखो कि इब्लीस और बल्आम और बरसीमा अपने हालाते ज़िन्दगी में ज़ाहिरी कमाल और करामत रखने के बावजूद, जब उन्होंने तक़्वा छोड़ दिया और ख़्वाहिशात की पैरवी करने लगे तो वह अपने दरजों से कैसे गिरा दिए गये।

"अगर इल्म में बग़ैर तक़्वा के कोई बुज़ुर्गी होती तो अल्लाह की मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा शर्फ़ वाला इबलीस होता।" और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है। इला कुल्लु मूमिनन तक़ीइन। हर मुत्तक़ी मुसलमान मेरी आल है। यह न फरमाया कि मेरी आल मेरी औलाद है।

फिर आल का इस्तेमाल तीन तरह होता है। कभी तो ज़िक्र किया जाता है और उससे ज़ात ही मुराद होता है। अल्लाह तआला ने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

फरमाया कि –

बकाया उन में से जिसे आले मूसा और आले हारून ने छोड़ा। और कभी मज़्कूर होता है और उससे आदमी की क़राबतदारों का इरादा किया जाता है। अल्लाह तआला ने फरमाया। क्या एक मर्द मुसलमान ने आले फ़िरऔन से" और वह हरबील फ़िरऔन के चचा हैं। और कभी बोला जाता है और इससे मिल्लत वाले मुराद होते हैं जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया गया कि आपकी आल कौन है? "इरशाद हुआ मेरी आल हर मुत्तक़ी मुसलमान है।" और यह राफ़ज़ीयों पर हुज्जत है इसलिए कि वह कहते हैं कि आले मुहम्मद सिर्फ़ अली और उनके फ़रज़न्द हैं।

यह भी जानना चाहिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आल दो क़िस्म की है। एक नसबी जिसे हज़रत जाफर और अक़ील बिन अबी तालिब की औलाद और अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की औलाद और हारिस बिन अब्दुल–मुत्तलिब और अली और आपकी औलाद कर्रमल्लाहु वज्हुल–करीम रज़ि अल्लाहु अन्हुम। दूसरे सबबी कि हर मुत्तक़ी मुसलमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आल है। तो आले नसबी में आख़िरत की नजात के लिए तक़्वा और तहारत शर्त है और ख़ातमा की ख़ैरियत और हुस्ने आक़िबत भी तक़्वा पर मौक़ूफ़ है। अल्लाह तआला ने फरमाया। वल–आक़िबतु लिल–मुत्तक़ीन। कि आक़िबत तो परहेज़गारों की की है।" अब कि मैंने इस सुंबुला को ख़त्म किया हिदायत और गुमराही के उज़्र में सबसे यही कहता हूं कि–

तरजमा : अल्लाह जिसे हिदायत फरमाए उसका कोई गुमराह करने वाला नहीं और जिसे वह गुमराह छोड़ दे उसे कोई राह पर लाने वाला नहीं। हम अल्लाह की पनाह मांगते हैं अपने नफ़्सों की शरारतों से और अपने आमाल की बुराईयों से।

कभी फ़रिश्ता हमारी पाकी पर रश्क करता है तो हमारी बेबाकी पर कभी शैतान भी ख़ुश होता है अगर हम क़ब्र तक अपने ईमान को सलामती से ले जाएं तो इस चुस्ती और चालाकी पर शाबाश है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

दूसरा सुंबुला–पीरी मुरीदी के बयान और उसकी हक़ीक़त और माहियत में

याद रखो कि पीरी और मुरीदी, बैअत यानी एक दूसरे के हाथ पर हाथ रखने और अहद बांधने का नाम है जैसा कि पीराने तरीक़त ने अपने हाथ सच्चे मुरीदों के हाथों पर रखे और रखते हैं और कलिमा इस्तिग्फ़ार और तौबा की तल्क़ीन की और करते हैं और मुरीदों से यह अहद लेते हैं कि –

तरजमा : जो रसूलुल्लाह तुम्हें दें उसे लो और जिससे तुम्हें मना कर दें उससे बाज़ रहो। इस बैअ़त की असल यह है कि सहाबा किराम ने रसूल अलैहिस्सलातु वस्सलाम से दरख़्त के नीचे बैअत की तो अल्लाह तआला उन से राज़ी हुआ चुनांचे इरशाद फरमाया।

तरजमा : कि बेशक अल्लाह तआला राज़ी हुआ मुसलमानों से जब ऐ रसूल वह तुम्हारे हाथ पर दरख़्त के नीचे बैअत करते हैं"

नीज़ ख़ुदाए कुद्दूस ने इरशाद फरमाया कि ऐ रसूल तुम्हारे सहाबा ने जो बैअ़त तुमसे की है वह मुझ से की है और तुम्हारा वह प्यारा हाथ जो अस्हाब के हाथों पर था वह मेरा दस्ते कुदरत था। चुनांचे फरमाया।

तरजमा : कि बेशक वह लोग जो तुम से बैअ़त करते हैं अल्लाह से बैअ़त करते हैं। अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है।" रिवायत है कि हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु बैअ़त के वक़्त मौजूद न थे। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना एक मुबारक हाथ हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु अन्हु के हाथ के काइम मकाम किया और दूसरे मुबारक हाथ को दस्ते कुदरत का नाइब बनाया और फरमाया।" यह अल्लाह का दस्ते कुदरत है और यह उस्मान का हाथ है।" तो आपने अपना एक हाथ दूसरे हाथ पर रखा और बैअ़त की। यहीं से यह बात साबित हुई कि सादिक़े तालिब अगर हाज़िर न हो तो उसकी ग़ैर हाज़िरी में उसे बैअ़त करना जाइज़ है।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मर्दों की बैअ़त से

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

फ़ारिग हुए और मकान के अन्दर तशरीफ़ ले गये तो तमाम औरतें बैअ़त के लिए हाज़िर हुईं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ तवक्कुफ़ फरमाया तो यह आयत नाज़िल हुई। "यानी ऐ नबी जब मुसलमान औरतें तुम्हारे पास हाज़िर आएं और इस चीज़ पर बैअ़त करें कि वह अल्लाह का शरीक नहीं ठहराएंगी न वह चोरी करेंगी न ज़िना करेंगी। न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी। न ऐसा बुहतान लाएंगी जिसे वह अपने हाथों और पैरों के दर्मियान कसब करें और नेक बात में तुम्हारी नाफरमानी न करेंगी तो आप उनको बैअ़त कर लें और उनके लिए अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार करें। बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है।" नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस आयत के बमूजिब औरतों को भी बैअ़त कर लिया। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से औरतों की बैअ़त सिर्फ़ कलाम से हुई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दस्ते मुबारक किसी औरत के हाथ से मस न हुआ।" पीरी मुरीदी के इस्बात में यह एक मुस्तहकम और क़तई असल और वह बुनियाद है जिसे मज़बूत और सीसा पिलाई हुई कहा जाता है। इसमें किसी मुंकर को इंकार की गुंजाइश नहीं।

ऐ बिरादर सिमाअ़ के हलाल और हराम होने के मुतअल्लिक़ क़दीम ज़माने से उलमा और मशाइख़ में गुफ़्तगू चली आई है। इसी तरह ज़िक्रे ख़फ़ी व जली में भी कलामे मुद्दत से जारी है। लेकिन पीरी मुरीदी का इंकार किसी ज़माना में न पाया गया और न बैअ़त के क़ुबूल में किसी मुज्तहिद ने कोई बात निकाली तो अपनी इंतिहाई बेवक़ूफ़ी से बैअ़त के इंकार में क्यों ज़बान चलाता है।

इस वाक़या की आवाज़ से सातों आसमानों के गुंबद गूंज रहे हैं कोताह नज़र को देखो कि उसे कोई बात ही नहीं समझता। हज़रत दाऊद ताई क़ुद्दिसल्लाहु रौज़ा जो इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु के शागिर्दों में से थे जब आपने हज़रत हबीब अज्मी रज़ि अल्लाहु अन्हु से बैअ़त की इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अपनी ख़ास कमाई में से कुछ हिस्सा उन्हें नज़्र फरमाया और उसको आपने वज्हे तक़र्रुब जाना।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मुरीदी क्या है अपने गुनाहों से तौबा और अपनी कोताहियों की उज़्र ख़्वाही करना। मुरीदी एक मुआमला है तौबा करने और बुरी बातों से छुटकारा हासिल करने का। चूंकि बेग़ैर तौबा के दीन भी नुक्सान में और बेरौनक़ रहता है लिहाज़ा मुरीदी बेहद ज़रूरी और हर शख़्स पर लाज़िम है। मुरीदी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक अह्दो पैमान की बैअ़त है न कि उन जाहिलों और फ़ुज़ूल लोगों की तराशी हुई बातें। हुज़ूर से सबसे पहले चार अस्हाब ने बैअ़त की। उसके बाद आपके और अस्हाब ने। औरतों ने भी हुज़ूर से दिल से बैअ़त की इसलिए की आयत बाएहुन्ना नाज़िल हुई। उस वक़्त से लेकर हमारे ज़माना तक बराबर जारी और दुनिया के हर गोशा में पहुंची हुई है। उसकी ज़रूरत अव्वल आख़िर में है और उसकी फ़र्ज़ीयत हर ख़ास और आम पर। उस रास्ता में इस्तिग़फ़ार और तौबा फ़र्ज़ है कि आयत शरीफ़ तूबू इलल्लाह का हुक्म है। इस आयते करीमा में जमीअ़न भी फ़रमाया गया है इसलिए हर शख़्स पर गुनाहों से तौबा करना लाज़िम है। तो अगर कोई यूं अटकलें दौड़ाए कि यह फ़र्ज़े यक़ीनी मेरे ऊपर लाज़िम नहीं है तो उस पर सबसे ज़्यादा यह काम ज़रूरी है और इस गुमान से तौबा व इस्तिग़फ़ार करना भी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रोज़ाना इस्तिग़फ़ार करते और दिन में सत्तर मरतबा उसकी तकरार फ़रमाते तौबा का वजूब तो हर ख़ास और आम पर है लेकिन अपने–अपने मक़ाम के एतबार से फ़र्क़ है। ऐ दोस्त तू ख़ुद तौबा नहीं कर सकता, अपने नफ़्स को किसी साहिबे तौबा के सुपुर्द कर दे जो तौबा की सेहत की सनद रखता हो और तौबा के रास्ते में तरक़्क़ी करता जा रहा है। जो ख़ास और आम का मक़ाम भी पहचानता हो और हर मक़ाम पर तौबा की एक बुनियाद भी रखता जाता हो। तौबा करना हर शख़्स के हाथ पर ज़ेबा नहीं है कि खोटे सिक्के सिवाए ग़म बढ़ाने के किसी काम नहीं आते। ऐ जवान तू कब तक चाहेगा कि बेग़ैर पीर के रहे इसलिए कि मुहलत देने और टालते रहने में मुसीबत ही मुसीबत है। अगर तेरा कोई पीर नहीं है तो शैतान तेरा पीर है जो दीन के रास्तों में धोखे और चालों से डाका डालता है। शैतान ने अगरचे तेरे लिए जाल लगा दिए

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हैं लेकिन तू उसके दाना और पानी में से ज़र्रह बराबर न ले और बहुत जल्द किसी पीर का हाथ पकड़ ले। बेग़ैर पीर के मर जाना मुरदार मौत के मानिन्द है। अपना वसीला आयत वबतग़ू के मातहत तलाश कर और जानने वालों से पूछ और फ़स्अलू (आ–आयह) को पढ़। हमारा सरतापा वजूद गुनाह है और मुरीद हो जाना हर गुनाह के लिए पनाहगाह। मुरीदी दीन और ईमान की चार दीवारी है और हर मर्द मुसलमान को अपने दीन की फ़िक्र रहती है।"

अल–ग़रज़ पीरी और मुरीदी के हुक़ूक़ और शराइत आजकल बहुत ख़राब और परागन्दा हालत में है। न पीरों को पीरी के हक़ाइक़ और आसार की कुछ ख़बर है और न मुरीदों में मुरीदी के आदाब और लतीफ़ बातों का कुछ असर है। आज कल कोई शख़्स मुरीदी ही के लाइक़ नहीं पीरी के क़ाबिल कहां से मिले। अगर पीरी और मुरीदी का थोड़ा सा हाल भी मुफ़स्सल लिखूं तो तमाम दुनिया जो पीरों और मुरीदों से भरी हुई है यह समझ बैठे कि हम सब ख़ता पर ग़लती और बातिल पर हैं। हालांकि ऐसा नहीं। बात यह है कि सफ़ाई क़ल्ब बाक़ी नहीं रही तलछट रह गई है। तो जिस को ईसा अलैहिस्सलाम मयस्सर न हों अगर जड़ी बूटियां इस्तेमाल न करे तो फिर क्या करे। और जिसे सूरज की रौशनी न पहुंचे उसे चिराग़ जलाना ज़रूरी है। हाए अफ़सोस वह पीरी मुरीदी कहां ग़ायब हो गई।

मन्कूल है कि हज़रत अबू क़ासिम गरगानी जिन्नो और इंसानों के पीर थे और आप के हज़ारहा मुरीद साहिबे रोज़गार थे। उसके बावजूद आप फ़रमाया करते कि हमारा जी चाहता है कि दुनिया में हमारा कोई ऐसा मुरीद हो कि हम उसकी खाल उतार कर उसमें भुस वग़ैरह भर कर धूप में लटका दें ताकि दुनिया वालों को यह मालूम हो जाए कि मुरीदी किसका नाम है।" हां बेशक चूंकि उन्होंने मुरीदी की थी वह मुरीदी की क़द्र अच्छी तरह जानते थे। तो जब हर मुरीद की सच्ची अक़ीदत अपने मुर्शिद के तसर्रुफ़ में, इस हद तक न पहुंच जाए कि वह अपनी हर मुराद को फना कर दे, इसको सच्चा और वाक़ई मुरीद नहीं कहा जा सकता। और जब मुरीद हक़ीक़ी बिल–कुल्लीया अपने इरादा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

और अख़्तियार से ख़ाली रह जाता है तो मारिफ़त और सआदत के कमाल के आख़िरी दरजा तक पहुंच जाता है।

जब तक तुम अपनी सैंकड़ों मुरादें तर्क न करोगे अपना मक़्सूद एक मरतबा भी न पा सकोगे।

ख़ुदाए तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अस्हाब को पहली बैअ़त में ऐसी ही तही दामनी और हर मुराद से दामन कुशी की तल्क़ीन की। और फ़रमाया कि फ़ला व रब्बिका ला यूमिनूना अल–आयत। यानी उनका ईमान उस वक़्त कामिल होगा जबकि ऐ महबूब वह तुम्हें अपना हुक्म बना लें और फिर तुम उन्हें जो हुक्म दो उससे वह अपने दिल में तंगी महसूस न करें और तुम्हारे हुक्म को बिला चूं व चरा तस्लीम कर लें।" चुनांचे जब सहाब–ए–किराम ने अपने इरादा और ख़्वाहिश को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म के हुज़ूर तर्क कर दिया और अपनी तमाम तमन्नाओं को ठुकरा दिया तो दीन में कमाल और नेमत व सआदत में तमामियत हासिल कर ली। और इरशादे रब्बानी कि अल–यौमा अक्मल्तु लकुम दीनुकुम अल–आयत। यानी आज मैंने तुम्हारे दीन को और तुम पर अपनी नेमत तमाम कर दी और तुम्हारे लिए दीने इस्लाम को पसन्द फरमा लिया" उस पर सराहतन दलालत करता है। और जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने अस्हाब को इस कमाल पर मुकम्मल पाया तो दूसरों को उनकी पैरवी और बैअ़त का हुक्म दिया और फरमाया – कि मेरे अस्हाब सितारों के मानिन्द हैं तुम जिसकी पैरवी करोगे राह पाओगे।" उसके बाद तमाम ताबईन और तबअ़ ताबईन की कि इस उम्मत के उलमा हैं तारीफ़ फरमाई और इरशाद फरमाया कि – मेरी उम्मत के उलमा बनी इस्राईल के अंबिया की तरह हैं" यह भी इरशाद किया कि अल–उलमाओ वरेसतुल–अंबियाए।" उलमा अंबिया के वारिस हैं।" ताकि तमाम उम्मती उनकी पैरवी और बैअ़त में आ जाएं और उनकी यह बैअ़त उख़रवी सआदतों और उस जहान की नजात और तरक़्क़ी दरजात का वसीला बन जाए। हम उस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं।

ऐ बिरादर पीरी और मुरीदी से सिवाए रस्म और नाम के कोई और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

चीज़ बाक़ी नहीं रही और वह नाम व रस्म भी चन्द शर्तों पर मबनी है कि बेग़ैर इन शर्तों के पीरी और मुरीदी दुरुस्त ही नहीं हो सकती। तो पीरी की बुनियादी शर्तों में से एक शर्त यह है कि पीर सही मसलक रखता हो। दूसरी शर्त यह है कि पीरे तरीक़त के हुक़ूक़ की अदाइगी में पीछे रह जाने वाला और सुस्ती बरतने वाला न हो। तीसरी शर्त यह है कि पीर के अक़ीदे अह्ले सुन्नत व जमाअत के मुवाफ़िक़ दुरुस्त हों। लिहाज़ा और मुरीदी की जो रस्म अभी बाक़ी है, उन तीनों शर्तों के बेग़ैर दुरुस्त ही नहीं हो सकती। अब इन तीनों शर्तों की मैं मुख़्तसर वज़ाहत करता हूं।

पहली शर्त कि पीर का मसलक सही हो उसकी तौज़ीह यह है कि सच्चे मुरीद को सही सिलसिला तलाश करना चाहिए कि अक्सर जगह ख़लत और ख़बत हो गया है उन्हीं में से एक सूरत यह है कि जिस दुर्वेश ने अपनी ग़फ़लत या किसी और सबब से अपने बेटे को ख़िलाफ़त नहीं दी और लोगों को वसीयत भी नहीं की कि मेरे बाद, मेरे फ़रज़न्द को मेरा ख़िरक़ा पहना देना और उसे मेरे क़ाइम मक़ाम कर देना उस जगह के रहने सहने वाले तीसरे रोज़ उस दुर्वेश का ख़िरक़ा उस लड़के पहना देते हैं और अपनी इस हरकत के सही या ग़ैर सही होने का मुतलक़न ख़्याल नहीं रखते। अब एक कसीर मख़्लूक़ उसकी बैअत के जाल में फंस जाती है और यह रुख़्सत व इजाज़त के बेग़ैर पीर बन जाता है हालांकि यह गुमराही दर गुमराही है इसलिए कि अगरचे बाप का मतरूका ख़िरक़ा विरासत की वजह से उसके हत्थे चढ़ा लेकिन बैअत की सेहत के लिए बाप की रुख़्सत और इजाजत शर्त है न कि सिर्फ़ बाप का ख़िरक़ा पा लेना।

ऐ बेटे बैअत सही होने की शर्त तरीक़त में सलफ़ की इजाज़त है। धोखे से खोटे सिक्कों को मत चलाओ इसलिए कि यह ना ख़लफ़ और बिगड़े हुए लोगों का रास्ता है।

दूसरी सूरत यह है कि गुज़िश्ता औलिया कि वली और क़ुतुब थे (आजकल) उनकी औलाद दुरुस्ती सनद के बेग़ैर, और बिला रुख़्सत और इजाजत, महज़ फ़रज़न्दी की निस्बत की बुनियाद पर मख़्लूक़ को

https://t.me/AhleSunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मुरीद करते हैं और मख़्लूक़ यह समझती है कि हम तो फ़लां क़ुतुब और ग़ौस की सरकार से तअल्लुक़ रखते हैं और हम तो उनके नाइब हैं हालांकि यह सरासर गुमराही है। कहते हैं कि ख़ानवाद–ए–शाह मदार का सिलसिला दुरुस्त नहीं है इसलिए कि उन्होंने अपने सिलसिले को खुद सोख़्त कर दिया। उसका मुख़्तसर क़िस्सा यूं है कि हज़रत शाह मदार साहब का क़याम कालपी शरीफ़ में एक मुद्दत तक रहा। उस वक़्त उस विलायत का वाली एक नेक मर्द था जिसका नाम क़ादिर बख़्श था जो दुर्वेशों की ख़िदमत करता और टूटे दिलों को सहारा देता और फ़क़ीरों से मुहब्बत रखता था। अक्सर औक़ात हज़रत शाह मदार की ख़िदमत में हाज़िर हुआ करता मगर आप कुछ तवज्जोह न फरमाते और न उसको अपने हुज़ूर हाज़िरी की इजाज़त देते, वह वाली हर बार लौट जाता। एक रोज़ क़ादिर शाह मुलाक़ात के लिए हाज़िर हुआ तो देखा कि दो शख़्स शाह मदार साहब के मकान में गुफ़्तगू कर रहे हैं। यह एक ऊंचे घोड़े पर सवार था। गर्दन उठा कर देखा तो मालूम हुआ कि शाह मदार साहब और एक जोगी बाहम बात चीत कर रहे हैं। कहने लगा कि यह अजीब दुर्वेश हैं कि मैं दीन की तलब में उनके पास बार–बार आता हूं मुझ से मुलाक़ात नहीं करते और एक जोगी से कलाम में मशग़ूल हैं।" यह कहा और लौट आया (यह सुन कर) उस जोगी ने कुछ ऐसी हरकत की कि क़ादिर शाह के बदन में जगह–जगह सफ़ेद धब्बे पड़ गये। क़ादिर शाह अपने पीर की ख़िदमत में जिनका नाम शैख़ सिराज था हाज़िर हुआ और उन से तमाम माजरा बयान किया। और वह सफ़ेद दाग़ दिखाए। शैख़ सिराज क़ुद्दिसल्लाहु ने अपना लुआबे दहन उन दाग़ों पर मल दिया वह दाग़ दूर हो गये और क़ादिर शाह तन्दुरुस्त हो गया। जब रात आई तो शाह मदार तल्वार लिए हुए नमूदार हुए और अपने चाहा कि क़ादिर शाह को ख़त्म कर दें। हज़रत शैख़ सिराज आड़े आए कि यह तो हमारा मुरीद है, बेगुनाह को क्यों मारते हैं। शाह मदार ने फरमाया कि उसने मुझे तक्लीफ़ पहुंचाई है। शैख़ ने जवाब दिया कि यह तो दीन की तलब के लिए हाज़िर होता था उसने कोई तक्लीफ़ नहीं पहुंचाई। दोनों हज़रात में तकरार बढ़ गई,

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कि इतने में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और शाह मदार से मना फरमाया कि इस बेगुनाह को मारना चाहते हो यह कौन सी दुर्वेशी है। हज़रत शाह मदार ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह दुर्वेश जब अपनी तल्वार नियाम से निकाल लेता है किसी न किसी पर ज़रूर चलाता है। अब कि मैं अपनी तल्वार खींच चुका हूं किस पर चलाऊं ? शैख़ सिराज ने फरमाया तुम्हारे इस वार को मैं अपने ऊपर लेता हूं लेकिन अपने मुरीद को कोई तक्लीफ़ पहुंचाना मुझे पसन्द नहीं। शाह साहब ने फरमाया तो अच्छा हमने तुम्हें सोख़्ता कर दिया। शैख़ सिराज ने फरमाया कि हमने तुम्हारे तमाम मुरीदों को गुमराह किया। शाह मदार ने फरमाया मैंने गिनती के चन्द आदमी मुरीद किए हैं और आज की तारीख़ से किसी को मुरीद भी नहीं करूंगा रही खिलाफ़त वह मैंने न किसी को दी है और न अब दूंगा। चुनांचे शैख़ सिराज के बातिन में कुछ सोज़िश शुरू हुई और आप तमाम उम्र इसमें मुब्तला रहे। इसी लिए उनको शैख़ सिराज (सोख़्ता) कहा जाता है (सिराज बमानी चिराग़, सोख़्ता बमानी जला हुआ।)

लेकिन शाह मदार साहब के वह चन्द मुरीद बेग़ैर रुख़्सत, बेग़ैर इजाज़त और बेग़ैर खिलाफ़त के मुरीद करते थे और सिलसिला बढ़ाते थे और अपना ख़लीफ़ा बनाते। यही उनकी गुमराही है। और यह सब शाह मदार की वफ़ात के बाद हुआ आपकी हयाते ज़ाहिरी में मुरीद कुछ न कर सके। और जब हज़रत शाह मदार की रिहलत का वक़्त क़रीब आया तो आपने अपनी फ़रासते बातनी से जाना कि मेरे मुरीद एक आरिफ़ के गुमराह किए हुए हैं उन से यक़ीनन बद दियानती ज़ाहिर होगी लिहाज़ा आपने दस्ते मुबारक से बहुत कसरत से खुतूत लिखे और चारों तरफ़ उनको रवाना फरमा दिया कि हमने किसी को खिलाफ़त नहीं बख़्शी है चुनांचे हज़रत शाह मदार साहब के दस्तख़त का एक कागज़ हज़रत मख़्दूम शैख़ सअद के कब्ज़ा में आया जिसमें हज़रत शाह मदार ने तहरीर फरमाया था कि हमने किसी को खिलाफ़त नहीं बख़्शी है। इसी बिना पर मख़्दूम शैख़ सअद हज़रत शाह साहब के मुरीदों को उससे बाज़ रखते दियानत के मद्दे नज़र न कि उनकी एहानत की

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ख़ातिर। और मख़्दूम शैख़ सअद के ख़ुलफ़ा भी लोगों को इस बैअ़त से लौटाया करते थे। चुनांचे मख़्दूम शैख़ सफ़ी क़ुद्दिसा सिर्रुहू को फ़क़ीर ने बचश्म ख़ुद देखा। और मख़्दूम शैख़ मुहम्मद मंगन को कि आप मलावा में आराम फरमा रहे हैं। और मख़्दूम शैख़ निज़ामुद्दीन को कि मक़ाम अमेठी में आराम फरमा हैं। कि यह हज़रात भी तमाम लोगों को इस बैअ़त और अनाबत से लौटाते थे। वल्लाहु आलम बिस्सवाब। फ़क़ीर को जो कुछ सही ख़बरों से बित्तहक़ीक़ मालूम हुआ वही कहा है। हमारी इस तहक़ीक़ के बाद जो शख़्स रुजूअ़ करने में अपनी हतक समझे वह जाने। हमारे पास इस वाक़या की सेहत और सच्चाई पर एक क़वी मिस्दाक़ और रौशन दलील भी है और वह यह है कि शाह मदार के मुरीदों में से हज़ारों मुरीदों ने बैअ़त तोड़ दी और उस से बाज़ रहे। बहुत से मख़्दूम शैख़ सअद के मुरीद हो गये। और बहुतेरे मख़्दूम शैख़ सअद के ख़ुलफ़ा और उनके ख़ुलफ़ा के मुरीद हुए। बहुत से मुरीदों ने शैख़ मुहम्मद मंगन और बहुत सो ने शैख़ निज़ामुद्दीन और शैख़ अल्ला दिया ख़ैराबादी और सन्देली से अपनी अक़ीदत मन्दी का इज़्हार किया। और शाह मदार साहब की मुरीदी से फिर गये। तो अगर शाह मदार साहब उन मुरीदों के मुराजेअत पर रज़ामन्द न होते और अपने मुरीदों का दूसरे बुज़ुर्गों से पैवन्द रवा न रखते तो यक़ीनन इन मुरीदों को उनकी जानिब से कोई नुक़्सान व ख़लल और बदला या सज़ा ज़रूर पहुंचती और उन बुजुर्गों पर कुछ एताब या गुस्सा और तंबीह ज़रूर होती और जब आपने उन बुजुर्गों पर कुछ एताब या गुस्सा किया और न उन मुरीदों को कोई नुक़्सान या ख़लल पहुंचा तो मालूम हुआ कि आपने अपने सिलसिला को ख़ुद ही बरहम कर डाला। यहां तक तुम्हें मालूम हुआ कि सिलसिला की सेहत, पीरी की शर्तों में से पहली शर्त है।

पीरी की दूसरी शर्त यह है कि पीर आलिम व आमिल हो, जुमला इबादात का फ़राइज़ और वाजिबात और सुन्नतों और नफ़्लों और मुस्तहिब्बात का। और उन अहकाम की पाबन्दी में कोताह और सुस्त न हो। हर वुज़ू के लिए मिस्वाक करे। दाढ़ी में कंघा करे कि यह दोनों सुन्नतें हैं। पांचों नमाज़ें, अज़ान इक़ामत और जमाअ़त के साथ अदा करे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तादीले अरकान का ख़्याल रखे और इसी क़िस्म की दूसरी बातें निगाह में रखे और अगर वह इन इबादतों का आलिम न होगा तो उन पर अमल न कर सकेगा तो हद्दे शरअ् से गिर जाएगा। लिहाज़ा पीर नहीं बन सकता। इसलिए कि जो शख़्स हक़ीक़त के मक़ाम से गिर जाता है वह तरीक़त पर आकर रुक जाता है और जो तरीक़त से गिरता है शरीअ़त पर ठहर जाता है और जो शरीअ़त से गिरा, गुमराह हुआ और गुमराह शख़्स पीर बनने के लाइक़ नहीं। और वह दुर्वेश जिसकी जानिब मख़्लूक़ झुकी पड़ती हो मसलन अक्सर मख़्लूक़ उसकी बैअ़त और इरादत पर रुजूअ् रखती है, उस पर तो शरीअ़त के जुज़्ईयात में भी एहतियात फ़र्ज़ और लाज़िम है। उसे चाहिए कि शरीअ़त के दक़ाइक़ में से एक शम्मा भी फ़ौत न होने दे। कि यह चीज़ उसके मुरीदों की गुमराही का ज़रीआ बनेगी। ज़ाहिर है कि वह ऐसे फ़ेअ्ल से हुज्जत लाते और कहते हैं कि हमारे पीर ने ऐसा काम किया है लिहाज़ा वह गुमराह और गुमराह कुन हो जाते हैं।

मन्कूल है कि हज़रत हसन बसरी ने एक मस्ताना को रास्ते में देखा कि चला जा रहा है और हर क़दम पर ठोकरें खा रहा है। फ़रमाया क़दम को जमा कर रख ताकि ठोकर न लगे। कहने लगा तुम अपने क़दम संभाल कर डालो कि कहीं बहक न जाएं। अगर मेरा क़दम लड़खड़ाया तो मैं दीवाना व माज़ूर हूं। (मेरा फ़ेअ्ल सनद नहीं) लेकिन अगर तुम्हारे क़दम डगमगाए तो तमाम दुनिया के भटकने का सबब होंगे। इसलिए कि आलम की राह याबी तुम्हारी पैरवी में है।"

पीरी की तीसरी शर्त यह है कि पीर के अक़ीदे दुरुस्त हों। मज़्हबे अह्ले सुन्नत व जमाअत के मुवाफ़िक़, और वह मुतअस्सिब पक्का सुन्नी हो इस लिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तिहत्तर फ़िरक़ों में से एक को नाजी फ़रमाया है और बहत्तर फ़िरक़ों से दूरी और परहेज़ का हुक्म फ़रमाया है और वह नजात पाने वाला गरोह वही है जो कुरआन हदीस और सहाबा किराम के तरीक़ों पर कारबन्द है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

यही तीनों हैं बस असल शरीअ़त। किताब व सुन्नत व इज्माए उम्मत। क़्यास रासिख़ुल-इल्म बरहक़। उन्हीं तीनों से है बेशुबह मुल्हक़। तो गर इनसे क़दम बाहर रखेगा। तो राहे दीन से बाहर गिरेगा।

तो मुरीद जब पीर में यह तीनों शर्तें पाए उसका मुरीद हो जाए कि जाइज़ और मुस्तहसन है और अगर पीर में उन तीनों शर्तों में से एक भी कम हो तो उस से बैअ़त जाइज़ नहीं। और किसी ने ग़लती से उस से बैअत कर ली है तो उस पर ज़रूरी है कि इस बैअ़त को तोड़ दे। (और तरीक़त की तरफ़ आएं तो) तरीक़त में पीरी की शर्तें बहुत ज़्यादा हैं उनमें से बाज़ हम लिखते हैं। पहली शर्त अकले हलाल है। पीर को अकले हलाल में एहतियाते कुल्ली बरतना चाहिए। हरगिज़-हरगिज़ कोई ऐसा लुक़्मा जो ग़ैरे हलाल तरीक़ा से हासिल किया गया हो या मुश्तबह हो उसके पास न फटके इस लिए कि – "हर वह गोश्त जो हराम से पैदा हुआ दोज़ख़ ही के लिए मुनासिब है।" दूसरी शर्त सिद्क़ मक़ाल सच्चा बोल है, पीर को चाहिए कि हरगिज़ झूठ ग़ीबत और फ़हश ज़बान पर न लाए कि सच्चाई नजात दिलाती है और झूठ हलाक करता है।

कजरवी की बदौलत तो बिला कम व कास्त गिर पड़ेगा और अगर तू सच्चा है तो सब बातों में ठीक है। रास्ती अख़्तियार कर कि तुझे छुटकारा मिले तेरी तरफ़ से रास्ती, अल्लाह तआला की जानिब से फ़तहमन्दी है।

तीसरी शर्त: दुनिया की हिर्स, उसकी लज़्ज़तें, उसकी ख़्वाहिश तर्क कर देना और मख़्लूक़ के उसकी जानिब रुजूअ़ और क़बूलियत पर कोई तवज्जोह न देना है। अगर मालदार और तमाम दुनियादार उसकी तरफ़ रुजूअ़ करें तो पीर पर वाजिब है कि किसी रग़बत और दिल का मैलान उस से ज़ाहिर न हो। और उनके माबैन क़बूलियत की वजह से पीर में कोई ग़ुरूर और घमण्ड न उसके ज़ाहिर में आने पाए और न बातिन में।"

चौथी शर्त : माल का न जमा करना है। अगर उसे कसरत से फ़ुतूहात और नज़्राने मयस्सर हों तो चाहिए कि (उन से हासिल शुदह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सब माल) राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दे। उन्हें समेट कर न रखे। चुनांचे कहा जाता है कि –

यानी ज़माने की वफ़ा से थैली को न सी बल्कि उसके मसारिफ़ में बराबर ख़र्च करता रह। हां अगर मुतवातिर माल न आता हो और दूसरी जगह से (कभी–कभी) माल कसीर मिल जाता हो। इस हालत में अगर अह्लो अयाल के, नफ़्क़ा की तरफ़ से दिलजमई और इबादत के लिए फ़रागते क़ल्बी की नीयत से माल को हिफ़ाज़त से रखे तो जाइज़ है।

पांचवीं शर्त : अच्छी ख़स्लतें और मख़्लूक़ की ख़ैर ख़्वाही है। पीर को चाहिए कि मख़्लूक़ को ईज़ा रसानी और रंज देही से दूर रहे और तुर्श रू और बद अख़्लाक़ न बने इसलिए कि जो शख़्स लोगों को आज़ार पहुंचाता है अल्लाह तआला उससे बेज़ार रहता है।

छठी शर्त : यह है कि अपने आपको इज़्ज़त की नज़र से कभी न देखे और ख़ुद बीनी और ख़ुद नुमाई की सिफ़त को, सिद्क़ और इख़्लास के मक़ाम पर उतार दे (यानी उनकी बजाए सिद्क़ व इख़्लास हासिल कर ले)

अगर तू चाहता है कि ख़ुदा का ख़ास बन्दा बन जाए तो अपने आपको सिद्क़ व इख़्लास पर आमादा कर ले।

सातवीं शर्त : यह है कि मुरीद बनाने पर हरीस न हो अगर कोई शख़्स सच्चे दिल से उसकी तरफ़ रुजूअ़ लाए उसे बैअ़त करे वरना फ़राग़ ख़ातिरी से ख़ुदाए बरतर की इबादत में मशग़ूल रहे और अपने अज़ीज़ वक़्त को कि उमर की पूंजी है बरबाद न करे तमाम अंबियाए किरमा अ़लैहिमुस्सलाम जिनको सिर्फ़ ख़ुदा की तरफ़ बुलाने और हिदायत के लिए मबऊ़स किया गया उनमें से बाज़ की उम्मत में सिर्फ़ एक ही शख़्स था और बाज़ की उम्मत में एक भी नहीं था।

आठवीं शर्त : मख़्लूक़ की ज़्यादतियों को बर्दाश्त करना और लोगों से जो तक्लीफ़ पहुंचे उस पर साबिर रहना है इसलिए कि दुर्वेशों का ख़िरक़ा, रज़ाए इलाही का जामा है तो जो शख़्स इस ख़िरक़ा को पाकर अपनी नामुरादियों को बर्दाश्त न करे वह महज़ फ़ुक़्र का मुद्दई है और ख़िरक़ा उस पर हराम।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

नवीं शर्त : गुनाहों और नाफरमानियों को यक्सर छोड़ देना है। पीर को चाहिए कि अल्लाह तआला के फरमान को बजा लाना और उसकी नाफरमानियों से परहेज़ करना अपने ऊपर निहायत एहतमाम से लाज़िम करे।

दसवीं शर्त : यह है कि कश्फ़ और करामतों का मतवाला न हो बल्कि इस्तिक़ामत का शैदाई हो इसलिए कि ख़िलाफ़े आदत उमूर और कश्फ़ तो बेदीनों से भी ज़ाहिर हो जाता है इसी वजह से कहा जाता है कि "हक़ पर साबित क़दम रहना, करामत से बढ़ कर है।"

हम इस्तिक़ामत की राह पर चलते हैं। कश्फ़ व करामत के पीछे नहीं दौड़ते जो शख़्स अपनी अटकल से कोई बात कहे तो उसकी अटकल को जूता बना कर उसके सर पर मार दो और जो शख़्स अपनी करामतों पर शेख़ी बघारता हो तो (समझ लो कि) वह कुत्ते की तरह भों-भों करता है। और अगर नेकी की वजह से आलम में उसका शोहरा हो गया है तो वह अपनी ख़ुश रंगी की बिना पर ख़र मुहरा है। याद रखना चाहिए कि वह पहली तीन शर्तें इन दस शर्तों में दाख़िल हैं। अल्बत्ता पीरी की शर्तें बेशुमार हैं। सिर्फ़ वही शर्तें जिनको हमने बयान किया उनमें इंहिसार नहीं है।

तो अब तालिबे सादिक़, पीर को जब इन शर्तों से मौसूफ़ पाए तो इसके साथ अपनी अनाबत का पैवन्द, उसके साथ सच्ची अक़ीदत और हुस्ने एतक़ाद से मिला दे। मुरीद की सच्ची अक़ीदत और हुस्ने एतक़ाद जिस क़द्र ज़्यादा होता है। उसके काम दुनिया और दीन में इतने ही बनते रहते हैं। इसलिए कि पीर परस्त, ख़ुदा परस्त होता है।

पीराने तरीक़त ने सुबूते बैअत और इस दीनी उख़ुव्वत के लिए दो निशानियां मुक़र्रर की हैं। एक तो कागज़ी जिस पर वह अपने पीरों के नाम लिखते हैं और उसको शजरा कहते हैं इसलिए कि शाख़ दर शाख़ होने में दरख़्त से मुनासिबत रखता है। जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरख़्त के नीचे बैअत वाक़े हुई थी। इसी तरह मुरीदों को अपने पीरों के साथ बैअत इस दरख़्त के नीचे वाक़े होती है उसको लिख कर मुरीदों को दे देते हैं। दूसरी अलामत टोपी है। मख़्दूम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

शैख़ फ़रीद गंज शकर कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू के मल्फ़ूज़ात में है कि कुलाह असल में हज़रत हक़ जल्ला व उला की जानिब से है। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम बहिश्त से चार टोपियां लेकर हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए। यक तर्की, दो तर्की, सेह तर्की, चहार तर्की (एक गोशा, दो गोशा, तीन गोशा, और चार गोशा वाली) और अर्ज़ किया कि फ़रमाने बारी यह है कि आप यह चारों टोपियां सरे मुबारक पर रखें, फिर जिसे चाहें अता फ़रमा दें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह चारों टोपियां सरे अक़्दस पर रखीं। उसके बाद कुलाहे यक तर्की हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु को इनायत फरमाई और इरशाद किया कि यह तुम्हारी टोपी है जिसे चाहो दो। और कुलाहे दो तर्की हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु के सर पर रखी और फरमाया यह तुम्हारी टोपी है। जिसे चाहो बख़्श दो और कुलाहे सेह तर्की हज़रत उस्मान के सर पर रखी और फरमाया यह तुम्हारी टोपी है जिसे चाहो सौंप दो और कुलाहे चहार तर्की हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु के सरे मुबारक पर रखी और फरमाया यह तुम्हारी टोपी है जिसे उसके लाइक़ देखो और जो उसका हक़ अदा कर सके उसे अता कर दो। मुझे यह फरमान था कि कुलाहे चार तर्की तुम्हें पहनाऊं।"

कुलाह को अनाबत और बैअ़त की अलामत इसलिए क़रार दिया गया है कि यह सर का लिबास है और सर तमाम आज़ा और जवारेह से अफ़्ज़ल और अशरफ। अक़्ल का मस्कन, और हवासे ख़म्सा व बातिनी का मक़ाम है। अलावा अज़ीं हवासे ज़ाहिरी में से ज़ुबान कि कलाम की जगह है। और मुंह को कि पीने और खाने की जगह है और चेहरा को ख़्वास और अवाम की नज़रें उस पर पड़ती हैं, सब सर में दाख़िल हैं गोया कि तन्हा सर ही तमाम इंसान है। फिर उसका लिबास भी मुख़्तसर है इसलिए कि एक गज़ कपड़े में कई टोपियां तैयार हो सकती हैं इसी वजह से कुलाह को बैअ़त की अलामत क़रार दिया है और बैअ़त के वक़्त अपने सर से उतार कर मुरीद के सर पर रख देते हैं ताकि यह दलील हो उस पर कि मुरीद उस बिरादरी में पीर से बिल्कुल मिल गया और उसने बैअ़त को बसर व चश्म क़ुबूल कर लिया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

और सरताबी से तौबा कर ली और रूगरदानी से पना पाई।

कहते हैं कि एक दीनदार का गुर्बत में इंतिकाल हो गया, उनका सर हिलता था और क़रार न पकड़ता। लोगों ने उनको वतन की जानिब रवाना कर दिया। जिस मंज़िल व मक़ाम पर पहुंचते वहां के उलमा और मशाइख़ से सर के हिलने का राज़ पूछते मगर शाफ़ी जवाब न पाते यहां तक कि लखनऊ जा पहुंचे और हज़रत मख़्दूम शैख़ मीना क़ुद्दिसा सिर्रुहू की ख़िदमत में हाज़िर आए और यह माजरा बयान किया। मख़्दूम ने फ़रमाया कि यह किसी के मुरीद नहीं हैं। एक कुलाह और शजरा मंगवाया और फ़रमाया कि यह टोपी उनके सर पर और शजरा उनके सीने पर रख दें। जूंहीं लोगों ने यह किया सर का हिलना मौक़ूफ़ हो गया। और सब को यह राज़ मालूम हो गया कि अगरचे बज़ाहिर उनका सर हिल रहा था लेकिन जुंबिश बातिनी तमाम सरों में है कि पीरों की कुलाह के बेग़ैर उनको आराम मयस्सर नहीं आ सकता।

अलावा बरीं बैअ़त के वक़्त यह भी होता है कि मुरीद के सर से दो तीन बाल दाएं जानिब से और दो तीन बाल बाएं तरफ़ के कैंचीं से काट लेते हैं और उनमें गिरह दे देते हैं इसलिए कि कल क़्यामत के रोज़ जब रवां, रवां बन्दा के आमाल पर गवाही दे तो यह बाल सच्ची बैअ़त पर गवाही दें। और इन बालों में गिरह दे देना गवाही में उनके अल्फ़ाज़ और मआनी का एक करना मक़्सूद होता है।

अल्बत्ता औरतों के सरों से यह बाल नहीं काटते। दामनी और शजरा पर इक्तिफ़ा करते हैं इसलिए कि कैंची चलाना, बालों के कतरवाने और मूंढने की जानिब इशारा है और यह दोनों चीज़ें मर्दों के साथ ख़ास हैं। ऐसे ही बैअ़त के वक़्त औरतों का हाथ भी हाथ में नहीं लेते लेकिन अगर वह पीर के सामने आ जाएं और कलिम-ए-इस्तिग़फ़ार पीर के रू-ब-रू कहे तो जाइज़ है।

मिक़राज़ के बारे में ताबईन और सलफ़ का इख़्तिलाफ़ है। बाज़ कहते हैं कि मिक़राज़ लकड़ी की बनाई जाए। बाज़ कहते हैं कि मिक़राज़ संग सफ़ेद से तराशी जाए। बाज़ कहते हैं लोहे से बनाई जाती है। बाज़ कहते हैं कि तांबे की बनाई जाती है। हज़रत सुहैल बिन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अब्दुल्लाह तस्तरी रहमतुल्लाह अलैह से मरवी है कि आपने फरमाया सब तबक़ा वालों और तमाम शहरों के ताबईन ने उस पर इत्तिफ़ाक़ किया है कि कैंची लोहे और तांबे से बनाई जावे और हसन बसरी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने फरमाया है कि मुरीद उस वक़्त तक मुरीद नहीं हो सकता जब तक उसका मुर्शिद उसके सर के बाल न ले। और कैंची का मस्अला अह्ले तबक़ात में मुख़्तलिफ़ रहा। बाज़ ने फरमाया कि यह अंबियाए किराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम की सुन्नत है। उसका वाक़या वह है जो हज़रत आदम सफ़ीयुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम से बयान किया जाता है कि आपने एक रोज़ हज़रत शीस अलैहिस्सलाम को देखा उन्हें बुलाया और फरमाया ऐ जाने पिद्र तुम्हें कौन सा काम पसन्द है। जवाब दिया कि "घर में गोशा नशीनी। अल्लाह तआला का ज़िक्र और उसके ग़ैर से परहेज़।" हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने आपके मुआमला में कुछ तरद्दुद फरमाया। कि इतने में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हाज़िर आए और कहने लगे कि ऐ आदम (अलैहिस्सलाम) हज़रत शीस सूफ़ी हैं चुनांचे हज़रत शीस से तसव्वुफ़ ज़ाहिर भी हुआ। आपने एक कैंची ली और जो शख़्स उनकी बैअत में दाख़िल होता, उसकी पेशानी के तीन चार बाल बाल उस कैंची से काट लेते। बाज़ कहते हैं कि अह्ले तसव्वुफ़ इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम हैं और कैंची का इस्तेमाल उन्हीं की सुन्नत है। बाज़ कहते हैं कि अह्ले तसव्वुफ़ हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू हैं और मिक़राज़ उन्हीं का तरीक़ा है। यह भी मरवी है कि मिक़राज़ की कैफ़ियत, ताबईन और अह्ले तबक़ात में दुशवार हो गई यहां तक कि हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तस्तरी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि जो शख़्स अहकामे मिक़राज़ का आलिम न हो वह गुमराह और गुमराह कुन है। हज़रत जुन्नूरैन मिसरी रज़ि अल्लाहु अन्हु से लोग यह वाक़या बयान करते है कि एक मौक़ा पर बग़दाद शरीफ़ की मस्जिद में बहुत से बुज़ुर्गाने ज़माना जमा हुए। और बैअत, ख़िरक़ा और मिक़राज़ के मुतअल्लिक़ बात छिड़ गई कि मिक़राज़ कहां से साबित है और ख़िरक़ा किस से मरवी है। तमाम लोग इस मुआमला में ग़ौर व फ़िक्र करने लगे। वह सब इस बारे में हैरतज़दह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

थे। आख़िरकार हज़रत ख़्वाजा अब्दुल्लाह तस्तरी ने फरमाया कि ख़िरक़ा पहनाया तो हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम से साबित है और मिक्राज़ का अमल भी उन्हीं से मरवी है। अभी लोग इसी हालत में थे कि एक हातिफ़े ग़ैबी ने निदा दी कि ख़िरक़ा रब तबारक व तआला की सुन्नत है और मिक्राज़ हज़रत शीस अलैहिस्सलाम की।"

अब यह जो मशहूर है कि ख़िरक़ा हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की सुन्नत है वह यूं है कि आपके पास हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने गोफन में रख कर फेंका और वह ख़िरक़ा जन्नत का था। हज़रत जुनैद रज़ि अल्लाहु अन्हु ने यह फरमाया है कि मिक्राज़ किसी ऐसे शख़्स को हलाल नहीं जो थैली में एक दिरहम भी बचा-बचा कर रखे। और मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने यह फरमाया है कि लोगों में सबसे ज़्यादा शरीर और उनका गुमराह करने वाला वह है जो दुनिया का भी मुर्तद हो और मिक्राज़ भी अख़्तियार करे। सवाल किया गया कि साहिबे दुनिया कौन है? फरमाया जो दुनिया की ज़रूरत से ज़्यादा तलब करे।" लेकिन हज़रत इमाम हसन बसरी रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि अमीरुल-मुमिनीन कर्रमल्लाहु वज्हहू ने भी मिक्राज़ इस्तेमाल फरमाई है और बालों के तीन तार तराशे हैं। लिहाज़ा आपकी सुन्नत का ख़्याल रखना और उसकी हिफ़ाज़त करना दूसरों के मुक़ाबला में ज़्यादा अच्छा है। मिक्राज़ से बाल काटने के बारे में सबसे ज़्यादा सहीह क़ौल पेशानी के बाल लेना है। तो चाहिए यह कि सबसे पहले पेशानी का एक बाल कैंची से लिया जाए उसके बाद एक पेशानी की दाएं जानिब से और एक बाएं जानिब से। हज़रत मख़्दूम शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रुहू की बैअत में दाख़िल होने वाला, सर मुंडाए होता, तब भी आप उसके सर पर कैंची चला देते। अल-ग़रज़ मिक्दार असरारे इलाही जल्लत कुदरतुहू मे से एक राज़ है जिस पर किसी शख़्स को यक़ीनी इत्तिला न हुई अगरचे बाज़ लोगों ने कहा है कि कैंची का चलाना दूसरे इलाकों के तोड़ने के लिए जो बन्दा और मौला के दर्मियान में हों। लिहाज़ा हर शख़्स को यह अन्दाज़ा नहीं हो सकता कि वह किसी का हाथ पकड़ ले।

हमने अपने पीर से कुलाक पाकर दोनों जहां की आफत से पनाह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हासिल कर ली है इस कुलाह की बदौलत हमारा तुर्रह आसमान पर है हमने फ़क्र से ताजे शाही की शौकत पाई है। हक़ तो यह है कि पीर परस्त और खुदा परस्त एक ही है। हम इस अक़ीदा का इंकार गुमराही समझते हैं। हम हैं, पीर का आस्ताना और हमारा सरे नियाज़। हमने इस मक़ाम व वजाहत के तुफ़ैल, शौकत का मक़ाम हासिल किया है। हम को खुदा और रसूल तक पहुंचाने के लिए पीर ही काफ़ी है। हम ने इस सच्ची बात पर गवाह भी मुहैया कर लिए हैं।

याद रखना चाहिए कि मुरीद की दो क़िस्में हैं। रस्मी और हक़ीक़ी। रस्मी मुरीद तो वह है जो ऐसे शख़्स से कुलाह और शजरा हासिल कर ले जो पीरी के लाइक़ हो और उसका दिल से मोतक़िद हो कि जो कुछ पीर फरमाए उस पर साबित क़दम रहे और जिससे मना करे उस से बाज़ रहे। और हक़ीक़ी मुरीद वह है कि उसका ज़ाहिर और बातिन पीर के ज़ाहिर और बातिन के मुताबिक़ हो और उसके तमाम हरकात व सकनात पीर के हरकात और सकनात के मुवाफ़िक़ हों। उसकी राह और रविश के मुख़ालिफ़ कोई क़दम न उठाए। उसके ख़िलाफ़ एक सांस भी न ले। और पीर को चाहिए कि जब मुरीद में मुआमला की सफ़ाई देखे उसका हलक़ कराए और उसे ख़िरक़ा पहनादे। उसे ज़िक्र और मुराक़बा की तल्क़ीन करे और ख़ल्वत में बिठा कर मुजाहिदा और रियाज़त की तालीम दे और आहिस्ता-आहिस्ता उसे अपना जैसा बना ले।

अब हम सर मुंडाने, ख़िरक़ा पहनाने और ज़िक्र और मुराक़बा कराने और ख़ल्वत नशीन करने का, जुदागाना लेकिन मुख़्तसर बयान करते हैं।

मैंने एक सूफ़ी मर्द से कहा कि अपना सर क्यों मुंडाते हो जवाब दिया कि यह अहले सफ़ा का इम्तिहान है। तू ही बता कि सर के बल वह किस तरह फ़रमांबरदारी के लिए तैयार हो सकता है। जो अपने सर के बालों को भी उस पर आमादा नहीं कर सकता। हिदायतुस्सअ़दा में तशरीह से यह नक़्ल फ़रमाया है कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन और दूसरे तमाम सहाबा हमेशा सर मुंडाते रहे और ऐसे ही तमाम अइम्मा। चुनांचे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ई, इमाम मालिक और इमाम अहमद बिन हंबल रज़ि अल्लाहु अन्हुम और तमाम तबक़ात के मशाइख़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रज़ि अल्लाहु अन्हुम के सर मुंडाए हुए थे तो उनकी सीरत का पैरू बनना ही बेहतर और अच्छा है। जामे नुसरत में फ़रमाया कि मोमिन का जमाल सर मुंडाना है। हदीस शरीफ़ में वारिद है कि किसी सर मुंडे हुए शख़्स को मौत की तल्ख़ी, क़ब्र का अज़ाब और क़यामत का ख़ौफ़ न होगा। और ऐसे शख़्स को अंबियाए किराम के साथ क़ब्र से उठाया जाएगा और रसूलों के पास उसे जगह दी जाएगी और उसके सर से जितने बाल जुदा होंगे हर बाल के एवज़ में एक फ़रिश्ता पैदा किया जाएगा और वह क़यामत तक उसके लिए इस्तिग़फ़ार करता रहेगा।"

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। इलाही सर मुंडाने वालों को बख़्श दे। अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! बाल कतरने वालों को भी। फिर आपने फ़रमाया "इलाही सर मुंडाने वालों की बख़्शिश फ़रमा।" सहाबा ने फिर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाहु बाल कतरने वालों की भी। फिर आपने इरशाद फ़रमाया।" सहाबा ने फिर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह बाल कतरने वालों की भी। फिर आपने इरशाद फ़रमाया "इलाही सर मुंडाने वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा। अर्ज़ किया गया या रसूलुल्लाह बाल कतरने वालों की भी। "आपने फ़रमाया और बाल कतरने वालों की भी (मग़्फ़िरत फ़रमा दे) मुअल्लिफ़ के दिल में यह ख़्याल गुज़रता है कि वुज़ू में सर का मसह फ़र्ज़ है न कि बालों का। अगरचे सर के बालों पर मसह करने से कामिल मसह हो जाता है लेकिन हक़ीक़ते मसह नहीं पाई जाती मगर सर के मुंडाने में। इसी वजह से मौला अली से मरवी है कि आप रोज़ाना सर मुंडाया करते।

ख़िरक़ा पोशी पीर को चाहिए कि अपने सच्चे मुरीदों को महज़ बख़ुलूसे नीयत और मुख़्लिसन लिल्लाह ख़िरक़ा पहना दे। न उस से मशीख़ीयत की दुकान की रौनक़ मक़्सूद हो और न किसी क़िस्म की नामवरी और शोहरत मद्दे नज़र। वल--अयाज़ बिल्लाहे तआला। और तालिब अगर मुब्तदी हो और तलब के कमाल तक न पहुंचा हो उसे भी ख़िरक़ा पहनना जाइज़ है। मन्क़ूल है कि हज़रत शैख़ अबू नजीब सुहरवर्दी क़ुद्दिसा सिर्रहू ने फ़रमाया कि एक रोज़ एक मुरीद हज़रत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

शैख़ अहमद ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैह के पास हाज़िर हुआ और ख़िरक़ा तलब किया। शैख़ ने उसे मेरे पास भेज दिया। मैंने उस से ख़िरक़ा के हुक़ूक़ और शर्तें बयान कीं। वह मुरीदाने हुक़ूक़ और शराइत को सुन कर थर थरा गया और बेग़ैर ख़िरक़ा पहने वापस चला गया। हज़रत इमाम ग़ज़ाली ने मुझे याद फरमाया और मुझ पर बड़ा एताब ज़ाहिर किया कि मैंने तो उसे तुम्हारे पास इसलिए रवाना किया था कि तुम इससे कोई ऐसी बात बयान कर देना जिससे उसकी रग़बत और ज़्यादा हो। तुमने ऐसी बात कह दी कि जो रग़बत उसे थी वह भी जाती रही। हालांकि जो तुमने कहा वह सही था लेकिन अगर हम यह तमाम बातें मुब्तदी पर लाज़िम कर दें तो भाग उठेगा और उसकी बजा आवरी उस से हो ही न सकेगी। हम तो ख़िरक़ा इसलिए पहनाते हैं कि यह शख़्स इस क़ौमे मशाइख़ के साथ मिल जुल जाए और फिर उन हज़रात के साथ मिलना जुलना उनके अफ़्आल पर नज़र रखना और उनके अहवाल को देखना भालना, उसमें पूरा-पूरा असर करे। और यह भी उन्हीं जैसा अमल करने लगे। हो सकता है कि अल्लाह तआला उसे भी उन्हीं में से फरमा दे।

और मुरीद जब हलक़ के सिक्के और ख़िरके को पीर और मुर्शिद की मेहरबानी से हासिल कर ले तो चाहिए कि उस सिक्का को दुनिया व आख़िरत की दौलत और दोनों जहान की सआदत जाने। और फ़ुज़ूल फ़िकरें और वसवसे अपने दिल में न आने दे और उस कूचा से मुंह न फेरे। यानी यह ख़्याल न करे कि फ़ुलां हज़रत ने जो मुझे ख़िरक़ा पहनाया यह उनका करम है वरना मुझ में उसकी लियाक़त कहां। और उसकी वजह से अपने सर पर बाक़ी बाल रखे और ख़िरक़ा को तबर्रुक समझ कर महफ़ूज़ कर ले और खुद कोई दूसरा लिबास पहने। बरादर मन! जो शख़्स किसी क़ौम से मुशाबेहत करता है वह उन्हीं में से हो जाता है।" यह कोई थोड़ी दौलत नहीं। और "यह वह क़ौम है जिसका हम नशीं महरूम नहीं होता।" कुछ कम सआदत नहीं। अगरचे खुद में उसकी लियाक़त न समझना भी कमाले सआदत, फ़िक्रे सही और ख़ैरियत और फ़तहमन्दी के दरवाज़े की कुंजी है लेकिन इस सिक्का को

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

भी हाथ से न जाने दिया जाए।

तू अपने तसर्रुफ़ात को पीरों के हाथ पर छोड़ दे इसलिए कि जो मुर्दा ज़िन्दा के हाथ में होता है उसे अख़्तियार ही कब होता है।

कहते हैं कि एक रोज़ ख़्वाजा जुनैद बग़दादी कुद्दिसा सिर्रुहू ने हुसैन मन्सूर से कहा कि वह वक़्त कब आएगा जब आप ख़ुश्क लकड़ी को सुर्ख़ करेंगे। जवाब दिया कि जिस रोज़ मैं चोबको सुर्ख़ करूंगा तुम्हें इस मशीख़ीयत के लिबास से इलाहिदा कर दूंगा ताकि तुम्हें मालूम हो जाए कि अह्ले मारिफ़त के नज़्दीक नेकों के कूचे से निकलना, फांसी से ज़्यादा दुश्वार बल्कि आग से भी ज़्यादा मुश्किल है।

ज़िक्रे मुराक़बा ख़्वाजगाने चिश्त क़द्दस्त असरारहुम का इस पर इज्मा है कि तालिबे सादिक़ के लिए एक ज़िक्र और एक फ़िक्र काफी है और वह ज़िक्र कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह है कि तमाम ज़िक्र इस कलिमा में दाख़िल हैं और मुराक़बा यह है कि इंसान अल्लाह तआला को हाज़िर व नाज़िर जाने और आज़ा की हरकतों और दिल की बातों पर मुत्तला रहे। अइम्म–ए–तरीक़त और सादाते हक़ीक़त के नज़्दीक यह चीज़ साबित है कि अमीरुल–मुमिनीन हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने एक मरतबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह अर्ज़ किया कि ख़ुदाए तआला के रास्तों में से सबसे क़रीब का रास्ता दिखा दीजिए। इरशाद फरमाया अली हमेशा ज़िक्रे ख़ुदा करते रहो। अर्ज़ किया किस तरह? हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इरशाद फरमाया कि अपनी आंखें बन्द करो और मुझ से सुनो। इसके बाद हुज़ूर ने तीन मरतबा ला इलाहा इल्लल्लाह का ज़िक्र फरमाया और अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहू ने सुना। उसके बाद मौला अली ने तीन बार ज़िक्र किया और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको सुना।

फिर अली मुर्तज़ा ने तालीम फरमाया यह ज़िक्र, हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रहमतुल्लाह को और उन से हज़रत ख़्वाजा अब्दुल–वाहिद ज़ैद को पहुंचा। और उन से ख़्वाजा फ़ुज़ैल को। उन से ख़्वाजा इब्राहीम अदहम बल्ख़ी को, उन से ख़्वाजा हुज़ैफ़ा मुरअशी को, उन से ख़्वाजा हुबैरा बसरी को, उन से ख़्वाजा अलू दैनूरी को, उन से ख़्वाजा ख़्वाजा

https://t.me/AhleSunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अबू इस्हाक़ शामी को उनसे ख़्वाजा कुदवतुतदीन अबू अहमद फ़रग़ान को उनसे ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू यूसुफ़ चिश्ती को उनसे ख़्वाजा अबू यूसुफ़ चिश्ती को, उन से हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन मौदूद यूसुफ़ चिश्ती को, उन से ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी को, उन से ख़्वाजा उस्मान हारूनी को, उन से हज़रत ख़्वाजा मुईनुल–हक़ वद्दीन हसन संजरी को, उन से ख़्वाजा कुतबुल–हक़ वद्दीन बख़्तियार औशी को, उन से ख़्वाजा फ़रीदुल–हक़ वद्दीन मस्ऊद सुलेमान अजोधनी को, और उन से हज़रत ख़्वाजा निज़ामुल–हक़ वद्दीन मुहम्मद बिन अहमद बदायूनी को, उन से ख़्वाजा नसीरुल–हक़ वद्दीन महमूद बिन यूसुफ़ रशीद औदही को, और उनसे मख़्दूम जहानियां को पहुंचा जबकि हज़रत मख़्दूम जहानियां को दूसरी और जगहों से भी पहुंचा था, फिर उन से मीर सैय्यद राजू किताल को और उन से मख़्दूम शैख़ सारंग को पहुंचा। जब कि मख़्दूम शैख़ सारंग को तल्क़ीने ज़िक्र मख़्दूम शैख़ यूसुफ़ अबरची से भी पहुंचा था और मख़्दूम शैख़ यूसुफ़ ने बन्दगी मखदूम जहानिया सैयद जलाल से हासिल किया था। नीज़ मखदूम शैख़ सारंग ने तल्क़ीने ज़िक्रे शैख़ क़्यामुद्दीन से भी पाया और मखदूम शैख़ क़्यामुद्दीन मख़्दूम शैख़ मीना के चचा और मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन महमूद औदही के मुरीद थे, और मख़्दूम जहानियां से उन्हें ख़िलाफ़त हासिल थी। मख़्दूम शैख़ सारंग से यह ज़िक्र मख़्दूम शैख़ मीना को पहुंचा, और उन से मख़्दूम शैख़ सअद बदहन को उन से मख़्दूम शैख़ अब्दुस्समद को जो शैख़ सफ़ी मशहूर हैं, और उन से मख़्दूम शैख़ हुसैन मुहम्मद बनी इस्राईल को, और उने से इस फ़क़ीर मुअल्लिफ़ को पहुंचा। इस ज़िक्र के फ़वाइद व आसार इन्शाअल्लाह तआला हम लिखेंगे।

अब रही ख़ल्वत तो वह चालीस रोज़ से कम नहीं होना चाहिए इसलिए कि चालीस दिन (चिल्ले) में बड़ी तासीर है। इसलिए कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की मिट्टी को चालीस रोज़ ख़मीर किया गया था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि–

तरजमा : जिसने चालीस सुबहें अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस कर दीं हिक्मत के चश्मे उसके दिल से उसकी ज़बान पर बहने लगेंगे।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मन्कूल है कि ख़्वाजा निज़ामुल–हक़ वद्दीन मुहम्मद बिन अहमद बदायूनी कुद्दिसा सिर्रहू ने शैख़ नसीरुद्दीन महमूद कुद्दिसल्लाहु रूहहू से फरमाया कि तुम चिल्ला चिश्तीयाना खींचो। आपने बाज़ अहबाब से दरयाफ़्त किया कि चिल्ला चिश्तीयाना क्या है? जवाब दिया कि एक दीवार के पीछे बैठ रहो। (यानी दुनिया से कुल्लियतन मुन्क़ता हो कर)

याद रहे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तमाम साल में पांच चिल्ले मरवी हैं। एक चिल्ला सैय्यदना आदम और ईसा अलैहिमस्सलाम का जुमादिल–उख़रा की बीस तारीख़ से लेकर माहे रजब के ख़त्म तक। एक चिल्ला हज़रत सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम का बीस शाबान से शबे ईदुल–फ़ित्र तक। एक चिल्ला सैय्यदना यूनुस अलैहिस्सलाम का ज़िल–हिज्जा की पन्द्रहवीं से मुहर्रमुल–हराम की पचीस तक। एक चिल्ला सैय्यदना मूसा अलैहिस्सलाम का शबे नमरह (यकुम) ज़ी क़अ़्दा से लेकर शबे ईदुल–अज़्हा तक। और एक चिल्ला सैय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बीसवीं रमज़ान से आख़िर माह शौवाल तक। चिल्ल–ए–कशी की जो शर्तें ज़्यादा अहम हैं उन में से एक भी तर्क करने से मक़्सूदे कुल्ली हासिल नहीं होता।

मुरीद जब सीधा पांव हुजर–ए–ख़ल्वत में रखे तो अऊज़ुबिल्लाह और बिस्मिल्लाह पढ़े और पूरी सूरः वन्नास तीन बार पढ़े। इसके बाद बायां पैर हुजरा में रखे और यह दुआ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ وَلِيِّ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ كُنْ لِيْ كَمَا كُنْتَ لِمُحَمَّدٍ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ وَارْزُقْنِيْ مَحَبَّتَكَ. اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ حُبَّكَ فِيْ شَغَفِيْ وَاجْذِبْنِيْ بِجَلَالِكَ وَجَمَالِكَ. وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُخْلِصِيْنَ. اَللّٰهُمَّ اَمِتْ نَفْسِيْ بِجَذَبَاتِ ذَاتِكَ يَا اَنِيْسَ مَنْ لَا اَنِيْسَ لَهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِيْنَ

तरजमा : (इलाही तू दुनिया व आख़िरत में मेरा कार साज़ है। तू मेरे लिए ऐसा रह जैसा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए था और अपनी मुहब्बत मुझे अता फरमा। इलाही मेरे परद–ए–दिल में अपनी मुहब्बत डाल। और मुझे अपने जलाल व जमाल से अपने मुख़्लेसीन में शामिल फरमा। इलाही मुझे अपने जज़्बाते ज़ात से मेरा नफ़्स महव कर दे।) उसके बाद मुसल्ला पर खड़ा हो और मुंह क़िबला की तरफ़ करे।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तरजमा : (मैंने अपना चेहरा मुतवज्जेह किया उस ज़ात की जानिब जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया दरा अल-ख़ालीका मैं सबसे यक्सू हूं और मुशरेकीन से नहीं हों) पढ़े। उसके बाद दो रकअत नमाज़े जलालते इलाही के लिए पढ़े। पहली रकअत में सूरः फातिहा के बाद आयतुल-कुर्सी और दूसरी रकअत में आमनर्रसूलु बेमा उंज़िला। आख़िर सूरः तक पढ़े। उसके बाद सज्दा में सर रखे और यूं कहे। (इलाही मेरी ख़ल्वत में मेरा अनीस रह और मेरी तन्हाई में मेरा मुईन। इलाही मेरी इस ख़ल्वत को अपने मुशाहिदा का मूजिब बना दे और मुझे उस काम की तौफ़ीक़ दे जो तुझे महबूब व पसन्दीदा है। इलाही मैं तेरे ग़ज़ब से तेरी पनाह मांगता हूं और तुझ से तेरी रज़ा चाहता हूं। इलाही मुझे बन्दगीए नफ़्स से दूर रख। इलाही मेरी आंखों से पर्दा हटा दे और मेरे दिल का ज़ंग दूर कर दे ताकि मैं ला इलाहा इल्लल्लाह का जमाल देख सकूं)।

اللهم كن لي انيسا في خلوتي ومعينا في وحدتي اللهم اجعل لي خلوتي هذه موجبة لمشاهدتك ووفقني فيه لما تحب
وترضى اللهم اني اعوذبك من سخطك واسئلك رضاك اللهم نجني ان اعبد الهوى اللهم اكشف الغطاء عن عيني
وارفع الغين عن قلبي حتى اشاهد جمال لا اله الا الله

इसके बाद ज़िक्रे नफ़ी व इस्बात में ख़ासुल-ख़ास तवज्जोह व इरादत से मशग़ूल हो जाए। और कभी ज़िक्रे ज़ात में मुलाहिज़ा और मफ़्हूम के साथ मस्रूफ़ रहे कि उसका एक लेहज़ा भी ज़िक्रे नफ़ी व इस्बात से ख़ाली न रहे।

चिल्ला कशी के लिए आठ शर्तें हैं। अव्वल ख़ल्वत गाह में तन्हा होना। क़िबला रू पालती मार कर बैठना। हाथों को ज़ानों पर रखना। मुर्दा को ग़ुस्ल की नीयत करता। ख़ल्वत गाह अपनी लहद तसव्वुर करना और उस जगह से वुज़ू करना और नमाज़ पढ़ने के अलावा बाहर न निकलना ख़ल्वतगाह तारीक होना चाहिए। यह भी हो कि उसके दरवाज़े पर पर्दा डाल दे ताकि उसमें ज़रा भी रौशनी न आ सके और न किसी की आवाज़ पहुंच सके कि वह आवाज़ जो उसको दूसरी तरफ़ मशग़ूल कर दे देखने सुनने या कहने में। इसलिए कि जब यह महसूसात

https://t.me/AhleSunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

में मशगूल होगा आलमे गैब से महरूम रहेगा। उसके बाद ज़िक्र में मशगूल हो और तमाम अन्देशे दिल से निकाल दे ताकि अल्लाह तआला से जान व दिल के साथ मशगूल हो। मख़्लूक़ से घबराए और पूरी तरह हक़ की जानिब मुतवज्जेह हो।

दूसरी शर्त : यह है कि हमेशा बावुज़ू रहे इसलिए कि बेवुज़ू होना शैतान के ग़लबा की राह है ताकि वह उस पर ग़ालिब न हो।

तीसरी शर्त : हमेशा हमेशा ज़िक्र करना है चुनांचे अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया। (वह ज़िक्र करते हैं अल्लाह का खड़े हो कर बैठ कर और अपने पहलुवों पर) और यह दवामे ज़िक्र की जानिब इशारा है।

चौथी शर्त : अन्देशों की नफ़ी और उनका दफ़ा। चाहिए कि जो ख़तरा दिल में आए ख़्वाह नेक या बद उसे कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह से नफ़ी कर दे। इसलिए कि जिस चीज़ का नक़्श सफ़्ह–ए–दिल पर पड़ता है ख़्वाह नेक या बद, वह सफ़ाई क़ल्ब को नुक़ूशे क़ल्ब के क़ुबूल से सद्दे राह बन जाता है और जब तक सफ़्ह–ए–दिल इन शहवानी नक़्शों से पाक नहीं होता वह मुशाहिदा गैबी के नुक़ूश और इल्मे लदुन्नी के क़ाबिल नहीं होता और मुकाशिफ़ाते रूहानिया के अनवार और तजल्लियाते रब्बानिया को क़ुबूल नहीं करता।

पांचवीं शर्त : हमेशा रोज़ा रखना है तो ख़ल्वत गुज़ीं हमेशा रोज़ादार रहे कि रोज़ा तअल्लुकाते बशरीया और ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया के दूर करने में बड़ा क़वी असर रखता है।

छठी शर्त : हमेशा ख़ामोश रहना। तो चाहिए कि किसी से बात न करे मगर अपने शैख़ से कश्फ़ वाक़े में ज़रूरत के मुताबिक़। और बाक़ी पर (जो ख़ामोश रहा सलामत रहा और जो सलामत रहा उस ने नजात पाई) पढ़े।

सातवी शर्त : अपने दिल की तवज्जोह शैख़ के दिल से हमेशा क़ाइम रखो ताकि शैख़ के दिल से कुछ इल्तिफ़ात मुरीद के दिल में पहुंचता रहे इसलिए कि – दिल से दिल की राह होती है। और मुरीद के दिल को शैख़ के दिल से जिस क़द्र तअल्लुक़ होगा दिल का रोज़न बढ़ता जाएगा। इसलिए कि मुब्तदी मुरीद इस आलमे शहादत का आदी है कि उसके रू–ब–रू बहुत ज़्यादा पर्दे हैं लिहाज़ा उसकी तवज्जोह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हज़रत इज़्ज़त पर न हो सकेगी हां शैख़ के दिल की तरफ़ तवज्जोह से तो आसानी से राह पा सकता है कि शैख़ का दिल आलमे गैब का परवरदह और हज़रत इज़्ज़त की जानिब मुतवज्जेह है। फ़ज़्ले इलाही के फ़ुयूज़ हर दम शैख़ के दिल में पहुंचते रहते हैं और शैख़ के दिल से मुरीद के दिल तक पहुंचते हैं इसी तरह रफ़्ता-रफ़्ता मुरीद, क़ुबूले फ़ैज़ान के लिए बेवास्ता इस्तेदाद पैदा कर लेता है और आलमे गैब से उसे वाक़्फ़ीयत हो जाती है। शैख़ की तवज्जोह को हमेशा उस राह की दलील और रहबर जाने और जब मुरीद को कोई आफ़त या ख़ौफ़ पहुंचे फ़ौरन विलायत शैख़ की जानिब रुजूअ् करे और शैख़ के अन्दरूने दिल से मदद चाहे ताकि वह आफ़त और ख़ौफ़, शैतानी हो, या नफ़सानी दूर हो जावे।

आठवीं शर्त : अल्लाह तआला से शिकायत और अपने शैख़ पर एतराज़ का तर्क कर देना है। बईं माना कि उसे जो कुछ गैब से पहुंचे तंगी व कुशादगी, रंज व राहत, सेहत व बीमारी। कशाइश व बस्तगी उस पर राज़ी रहे और हक़ से एराज़ न करे। इसी तरह शैख़ का जो क़ौल और फ़ेअ्ल, हाल या माल देखे इस पर कोई एतराज़ न करे और शैख़ के ज़ाहिरी व बातिनी तसर्रुफ़ात के तस्लीम कर लेने में मशग़ूल रहे और शैख़ के तमाम अहवाल और अक़्वाल पर नज़र इरादत न डाले मबादा कि तरीक़त का मुर्तद हो जाए और बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि अगर कोई मुरीद अपने शैख़ की विलायत से मरदूद हो जाता है। तो कोई शैख़ उसको मक़ाम पर नहीं पहुंचा सकता। हां वह मुरीदे सादिक़ जिसने शैख़ की ख़िदमत में तर्बियत नहीं पाई और किस वजह से वह उससे बाज़ न रहा और उस वक़्त वह दूसरे शैख़ की ख़िदमत में मसरूफ़ हो और उज़्र लाए तो उस शैख़ के तसर्रुफ़ात अब उसमें मुम्किन हैं। हो सकता है कि वह शैख़ उसको मंज़िल तक पहुंचा दें मगर उस मुरीद को यह चाहिए कि जो बरकत और फ़ैज़ उस पीर से पाए वह अपने पीर की क़बूलियत के आसार से जाने।

मन्क़ूल है कि एक रोज़ हज़रत सुल्तानुल-मशाइख़ एक चोडोला पर सवार हो कर तशरीफ़ ले जा रहे थे। कहार को ठोकर लगी और वह भी डोला उठाने के क़ाबिल न रहा एक क़लन्दर भी वहां मौजूद थे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

उन्होंने वह चौडोला उठा कर अपने कांधे पर रख लिया और एक ही कांधे पर आपको मंज़िले मक्सूद पर पहुंचा दिया। हज़रत मख़्दूम ने दरयाफ़्तया फरमाया कि यह कौन शख़्स है? लोगों ने अर्ज़ किया एक कलन्दर है और उसने जो ख़िदमत की थी वह भी बयान कर दी। हज़रत मख़्दूम ने उन पर नज़रे इनायत फरमाई। हज़रत मख़्दूम की नज़रे पाक की बरकत से उसकी बातिनी कदूरत का रंग दूर हो गया और तमाम आलमे अल्वी व सिफ़ली उस पर मुकशिफ़ हो गया। कलन्दर ख़ुशी में झूमने लगा और कहता था कि मेरे पीर का फ़ैज़ मुझ पर पड़ गया और मेरे पीर की मदद ने मेरी दस्तगीरी की और मेरे पीर की इनायत ने मुझे नवाज़ा।" लोगों ने उस से कहा कि ऐ कलन्दर होश में आओ यह दौलत और नेमत जो तुम्हें मिली है हज़रत मख़्दूम सुल्तानुल–मशाइख़ की निगाहे करम की बदौलत है तेरे पीर यहां कहां? जवाब दिया कि ऐ दोस्तो! अगर मेरे पीर ने मुझे कुबूल न फरमाया होता तो हज़रत मख़्दूम यह नज़रे इनायत भी न फरमाते! लिहाज़ा जो फ़ैज़ मुझे हज़रत मख़्दूम ने बख़्शा मेरे पीर की कुबूलियत के आसार से है कि पहले उन्होंने मुझे कुबूल फरमा लिया था उसके बाद मख़्दूम ने कुबूल फरमाया। हज़रत मख़्दूम को यह बात बहुत पसन्द आई और इरशाद फरमाया कि ऐ दोस्तो पीर परस्ती इस कलन्दर से सीखो। हज़रत मखदूम शैख़ सअद बदहन कुद्देसा सिर्रहु ने शरह रिसल–ए–मक्कीया में यह क़िस्सा और माजरा हज़रत मख़्दूम शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया के नाम लिखा है और यही सही होगा। याद रखना चाहिए कि ख़ल्वत की शर्तें बहुत ज़्यादा हैं। यह आ० जो लिखी गई हैं बेहद ज़रूरी है।

फ़सल मुरीदे हक़ीक़ी सादिकुल–इरादत को चाहिए कि मकारिमे अख़्लाक़ हासिल करे और मक़ामात वहालात पर मश्क़ जारी रखे। मकारिमे अख़्लाक़ यह है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया। "क्या मैं तुम्हें अपने सबसे ज़्यादा और उन लोगों की ख़बर न दूं जो क़्यामत के रोज मुझ से करीबतर होंगे। अर्ज़ किया गया। हां या रसूलुल्लाह! इरशाद फरमाया कि यह वह लोग हैं जिनके अख़्लाक़ अच्छे हैं जो नर्म आदात वाले हैं। जो उल्फ़त रखते और उल्फ़त सिखाते हैं। और मेहरबानी करना। मुहब्बत बरतना, बहादुरी दिखाना, चश्म

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

पोशी करना, ऐब को छुपाना, दूसरे की ख़ता से दर गुज़र करना, सब्र करना, राज़ी रहना, बशारत व बुर्द बारी, तवाज़ु, ख़ैर ख़्वाही, शफ़क़त, बर्दाश्त, मुवाफ़िक़त, एहसान, मदारात, ईसार, ख़िदमत, उल्फ़त, बशाशत, करम, जवांमर्दी, बज़िल्ले जाह, मुरव्वत, दोस्ती, आहिस्तगी, अफ़्व, गुनाह से दर गुज़र करना, सख़ावत। जूदे वफ़ा, हया, तलत्तुफ़, कुशादा रूई, तम्कीन, वक़ार, दुआए सना, हुस्ने ज़न, फ़रोतनी, भाईयों की तौक़ीर, बड़ों की ताज़ीम, छोटों और बूढ़ों पर रहम, जो दूसरों को दे उसे हक़ीर जानना और जो दूसरों से मिले उसे बड़ा समझना, उसकी आदतों में दाख़िल हो।"

अह्ले तसव्वुफ़ का अख़्लाक़ यह है वह नहीं जो (झूठे) मुद्दई कहते हैं कि उन्होंने तमअ् का नाम ज़ियादत। बे अदबी और गुस्ताख़ी का नाम इख़्लास और हक़ से निकलने का नाम शतह रख लिया है। यानी यह अपनी ज़बान दराज़ी और बेबाकी से वह बातें ज़बान से निकालते हैं कि वह दीन से ख़ुरूज का सबब होती हैं। यही लोग इत्तिबा ख़्वाहिश को इब्तला, बद ख़ुल्क़ी को रुअब व दबदबा और हुक्काम से क़ुर्बत को मुसलमानों के लिए शफ़ाअत का नाम देते और बुख़्ल को दानाई समझते हैं वग़ैरह वग़ैरह।

और मक़ामाते सुलूक का बयान यह है कि बन्दा अपनी इबादतों में ख़ुदा व तआला के रू-ब-रू क़्याम करे। सबसे पहला मक़ाम इंतिबाह है और वह ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार होने का नाम है। उसके बाद तौबा है और वह ख़ुदाए तआला की जानिब रुजूअ् करने, अपने गुनाहों और मासियत को तर्क करने और हमेशा नादिम होने का नाम है और बकसरत इस्तिग़्फ़ार के बाद अनाबत है और वह ग़फ़्लत से बाज़ रह कर ज़िक्र में मशग़ूल होना है। बाज़ कहते हैं कि तौब-ए-हक़ से डरना और अनाबत उसकी तरफ़ रग़बत करता है। उसके बाद वरअ् है और वह उस चीज़ का तर्क कर देना है जिसके हलाल होने में कुछ शुबह हो। उसके बाद नफ़्स का मुहासबा है और वह नफ़्स की ख़ैर ख़्वाही है नफ़ा व नुक़्सान में, ज़्यादती और कमी में। उसके बाद इरादत है और वह राहत तर्क करके इताअत और इबादत में मुसलसल कोशिश का नाम है। इसके बाद ज़ुह्द यानी दुनिया की हलाल चीज़ों का तर्क कर देना उससे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...किताब पर... रहना और उसकी ख़्वाहिशें छोड़ देना। उसके बाद फ़क्र है और ...ह तमाम चीज़ों से हाथ खींच लेना और दिल को हर उस चीज़ से बाज़ ...खना है जो बदस्त न हो। उसके बाद सिद्क़ है और वह ज़ाहिर व बातिन में यक्सानियत है। उसके बाद तसब्बुर है यानी नफ़्स को ...ल्ख़ियां बर्दाश्त करने और कड़वे घूंट पीने का आदी बनाता है। उसके बाद रज़ा यानी बला से लज़्ज़त हासिल करना है। उसके बाद इख़्लास है यानी अल्लाह तआला के साथ अपने मुआमलात में से मख़्लूक़ को ...काल देना। उसके बाद ख़ुदाए तआला पर तवक्कुल है और वह ...ल्लाक़ मुतलक़ हक़ सुबहानहू पर भरोसा करना और दूसरों से कोई ...क्क़ु न करने का नाम है।

अब रहे अहवाल। तो वह नाम है दिल के मुआमलात का। जो ...ज़्कार से उस पर नाज़िल होते हैं। हज़रत जुनैद फरमाते हैं कि ...ल दिल पर नाज़िल होने वाला वह हादसा है जो हमेशा नहीं रहता। ...न्हीं (मुआमलात) में से एक मुराक़बा है यानी सफ़ा यक़ीन से मुग़ीबात ...नज़र करना। उसके बाद क़ुर्ब है और वह अपने इरादों को उसके ...सिवा की तरफ़ से समेट कर) हक़ तआला की जानिब जमा करना है। ...सके बाद मुहब्बत है और वह अपने महबूब के साथ उसकी पसन्दीदा ...और ग़ैर पसन्दीदा चीज़ों में मुवाफ़िक़त करना है। उसके बाद रजा है ...नी अल्लाह तआला के वादों की तस्दीक़। उसके बाद ख़ौफ़ है यानी ...दों की निगरानी रब तआला की सख़्त गिरिफ़्त और अज़ाब के मद्दे ...ज़र। उसके बाद हया है यानी दिल को कुशादगी से समेट लेना। ...सके बाद शौक़ है यानी महबूब का ज़िक्र सुन कर वज्द में आ जाना। ...सके बाद उन्स है यानी अपने तमाम कामों में अल्लाह तआला की ...जानिब सुकून और फरोतनी है। उसके बाद तमानियत है और वह ...अल्लाह तआला की क़ज़ा व क़द्र की राहों में पुर सुकून रहने का नाम ...है। उसके बाद यक़ीन है यानी ऐसी तस्दीक़। कि उसके साथ शक का ...शाइबा न रहे। उसके बाद मुशाहिदा है और वह रूयते यक़ीनी और ...रूयते ऐनी में फ़र्क़ करना है। जैसा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ...ने इरशाद फरमाया।

...तर्जमा : तुम अल्लाह की इबादत इस तरह करो गोया तुम उसे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

देख रहे हो। अगर यह हो तो (कम अज़ कम यह समझो) कि वह तुम्हें मुलाहिज़ा फ़रमा रहा है।"

यह दरजा अहवाल का आख़िरी दरजा है। लिहाज़ा मुरीदे सादिक़ को चाहिए कि इन ज़िक्र शुदह उमूर में सई व मश्क़ जारी रखे ताकि उसको तमाम अख़्लाक़ हालात और मक़ामात रफ़्ता-रफ़्ता हासिल होते रहें और वह हक़ीक़तन मुरीद बन जाए। उसके बाद वह ख़ुशबूएं वह तजल्लियां और वह अताएं हैं जो लिखने में नहीं आ सकती हैं। अल्लाह तआला की नेमतों को अगर तुम शुमार करना चाहो तो शुमार न कर सकोगे।

और यह अख़्लाक़ मक़ामाते अहवाल और कश्फ़ अल्वियात व सिफ़्लियात अक्सर पीराने तरीक़त को बैअ़त से पहले ही हासिल हो जाते हैं। मन्कूल है कि मख़्दूम शैख़ फ़रीद गंज शकर मख़्दूम शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया और मख़्दूम शैख़ नज्मुद्दीन कुबरा कुद्दिसल्लाहु तआला इसराहुम बैअ़त की नीयत से मख़्दूम शैख़ शहाबुद्दीन की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत मख़्दूम ने शैख़ फ़रीद से फ़रमाया कि तुम्हारा हिस्सा तो ख़ानवाद-ए-चिश्त में है और तुम्हारे पीर शैख़ क़ुतबुद्दीन बख़्तियार हैं जो दिल्ली में तशरीफ़ फ़रमा हैं और बाक़ी दोनों हज़रात को बैअ़त में क़ुबूल फ़रमा कर अपना मुरीद बना लिया। एक बूढ़ी दाया जो मख़्दूम शैख़ शहाबुद्दीन की मुलाज़िमा थी तश्त और आफ़ताबा लाई ताकि सब मेहमान हाथ धो लें। सबसे पहले तश्त को हज़रत फ़रीद के रू-ब-रू रखा। शैख़ फ़रीद अरसा तक अपने हाथ धोते रहे यहां तक कि आफ़ताबा का तमाम पानी ख़त्म हो गया। उसके बाद शैख़ बहाउद्दीन और शैख़ नज्मुद्दीन के हाथ धुलाने के लिए वह और पानी लाई और जब खाना चुना गया और खाना-खाना शुरू किया तो शैख़ बहाउद्दीन और शैख़ नज्मुद्दीन ने शैख़ फ़रीद से कहा कि आपने जो हाथ तमाम आफ़ताबा के पानी से धोए। हमें कुछ मालूम न हुआ कि आपने यह क्या किया। मख़्दूम शैख़ फ़रीद ने फ़रमाया कि यह बूढ़ी दाया शैख़ शहाबुद्दीन की ख़िदमत में हाज़िर रहती है और लौहे महफ़ूज़ में उसे दोज़ख़ी लिखा गया है। मुझे अफ़सोस हुआ कि जो शख़्स ऐसे बड़े पीर और ऐसे बुज़ुर्ग की ख़िदमत करे वह दोज़ख़ में दोज़ख़ी क्यों कर है? मैंने इस हरफ़ को लौहे महफ़ूज़ से धो दिया और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

उसका नाम वहां से मिटा कर बहिश्त वालों में लिख दिया।" फिर उन दोनों साहिबान ने (अपने कश्फ़ से) तहक़ीक़ की तो मालूम हुआ कि यूं था और यूं ही हुआ जैसा कि शैख़ फ़रीद ने फ़रमाया था। उस से यह बात बख़ूबी मालूम हुई कि उस क़िस्म के मुकाशिफ़ात और लौहे महफ़ूज़ में तसर्रुफ़ महव व इस्बात। आपको बैअ़त से पहले ही हासिल था।

और जब मख़्दूम शैख़ फ़रीद दिल्ली में पहुंचे और हज़रत मख़्दूम क़ुतबुद्दीन बख़्तियार से बैअ़त हुए तो आपने उन्हीं की ख़िदमत को लाज़िम क़रार दिया और वहीं क़्याम पज़ीर रहे। कुछ मुद्दत के बाद ख़्वाजा जहां शैख़ मुईनुल-हक़ वद्दीन अजमेर से तशरीफ़ लाए तो मख़्दूम शैख़ फ़रीद उनकी क़दम बोसी के लिए हाज़िर न हुए। तरद्दुद यह था कि अगर मैं मुर्शिद की मौजूदगी में मुर्शिद के मुर्शिद की पहले क़दम बोसी करूंगा तो पीर का एहतराम न रहेगा और अगर पहले पीर की क़दम बोसी करूंगा तो पीर के पीर का तक़द्दुस जाता रहेगा। अब हज़रत ख़्वाजा मुईनुल-हक़ वद्दीन ने ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन से इरशाद फ़रमाया कि शैख़ फ़रीद को बुलाओ और यहां हाज़िर करो। जब आप उनकी तलब पर हाज़िर हुए तो पहले अपने पीर की क़दम बोसी की उनके मुर्शिद ने मख़्दूम शैख़ फ़रीद का बाज़ू पकड़ कर अपने मुर्शिद के पैरों पर डाल दिया। आपने शैख़ फ़रीद को अपनी बग़ल में लिया और बड़ी मेहरबानी और नवाज़िश फ़रमाई। उसके बाद ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन अलैहिर्रहमा से इरशाद फ़रमाया कि शैख़ फ़रीद का मुआमला क्यों तअत्तुल में डाल दिया है। उनका काम पूरा कर दो।" सुबहानल्लाह जबकि आपका क़दमे सआदत इस हद तक पहुंच चुका था कि लौहे महफ़ूज़ में तसर्रुफ़ कर बैठे तो फिर अब वह कौन सी मुहिम और कौन सा काम था कि उनक हक़ में मुअत्तल और मौक़ूफ़ था।

ऐ बिरादर इस शुबह को आख़िर दिल में जगह न देना इसलिए मादर ज़ाद नेक बख़्तों को, बेग़ैर पीर की बैअ़त और बिला मुर्शिद की तर्बियत के, ऐसी करामतें और ऐसे मक़ामात हासिल हो जाते हैं कि लौहे महफ़ूज़ में तसर्रुफ़ करना, हवा में उड़ना, ग़ैब की ख़बरें देना, जलती आग में घुस जाना, पानी पर खड़े होना, मुर्दे को ज़िन्दा करना, ज़िन्दा को क़ब्र में भेज देना और इसी क़िस्म के दूसरे तसर्रुफ़ात उनको शुरू

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ही में हासिल हो जाते हैं। हज़रत ज़िया बख़्शी ने फरमाया है कि तरीक़त में सौ मक़ामात हैं जब रास्त रू सालिक सत्तरहवें मक़ाम पर पहुंचता है तो इस क़िस्म की करामतें और तसर्रुफ़ात उसे हासिल हो जाते हैं। इसके बाद तरासी मक़ाम बाक़ी रहते हैं कि जब तक उन्हें हासिल नहीं करता उसका काम मुअत्तल रहता है और वह पीर व मुर्शिद की इम्दाद का मुहताज रहता है ताकि इन तमाम मक़ामात पर पहुंच जाए। उसके बाद अल्लाह तआला की ख़ास बख़्शिशें होती है और बकसरत और मुतवातिर, कि उस पर दरवाज़ा खोलती और सरहद्दे इंतिहा तक पहुंचा देती हैं जो इस आयत से इशारतन मालूम होती है। यानी उन्हें जन्नत में वह है जिसकी वह ख़्वाहिश करें और हमारे पास उस से भी बढ़ कर है और हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने रब से हिकायत फरमाई कि फरमाया अल्लाह तआला ने कि मैंने अपने नेक बन्दों के लिए वह नेमतें तैयार फरमाई हैं जो न किसी ने आंख से देखीं न किसी कान ने सुनीं और न किसी के दिल पर उसका ख़्याल गुज़रा।" और वह हैं कहा। "क़ुदरत वाले मालिक के पास साफ़ जगह में।

उसके जमाल पर जमाल ही के पर्दे पड़े हुए हैं जिनका सिवाए चन्द नुकूश के और कोई महरिम ही नहीं। मन्कूल है कि दरगाह रब्बुल-इज़्ज़त से हज़रत मख़्दूम फरीद गंज शकर अलैहिर्रहमा के दिल पर हज़ारों मरतबा यह निदा इल्क़ा होती कि फ़रीद किस क़द्र नेक आदमी है। इसी वजह से हज़रत सुल्तानुल-मशाइख़ ने फरमाया कि -

हमारे पीर मौलाना फ़रीद (जैसे) पीर हैं जो अपने नाम की तरह खुल्क़ में भी फ़रीद व यक्ता हैं। हज़रत सुल्तानुल-मशाइख़ से यह भी मन्कूल है कि आपने फरमाया।

कि अगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद नुबुव्वत मुम्किन होती तो तमाम ख़ल्क़ उनको पयम्बर कहती। मुरीदाने सादिक़ को अपने पीरों के ज़िक्र में भी हलावते ईमान हासिल होती है और जो लज़्ज़त उन्हें अल्लाह तआला का नाम लेने, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िक्र करने में हासिल होती है, सादेक़ीन को इतनी ही लज़्ज़त अपने पीर के नाम लेने में होती है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तमीज़ वाले मुरीद सादिक को अपने पीरों की सीरत का ज़िक्र बड़ा अज़ीज़ होता है। पीर का ज़िक्र उनके ईमान को ताज़ा करता है और उनके वाक़ेआत उसके ईमान पर बुख़्ल डालते हैं।

हिकायत एक मरतबा एक बूढ़ी औरत हज़रत मख़्दूम शैख़ फ़रीद की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि मेरा बच्चा वतन से बाहर गया है और बरसों से उसकी ख़ैरियत ही मालूम नहीं होती। मालूम नहीं कि ज़िन्दा है या मर चुका। कद्रे तअम्मुल के बाद हज़रत मख़्दूम ने फ़रमाया कि अपने घर जाओ तुम्हारा बेटा मकान पर आ गया। वह औरत वापस आई और मकान पर बेटे को मौजूद पाया। मां-बेटे दोनों आपस में मिले। मां बोली कि बेटा तुम कहां थे और किस सूरत से यहां पहुंचे। कहने लगा कि मैं फ़लां मुल्क में था मुझ से एक बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि तेरी मां तो तेरा रास्ता तकती रहती है। अब तुझे मकान पर जाना चाहिए। मैंने कहा कि हज़रत बुज़ुर्गवार मैं तो मकान से बहुत दूर पड़ा हूं इतना रास्ता चलना मेरे लिए तो दुशवार है। उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि अच्छा अपनी आंखें बन्द कर। मैंने जब बन्द कर लीं तो फ़रमाया खोल दे कि तेरा मकान आ पहुंचा। मैंने जब आखें खोलीं तो ख़ुद को उस मकान में पाया। मां ने कहा अच्छा चलो मख़्दूम शैख़ फ़रीद की क़दमबोसी कर आएं। वह अपनी मां के साथ चला और हज़रत मख़्दूम की क़दमबोसी की। हज़रत मख़्दूम ने फ़रमाया कि अब मां की ख़िदमत से दूर न होना और उनकी निगहदाश्त करना। उसने कुबूल कर लिया। जब वहां से चले तो मां से बोला कि यही बुज़ुर्ग हैं जो मुझे मकान पर लाए हैं।

हिकायत मख़्दूम शैख़ जमाल साकिन हांसी हज़रत मख़्दूम शैख़ फ़रीद अलैहिर्रहमा के खुलफ़ा हैं सबसे बुज़ुर्ग और बुलन्द पाया थे। एक रोज़ हज़रत मख़्दूम शैख़ फरीद अलैहिर्रहमा ने अपने भांजे को जिनका नाम शैख़ अली साबिर था ख़िलाफ़त अता फरमाई और शैख़ जमाल की ख़िदमत में रवाना कर दिया और फरमाया कि अगर मेरे बिरादरे दीनी शैख़ जमाल ने इस ख़िलाफ़त को कुबूल कर लिया सही होगी वरना नहीं।" ख़ैर जब आप मख़्दूम शैख़ जमाल की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हज़रत शैख़ जमाल ने उन से जामए ख़िलाफ़त ले लिया और फ़रमाया कि अभी तुम इस जामा की लियाकत नहीं रखते हो। वह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हज़रत मख़्दूम शैख़ फ़रीद की ख़िदमत में वापस आए और तमाम माजरा बयान किया। हज़रत मख़्दूम ने फ़रमाया कि शैख़ जमाल जिस से जाम-ए-ख़िलाफ़त ले लें फ़रीद उसको दोबारा नहीं दे सकता।"

आज पीर भी कसरत से हैं और मुरीद भी कसीर हैं। ख़िलाफ़त देने वाले भी बहुत हैं और जाम-ए-ख़िलाफ़त पहनने वाले भी काफ़ी पैदा हो चुके हैं मगर ऐसे कि उनके हाल की शिकायत से दफ़्तर सियाह हो जाएं और खुद हम तदबीर बताने वालों का भी यही हाल है।

जिस नालाइक़ ने कि ख़िलाफ़त का ख़िरक़ा बग़ल में दबाया यह ऐसा है गोया गिलाफ़े काबा को गधे की झोल बना दिया। इसी बाब में मख़्दूम शैख़ फ़रीद क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू ने यह दो दोहरे फ़रमाए हैं:

यानी सबसे ज़्यादा नादान और अहमक़ है वह शख़्स जो कुलाह ले और कुछ भी उसकी अहलियत न रखता हो। और ऐसे को कुलाह दे देने वाला भी यक़ीनन सख़्त बद लिहाज़ है। वह चूहा जो अपने सूराख़ की तंगी की वजह से उसमें खुद नहीं समा सकता वह अपनी तंग जगह में भारी बोझ कहां डालेगा।

यानी ऐ सर को मुंडाने वाले ख़्वाहिशे नफ़सानी दिल से छील डाल। कि तेरे (इस तरह) सर मुंडाने से दीन का रास्ता चलना मयस्सर नहीं आता। तूने हर तरफ़ हज़ारों क़ुरबानियां भी की हैं तो अल्लाह तआला की दरगाह में उन में से एक भी मक़बूल नहीं। उन दोनों दोहरों से मक़सूद मुरीदों को ख़्वाबे ग़फ़लत से जगाना और पीरों को ऐसी लग़्वियत से रोकना है।

मन्क़ूल है कि जब मख़्दूम शैख़ फ़रीद ने निज़ामुल-हक़ वद्दीन मुहम्मद बिन अहमद बदायूनी को जाम-ए-ख़िलाफ़त अता फ़रमाया और उन्हें शैख़ जमाल की ख़िदमत में भेजा तो ख़्वाजा निज़ामुद्दीन के दिल में यह ख़्याल गुज़रा कि शैख़ जमाल ने जब हज़रत मख़्दूम के भाई से जाम-ए-ख़िलाफ़त वापस ले लिया तो मेरे पास क्यों रहने देंगे बल्कि क्या अजब कि मेरे डांटने डपटने की ख़ातिर लकड़ी भी उठा लाएं (ख़ैर) जब हज़रत निज़ामुद्दीन वहां पहुंचे और हज़रत शैख़ जमाल को उसकी ख़बर हुई तो एक मिस्वाक हाथ में लिए तशरीफ़ लाए और फ़रमाया बाबा निज़ामुद्दीन ज़रा अपनी चोब को थामो। और उन के सर से टो

https://t.me/AhleSunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तक नज़र की और फ़रमाया कि सुबहानल्लाह कसीरन, हम्द उसी के वज्हे करीम को कि आज हमारे मुर्शिद ने वह दरख़्त लगाया है कि क़यामत तक हर ज़माने में लाखों करोड़ों आदमी उसके साय-ए-दौलत में आराम करते रहेंगे।" फिर इरशाद फ़रमाया कि तुम सुल्तानुल-मशाइख़ हो यह ख़िरक़-ए-ख़िलाफ़त तुम्हें मुबारक हो।" हां हां अगर उन दरख़्तों के फैले हुए साए और उन नेक बख़्तों की दराज़ परछाइयां हम कम नसीबों के सरों पर जल्वा अफ़गन न हों तो किसी को आराम अज़ीज़ न हो। उन हज़रात का साया दुनिया में हमारा मक़्सूद और इन्शाअल्लाह तआला आख़िरत में सबबे बहबूद होगा।

मौला तूने नज़रे रहमत फ़रमाई है कि इस साया को मख़्लूक़ के सर पर फैलाया है।

हज़रत सुल्तानुल-मशाइख़ बड़े बाअदब थे चुनांचे आप जब कभी ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार क़ुदिसल्लाहु रूहहू के मज़ारे मुबारक पर ज़्यारत और फ़ातिहा के लिए हाज़िर हुए तो आस्ताने को चूमते और उसी जगह फ़ातिहा व दुरूद शरीफ़ पढ़ते और वापस तशरीफ़ ले आते और हज़रत के मरक़द मुबारक पर हाज़िर न होते और फ़रमाया करते कि जब हम सरतापा आलूदह हैं इस पाक मरक़द पर कैसे हाज़िर हों। एक रोज़ आप ज़्यारत के लिए तशरीफ़ लाए और हस्बे आदते क़दीमा आस्तां बोसी की, वहीं फ़ातिहा व दुरूद पढ़ी और लौट आए मगर दिल में यह ख़्याल गुज़रा कि ख़ुदा मालूम हज़रत ख़्वाजा को मेरे आने की ख़बर भी होती है या नहीं।" मज़ार मुबारक से आवाज़ आई कि –

मुझे अपनी ही तरह ज़िन्दा समझो। तुम अगर जिस्म से आते हो, तो मैं जान से आता हूं तुमने मेरे पास तोहफ़ा फ़ातिहा व दुरूद भेजा मैं तुमको हदिया दुरूद व सलाम भेजता हूं और जब तुम यहां तक आओगे तो मैं भी गुंबद से बाहर आ सकता हूं।

हिकायत एक मरतबा हज़रत सुल्तानुल-मशाइख़ (महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया क़ुदिसा सिर्रुहू अपने अहबाब के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे कि नागाह खड़े हो गये फिर बैठ गये। हाज़िरीने मज्लिस ने आपसे दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर किस बिना पर खड़े हुए फ़रमाया कि हमारे पीर व दस्तगीर की ख़ानक़ाह में एक कुत्ता रहता था आज उसी सूरत का एक

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कुत्ता मुझे नज़र आया कि उस गली में गुज़र रहा है। मैं उस कुत्ते की ताज़ीम की खातिर उठा था।")

अरे यह तो उस कुत्ते की ताज़ीम है जो खानक़ाह के कुत्ते के मुशाबेह था और अगर खुद वही कुत्ता सामने आ जाता तो खुदा मालूम उसकी किस क़द्र ताज़ीम और इज़्ज़त फरमाते। (अफ्सोस) आज कोई मुरीद अपने पीरज़ादों की भी इतनी तौक़ीर नहीं करता। ऐ बिरादर यह पीरी मुरीदी भी कोई आसान काम नहीं।

नक़ल है कि एक शख़्स हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ (की अज़मत) का मुंकिर था। रोज़ाना आपकी शिकायतें और बुराइयां करता रहता और कहता कि यह शख़्स अपने आपको सुल्तानुल–मशाइख़ कहलवाता है और खुद को दुर्वेश मशहूर कर रखा है। हालांकि न उसे मक़ामे मशीख़ीयत की ख़बर है और न उसमें दुर्वेशी का कोई असर। उसका सिक्का बिल्कुल खोटा है और ख़ुद वह दयानत और अमानत से बेपहरा। और इसी क़िस्म की बेहूदगियां बक्ता रहता मगर हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ उसकी गुज़र औक़ात के लाइक़ कुछ न कुछ रोज़ाना रवाना फरमा देते और उसके अह्लो अयाल का नफ़्क़ा उसे इनायत फरमा देते। इसी हाल पर मुद्दत दराज़ गुज़र गई। आख़िर एक रोज़ उसकी बीवी ने उस से कहा कि ऐ ना इंसाफ़ मर्द! उस दुर्वेश पर तेरा कोई हक़ भी नहीं। फिर भी वह हर रोज़ तेरे साथ बख़्शिश करते हैं और तू उनके साथ बेहूदगी से पेश आता है और उन्हें बुरा भला कहता रहता है यह कौन सी मुसलमानी है। वह शख़्स आपको बुरा भला कहने से खामोश हो गया और ज़ुबान दराज़ी से बाज़ रहा। मगर उस रोज़ हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ ने उसके पास कुछ न भेजा तो वह शख़्स हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा कि मख़्दूमा! मैं जब तक आप को बुराई और बदी से याद करता रहा और आप पर तअ्ना ज़नी करता रहा। आप हमें नक़द रवाना फरमाते रहे कि बाल बच्चों के लिए काफी हो जाता और जब मैं अपनी बेहूदगी से बाज़ आया और मैंने पशीमान हो कर ज़ुबान रोक ली तो आपने कुछ भी रवाना न किया और न कुछ इनायत फरमाया। उसका क्या सबब है। हज़रत मख़्दूम ने जवाब दिया कि जब तूने मुझे बदी और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बुराई से याद करता और ख़्वाह मख़्वाह तू मुझे जफ़ाकार और अहमक़ कहता रहता मेरे गुनाह मुआफ़ होते और मैं गुनाहों से पाक व साफ़ हो जाता। तो तू मेरा मज़दूर था मैं तुझे मज़दूरी भेज देता। अब जब तू उस से बाज़ आया और मुझे मेरे गुनाहों से पाक नहीं करता तो अब तुझे किस काम की उजरत दूं।

बदी का बदला अह्ले ज़ाहिर के नज़्दीक बुराई के साथ देना ख़्वाह दानाई हो लेकिन अह्ले बातिन तो बदी करने वाले के साथ नेकी करते हैं।

नक़ल है कि एक जवान ने हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ क़ुद्दिसल्लाहु सिर्रहू से बैअ़त की। रोज़ाना आपकी मज्लिस शरीफ़ में हाज़िर होता और रोज़ कोई उसका जूता चुरा लेता। फिर वह नया जूता पहन कर हाज़िर होता। हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ को उसकी ख़बर पहुंची तो फ़रमाया कि ऐ जवान जो शख़्स तेरी जूतियां चुरा कर ले जाता है उसे बख़्श दे और कह दे कि मैंने तमाम जूते मुआफ़ किए और उसी को बख़्श दिए। उसने ऐसा ही किया। उस रोज़ से फिर किसी ने उसका जूता न चुराया और न कोई ले गया। और जब हाज़ेरीन ने उसका भेद हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ से दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया कि उस चोर का रिज़्क़ हराम में था और जब उसने बख़्श दिया तो वह तमाम जूते उस पर हलाल हो गये और हलाल रिज़्क़ उसकी क़िस्मत में लिखा नहीं इसलिए वह नहीं ले गया।

कहते हैं कि हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ एक रोज़ किताब ज़ौ का मुताला फ़रमा रहे थे। हाज़िरीन ने दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर आप को इस नह्व की किताब के मुताला की क्या ज़रूरत है। फ़रमाया कि अगर कोई आ जाए और किताब ज़ौ का कोई मस्अला पूछे तो हम उसे क्या जवाब देंगे। जब आप मुताला से फ़ारिग़ हो गये तो कुछ अरसा के बाद एक शख़्स आया और किताबे ज़ौ का वही मक़ाम जो हज़रत ने मुताला फ़रमाया था दरयाफ़्त करने लगा। आपके पास जवाब मौजूद था। इरशाद फ़रमा दिया।" यके बाद दीगरे लोगों ने नक़ल किया है कि हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ की मज्लिस में गाना और क़व्वाली बकसरत हुआ करता था। अगरचे गाना और क़व्वाली तमाम ख़्वाजगाने चिश्त

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कुद्दिसल्लाहु अरवाहहुम का तरीक़ा और रविश है मगर आपके ज़माना में उसका बहुत चरचा था और हज़रत अमीर ख़ुस्रू ने फ़ुनूने मौसीक़ी में कुछ और ही बात पैदा कर दी थी और एक नया उस्लूब उसे दे दिया था। हालांकि हज़रत अमीर ख़ुस्रू कमाले तक़्वा और दयानत से आरास्ता और कसीर दर कसीर इल्म व फ़न से पैरास्ता थे और हज़रत सुल्तानुल-मशाइख़ कुद्दिसा सिर्रुहू ने उन्हें तुरकल्लाह का ख़िताब बख़्शा था और फरमाते थे अगर कल क़्यामत में ख़ुदा वन्दे तआला दरयाफ़्त फरमाएगा कि दुनिया से क्या लाए तो मैं तुरकल्लाह को हाज़िर कर दूंगा और अर्ज़ करूंगा कि इस मर्दे सलीम को हाज़िर लाया हूं। यह भी फरमाया करते कि अगर यह जाइज़ होता कि दो मर्द एक ही क़ब्र में आराम करें तो मैं और तुरकल्लाह एक ही क़ब्र में होते और यह बैत अपनी ज़बाने दुर इफ़्शां से फरमाते।

यानी इस तुर्क को तर्क करने की ख़ातिर अगर लोग मेरे सर पर आरा भी चालाएं तो मैं उसे गवारा कर लूंगा। तुर्क को न छोडूंगा। अल-मुख़्तसर आपकी ख़ानक़ाह में अक्सर औक़ात गाने और क़व्वाली का समां रहता।

हिकायत : एक शख़्स हज़रत सुल्तानुल-मशाइख़ के अहवाल का मुंकिर, आपकी राह व रविश से मुतनफ़्फ़िर, और एक दूसरे दुर्वेश का मोतक़िद था। एक रोज़ उस दुर्वेश से कहने लगा कि मेरी यह आरज़ू है कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात करूं अगर सरकार के करम से मुलाक़ात हो जाए तो इंतिहाई बन्दा नवाज़ी और सरफ़राज़ी हो।" दुर्वेश ने जवाब दिया कि जिस रोज़ हज़रत सुल्तानुल-मशाइख़ के यहां मज्लिसे सुरूद व सिमाअ् हुई है उस रोज़ हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाते हैं और लागों के जूतों की निगहबानी फरमाते हैं।" वह शख़्स अब अपने इंकार पर पशीमान हुआ और क़व्वाली वाले दिन आपकी ख़ानक़ाह में हाज़िर हो गया। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात की और उन से ख़ूब फ़ैज़ हासिल किया। एक रोज़ मख़्दूम शैख़ फ़रीद गंज शकर अल्लाह तआला की बारगाहे क़ुर्ब में मस्रूर थे। उसी हालत में आपने इरशाद फरमाया "बाबा निज़ामुदीन! उस वक़्त जो मांगना चाहते हो मांग लो।" आपने अपने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

दीन पर इस्तिकामत तलब की। हज़रत मख़्दूम शैख़ फ़रीद के तशरीफ़ ले जाने के बाद आपकी ख़ानक़ाह में जब कभी गाना या क़व्वाली होती और हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ पर रिक़्क़त व कैफ़ियत तारी हो जाती तो आप अफ़सोस करते कि मैंने अपने पीर दस्तगीर से अपने दीन के काम में इस्तिकामत चाही। यह क्यों न मांगा कि मेरी जान सिमाअ़ में जाए और अक्सर औक़ात यह शेअ़र पढ़ते।

साज़ के प्याले से मुझे वह नेमत पहुंची है कि वह सूरज की तरह हो जाता है जिसने उसमें से एक ज़र्रह चख लिया।

कहते हैं कि मख़्दूम शैख़ फ़रीद के उर्स के दिन हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ की ख़ानक़ाह में गाना और क़व्वाली हो रही थी। आपके दर्द मन्द अहबाब पर वज्द व कैफ़ियत तारी थी कि हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ ख़ानक़ाह से बावर्ची ख़ाने की तरफ़ तशरीफ़ लाए ताकि अशियाए ख़ुर्द व नोश का इंतिज़ाम मुलाहिज़ा फरमाएं। हवा बहुत गर्म थी और मत्बख़ में हर तरफ़ आग की गर्मी का असर था। इतने में किसी शख़्स ने ठण्डे पानी का एक कटोरा आपको पेश किया। आपने कुबूल न किया और फरमाया कि हमारे अहबाब तो वहां ख़ूने जिगर पी रहे हैं हम यहां ठण्डा पानी पी लें यह मुवाफ़िक़त के मुताबिक़ नहीं।

कहते हैं कि एक रोज़ आपकी ख़ानक़ाह में लोगों ने एक ख़ेमा नसब किया था और उसके अन्दर क़व्वाली हो रही थी। शैख़ ज़ियाई सन्नामी को उसकी ख़बर हुई। वह अपने दोनों लड़कों को लेकर तहक़ीके हाल के लिए आए ताकि उन लोगों को क़व्वाली से मना करें। चुनांचे आपने ख़ेमा की तनाबें उखाड़ लीं ताकि ख़ेमा गिर पड़े और सिमाअ़ में ख़लल पैदा हो लेकिन ख़ेमा बिल्कुल वैसा ही खड़ा रहा जैसा कि तनाबों पर खड़ा था शैख़ ज़िया हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ की ख़िदमत में हाज़िर आए और कहने लगे कि आप अपनी करामतें हमें दिखाते हैं। ऐसी ही कुछ सख़्त बातें कहीं। हज़रत मख़्दूम बड़ी नर्मी और शफ़क़त से पेश आए और फरमाया कि हम तो तुम्हारे महकूम है जो हुक्म दो वही करेंगे। कहने लगे कि लोगों को सिमाअ़ से बाज़ रखिए और उन्हें गाने से मना कीजिए। आपने ऐसा ही किया। उसके बाद जब शैख़ ज़ियाई अपने घर पहुंचे तो उनके लड़के को कुछ तक्लीफ़ हो गई और कुछ अरसा के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बाद उसका इतिकाल हो गया। उसके बाद दूसरा लड़का बीमार हुआ और वह भी जाता रहा। उसके बाद ख़ुद हज़रत ज़िया बीमार हो गये। हज़रत सुल्तानुल-मशाइख़ को जब उनकी बीमारी की ख़बर हुई अयादत के लिए तशरीफ़ ले गये। शैख़ ज़िया ने हज़रत सुल्तानुल-मशाइख़ से पूछा कि आप अपनी उस नाशाइस्ता हरकत से बाज़ आए।" हज़रत मख़्दूम ने जवाब दिया कि हमारी तो सिद्क़ दिल से तमन्ना यह है कि अल्लाह तआला हमें तमाम बुरी बातों से बचाए। आप भी दुआ करें।" शैख़ ज़िया ने जवाब दिया कि आप में कोई बुराई नहीं है मगर यह कि आप कव्वाली सुनते और गाने में मशगूल रहते हैं ख़ैर हज़रत सुल्तानुल-मशाइख़ वहां से वापस तशरीफ़ ले आए और शैख़ ज़िया का दो तीन रोज़ में इतिक़ाल हो गया। सुबहानल्लाह।

शायद शैख़ ज़िया ने अहयाउल-उलूम मुसन्निफ़ा इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू का मुताला न किया था (वरना मालूम होता) कि "अस्सिमाओ मुबाहुन लेअहलेही।" यानी अह्ले सिमाअ् के लिए मुबाह है" उसे उस मक़ाम पर जम्हूर के इत्तिफ़ाक़ से साबित किया है। तो क्या उन्होंने अह्ले सिमाअ् और उनके ग़ैर को न पहचाना।

यानी शहर के कोतवाल ने अह्ले दिल के अहवाल पर तअ्ना ज़नी की (सच है) आदमी उस चीज़ का दुश्मन ही रहता है जिसको वह जानता नहीं।

कहते हैं कि शैख़ ज़िया सन्नामी सबसे पहले एहतिसाब की ख़ातिर हज़रत शैख़ शर्फ़ुद्दीन पानी पत्ती की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे और उनका मुहासबा किया था। शैख़ शर्फ़ुद्दीन क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने दो तीन मरतबा उन पर तेज़ नज़र डाली मगर कुछ असर न हुआ। जब आप वहां से लौट आए तो लोगों ने हज़रत शैख़ शर्फ़ुद्दीन से अर्ज़ किया कि आज शैख़ ज़िया ने बड़ी सख़्ती दिखाई। फ़रमाया कि मैंने दो तीन मरतबा चाहा कि उन्हें सज़ा दूं मगर वह शरीअत की ज़िरह पहने हुए थे, मेरे तीर ने कोई असर न किया। शायद शैख़ ज़िया यह समझते हैं कि मैंने तो शरीअत की ज़िरह और जोशन पहन ली है, मुझ पर किसी दुर्वेश की रंजिश का दुनिया में कोई असर न होगा, मगर यह नहीं जानते कि अगरचे कोई शख़्स जोशन पहन ले मगर मौत की जगह ख़ाली है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तू अगरचे फौलाद के हज़ारों जोशन पहन ले मगर फक़ीर की एक आहे गरम से वह मोम हो सकते हैं।

कहते हैं कि ख़्वाजगाने चिश्त ने अपनी तल्वार बेगै़र नियाम के लटका दी है और किसी पर उठाते नहीं हैं मगर जो शख़्स उस से खुद उलझता है यकीनन ज़ख़्मी और मज्रूह हो जाता है।

हम ने इस दुनिया में बारहा तजरबा किया है कि जो दर्दमन्दों से उलझता है ठोकर खाता और गिर पड़ता है।

मन्कूल है कि हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ को पूर्वी पर्दह (एक किस्म का गाना) बहुत पसन्द था। एक मरतबा बाज़ हाज़िरीन ने दरयाफ़्त किया कि हज़रत मख़्दूम पूर्वी पर्दा बहुत सुनते हैं और यह आपको बहुत भला मालूम होता है। फरमाया हां। सही है हमने निदाए अलस्तु बेरिब्बकुम इसी पर्दा में सुनी थी। हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ के खुलफ़ा बहुत थे और वह लोग मौला तआला की रज़ा की राह में जो दरयाफ़्तें और मशक़्क़तें खींचते और जो सख़्तियां और दुशवारियां बर्दाश्त करते वह तहरीर में नहीं समा सकती हैं।

समझ में नहीं आता कि वह कैसे लोग गुज़र चुके जिन्हें बेगै़र अमल के एक दम चैन न आता था।

आपके जुमला खुलफ़ा में से मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन महमूद सबसे ज़्यादा मोअ़ज़्ज़म और बुज़ुर्ग तरीन ख़लीफ़ा थे। जब हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ को मरज़े मौत हुआ और वफ़ात का वक़्त क़रीब पहुंचा तो शैख़ नसीरुद्दीन महमूद ने इल्तिमास की कि मैं बग़ैर मुर्शिद की जल्वा आराई के दिल्ली में न रह सकूंगा। हुज़ूर के बाद हज के लिए चला जाऊंगा और उसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़–ए–मुबारक पर अपनी ज़िन्दगी गुज़ार दूंगा।" हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ ने यह मिसरआ इरशाद फरमाया कि –

हरगिज़ न जा कि तुझ से बहुत काम है मुझे।"

उसके बाद फरमाया कि हम तुम्हें अपनी जगह छोड़ते हैं तुम्हें चाहिए कि तुम अह्ले दिल्ली की जफ़ा व क़ज़ा (यानी अज़ीयत और ईज़ा रसानी, जिसका तअ़ल्लुक़ गर्दन से होता है) पर सब्र करो।" चुनांचे आपने जब रिहलत फरमाई और (अपने कुदरत वाले रब के पास सच्चाई

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

की जगह में) आराम किया और लोगों ने आपका जनाज़–ए–मुबारका उठाया तो क़व्वालों, शामियों और तातारियों की एक जमाअत भी हमराह चली और यह शेअ्र पढ़ी बढ़ी।

ऐ सर्द सीमीं! तुम तो सहरा की तरफ़ सिधारे। यह अच्छा अहद है कि बे हमारे चल दिए। तुम्हारा चेहरा तमाम जानों की तमाशगाह है। तुम कि‍ार तमाशा देखने जाते हो। सअ्दी की आंखें और उसका दिल तुम्हारे साथ है कहीं यह न समझ लेना कि तन्हा जा रहे हो। उस पर हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ का हाथ जनाज़ा से नमूदार होकर बुलन्द हुआ। अमीरे खुसरू ने क़व्वालों को रोक दिया और फरमाया कि ख़ामोश हो जाओ। कहीं ऐसा न हो कि हज़रत मख़्दूम जनाज़ा से उठ खड़े हों, सिमाअ् में शरीक हो जाएं। उन पर कैफ़ियत तारी हो जाए और फिर एक नया फ़ित्ना बरपा हो जाए।

मन्क़ूल है कि जब हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ ने रिहलत फरमाई हज़रत अमीर खुसरू छः महीने इसी रंज में मुब्तला रहे न सोते में आराम मिलता न जागते में गरज़. कि छः महीने के बाद फौत हो गये और उस वक़्त मख़्दूम शैख़ रुक्नुद्दीन सुहरवर्दी क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू दिल्ली में तशरीफ़ रखते थे। आपको हज़रत अमीर खुसरू के इंतिक़ाल की ख़बर पहुंची तो अहबाब से फरमाया कि आओ फ़लां जगह चलें और अमीर खुसरू की तज्हीज़ व तक्फ़ीन अपने रू–ब–रू करा दें और उनके लिए अल्लाह तआला की बारगाह में मग़्फ़िरत तलब करें, इसलिए कि उन से शाहाने वक़्त की मदह सरज़द हुई है। जब वहां पहुंचे तो देखा कि अमीर खुसरू का लाशा रखा हुआ है (उनको देख कर) अमीर खुसरू उठ बैठे और यह शेअ्र पढ़ा।

कि हमने तो अपने पीर की नेमतों को अपना पुश्त पनाह बना लिया है। हमें (किसी और की शफ़ाअ्त से) मग़्फ़िरत की हाजत नहीं। यह शेअ्र पढ़ा और फिर बदस्तूर आपकी नअ्श ज़मीन पर आ रही।

जब मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन महमूद बिन यूसुफ़ रशीद औदही क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू का मुबारक ज़माना आया तो एक क़लन्दर ने जिसका नाम तुराबी था दाख़िल हो कर आपके बदने मुबारक पर पन्द्रह सत्तरह ज़ख़्म छुरी से कर दिए। मख़्दूम ने इस जफ़ा को बर्दाश्त किया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

और क़लन्दर से फ़रमाया कि मेरे हुजरा में आकर छुप रह वरना लोग तुझे ज़िन्दा न छोड़ेंगे उसने ऐसा ही किया। लोगों ने उसे बहुत तलाश किया मगर न पाया। आधी रात हुई तो मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन क़ुद्दिसा सिर्रहू ने इस क़लन्दर से फ़रमाया कि अगर अपनी ख़ैरियत और ज़िन्दगी चाहता है इसी वक़्त दिल्ली से भाग जा।" वह भाग गया और ऐसी जगह पहुंचा कि फिर उसका पता न चला।

ख़ुदा के दोस्त उस से बरतर हैं कि मख़्लूक़ के हाथों सर पर चोटें खाईं और उन्हें आज़ार पहुंचाईं।)

कहते हैं कि एक दुर्वेश ने हज़रत मख़्दूम को ख़त लिखा कि जफ़ाकारों की इतनी जफ़ाएं तो बर्दाश्त नहीं करना चाहियें। अगर आप बदला नहीं लेते तो हमें रुख़्सत और इजाज़त दीजिए कि हम ऐसे लोगों से ख़ुद बदला लें।" हज़रत मख़्दूम ने उसके जवाब में यह शेअ्र पढ़ा।

यानी जब यह चोटें किसी और ही की मशीयत से हैं तो मुझे शर्म आती है कि मैं यह कहूं कि फ़ुलां ने मुझे सताया है। कुछ अरसा बाद हज़रत मख़्दूम उन ज़ख़्मों से बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गये और अपनी हालत पर लौट आए। यह दिल्ली की जफ़ा की एक मिसाल थी।

और दिल्ली की कफ़ा यह है कि बादशाहे वक़्त ने तमाम दुर्वेशों को बुला कर यह हुक्म दिया कि वह सब हमारी एक-एक ख़िदमत अपने ज़िम्मा लें। इस ख़िदमत को बवक़्ते ख़िदमत बजा लाएं और उसमें ग़फ़लत न बरतें।" हज़रत मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन को भी बुलाया आपने बहुत उज़्र ख़्वाही और इल्तिजा की हमें बख़्शे और मुआफ़ रखिए। बादशाह की आदत ज़ालिमाना न थी, आपको कफ़ा कर दिया यानी गले की हड्डियों के नीचे उसने सूराख़ कराए। उन हड्डियों को रस्सी में मज़बूती के साथ बांधने का हुक्म दिया और कहा कि उन रस्सियों को बुलन्द जगह बांध दो और उन्हें बंधा रखो यहां तक कि यह हमारी एक ख़िदमत क़बूल कर लें। लोगों ने ऐसा ही किया यहां तक कि चिश्तियों की वह नंगी तल्वार नमूदार हुई ताकि बादशाह का सर क़लम कर दे कि उसी वक़्त मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन महमूद ने बादशाह को अपनी पनाह में खींच लिया और अपनी आस्तीन बादशाह के सर पर रख दीं कि आपकी आस्तीनें कट गईं और बादशाह सही व सालिम रहा।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सुबहानल्लाह! ऐसी जफ़ा और कफ़ा को इंतिज़ाम की कुदरत रखने के बावजूद बर्दाश्त करना सिवाए मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन कुद्दिसा सिर्रहू के कौन कर सकता है।

मन्कूल है कि जब हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम के सरे मुबारक पर आरा रखा गया तो लोगों ने पूछा कि उस वक़्त आपका दिल क्या चाहता था। आप साबित क़दम थे। लिहाज़ा जवाब दिया कि मेरे दिल की तमन्ना यह है कि जब दो टुक्ड़े कर दिया जाऊं तो मेरा एक टुक्ड़ा मश्रिक़ में लटका दें और दूसरा मग़्रिब में, ताकि दुनिया वालों को मालूम हो जाए कि वह राह जिस में हमने क़दम रखा ऐसी ख़ूंख़्वार है।

इस रास्ता में हमें फ़ना की बू आती है। कौन है जो इस रास्ते में क़दम रखे।

ख़ैर हज़रत शैख़ नसीरुद्दीन महमूद कुद्दिसा सिर्रहू ने बादशाह को कहला भेजा कि हम ख़ुशी से तुम्हारी एक ख़िदमत करने को तैयार हैं। उस वक़्त आपको उतार लिया गया और कफ़ा से आपको लोगों ने छुटकारा दिया। बादशाह ने कहला भेजा। "तुम्हारा काम यह है कि रोज़ाना मेरे सफ़ेद कपड़े छांट कर और साफ़ करके तैयार रखो और रोज़ाना हमें पहनाओ।" चुनांचे आपके ज़ख़्म मुन्दमिल हो गये तो आप मुद्दतों यही ख़िदमत बजा लाते रहे कि रोज़ाना उसकी पोशाक दुरुस्त करते और पहनाते।

मन्कूल है कि उस बादशाह का वज़ीर जिसका वज़ीर जिसका नाम शैख़ अब्दुल–मुक़्तदिर था एक होशियार आदमी था कि मीज़ाने मन्तिक़ उसकी तस्नीफ़ है। वह जब बादशाह के दरबार से लौटता तो कभी–कभी हज़रत मख़्दूम की ख़िदमत में भी हाज़िर होता और अपने अहबाब से कहता कि आओ हज़रत मख़्दूम के सामने दो चार मुतनाज़ा फ़ीह मस्अले पर पेश करके चलते हैं ग़रज़ वह आता और हज़रत मख़्दूम से बहस व मुनाज़रा करता। हज़रत मख़्दूम भी बड़े फ़ाज़िल थे (आप भी उसको मुंह फट जवाब देते) ग़रज़ वह आपको बड़ा दुख पहुंचाता हज़रत मख़्दूम के मुसाहिबों ने आपसे अर्ज़ किया कि शैख़ अब्दुल–मुक़्तदिर बड़ी गुस्ताख़ी करते हैं। फ़रमाया कि वह एक चिड़िया है अन्क़रीब हमारी गिरिफ़्त में आ जाएगी। वज़ीर की आदत यह थी कि जब वह सफ़ेद कपड़े पहनता

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तो अपने गैसुओं में मोती पिरोता। एक रोज़ वह ख़ादिमे ख़ास उनके बालों को पिरो रहा था कि एक फ़क़ीर भीख मांगता आ निकला और यह शेअ़्र पढ़ रहा था।

ऐ सअ़्दी बहुत बातें बनाना अपनी उम्र को बरबाद करना है। अब उज़्र ख़्वाही का वक़्त है। बारगाहे अज़्मत से अपनी मग़्फ़िरत का तालिब हो। इस बैत ने वज़ीर के दिल को ऐसा गरमा दिया कि उसका बातिन दुनिया के शोग़्लों से ठण्डा पड़ गया। ख़ादिम से कहा कि हमारे बाल तराश दे। उसने कहा कि मुझे गैसू बुनने से फ़रागत मिल चुकी सिर्फ़ एक ही गिरह बाक़ी है। जवाब दिया कि ऐ अहमक़ यहां दिल में दूसरी गिरह पड़ चुकी है तू जल्द मेरे बाल तराश दे उसने वह बाल तराश दिए। वज़ीर ने वह ज़र बाफ़्ता (मोती पिरोए हुए बाल) गैसू भी उसे दे दिए। उसके बाद वह घर गया और कहा कि कोई है जो दीन की राह में हमारा साथ दे और फ़ुक्र के रास्ता में हमारा साथी बने। उसकी बीवी खड़ी हुई और बोली एक तो मैं हूं। वज़ीर ने कहा कि फ़ुक्र की आग बहुत तेज़ है तो उसे बर्दाश्त न कर सकेगी। तुझे जितना माल चाहिए ले ले और एक तरफ़ हो बैठ। औरत ने जवाब दिया कि एक मरतबा तो मरना हर शख़्स को ज़रूरी है। कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल–मौत। मौत का मज़ा हर नफ़्स चखेगा। पस बेहतर यही है कि तलबे मौला की राह में जान जाए और इन्शाअल्लाह तुम मुझे सब्र करने वालों में पाओगे। वज़ीर ने जवाब दिया कि अच्छा एक चादर ओढ़ कर एक तरफ़ हो जा। उसके बाद शहर में निदा करा दी कि आओ और हमारे माल व अस्बाब और घर को लूट लो और बरबाद कर दो।" कहते हैं कि उस वज़ीर के मकान की ईंटें शीशे और आबगीने की थीं कि तमाम घर में शीशे की तरह मुंह नज़र आता था उसी रोज़ लोगों ने उस मकान को इस बुरी तरह ढा दिया कि दीवारें तोड़ कर मिट्टी में से वह शीशे की ईंटें भी निकाल कर ले गये और रात को चिराग़ जलाने का भी ठिकाना न रहा। वह वज़ीर तीस बरस तक फ़ाक़ा कशी करता रहा और अवारिफ़ का नुस्ख़ा सामने रख कर बन्दगी और इबादत में मशग़ूल हो गया। क़ाइमुल्लैल साइमुन्नहार बन गया कि रात भर क़्याम करता और दिन में रोज़ा रखता मगर कुछ हासिल न हुआ। तीस साल के बाद हज़रत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन महमूद कुद्दिसा सिर्रुहू की तरफ़ रुजूअ लाया और उनकी जानिब मुतवज्जेह हुआ। हज़रत मख़्दूम ने एक अमल फ़रमा दिया कि थोड़ी मुद्दत में कशायश हो गई। इससे मालूम हुआ कि बातिन के दरवाज़ों के खोलने और तमाम मुश्किलों के हल करने की कुंजी पीरों और मुर्शिदों की जानिब सच्ची तवज्जोह करने से हासिल होती है।

अगर अक़ीदत नहीं है तो सआदत को न ढूंढो। चोगाने ख़िदमत ही से यह गेंद ले जाई जा सकती है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमान मर्द को खुजूर के दरख़्त से तशबीह दी है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी है कि फ़रमाया हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने कि दरख़्तों में एक ऐसा दरख़्त है कि जिसके पत्ते कभी नहीं गिरते और वह दरख़्त मुसलमान की मानिन्द है। बतलाओ कि वह दरख़्त कौन सा है? तमाम सहाबा के ख़्यालात जंगल के दरख़्तों की जानिब गये। हज़रत अब्दुल्लाह कहते हैं मेरे दिल में आया कि कह दूं कि वह खुजूर का दरख़्त है इतने में सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह इरशाद फ़रमाइए वह दरख़्त कौन सा है? फ़रमाया कि वह खुजूर का दरख़्त है।" और यह इसलिए फ़रमाया कि खुजूर का दरख़्त उस वक़्त तक फल नहीं लाता जब तक उसकी (ताबीर) इस्लाह न की जाए। यही मिसाल है सच्चे मुसलमान मुरीद की जब तक वह किसी शैख़े कामिल से ज़िक्र व फ़िक्र की तहसील नहीं करता उसके वजूद का दरख़्त वह फल नहीं लाता जो उसके पैदा करने वाले ने अपने करम से उसमें वदीअत कर रखते हैं।

हज़रत मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन महमूद अभी तक बादशाह की ख़िदमत में मौजूद हैं और कपड़े पहनाते हैं। एक रोज़ बादशाह ने नमाज़े अस्र के वक़्त दूसरे कपड़े आपसे तलब किए। आप कपड़े पहनाने में मशग़ूल हुए। सूरज डूबने के क़रीब आ चुका था। आपने आबदीदा हो कर आफ़ताब से फ़रमाया कि ऐ मख़्लूके खुदा बादशाह बेमुरव्वती करता है उसे हमारी नमाज़ के फ़ौत हो जाने का ग़म नहीं। तू लहज़ा भर के लिए अपनी जगह ठहर जा और बेमुरव्वती मत कर।" आफ़ताब वहीं ठहर गया यहां तक कि आप कपड़े पहनाने से फ़ारिग़ हुए और जब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

आपने बन्द बांधे तो फरमाया। "बन्दू नसीरुद्दीन व कुशायद गुस्साल।" कि बांधें नसीरुद्दीन और खोलें गुस्ल देने वाला। जब आप बिल्कुल फ़ारिग़ हुए तो वुज़ू किया और नमाज़ अदा फरमाई उसके बाद आफताब डूब गया। इधर जब बादशाह घोड़े पर सवार हुआ। घोड़े से गिर पड़ा और उसकी गर्दन टूट गई और अपनी जान मलकुल-मौत को सौंप दी। यानी मर गया। इस वाक़या से इतनी बात मालूम हुई कि वह आरिफ़े कामिल जो इंतिक़ाम की कुदरत के बावजूद ऐसी जफ़ा व कफ़ा को मुआफ़ कर देते हैं। उन्हें उसकी ताब नहीं होती कि नमाज़ और रोज़ा फ़ौत हो जाएं इसलिए कि अह्ले मारिफ़त के लिए नमाज़ और रोज़ा का फ़ौत हो जाना एक नागवार मौत, और इबादत का वक़्त पर अदा कर लेना एक ख़ुशगवार ज़िन्दगी है।

मन्क़ूल है कि बादशाह के इंतिक़ाल के बाद तमाम ख़्वानीन, सलातीन और तमाम लश्कर उस पर मुत्तफ़िक़ हुआ कि अब हमारा बादशाह सुल्तान फ़ीरोज़ होगा। और सुल्तान फ़ीरोज़ बादशाही पर राज़ी न होते थे और कहते कि तमाम मख़्लूक़ का बोझ अपने सर पर लादना क़यामत के रोज़ हर शख़्स की जानिब से जवाबदेह होना और इस क़द्र हिसाब के लिए कारबन्द हो बैठना, अक़्लमन्दों का काम नहीं। बल्कि होशियार बादशाहों ने खुद ही अपनी बादशाहत को तर्क करके फ़क़ीरी और मिस्कीनी को अख़्तियार किया है। अगर फ़क़ीरी और दुर्वेशी को छोड़ कर बादशाही को अख़्तियार करूं तो बेवकूफ़ी के सिवा और क्या है। ग़रज़ सुल्तान फ़ीरोज़ ने बादशाहत को किसी तरह क़ुबूल न किया और न तख़्त पर बैठे। यहां तक कि मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन महमूद खुद तशरीफ़ ले गये और फरमाया कि ऐ फ़ीरोज़ तख़्त पर बैठ और बादशाहत को क़ुबूल कर।" अब कि फ़ीरोज़ को मज्बूर होना पड़ा और उन्होंने आपके हुक्म की तामील के सिवा कोई चाराकार न देखा तो अर्ज़ किया कि ऐ हज़रत मख़्दूम कुछ इल्तिमास है फरमाया "जो कहने की बात है कहो।" अर्ज़ किया कि मेरी एक अर्ज़ यह है कि तमाम दुनिया वालों में से किसी एक के ऊपर भी फ़ीरोज़ के हाथों कोई ज़ुल्म व सितम न हो। कि उसकी वजह से कल क़यामत में पकड़ा जाए।" मख़्दूम ने फरमाया कि हां-हां फरमान होता है कि फ़ीरोज़ के हाथ से

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

किसी शख़्स और किसी फ़र्द पर कोई ज़ुल्म व सितम थोड़ा हो या बहुत न होने पाएगा।" फ़ीरोज़ ने अर्ज़ किया कि दूसरी अर्ज़ यह है कि जब तक फ़ीरोज़ की बादशाहत रहे फ़ीरोज़ के मुल्क में न बारिश बन्द हो और न क़हत साली कि दुनिया वालों पर रोज़ी तंग हो जाए।" मख़्दूम ने फ़रमाया। "हां यह भी फ़रमान होता है कि जब तक फ़ीरोज़ की बादशाहत रहे फ़ीरोज़ की विलायत हैं, बारिश की मौक़ूफ़ी और क़हतसाली न हो।" फिर फ़ीरोज़ ने इल्तिमास की कि जब तक फ़ीरोज़ की मम्लिकत रहे अगर उसकी मम्लिकत में कोई आसमानी कहर नामज़द हो चुका है तो वह सारी बला व क़हर ख़्वाह फ़ीरोज़ के सर पर नाज़िल हो मगर फ़ीरोज़ की विलायत पर नहीं।" मख़्दूम ने फ़रमाया कि "फ़रमान होता है कि जब तक फ़ीरोज़ की बादशाहत है क़हर नाज़िल न होगा न फ़ीरोज़ के सर पर और न विलायते फ़ीरोज़ पर।" उसके बाद हज़रत मख़्दूम ने फ़ीरोज़ का बाज़ू पकड़ा और तख़्त पर बिठा दिया।

मैंने सुना कि ख़ुस्रू ने शेरुका से कहा जब कि उसकी आंखें देखने से बन्द हो गईं कि उस पर अज़्म कर लो कि तुम जिस काम की नीयत करो रईयत की इस्लाह पर नज़र रहे।

हज़रत ने मख़्दूम के ख़ुलफ़ा में से एक यही शैख़ अब्दुल-मुक़्तदिर थे जिनका अभी हम ने ज़िक्र किया और एक मौलाना अलाउद्दीन थे जो सुन्दीला में आराम फ़रमा रहे हैं। आप उस से पहले एक और दुर्वेश की ख़िदमत में तीन साल तक रहे। एक रोज़ उस दुर्वेश ने कहा कि आओ तुम्हें ख़ुदा का अर्श दिखाएं। मौलाना अलाउद्दीन ने जवाब दिया कि जिसके दिल में परवरदिगार के दीदार की आरज़ू हो उसे अर्शे इलाही देख कर क्या करना। उसके बाद उस दुर्वेश से अलाहिदा हो गये और दूसरे दुर्वेश की ख़िदमत में हाज़िर आए। यहां तक कि नौ बरस गुज़र गये। एक रोज़ उस दुर्वेश ने पानी पर मुसल्ला बिछाया और उस पर खड़े हो कर नमाज़ की तक्बीरे तहरीमा कही। आप उसके पीछे से बाहर आए और फ़रमाया कि मैंने तो यह ख़्याल किया था कि यह मर्दे सिद्दीक़ है -यह नहीं जानता था कि यह ज़िन्दीक़ है ।" उधर वह दुर्वेश जब दोगाना नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आपको आवाज़ दी कि आओ इतने साल की मशक़्क़त का। मुझसे थोड़ा सा मुआवज़ा ले लो। जवाब दिया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मैंने इतने साल की ख़िदमत मुआफ़ की, आप भी मुझे बख़्शें, उसके बाद मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन की ख़िदमत में हाज़िर आए और आपको वाक़ई दुर्वेश पाया। हज़रत मख़्दूम ने उन्हें ख़िलाफ़त इनायत फ़रमा दी।

हज़रत मख़्दूम के खुलफ़ा में से एक सैय्यद मुहम्मद गैसू दराज़ कुद्दिसा रूहहू हैं आप एक आलिमे ज़ी होश और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैहम पैरवी में मदहोश थे। जिस वक़्त आप हज़रत मख़्दूम नसीरुद्दीन महमूद की ख़िदमत में पहुंचे। हज़रत मख़्दूम घोड़े पर सवार थे। आपने हज़रत मख़्दूम की रान को बोसा दिया। मख़्दूम ने फ़रमाया "और नीचे"। आपने उनके पैर का बोसा लिया। मख़्दूम ने फ़रमाया "और नीचे।" आपने घोड़े के सुम को चूम लिया। उस वक़्त आपके गैसू रुकाब में उलझ गये। हज़रत मख़्दूम ने फ़रमाया "और नीचे।" आपने ज़मीन को बोसा दिया मगर आपके गैसू अब भी रेकाब में उलझे हुए थे। मख़्दूम ने फ़रमाया "मीर सैय्यद मुहम्मद तुम गैसू दराज़ रखते हो।" हाज़िरीन ने जब यह वाक़्या देखा उन्हें भला न मालूम हुआ और आपस में कहने लगे कि फ़रज़न्दे रसूल जो तमाम शहर के पेशरू और कमाल आलमे मुक़्तदा हैं आपकी मुलाक़ात को आए थे। मुनासिब तो यह था कि आप घोड़ी से नीचे तशरीफ़ लाते। फिर उन से मुलाक़ात करते। यह तो किया नहीं बल्कि उन से हर बार "और नीचे। और नीचे" फ़रमाते रहे उसमें फ़रज़न्दे रसूल की तौहीन है। हज़रत मख़्दूम को यह ज़ैबा न था।" यह बात मीर सैय्यद रहमतुल्लाह ने भी सुनी। इरशाद फ़रमाया कि ऐ ज़ाहिर पर नज़र दौड़ाने वालो! तुम क्या जानो कि हज़रत मख़्दूम ने मुझे कहां तक खींच लिया और कहां तक पहुंचा दिया। मैंने जब आपकी रान का बोसा दिया मुझ पर तमाम आलमे नासूत मुंकशिफ़ हो गया और जब पाए मुबारक पर बोसा दिया आलमे मलकूत मुंकशिफ़ हुआ और जब मैंने घोड़े का सुम चूमा आलमे जबरूत मुंकशिफ़ हुआ। और जब ज़मीन पर बोसा दिया तो आलमे लाहूत निगाहों में समा गया। फिर फ़रमाया कि हज़रत मख़्दूम ने एक लहज़ा में मुझे मक़्सूद तक पहुंचा दिया और यह ज़ाहिर में लोग उसको तौहीन ख़्याल करते हैं।"

आरिफ़ के दिल की फ़िरासत जो दर हक़ीक़त नूरे इलाही का फ़ैज़ान है उसे कौन जान सकता है कि वह एक घड़ी में कितना फ़ैज़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

पहुंचाती है। यह बदबख़्त को नेक बख़्त और नेक बख़्त को बदबख़्त कर सकती और मुहाल को मुमकिन की जानिब खींच सकती है।

मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन महमूद कुद्दिसल्लाहु रूहहू की मुनाजाते इलाही उस वक़्त का सदक़ा जब तूने महमूद दुर्वेश को पहले आसमान पर अपने शैदाईयों में पुकारा। इलाही उस वक़्त का सदक़ा जब तूने महमूद दुर्वेश को दूसरे आसमान पर ज़र्री घोड़े पर सवार किया और याकूत की लगाम उसके हाथ में दी। इलाही उस वक़्त का सदक़ा जब तूने महमूद दुर्वेश को तीसरे आसमान पर ज़र्री ख़्वान खाने का शर्फ़ बख़्शा। और ज़र्री कोज़ा में पानी पिलाया। इलाही उस वक़्त का सदक़ा जब तूने महमूद दुर्वेश की चौथे आसमान पर सैय्यदना ईसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात कराई। इलाही उस वक़्त का सदक़ा जब तूने पांचवें आसमान पर महमूद दुर्वेश को जमाले जहां आराई जनाब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमाया, इलाही उस वक़्त का सदक़ा जब तूने छठे आसमान पर महमूद दुर्वेश से (अल्लाह तुम पर सलाम भेजता है) फ़रमाया। इलाही उस वक़्त का तसद्दुक़ जब तूने महमूद दुर्वेश को सातवें आसमान पर सिदरतुल मुन्तहा तक पहुंचाया और निदा कराई कि ऐ महमूद दुर्वेश हमने तुम्हें दोज़ख़ से नजात दी और जन्नत का ऐश तुम्हें बख़्शा। ऐ मालिक न मुझे अज़ाबे दोज़ख़ का ख़ौफ़ है न जन्नत की नेमतों की खुशी (बस तलब है तो यह कि) हमें वह आंख बख़्श दे कि उसकी हर नज़र को बहिश्त बना दूं।

तरजमा : मेरे माबूद मुझे उस ग़म से नजात दे जिसमें मैं हूं। इस कर्ब से नजात दे जिसमें मैं हूं। उस ख़तरा से नजात दे जिसमें मैं हूं। अपनी रहमत से सबसे ज़्यादा रहम फ़रमाने वाले।

हज़रत मख़्दूम के ख़ुलफ़ा में से हज़रत मख़्दूम जहानियां कुद्दिसल्लाहु रूहहू भी थे जिनके कमालाते मारिफ़त और सआदते दौलत की कोई हद व इंतिहा ही नहीं है और न वह तहरीर व तक़रीर में समा सकते हैं। आपको मख़्दूम जहानियां इस वजह से कहते हैं कि आपने एक मरतबा शबे ईद में हज़रत मख़्दूम शैख़ बहाउद्दीन के मरक़दे मुबारक से ईदी मांगी। आवाज़ आई कि अल्लाह तआला ने तुम्हें मख़्दूम जहानियां का ख़िताब बख़्शा है तुम्हें यही ईदी बहुत है। उसके बाद आपने मख़्दूम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

शैख़ सदरुद्दीन के मज़ार पर भी यही इल्तिमास की। आवाज़ आई कि तुम्हारी ईदी वही है जो हमारे बाबा जान ने फरमाई। उसके बाद आपने अपने मुर्शिद मख़्दूम शैख़ रुक्नुद्दीन से ईदी तलब की। आपने फरमाया कि तुम्हारी ईदी वही है जो मेरे बाबा जान और दादा जान ने इनायत फरमाई। जब आप वहां से बाहर तशरीफ़ लाए तो जो भी आपको देखता यही कहता कि मख़्दूम जहानियां आ रहे हैं।

एक बुज़ुर्ग ने आपके मुरीदों का तज़्किर–ए–मुनाजात की सूरत में किया है (और वह यह है) इलाही मख़्दूम जहानियां के सदक़ा में और उनके उन पन्द्रह हज़ार मुरीदों के तुफ़ैल में जो दानिशमन्द अह्ले फ़तवा हैं। इलाही मख़्दूम जहानियां के सदक़ा और उनके उन बारह हज़ार सात सौ पचपन मुरीदों के तुफ़ैल में जो ख़ुलफ़ा हैं। इलाही मख़्दूम जहानियां के सदक़ा और उनके उन दो हज़ार पैंतीस मुरीदों के तुफ़ैल में जो ग़ौस हैं। इलाही मख़्दूम जहानियां के सदक़ा और उनके उन एक हज़ार नौ सौ मुरीदों के तुफ़ैल में जो अब्दाल हैं। इलाही मख़्दूम जहानियां के सदक़ा और उनके इन पन्द्रह हज़ार दो सौ पांच मुरीदों के तुफ़ैल में जो औताद हैं। इलाही मख़्दूम जहानियां के सदक़े और उनके उन सात हज़ार सात सौ मुरीदों के तुफ़ैल, जिनका मुसल्ला हवा में है। इलाही मख़्दूम जहानियां के सदक़ा और उनके उन एक लाख बारह हज़ार छः सौ साठ मुरीदों के तुफ़ैल, कि सूफ़ी हैं और अह्ले सुन्नत व जमाअत के पाबन्द। इलाही मख़्दूम जहानियां की बन्दगी के सदक़े और उनके उन दस हज़ार मुरीदों के तुफ़ैल जो वज्द व अहवाल वाले हैं। इलाही मख़्दूम जहानियां के सदक़ा और उनके उन दो हज़ार पैंतीस मुरीदों के तुफ़ैल जो इस्लाम के भेदों से वाक़िफ़ हैं। इलाही मख़्दूम जहानियां के सदक़े और उनके उन एक हज़ार सात सौ इक्तालीस मुरीदों के तुफ़ैल जिनके दिल हक़ के साथ मशग़ूल हैं। अगरचे ज़ुबाने ख़ल्क़ के साथ मसरूफ़। इलाही मख़्दूम जहानियां का सदक़ा और उनके उन नौ सौ निन्नानवे मुरीदों के तुफ़ैल जिन्हें मौजूदाते आलम में से किसी मौजूद का होश नहीं। इलाही मख़्दूम जहानियां का सदक़ा और उनके उन दो सौ पैंतालीस मुरीदों के तुफ़ैल कि अगर वह (कोई) बात कहें तो दुनिया वाले उन्हें पागल कहें। इलाही मख़्दूम जहानियां का सदक़ा और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

उनके उन बीस मुरीदों के तुफ़ैल, जो अल्लाह तआला की मारिफ़त में डूबे हुए हैं। इलाही मख़्दूम जहानियां का सदक़ा और उनके उन दो मुरीदों के तुफ़ैल, जिनके चेहरा के सामने आफ़ताब नहीं चमक सकता। इलाही मख़्दूम जहानियां का सदक़ा और उनके उस एक मुरीद का सदक़ा कि जो पैदा किया गया है सब उसकी नज़र में मौजूद है। इलाही मख़्दूम जहानियां का सदक़ा और उनके उन दो मुरीदों का सदक़ा जो मख़्लूक़ से बिल्कुल इल्तिफ़ात नहीं बरतते। इलाही मख़्दूम जहानियां का सदक़ा और उनके उन पांच सौ पचीस मुरीदों के तुफ़ैल जो आम बन्दों में ख़लत मलत हैं। इलाही मख़्दूम जहानियां का सदक़ा और उनके उन दो मुरीदों के तुफ़ैल जो क़ुतुब हैं और जब तक सूर न फूंका जाए वह न उठेंगे। इलाही बन्दगी मख़्दूम जहानियां का सदक़ा और उनके एक लाख अठासी हज़ार सात सौ पांच मज़्कूरा बाला मुरीदों के तुफ़ैल इस आजिज़ को तमाम दीनी और दुनियवी परेशानियों से नजात दे और हमें बेहतर बना दे।

हज़रत मख़्दूम जहानियां क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू ने सियाहत व मुसाफ़िरत में बहुत वक़्त गुज़रा। आप एक मरतबा एक शहर में पहुंचे उस शहर के सब छोटे बड़े क़दमबोसी के लिए हाज़िर आए और बहुत मख़्लूक़ जमा हो गई। उन में से बहुत से हुजूम की वजह से क़दम को मस भी न कर सके और सिर्फ़ दूर ही से ज़मीन को चूम लिया और वापस हो गये। हज़रत मख़्दूम उस वक़्त अपने हाल पर यह अशआर बार-बार पढ़ते उनको दोहराते और रोते थे।

वह चीज़ जो अल्लाह तआला मुझ में देख रहा है अगर आतिश परस्त देखे तो मेरी सोहबत में न बैठे। और अगर मैं अपनी कहानी कुत्ते के रू-ब-रू कहूं तो कुत्ता पोस्तीन का दामन मुझ से झपट ले।" मालूम हुआ कि मश्रिक़ से लेकर मग़्रिब तक कसीर मख़्लूक़ आपकी मुरीद और मोतक़िद हो गई थी इसी वजह से आप अपने आपको इज़्ज़त की नज़र से न देखते थे।

मन्क़ूल है कि एक मरतबा हज़रत मख़्दूम जहानियां काबा मुबारका में हाज़िर थे आधी रात का वक़्त था और काबा मुअज़्ज़मा आपको नज़र न आता था। अर्ज़ किया कि या इलाही काबा नज़र नहीं आया।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

[..]शाद हुआ कि काबा शैख़ नसीरुद्दीन महमूद के तवाफ़ के लिए [दि]ल्ली गया हुआ है। आपके दिल में यह ख़्याल आया कि सुबहानल्लाह [मैं] तो काबा के तवाफ़ को आऊं और काबा ख़ुद उनके तवाफ़ को जाए। [ल]िहाज़ा बेहतर यही है कि मैं भी उन्हीं के तवाफ़ को जाऊं चुनांचे आप [उस] जगह से चल पड़े और दिल में तीन चीज़ों की नीयत की। एक तो [तव]ाफ़ करें। दूसरे उनके वुज़ू का पानी पिएं। तीसरे यह कि आपका चौ [ड]ोला अपने कांधे पर लादें। जब आप दिल्ली में हज़रत नसीरुद्दीन [म]हमूद कुद्दिसल्लाहु रूहहू की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हज़रत मख़्दूम [क़ि]ब्ला की जानिब मुंह किए हुए वुज़ू फरमा रहे थे। मख़्दूम जहानियां आपके रू-ब-रू इस नीयत से खड़े हो गये कि जब आप वुज़ू और [द]ोगाना से फ़ारिग़ हों तो मुलाक़ात करूं। हज़रत मख़्दूम जब सर के [मस]्ह से फ़ारिग़ हुए तो पैर धोने के लिए आप मश्रिक़ की तरफ़ फिर [ग]ये। हज़रत मख़्दूम जहानियां भी सामने आ गये और खड़े हो गये। जब आप वुज़ू से फारिग़ हुए फिर क़िब्ला की तरफ़ मुंह करके बैठ गये और अपने मुबारक बालों में कंघा फरमाने लगे। मख़्दूम जहानियां फिर [उ]सी जगह पलट आए जहां पहले खड़े थे और जब हज़रत मख़्दूम [द]ोगाना से फ़ारिग़ हुए तो आपस में मुलाक़ात की। मख़्दूम शैख़ [न]सीरुद्दीन महमूद ने फरमाया कि ऐ फ़रज़न्दे रसूल तुमने तवाफ़ की [न]ीयत की थी वह तो हासिल हो गया। वुज़ू का पानी जो इस [आ]बख़ोरा में बाक़ी है उसे पी लो। और चौ डोला उठाने की जो नीयत [त]ुमने की थी उसके लिए इतना काफी है कि तुम अपना कांधा उसके [..] से लगा दो। उसके बाद मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन ने ख़िलाफ़त की [..] से एक तहबन्द तलब किया और उनके सामने रख दिया कि उसे [प]हन लो। और आप का मतलब यह था कि वह फ़रज़न्दे रसूल हैं। हम [अप]नी जानिब से एक कपड़ा देते हैं ताकि वह उसे पहन लें। मख़्दूम [ज]हानियां ने वह तहबन्द अपने सर पर बांध लिया।

फिर जब मख़्दूम जहानियां हालात की तक्मील और कमालात की [त]क्मील के बाद, मकान पर पहुंचे तो आपके वालिद मीर सईद अहमद [क़ु]द्दिसल्लाहु रूहहू हयात थे, अल्बत्ता वालिदा का इंतिक़ाल हो चुका था। एक रोज़ आपने अपने पिद्र बुज़ुर्गवार से अर्ज़ किया कि आप

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अपना निकाह फरमा लें। वालिदे मोहतरम ने जवाब दिया कि मैं तो अब क़ब्र के किनारे पहुंच चुका हूं अब निकाह मुनासिब नहीं। मख़्दूम ने जवाब दिया कि आपकी सुल्ब में एक कुतुब है आपको निकाह ज़रूर करना है। मीर सईद अहमद साहब ने जवाब दिया कि मुझे इस कमज़ोरी और बुढ़ापे में कौन कुबूल करेगा। हज़रत मख़्दूम ने फरमाया कि मैं इसमें वास्ता बनूंगा। मख़्दूम जहानियां की नानी हयात थीं और एक लड़की रखती थीं जो हज़रत मख़्दूम की ख़ाला होती थीं। आप उनकी ख़िदमत में गये और फरमाया कि नानी अम्मां! मेरी ख़ाला को मेरे वालिद की ज़ौजियत में दे दीजिए। उन्होंने कहा कि तुम्हारे वालिद ज़ईफ़ और बूढ़े हैं और तुम्हारी ख़ाला कम्सिन और नौजवान हैं कैसे उन की ज़ौजियत में दे दूं। मख़्दूम ने फरमाया कि मैं कहता हूं मेरे कहने से दे दीजिए। उन्होंने फिर कहा कि अगर उनके बच्चा पैदा हो और तुम्हारी तरह कुतब हो तो मैं उनकी ज़ौजियत में दे दूंगी। मख़्दूम ने कहा खुदा की क़सम, खुदा की क़सम उनके ऐसा बच्चा होगा जो कौनैन का कुतुब है और उसका दुनिया में आना ज़रूरी है। चुनांचे इस क़ौल व क़रार पर निकाह हो गया। थोड़ी ही मुद्दत में मख़्दूम की ख़ाला को हमल हो गया और मीर सैय्यद अहमद कुद्दिसल्लाहु रूहहू ने जवारे रहमत हक़ में आराम फरमाया।

अय्यामे हमल गुज़र जाने के बाद एक लड़का पैदा हुआ। लोगों ने मख़्दूम को ख़बर दी कि लड़का पैदा हुआ है। फरमाया कि उसका नाम सैय्यद मुहम्मद है और उर्फ़ सैय्यद राजू क़िताल होगा। उनको पूरी हिफ़ाज़त के साथ परवरिश करो। लोगों ने अर्ज़ किया कि वह वालिदा का दूध नहीं पीते। फरमाया कि वह कुतुब है तन्हा दूध नहीं पिएगा। एक दूसरा दूध पीता बच्चा एक जानिब मां के कर दो। उस वक़्त सैय्यद राजू दूसरी जानिब से दूध चूसेंगे। चुनांचे दूध पीने की तमाम मुद्दत में सैय्यद राजू ने तन्हा दूध न पिया। एक रोज़ लोग यह ख़बर लाए कि एक बच्चा को दूध चूसने के लिए एक तरफ़ लगा दिया है मगर सैय्यद राजू दूध नहीं पीते? मख़्दूम जहानियां ने फरमाया कि वह कुतुब है। रमज़ान की अज़मत का ख़्याल है दिन में दूध न पिएगा रात को पिएगा। सुबहानल्लाह।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सईद वही है जो मां के पेट से सईद निकला। हज़रत सैय्यद राजू क़िताल क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू ने गिनती के चन्द साल में तमाम उलूम की तक्मील कर ली। और दौलत व नेमत, सआदत और मारिफ़त जो हज़रत मख़्दूम जहानियां को हासिल थी वह सब आपने मीर सैय्यद राजू क़िताल के हवाला कर दी।

जब हज़रत मख़्दूम जहानियां की उम्र तमाम हुई और आपने इस दुनिया से सफर फरमाया और अल्लाह तआला के जवारे क़ुर्ब में मिल गये और दौरे ख़िलाफ़त मीर सैय्यद राजू क़िताल क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू को पहुंचा तो जिस तरह तमाम मख़्लूक़ आम व ख़ास हज़रत मख़्दूम जहानियां से रुजूअ़ रखती थी वही हाल मीर सैय्यद राजू क़िताल के साथ भी हुआ। एक मरतबा मीर सैय्यद राजू क़िताल मुसलमानों की बाज़ परेशानियों की ख़ातिर सुल्तान फ़ीरोज़ के पास तशरीफ़ ले गये। वहां मलिक सारंग को देखा। आपने उन्हें पसन्द फरमाया। कुछ तल्क़ीन भी की। यह मुल्क बादशाह के उमरा में से थे और बारह हज़ार सवार उनकी ख़िदमत में हाज़िर रहते थे। फ़हम व फ़िरासत और अक़्लमन्दी व दानाई में ऐसे थे कि तारीफ़ नहीं हो सकती। जब वह वक़्त आया कि मलिक सारंग दुनियावी कारोबार से हाथ समेट लें। तो एक रात ऐसी आई कि आपका दिल दुनिया के धन्धों से बिल्कुल खट्टा हो गया और आपका दुनिया से ज़र्रह बराबर भी इलाक़ा न रहा। आप बादशाह से रुख़्सत हो कर अपने मक़ाम पर वापस आए और इताअत व इबादत में मशग़ूल हो गये और ज़िक्र व फ़िक्र और शुग़ल को पसन्द कर लिया। तमाम लोग उस वक़्त आप को शैख़ सारंग कहते थे।

हज़रत मीर सैय्यद राजू क़िताल क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू ने मक़ामे उज से उनके लिए ख़िलाफ़त का जामा और एक सनद रवाना की। जब जाम-ए-ख़िलाफ़त आपको पहुंचा, आपने क़बूल करना न चाहा और कहा कि मैं एक नौ मुस्लिम आदमी हूं मुझ में यह लियाक़त कहां है कि औलिया अल्लाह के कपड़े पहनूं और उनके हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त कर सकूं। चुनांचे जाम-ए-ख़िलाफ़त को वापस कर दिया। जब वह कपड़ा मीर सैय्यद राजू क़िताल के पास मक़ामे उज में पहुंचा तो हज़रत मीर सैय्यद राजू क़िताल ने वह जामा फिर आपकी ख़िदमत में रवाना कर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

दिया और एक ख़त लिखा कि यह जामा मैंने खुद नहीं रवाना किया बल्कि खुदाए कुद्दूस के फ़रमान रसूलुल्लाह के हुक्म और अपने पीरों के इशारा से रवाना किया है। अपने दिल में कोई बेहूदा ख्याल मत आने दो और इस कपड़े को पहन लो कि तुम्हारे लिए मुबारक है। उस वक़्त मख़्दूम शैख़ सारंग ने वह जामा पहना। उस रोज़ से जो शख़्स भी लखनऊ की सर ज़मीन से हज़रत मीर सैय्यद राजू क़िताल से बैअत और इरादत की ख़ातिर हाज़िर होता आप उसको वापस कर देते और फ़रमाते कि मैंने उस जगह शैख़ सारंग को नसब कर दिया है तुम इतने दूर की राहे मसाफ़त तय करके क्यों आते हो। वहीं जाओ और शैख़ सारंग के मुरीद हो।

मख़्दूम शैख़ सारंग मुरीद थे हज़रत मख़्दूम शैख़ क़्यामुद्दीन के। शैख़ क़्यामुद्दीन साहब मख़्दूम शैख़ नसीरुद्दीन महमूद के मुरीद और मख़्दूम जहानियां के ख़लीफ़ा थे। मख़्दूम शैख़ सारंग की उम्र एक सौ बीस साल थी। आप शैख़े फ़ानी हो चुके थे और माहे रमज़ान के रोज़ों की ताक़त आप में न थी और शरीअत की जानिब से रोज़ा न रखना आपके लिए मुबाह था। एक रोज़ रमज़ान के महीना में आप कुछ खा रहे थे और मख़्दूम शैख़ मीना आपके सामने खड़े थे। मख़्दूम शैख़ मीना के दिल में यह ख्याल गुज़रा कि अगर हज़रत मख़्दूम अपना बचा हुआ मुझे दे दें तो मैं उसको खा लूं और साठ रोज़े क़ज़ा के रख लूं। मख़्दूम ने सर ऊपर उठाया और मख़्दूम शैख़ मीना से फ़रमाया कि तुम खुद कुछ हो। यह हमारे लिए शरीअत ने ही रोज़ा न रखना मुबाह कर दिया है। अच्छी बात है रात को जब हम कुछ खायेंगे तो बचा हुआ कुछ तुम्हें भी दे देंगे कैसे हो सकता है कि हम तुम्हें एक ग़ैर मशरूह चीज़ की इजाज़त दे दें।

हज़रत मख़्दूम शैख़ सअ्द क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू ने मज्मए सुलूक में लिखा है कि मख़्दूम शैख़ सारंग के दो ख़लीफ़ा थे। एक मख़्दूम शैख़ मीना और दूसरे मख़्दूम शैख़ हिसामुद्दीन सूफ़ी जो साहबे सज्जादा के नवासे थे।

मख़्दूम शैख़ मीना का वाक़या यूं है कि आप शैख़ क़्यामुद्दीन के भतीजे थे और आपके वालिद का नाम शैख़ कुतबुद्दीन था। एक मरतबा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

शैख़ क़्यामुद्दीन ने फरमाया कि शैख़ कुतबुद्दीन के घर में एक ऐसा एक ऐसा बच्चा पैदा होगा जो हमारे ख़ानदान की मशअ्ल होगा। और उससे हमारा नाम रौशन होगा। चुनांचे जिस वक़्त मख़्दूम शैख़ मीना पैदा हुए और आपकी पैदाइश की ख़बर मख़्दूम शैख़ क़्यामुद्दीन को पहुंची तो आपने हिन्दी ज़बान में फरमाया कि "हां आवा मोरा मीना।" इसी बिना पर आपका उर्फ़ शैख़ मीना हुआ। आपका नाम शैख़ मुहम्मद है। मख़्दूम शैख़ मीना ने दूध पीने की तमाम मुद्दत में (यह मामूल रखा) अगर उनकी दाया बेवुज़ू होती तो आप दूध न पीते। और जब आप दो तीन साल के हुए तो जिस वक़्त मख़्दूम शैख़ कुतबुद्दीन उनको बग़ल में लेते तो आप कहते कि घर की यह चिड़ियां हमें दीजिए। शैख़ कुतबुद्दीन चिड़ियों से कहते कि आओ शैख़ मीना तुम्हें बुलाते हैं तो वह आतीं और हज़रत मख़्दूम के हाथ पर बैठ जातीं और उनमें इतनी ताक़त न रहती कि बग़ैर मख़्दूम के फरमाए हुए उड़ जाएं। उस वक़्त शैख़ कुतबुद्दीन उन से कहते कि अब कह दो ताकि चिड़िया चली जाएं। आप फरमाते उड़ जाओ, वह उड़ जातीं।

जब आप मदरसा जाते तो चूंकि उस्ताज़े मुअल्लिम यह जानते थे कि आप भी अल्लाह के वलियों में से एक वली हैं लिहाज़ा उनकी तालीम में कोशिश न करते।। दूसरे बच्चे पढ़ते रहते और वह अपने काम में मशग़ूल। जब बच्चों की छुट्टी का वक़्त आता और सब बच्चे मिल कर उस्ताद को सलाम करते तो मख़्दूम शैख़ मीना उस आवाज़ पर चौंकते और उस्ताद को सलाम करके वापस आ जाते। जब आपकी उम्र दस साल की हुई तो उस ज़माना में मीर सैय्यद राजू क़िताल का एक गुलाम लखनऊ आया हुआ था जिसे मारिफ़त में कमाल हासिल था। उसने जब मख़्दूम शैख़ मीना को देखा तो बाज़ अश्ग़ाल तल्क़ीन कर दिए। जब आप बारह साल की उम्र को पहुंचे तो कुतुब हो गये और उनकी क़ुतबीयत को क़ाज़ी शिहाब ने ज़ाहिर किया।

वह क़ाज़ी शिहाब मक़ामे चंबुलाई के रहने वाले और शाह मदार के मुरीद थे। उनका ख़िताब क़ाज़ी शिहाब पर काल-ए-आतिश था। जब अपने पीर की मुलाक़ात के लिए रवाना हुए। जब लखनऊ पहुंचे तो लखनऊ के बहुत से लोग उनकी मुलाक़ात को आए और जो अहम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

काम और हाजत रखते थे उसे बयान किया। क़ाज़ी शिहाबुद्दीन ने फ़रमाया कि मैं अपने पीर की ख़िदमत में जा रहा हूं तुम सब अपनी हाजतें मुझ से बयान कर दो ताकि सब लिख कर पीर के सामने पेश कर दूं। यह बात सबने क़ुबूल कर ली और क़ाज़ी शिहाब ने काग़ज़ पर लिख लिया कि फ़लां की यह हाजत लिख कर ले गए। जब वहां से वापसी का इरादा किया तो ज़रूरतमन्दों के काग़ज़ात पीर की ख़िदमत में पेश किए। क़ाज़ी शिहाब ने अर्ज़ किया कि शैख़ मीना कौन बुज़ुर्ग हैं। मैं तो जानता भी नहीं। शाह मदार ने फ़रमाया कि अभी वह कम उम्र हैं उनकी उम्र बारह तेरह साल है। फिर उनकी शक्ल व शबाहत बयान कर दी और फ़रमाया कि वह क़ुतुब हैं और यह उन्हें मालूम नहीं कि यह विलायत उन्हीं को सौंप दी गई है और वहां के लोगों को भी उसकी ख़बर नहीं। तुम जाओ और सब लोगों को उसकी ख़बर दे दो और सब हाजतमन्दों को उनके पास ले जाओ। ख़ुद भी जाओ और उन से मुलाक़ात करो और मेरी जानिब से दुआ सलाम कह देना। एक मुसल्ला दिया कि यह हदिया मेरी जानिब से मख़्दूम को दे देना।

जब क़ाज़ी शिहाब लखनऊ पहुंचे तो सब हाजत मन्द जमा हो गये। क़ाज़ी शिहाब ने कहा कि मेरे पीर ने यूं फ़रमाया है कि यह विलायत शैख़ मीना के हवाला कर दी गई है। इन अतराफ़ के वह क़ुतुब हैं। तुम अपनी तमाम ज़रूरतों में उन्हीं की तरफ़ रुजूअ़ करो। फिर क़ाज़ी शिहाब तमाम हाजत मन्दों को लेकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन से मुलाक़ात की और पीर की जानिब से दुआ सलाम और वह मुसल्ला पेश किया। सब हाजतमन्दों की सिफ़ारिश की और ख़ुद तो लौट आए। हाजतमन्द वहीं मौजूद रहे। एक हाजत मन्द जल्दी से उठा और कहने लगा कि मेरा बेटा बहुत सख़्त बीमार है और उसका मरज़ बहुत बढ़ा है। हज़रत मख़्दूम ने फ़रमाया कि काग़ज़ और दवात हाज़िर करो। लोगों ने हाज़िर कर दी। आपने हर एक हाजतमन्द को एक दुआ और तावीज़ लिख दिया और वह शख़्स जिसने सबसे पहले अपना हाल अर्ज़ किया था अभी तक खड़ा हुआ था। आपने उससे फ़रमाया कि बाबा सब्र करो। मैंने ख़ुदा तआला से उसके लिए बहुत शिफ़ा मांगी मगर कुछ फ़ाइदा न हुआ और यह हुक्म हुआ कि उसकी उम्र इतनी ही

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

और यह दूहरा पढ़ा।

टूटी बरत अकास जीता जोरों ना जुरे
जिन सुरजन की आस ते सुर्जन दर्जन भई

यानी जो रस्सी ऊपर से घिस चुकी है वह मैं नहीं जोड़ सकता कि दोस्त ने नाफरमानी इख़्तियार की उसने दोस्ती तोड़ दी। इस तरह की हालत मारिफ़त में दिन बदिन तरक़्क़ी करती रही। उस वक़्त शैख़ सारंग की ख़िदमत में तशरीफ़ ले गये और मुरीद हो गये और तक आपकी ख़िदमत करते रहे। एक मरतबा शैख़ सारंग ने को एक शहर में भेजा। आप वहां तशरीफ़ ले गये और जो काम उसे पूरा करके वापस तशरीफ़ लाए और शैख़ सारंग की ख़िदमत हाज़िर हुए। हज़रत मख़्दूम शैख़ सारंग ने दरयाफ़्त किया कि उस में एक आरिफ़ व कामिल मर्द हैं उन से भी मुलाक़ात की थी। अर्ज़ नहीं। मख़्दूम ने फ़रमाया कि जब किसी शहर में जाना हो और जगह कोई दुर्वेश आरिफ़ व कामिल हो तो उस से मुलाक़ात करनी और देखना चाहिए। मख़्दूम शैख़ मीना ने यह बैत पढ़ी।

यानी तमाम शहर ख़ूब सूरतों से भरे हुए हैं और मैं एक चांद के में हूं। हां क्या करूं अगर बुरी आदत वाली आंख किसी और को देखे। एक मुद्दत के बाद शैख़ सारंग ने आपको जाम-ए-ख़िलाफ़त फ़रमाया और रुख़्सत कर दिया कि जाओ अपने मकाम पर गूल हो।

हज़रत मख़्दूम शैख़ मीना के दो ख़लीफ़ा थे। एक तो आपके भतीजे का नाम शैख़ कुतबुद्दीन था और आपने उन्हें साहिबे मक़ाम फ़रमा दूसरे मख़्दूम शैख़ सअद।

मख़्दूम शैख़ सअद का वाक़या यूं है कि आप क़ाज़ी बुद्धन के ज़ादे थे और क़ाज़ी बुद्धन क़स्ब-ए-उनाम के हाकिम थे। आपने मख़्दूम शैख़ सअद को मक्तब में भेजा तो आप रोज़ाना अपना याद कर लेते और उसे रात में एक हज़ार मरतबा पढ़ते। आपने क़ुरआन शरीफ़ भी इसी तरह हिफ़्ज़ किया कि आप थोड़ा-थोड़ा करते रहे।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मन्कूल है कि एक रात आपके चिराग़ में तेल बाक़ी न रहा। वालिदा के पास आकर रोने लगे कि आज मैं अपना सबक़ किस तरह पढ़ूं। कुहरी का एक बोझ मौजूद था। आपकी वालिदा ने कहा कि मैं दो-दो तीन-तीन शाखें लेकर जलाती हूं। तुम उसकी रौशनी में अपना सबक़ याद कर लो। आपने ऐसा ही किया। कुहरी का तमाम बोझ जल गया और आपने अपना सबक़ कई मरतबा पढ़ लिया। आप कभी-कभी बच्चों के साथ खेल कूद में भी लग जाते। जब कुरआन ख़त्म हुआ और आपने किताब शुरू की तो खेल कूद की बहुत सी चीज़ें थीं सब बच्चों को बख़्श दीं और फ़रमाया कि हम आज की तारीख़ से खेल कूद में न लगेंगे और इल्म के हासिल करने में लगेंगे। चुनांचे आपने चन्द साल में तमाम उलूम को हासिल कर लिया और बड़े उलमा में शुमार होने लगे। उसके बाद आप मख़्दूम शैख़ मीना की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मुरीद हो गये और पीर की ख़िदमत में रहने लगे। और पीर की दरगाह में तर्बियत और परवरिश पाते रहे और आपके पीर साहब ने भी आप पर बड़ी मेहरबानियां और नवाज़िशें फरमाईं जब हज़रत शैख़ मीना का इंतिक़ाल हुआ। यह दोनों हज़रात लखनऊ ही में रहे। और जब तक आप वहां रहे कोई शख़्स शैख़ कुतबुद्दीन की ख़िदमत में न जाता। हालांकि आप वहां के साहबे सज्जादा थे उस वक़्त मख़्दूम शैख़ मीना ने मख़्दूम शैख़ सअद से ख़्वाब में फरमाया कि तुम ख़ैराबाद चले जाओ। आप इस ख़्वाब के बमूजिब ख़ैराबाद तशरीफ़ ले गये और सबसे पहले शैख़ सलीम चौधरी के मकान पर क़्याम फ़रमाया। शैख़ सलीम मख़्दूम शैख़ मीना के मुरीदों में थे। उस ज़माना में ख़ैराबाद एक शख़्स की विलायत में था जिनका नाम राजी मूसा था। शैख़ सलीम उन्हीं की मज्लिस में थे। कि मख़्दूम शैख़ सअद के आने की खबर सुनी आप जल्दी से खड़े हो गये। राजी मूसा ने पूछा कि इस उज्लत की बाइस क्या है। फ़रमाया कि मख़्दूम शैख़ सअद मेरे पीर के ख़लीफ़ा तशरीफ़ लाए हैं उनकी क़दमबोसी के लिए जल्दी में उठ रहा हूं। इत्तिफ़ाक़ से उन्हीं दिनों में बारिश अरसा से न हुई थी। राजी मूसा ने कहा कि हम ने इतने बुज़ुर्गों को देखा मगर कोई ऐसा न मिला कि उसकी दुआ से

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned with CamScanner

बारिश हो जाती। शैख़ सलीम ने कहा कि इस क़िस्म की बेहूदा बातें ज़बान से न निकालो। मख़्दूम शैख़ सअद ऐसे बुज़ुर्ग नहीं कि किसी को उनकी शान में यूं गुस्ताख़ी करने की मजाल हो। राजी मूसा ने फिर कहा कि मैं ख़ुद भी तो कह रहा हूं। उस पर बहुत बात बढ़ गई। आख़िरकार शैख़ सलीम ने कहा अगर बारिश हो जाए तो क्या करोगे? कहा कि मैं नंगे पैर दौडूंगा और उनका मुरीद हो जाऊंगा। शैख़ सलीम ने कहा कि अच्छी बात है अब मुझे रुख़्सत करो। ग़रज़ आप आए और मख़्दूम की पाबोसी की। मख़्दूम के हमराह तीन सूफ़ी और दो क़व्वाल भी थे। खाने के लिए जो कुछ था तैयार किया और आपकी बहुत ज़्यादा इज़्ज़त व ताज़ीम की।

इशा की नमाज़ के बाद शैख़ सअद पलंग पर आराम की ख़ातिर लेट गये। शैख़ सलीम पलंग के क़रीब बैठे थे। सिलसिल-ए-कालाम जारी था। शैख़ ने अर्ज़ किया कि यह शख़्स जिसकी विलायत में ख़ैराबाद है उसका नाम राजी मूसा है। आदमी नेक और सालेह है। परहेज़गार और दीनदार भी है। और आदतें भी अच्छी हैं मगर उसने एक अजीब बात कही है। मख़्दूम ने जवाब दिया कि वह क्या? कहा कि जब मैं मख़्दूम की ख़बर सुन कर जल्दी से उठा उसने कहा कि जल्दी किस बात की है। मैंने हुज़ूर की आमद की ख़बर दी उसने कहा कि मैंने इतने बुज़ुर्गों को देखा है मगर कोई ऐसा न मिला कि उसकी दुआ से बारिश होती। मैंने उसे इस बात से मना किया मगर वह अपनी बात पर अड़ा रहा। हज़रत मख़्दूम ने फ़रमाया कि वह ठीक कहता है। हम में इतनी लियाक़त कहां है कि हमारी दुआ से कोई काम बन जाए और बारिश होने लगे। तुमने उससे क्यों झगड़ा किया। शैख़ सलीम ने जवाब दिया कि हुज़ूर अब तू मुझ से यह जवाबदेही और ज़िद हो चुकी मख़्दूम ने फिर फ़रमाया कि इस मुआमला में वह हक़ पर हैं। मुझ नामुराद में यह अहलियत कहां कि मेरी दुआ क़ुबूल हो। हां अल्लाह तआला रऊफ़ुर्रहीम और करमे गुस्तर है। अगर बारिश नाज़िल फ़रमाए तो उसका लुत्फ़ व करम है। हज़रत मख़्दूम के मुंह से जूंही यह अल्फ़ाज़ निकले चारों तरफ़ से बादल उठा। बदलियां घिर गईं और तमाम रात

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks
Scanned with CamScanner

विलायत खैराबाद में बारिश होती रही। जब दिन निकला तो सुबह की नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर शैख़ सलीम मूसा राजी के मकान पर पहुंचे और कहा कि मूसा राजी को ख़बर दो कि शैख़ सलीम दरवाज़ा पर खड़ा है। राजी मूसा घर से नंगे पैर दौड़े और चाहा कि हज़रत मख़्दूम से मुलाकात के लिए नंगे पैर, पैदल चल कर मिलूं। शैख़ सलीम ने कहा कि तुम घर से नंगे पैर चल कर यहां तक पहुंचे हो। यही काफी है (बात यह है कि) हज़रत मख़्दूम बहुत ज़्यादा मुंकसिरुल–मिजाज हैं। तुम पैदल चल कर उन से मिलोगे तो उन्हें बहुत ग़ैरत व हया आएगी जिस से उन्हें तक्लीफ़ होगी। सवार ही हो कर चलो राजी मूसा ने कहा कि "नज़राना कितना ले चलूं?" शैख़ सलीम ने कहा कि यह मुझ से मत पूछो।

राजी मूसा ने अब अपने साथ कई हज़ार नक़्द सिक्का और ख़ैराबादी कपड़े कसरत से नज़राना की नीयत से लिए और ख़ैराबाद का फरमाने विलायत भी हमराह लिया। और अपने तमाम भाईयों को, उनकी औलाद को, अपने फ़रज़न्दों को और तमाम रिश्तेदारों और कुंबे वालों को अपने साथ लेकर राजी मूसा बैअत की नीयत से हाज़िर हुए। क़दमबोसी का शर्फ़ हासिल किया और तमाम लोग मुरीद हो गये। उसके बाद वह नज़राना पेश किया। उसके बाद राजी मूसा ने ख़ैराबाद का फरमान हज़रत मख़्दूम के सामने रखा और अर्ज़ किया कि यह फरमान जिसे हुज़ूर मुनासिब जानें अता फरमा दें। हज़रत मख़्दूम ने इस फरमान को पढ़ा फिर लपेट दिया और राजी मूसा से फरमाया कि यह फरमाने तुम्हारे पास रहेगा। हम जिसे कोई चीज़ दिलवाएंगे नविश्ता तुम्हारे हवाले कर देंगे। राजी मूसा ने निहायत ताज़ीम के साथ इस फरमान को वापस लिया। अपने सर और आंखों पर रखा और कबूल कर लिया।

मख़्दूम कुद्दिसल्लाहु रूहहू ने अपने मकानों और इमारतों की बुनियाद रखी और अपने तमाम घर वालों, रिश्तेदारों और कुंबा वालों को ख़ैराबाद में बुला लिया। अब चारों तरफ़ से लोगों ने आपकी ख़िदमत में आना शुरू किया। कोई बैअत की नीयत से आया कोई इल्म हासिल करने के इरादा से हाज़िर हुआ। किसी ने तलबे मौला की नीयत की।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

...की मुलाक़ात ही की ख़ातिर हाज़िरी से मुशर्रफ़ हुआ, ग़रज़ इसी तरह ...के लोग ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होते रहे। मख़्दूम शैख़ सअद ने लंगर ...खाने मुऐयन कर दिए जिसमें हर क़िस्म के खाने तैयार होते और तमाम मख़्लूक़ उन्हें खाती फिर नज़राने बड़ी कसरत से आने लगे। और सब इसी तरह मसरफ़ में ख़र्च होते रहे।

ख़ाक़ान यानी शाह मिज़ाज का हाथ दोलाब (रहट) की तरह चलता रहता है कि एक हाथ से आता है और दूसरे से ख़र्च हो जाता है। जिस रोज़ हज़रत मख़्दूम कुद्दिसल्लाहु रूहहू ने इस दुनिया से कूच फ़रमाया तो इतना न था कि कफ़न (आसानी से) मुहैया हो जाता चुनांचे लोगों ने कहा है कि –

हाथों में जो कुछ है सब ठोकरों के लिए है। अगर कफ़न के लिए कुछ बचा कर न रखो तो जाइज़ है।

कहते हैं कि सुल्तान सिकन्दर लोधी ने हज़रत मख़्दूम की ख़िदमत में एक अरीज़ा रवाना किया कि मेरी आरज़ू यह है कि हज़रत से मुलाक़ात करूं मगर ख़ुद हाज़िर हो नहीं सकता इसलिए कि अगर मैं आता हूं तो मेरे साथ एक बड़ा लाव लशकर होगा और उससे मुल्क को नुक़्सान पहुंचेगा। अगर हज़रत मख़्दूम ही क़दम रंजा फ़रमाएं तो बन्दा सरफ़राज़ हो जाए। मख़्दूम रवाना हुए। बादशाह ने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि एक कश्ती में सुराख़ करो और उसमें एक कील अच्छी तरह गाड़ दो और जिस वक़्त मख़्दूम सअद आएं उस कश्ती पर उन्हें सवार करो। और जब कश्ती डुबाव पानी में पहुंचे तो वह कील आहिस्ता से खींच लो। लोगों ने ऐसा ही किया मगर ख़ुदाई तआला की इनायत से वह डुबाव पानी, पायाब हो गया। कश्ती ज़मीन पर बैठ गई और पानी लोगों की पिंडलियों तक आ गया। उस वक़्त सुल्तान सिकन्दर ने राजी मूसा से कहा कि वह कश्ती जिसमें तुम्हारे पीर सवार थे। सुना गया है कि डूब गई। राजी मूसा ने कहा कि बादशाह सलामत वह ख़बर झूठी होगी जो आपने सुनी। मेरे पीर तो ऐसे आदमी हैं कि हज़ारों लाखों आदमी उनकी कश्ती में सवार होकर साहिले नजात तक पहुंचेंगे। इसी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अस्ना में लोग यह ख़बर लाए कि जिस कश्ती पर मख़्दूम सवार थे वह डुबाव तक पहुंच चुकी थी मगर पानी कम रह गया और कश्ती ज़मीन पर बैठ गई। गरज़ कि मख़्दूम बादशाह के यहां तशरीफ़ लाए और बाहम मुलाक़ात हुई और आप बहुत मुद्दत तक वहां रहे इसी ज़माना में कहीं लुटेरों ने मुसलमानों का एक गांव लूट लिया था और उस गांव की तमाम चीज़ें बादशाह के लशकरियों में हर बाज़ार में फरोख़्त कर रहे थे। इधर हज़रत मख़्दूम की ख़िदमत में बड़े–बड़े खाने आते। बहुत लोग जमा होते और उन खानों को खाते। मख़्दूम भी मज्लिस में तशरीफ़ फरमा होते मगर कुछ न खाते इसलिए कि उस खाने के हलाल होने में कुछ शुबह था और उसकी किसी को ख़बर भी न होती कि मख़्दूम कुछ तनावल नहीं फरमाते। बारह रोज़ इसी हालत में गुज़र गये। बारहवें रोज़ बन्दगी क़ाज़ी मुहम्मद मन्नुल्लाह को यह बात महसूस हुई कि हज़रत मख़्दूम ने इस मुद्दत तक कुछ नहीं खाया है। बादशाह के लश्कर में एक अमीर था कि बादशाह का मुक़र्रब था। रिज़्क़े हलाल में बड़ी एहतियात बरतता था। आटा, चावल, घी, बकरी का बच्चा, बकरी और उसके अलावा तमाम चीज़ें उसके घर से आईं यहां तक कि इस्तिंजे के ढेले भी उसी के घर से आते। बन्दगी क़ाज़ी मुहम्मद मन्नुल्लाह ख़ुद उस अमीर के मकान पर गये। वहां से कुछ खाना लेकर आए और हज़रत को खिलाया। आपके लिए यह अभी दिल पर एक चोट थी कि आप उसको बर्दाश्त करते रहे।

यह हज़रात जो कुछ करते हैं आम आदमी के अख़्तियार से बाहर होता है। कहना पड़ता है कि अल्लाह वाले आम इंसानी आदत व तबीअ़त ही नहीं रखते।

गरज़ जब वह वक़्त आया कि आप बादशाह से रुख़्सत हों और आपने बादशाह से इजाज़त चाही तो बादशाह ने आपको तन्हाई में बुलाया कि वहां बादशाह शैख़ जमाली कुंबोह और दो तीन आदमी और थे। लोग आपको वहां लेकर पहुंचे। मख़्दूम की अभी शादी नहीं हुई थी। बादशाह ने पूछा कि हज़रत मख़्दूम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

व सल्लम इस सुन्नत को अदा नहीं करते। उसका क्या सबब है। हज़रत मख़्दूम अभी जवाब भी न देने पाए थे कि शैख़ जमाली ने बात चीत में पहल की और कहा कि शायद आप में मर्दुमी कम है। मख़्दूम ने फ़रमाया कि 'तुम्हें ज़्यादा चाहिए।' बादशाह शर्मिंदा हुआ कि शैख़ जमाली ने नाहक़ बात कह दी और जब हज़रत मख़्दूम वहां से रुख़्सत हो गये तो बादशाह ने शैख़ जमाली को बहुत बुरा भला कहा और कहा।

कि हर जगह घोड़ा नहीं दौड़ाया जा सकता। बहुत सी जगहें हैं कि वहां ढाल डालनी पड़ती है।

वह बात जो हज़रत मख़्दूम ने फ़रमाई कि 'तुम्हें ज़्यादा चाहिए।' उसका असर यक़ीनन ज़ाहिर होगा।' चुनांचे यह बात इल्म में आ चुकी कि शैख़ जमाली बदकारी में मशहूर हो गया था और अल्लाह ज़्यादा बेहतर जानने वाला है। अल-ग़रज़ हज़रत मख़्दूम जब ख़ैराबाद पहुंचे तो हर तरफ़ से आपके मुरीदीन और मोतक़ेदीन आए और आपकी क़दमबोसी करने लगे।

हज़रत मख़्दूम कुद्दिसल्लाहु रूहहू के ख़ुलफ़ा बहुत ज़्यादा थे और आपके तमाम ख़ुलफ़ा आलिम व फ़ाज़िल और उनमें बाज़ आलिम व हाफ़िज़ भी थे। मख़्दूम शैख़ सफ़ी की उम्र बारह या तेरह साल की थी कि आप भी मख़्दूम की ख़ानक़ाह में हाज़िर हुए और आपके मुरीद हो कर इल्म के हासिल करने में मशग़ूल हो गये। सर पर टोपी, कांधे पर चादर और बदन पर तहबन्द रहता और तहसीले इल्म में मशग़ूल रहते। एक रोज़ हज़रत मख़्दूम की नज़र आप पर पड़ी। फ़रमाया यह कौन सा बच्चा है। उनको बुलाया और दरयाफ़्त किया कि मियां तुम्हारा क्या नाम है? अर्ज़ किया कि मेरा नाम अब्दुस्समद है और उर्फ़ में मुझे सफ़ी कहते हैं। फ़रमाया कहां रहते हो। कहा साटीपुर में। फ़रमाया कि तुम्हारे बाप का क्या नाम है अर्ज़ किया इल्मुदीन। हज़रत मख़्दूम को इल्मुदीन के वाक़ेआत मालूम थे। फ़रमाया कि और किसी के पास मत पढ़ा करो। हम से पढ़ो हम तुम्हें पढ़ाएंगे। आप हज़रत मख़्दूम की ख़िदमत में रहते और इल्म हासिल करते। ज़माना गुज़र गया। एक रोज़ हज़रत मख़्दूम ने

https://t.me/AhleSunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

फरमाया कि सफी तुम खाना मत्बख़ से खाते हो? अर्ज़ किया जी हां फरमाया मत्बख़ से मत खाओ जो कुछ खाओ हमारे साथ खाओ।" और इस मुआमला में बहुत ज़्यादा ताकीद और एहतियात का हुक्म दिया। मख़्दूम की आदत यह थी कि आप तीन-तीन, चार-चार, पांच-पांच रोज़ के बाद खाना तनावल फरमाते और उसकी किसी को ख़बर भी न होती। जब कोई महबूब मेहमान आता मख़्दूम उसके हमराह खाना खा लेते और उसी वक़्त शैख़ सफ़ी भी कुछ खा लेते। मुख़्तसर यह कि शैख़ सफ़ी भूक की शिद्दत बर्दाश्त करते। ख़ाली पेट रहने की मशक़्क़त झेलते, उसके बावजूद दिन रात मख़्दूम की ख़िदमत में हाज़िर रहते।

एक मरतबा आधी रात का वक़्त था कि मख़्दूम ने शैख़ सफ़ी से फरमाया कि इस वक़्त कहीं मूली भी मिल सकती है। आपने यह जवाब न दिया कि आधी रात का वक़्त है न यह कहा कि यह मौसम उसका नहीं और इस मौसम में मूली पैदा नहीं होती। बल्कि फ़ौरन यह अर्ज़ किया मैं जाता और तलाश करता हूं। फिर ख़ैराबाद की गली-गली में फिरते रहे और एक मुहल्ला से दूसरे मुहल्ला तक जाते। तमाम लोग अपने घर बन्द करके सो चुके थे। इस वक़्त मूली का हाल किससे पूछें। थक कर एक जगह बैठ गये और रोने लगे। एक शख़्स अपने घर में सोने से उठा और बीवी से कहने लगा कि कोई दर्दमन्द है रो रहा है। देखना चाहिए कि क्या बात है। फिर उठ कर आपके पास आया और पूछा कि आप कौन हैं और क्यों रो रहे हैं? फरमाया कि मुझे मूली की ज़रूरत है उस शख़्स ने कहा कि यह तो मूली का मौसम भी नहीं। इतने में दो तीन आदमी और भी आ गये। एक औरत ने कहा कि मैंने फ़ुलां शख़्स के आंगन में मूली उगी हुई देखी है। तमाम लोग वहां गये और घर वालों को जगाया। मख़्दूम शैख़ सफ़ी भी उनके साथ गये। साहिबे ख़ाना ने दरयाफ़्त किया कि आप लोग क्या कह रहे हैं। लोगों ने जवाब दिया कि हमें मूली की ज़रूरत है और सुना है कि तुम्हारे घर में मौजूद है। उसने जवाब दिया कि हां है। ग़रज़ लोग दो मूली ले आए और पाक पानी से धो कर शैख़ सफ़ी को दे दीं। और अपने-अपने घरों को लौट गये। मख़्दूम शैख़ सफ़ी वह दोनों मूली लेकर मख़्दूम शैख़ सअद की

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ख़िदमत में हाज़िर हुए। मख़्दूम ने फरमाया कि तुम्हारी वजह से हर मुश्किल काम और हर अड़ी बात जो किसी वक़्त आ पड़ेगी। आसान हो जाएगी। इन्शाअल्लाह तआला।

जब मख़्दूम शैख़ सअद ने आपको चिल्ला कशी के लिए बिठाया तो तीसरे रोज़ फुतूह व कुशादगी के दरवाज़े खुल गये। तमाम अल्वियात व सफ़िलयात आप पर मुंकशिफ़ ;हो गये और मरदाने ख़ुदा के मक़ामाते आलिया पर तरक़्क़ी करके पहुंच गये। फिर जब उन्हें जाम–ए–ख़िलाफ़त इनायत फरमाया तो आप तमाम ख़ुलफ़ा पर सबक़त ले गये और मक़ाम अस्साबेकूनस्साबेकूना ऊलाइकल–मुक़र्रबून। (यानी सबक़त करने वाले सबक़त करने वाले हैं और यही हैं ख़ुदा तक पहुंचे हुए) तक पहुंच गये। आप मख़्दूम शैख़ सअद की ख़ानक़ाह में बैठते। लोग आपसे बैअ़त करते और मुरीद होते। मख़्दूम के बाज़ ख़ुलफ़ा उस चीज़ से हसद करने लगे और मख़्दूम शैख़ सअद तक यह ख़बर पहुंचाई कि शैख़ सफ़ी, मख़्दूम की ख़ानक़ाह के आदाब का ख़्याल नहीं रखते और ख़ानक़ाह में बैठ कर लोगों को मुरीद करते हैं। मख़्दूम शैख़ सअद ने फरमाया कि ऐ लोगो! तुम मख़्दूम शैख़ सफ़ी को पहचानते नहीं। शैख़ सफी मेरे मक़ामात से तरक़्क़ी करके मेरे पीर के मक़ामात तक पहुंच चुके हैं।"

"हासिदों का यह हसद बढ़ता रहा और जब मख़्दूम शैख़ सअद का इंतिक़ाल हो गया। और आपने अपने भतीजे को जिनका नाम शैख़ महमूद था अपना जानशीन कर दिया तो हासिदों ने मख़्दूम शैख़ सफी की शिकायत, शैख़ महमूद तक पहुंचाई और चुग़ली खाने लगे। यहां तक कि शैख़ महमूद साहिबे सज्जादा का भी इंतिक़ाल हो गया। मगर हासिदों का हसद अपनी जगह रहा। जब मख़्दूम शैख़ सफी अपने पीर के उर्स में ख़ैराबाद हाज़िर होते तो आपके साथ सूफ़ियों, तालिबे इल्मों, मोतक़िदों और क़व्वालों का एक बहुत बड़ा गरोह होता। हसद करने वाले इंतिहाई हसद से बुरी बातें मुंह से निकालते जिस से हज़रत मख़्दूम के दिल को तक्लीफ़ पहुंचती। फरमाया कि मैं हर साल अपने पीर के उर्स में हाज़िर आता हूं कि मज़ारे मुबारक का तवाफ़ करूं और ख़ुलफ़ा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

की क़दमबोसी करूं और यह लोग मेरी तरफ़ कुछ तवज्जोह नहीं करते। इन्शाअल्लाहु तआला अब ख़ैराबाद न आऊंगा। और इस तारीख़ से फ़िर कभी ख़ैराबाद न आए।

हासिदों के बदन में हसद की एक रग होती है जैसे कि बिच्छू का डंक जो हर वक़्त हिलता रहता है। बिच्छू की तरह डंक रखने वालों की आदत होती है कि वह हरकत में रहें जिससे कि सही आदमी दर्द की वजह से ज़ख़्मी हो जाए।

हज़रत मख़्दूम शैख़ सफी के तमाम ख़लीफ़ा अह्ले इल्म थे और आपने किसी जाहिल को ख़िलाफ़त न दी। यह फ़क़ीर भी शैख़ सफ़ी का मुरीद है और मख़्दूम शैख़ हुसैन से ख़िलाफ़त रखता है। यह मख़्दूम शैख़ हुसैन, शैख़ सफ़ी के एक ख़लीफ़ा थे मख़्दूम शैख़ हुसैन का मुख़्तसर वाक़या यूं है कि पहले आप एक मालदार, वजाहत वाले और दूर रस आदमी थे। तीर अन्दाज़ी। चूगान और सिपाहगरी के बाक़ी फ़ुनून में ऐसे कामिल थे कि बादशाहों से भी आपका हाल पोशीदा न था। बख़्शिश का यह आलम था कि सोना, चांदी, आपके नज़्दीक पत्थरों और ढेलों के बराबर थे और घोड़े आपकी नज़र में गायों और बकरियों की मानिन्द। आप पर अचानक लुत्फ़े ख़ुदावन्दी का जज़्ब तारी हुआ और आपको तमाम दुनियावी गन्दगियों से पाक कर दिया। आपने अपना तमाम सामान लुटा दिया और लोगों को सौंप डाला और ख़ुद मज्ज़ूबे मुतलक़ हो गये। कि सिवाए अल्लाह तआला की मुहब्बत और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी के उनके दिल में कुछ बाक़ी न रहा। इसी हालत में आपसे बहुत सी करामतें सादिर होती थीं कि लोगों के दिल की छुपी बातें भी मालूम कर लेते। चन्द साल तक आप दुनिया के गोशों में सियाहत फ़रमाते रहे। नीयत थी कि कोई ऐसा पीर मिल जाए जो अल्लाह का रास्ता दिखलाए। आप जिस दुर्वेश को सुनते और जिस बुज़ुर्ग को देख लेते। उसकी तरफ़ मुतवज्जेह होते। थोड़ी मुद्दत के बाद ही उन्हें मालूम हो जाता कि वह असरार से ख़ाली है तो उसे छोड़ देते। बाज़ औक़ात आप अपने आपे से गुज़र जाते और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

जज़्ब की हालत में शराब और भांग पी बैठते। कभी-कभी अल्लाह तआला की बारगाहे कुर्ब का शौक़ इतना ग़ालिब आ जाता कि आप हलाकत के क़रीब हो जाते उस वक़्त आपसे शराब और भांग के शौक़ का ग़लबा उतर जाता और आप हलाकत से बच जाते गोया यही शराब और भांग आपके लिए दवा बन चुकी थी। मस्त हाथी भी आपके मुक़ाबला पर न आ सकता और भाग जाता। जो बात चीत आप करना चाहते उसे शेअ्रों और दोहरों में अदा करते और बेग़ैर तअम्मुल व ग़ौर के आप बैत और दोहरा फ़िल-बदीआ कह लेते कि अगर मैं उन सब को लिखना चाहूं तो तहरीर बढ़ जाए। हातिफ़ की आवाज़ दो मरतबा आपके कान में पहुंच चुकी थी। कि आपका गुज़र काकोरी में हुआ। हज़रत क़ाज़ी मुहम्मद मन्नुल्लाह का चरचा सुना। उन से मुलाक़ात की। कुछ दिन उनकी ख़िदमत में रहे। अक़ीदत से उनकी तरफ़ मुतवज्जेह हुए एक रिसाला जो क़ाज़ी मुहम्मद मन्नुल्लाह ने लिखा था उसे देखा और पसन्द फ़रमाया और दिल में यह ख़्याल किया कि अगर क़लम और काग़ज़ होता तो यह रिसाला में नक़ल कर लेता। बन्दगी क़ाज़ी मुहम्मद ने काग़ज़ और दवात हाज़िर की। मख़्दूम ने वह रिसाला लिख कर ले लिया मगर अब भी आपको बिल-कुल्लीया एतेक़ाद न हुआ था इसलिए कि आपको उनके दिली इरादों की भी ख़बर थी।

आप वहां से रुख़्सत हुए और दिल्ली पहुंचे और हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी के रौज़ा पर हाज़िर हुए और रात को कुछ मुराक़बा करके सो रहे कि आज हज़रत ख़्वाजा मुझ से क्या फ़रमाते हैं। मैं क्या करूं और किसके पास जाऊं। हज़रत ख़्वाजा ने ख़्वाब में फ़रमाया कि "हमने तुम्हें चिश्तियों के हवाला किया।" जब आप सोते से उठे तो ख़्याल हुआ कि दुनिया में चिश्ती तो बहुत हैं मुझे कौन सी चिश्ती पीरों के हवाले किया है। दूसरी रात भी मुराक़बा करके सो गये। हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी खुद ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और एक रोटी का टुकड़ा जो आपके हाथ में था उन्हें दे कर फ़रमाया कि "हमने तुम्हें शैख़ मीना के फ़रज़न्दों के हवाला किया।" सुबह की नमाज़ के बाद जब आप चलने लगे तो एक फ़क़ीर एक काक यानी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रोग़नी कुल्वा लाया और उन्हें दिया कि हज़रत मख़्दूम ने इनायत किया है। आप शहर क़न्नौज में पहुंचे और लोगों से पूछा कि मख़्दूम शैख़ मीना के खुलफ़ा में कौन-कौन हयात हैं? लोगों ने कहा कि मख़्दूम शैख़ मीना के ख़लीफ़ा मख़्दूम शैख़ सअद थे और उनके दो ख़लीफ़ा हयात हैं। एक क़ाज़ी मुहम्मद मन्नुल्लाह काकोरी हैं और दूसरे मख़्दूम शैख़ सफ़ी (क़ुद्दिसल्लाहु रूहहुमा) साईपुर हैं। दिल में सोचा कि क़ाज़ी मुहम्मद मन्नुल्लाह से तो वाक़िफ़ हों। पहले मैं काकोरी चलूं अगर वहीं का हिस्सा है तो ख़ैर, वरना फिर मख़्दूम शैख़ सफ़ी की ख़िदमत में चलेंगे।

जब गंगा पार की तो यह तज्वीज़ किया कि आज तो मलानोह चलें और मलानोह से सन्दीला पहुंचें और सन्दीला से काकोरी। लोगों से मलानोह का रास्ता पूछ कर चल दिए। दोपहर तक चलते रहे। रास्ता में एक तालिबे इल्म से मुलाक़ात हुई। आपने उससे पूछा कि मलानोह यहां से कितनी दूर है। उसने कहा मलानोह यहां कहां तुम तो बंगरमौ में हो। दिल में ख़्याल किया कि मुझे मलानोह के रास्ता से बंगर मौ लाया गया है। शायद मेरा हिस्सा मख़्दूम शैख़ सफ़ी की तरफ़ है। उस तालिबे इल्म से पूछा कि तुम मख़्दूम शैख़ सफ़ी को जानते हो। अर्ज़ किया क्यों नहीं। मैं तो उनका मुरीद हूं। फ़रमाया कि अच्छा क़ाज़ी मुहम्मद मन्नुल्लाह को जानते हो? कहा हां जानता हूं। फ़रमाया। दोनों बुज़ुर्गों में कितना फ़र्क़ है। उसने कहा कि मैं कौन हूं जो दो बुज़ुर्गों के दर्मियान कोई फ़र्क़ करूं। फ़रमाया मैं उनकी राह और रविश पूछ रहा हूं। जवाब दिया कि क़ाज़ी मुहम्मद मन्नुल्लाह ने जागीर और रियासत क़ुबूल कर ली है और उनकी मातहती में चन्द गांव भी हैं और मख़्दूम शैख़ सफ़ी ने कोई जागीर और रियासत क़ुबूल नहीं की है। जब यह बात आपने सुनी। ख़्याल आया कि जब मैंने दुनिया से इलाक़ा तोड़ लिया है तो मुनासिब यह है कि मैं ऐसे शख़्स के पास जाऊंगा कि उसे भी दुनिया से कोई तअल्लुक़ न हो। उस रोज़ आपने बंगर मऊ में क़्याम किया और दूसरे रोज़ फ़तहपुर रवाना हुए। वहां आपने कपड़े धोए और बदन को साफ़ सुत्थरा किया। ग़ुस्ल किया। शराब और भंग से यहीं पर तौबा करके साईपुर की तरफ़ चल पड़े।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

दिल में तीन नीयतें कीं कि अव्वल तो मैं आपके सामने पान के तीन बीड़े पेश करूंगा कि एक खुद खाएं दूसरा मुझे दे दें और तीसरा किसी और को। दूसरे यह कि मैं आवारा किस्म का आदमी हूं जहां कहीं जाता हूं लोग अपने सामान की मुझ से हिफ़ाज़त करते हैं कि कहीं यह शख़्स हमारा सामान लेकर न चला जाए तो हज़रत मख़्दूम कोई ऐसी बात कह दें कि ख़ानक़ाह के लोगों की यह बदगुमानी दूर हो जाए। तीसरे यह कि आप बैअ़त की टोपी बेग़ैर मांगे हुए इनायत फ़रमा दें। जब आप साईपुर पहुंचे तो कामिल एतेक़ाद, सच्ची अक़ीदत और पूरी तवज्जोह दिल में पैदा हुई। आपने वह तीनों इरादे फ़स्ख़ कर दिए और चाहा कि कुछ शेरीनी ख़रीद कर ले जाएं। पानों की ज़रूरत नहीं है। आपने हल्वाई की दुकान पूछी और पहुंचे पनवाड़ी की दुकान पर। आप वहां से लौटे और फिर हल्वाई की दुकान की तरफ़ चले। आप दूसरे पनवाड़ी की दुकान पर पहुंचे। फिर आप वहां से लौट कर आए और हल्वाई का पता पूछा। तीसरी मरतबा फिर आप पनवाड़ी की दुकान पर पहुंचे। अब मजबूर हो कर आपने पान के चन्द बीड़े ख़रीदे और मख़्दूम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर क़दमबोसी की और वह चन्द बीड़े पेश कर दिए। हज़रत मख़्दूम ने फ़रमाया कि तुम्हारा क्या नाम है। अर्ज़ किया मेरा नाम हुसैन है। फ़रमाया कैसे आए? अर्ज़ किया हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूं कि मुझे मुसलमान फ़रमा दें। हज़रत मख़्दूम ने एक बीड़ा खुद शौक़ फ़रमाया। एक बीड़ा उन्हें इनायत किया और बाक़ी बीड़े को उठाया और फ़रमाया कि ऐ शैख़ हुसैन! मैं अपना मुसल्ला और जूता छोड़े जाता हूं तुम यहीं रहना यहां तक कि मैं आ जाऊं। शैख़ हुसैन समझ गये कि मख़्दूम ने यह बात उन लोगों की तस्कीन के लिए फ़रमाई है जो ख़ानक़ाह में हाज़िर हैं ताकि मुझ पर बदगुमानी न करें। हज़रत मख़्दूम तशरीफ़ ले गये और एक कुलाह ला कर उन्हें दे दी। सुबहानल्लाह। उसका एक फ़रिश्ता है जो अह्ले किताब को अह्ल तक पहुंचाता है। शैख़ हुसैन डेढ़ साल तक मख़्दूम की ख़िदमत में हाज़िर रहे और हज़रत मख़्दूम ने नवाफ़िल वज़ाइफ़ ज़िक्र फ़िक्र रियाज़त मुजाहिदा जिसके लिए फ़रमाया सब बजा लाए। हज़रत मख़्दूम ने डेढ़ साल बाद

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ख़िलाफ़त अता कर दी और रुख़्सत कर दिया कि जाओ अपने घर रहो और वहीं अपने तमाम औक़ात मामूर करो।

मख़्दूम शैख़ हुसैन को उस फ़क़ीर के वालिद माजिद के साथ एक ख़ास उन्सियत और मुहब्बत थी और यह दोनों हज़रात आपस में बड़ा ख़ुलूस और बड़ी ख़ुसूसियत रखते थे। फ़क़ीर के वालिद माजिद भी शैख़ सफ़ी के ख़लीफ़ा थे। इसी बिना पर फ़क़ीर ने मख़्दूम शैख़ हुसैन की तरफ़ रुजूअ़ किया और मख़्दूम शैख़ हुसैन भी फ़क़ीर के साथ बड़ी इनायतों और नवाज़िशों से पेश आते और फ़रमाते कि यह तो हमारे दोस्त का लड़का है। फिर जाम–ए–ख़िलाफ़त भी पहना दिया। अगरचे फ़क़ीर को उस जामा की लियाक़त न थी लेकिन फिर भी ख़ुदाए तआला का शुक्र व एहसान है कि हमारी बैअ़त का पैवन्द आपके साथ दुरुस्त है।

अल्लाह तआला ने हमारा पैमान मीठे मूंह वालों से बांधा है तो हम बन्दा व ग़ुलाम हैं और वह हज़रात हमारे ख़ुदावन्द व आक़ा।

यहां तक हज़रत मख़्दूम शैख़ फ़रीद शकर गंज क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू से लेकर हमारे इस ज़माना तक तमाम पीरों का ज़िक्र थोड़ा–थोड़ा हो गया है और अमीरुल–मुमिनीन अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहू से लेकर हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू तक, इस रिसाला के ततिम्मा में लिखा जाएगा और यूं यह रिसाला पीरों ही के बयान पर ख़त्म होगा।

ऐ उलमाए फ़क़ीह और ऐ फ़ुक़्हाए वजीह (अब आप से यह कहना है) आप में से जिन लोगों ने सूफ़िया के मसाइल को इल्मे फ़िक़्ह, इल्मे उसूल और इल्मे कलाम में न पाया और उनके अहवाल, मक़ामात और मकारिमे अख़्लाक़ को क़ुरआन और हदीस की रौशनी में न समझ पाए। और लाचार हो कर बैअ़त और पीरी मुरीदी और सूफ़िया के तमाम मसाइल से इंकार कर बैठे और उसे बिदअ़त जाना तो शायद ईसा अलैहिस्सलाम का क़ौल उन्होंने न सुना कि आपने ऐसे उलमाए ज़ाहिरीन के हक़ में क्या फ़रमाया है कि तुम लोग छलनी की तरह हो कि उस से आटा छन कर नीचे आता है और भुसी उसमें बाक़ी रह जाती है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तो इल्म का आटा मुआमलाते दिल का जानना है और यही इख़्लास की निशानी है। यूं मैं तरीक़ते रियाज़त और राहे आख़िरत का इल्म। और दीन की राह में मुआमला की मुसीबतें और अल्लाह तआला की तरफ़ दिल की रग़बतें और नफ़्सानी ख़्वाहिशात का तर्क वग़ैरहू ज़ालिका, मख़्दूम शैख़ शर्फ़ुद्दीन मुनीरी क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू ने मक्तूबात में लिखा है कि इल्म वह नहीं जो तुझे मुफ़्ती या क़ाज़ी बना दे या बादशाहों और हुक्मरानो से मिला दे ख़बरदार गलती मत करना।

वह इल्म जो महल बनाने और बाग़ात लगाने (दुनियादारी) के लिए हो वह ऐसा है जैसा चोर के लिए चिराग़।

मशाइख़े मोतक़ददेमीन में अक्सर मुज्तहिद भी थे। चुनांचे सैय्यदुत्ताइफ़ा जुनैद बग़दादी क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू के मुतअल्लिक़ मन्क़ूल है कि अभी आपकी उम्र सात बरस की थी कि आप इज्तिहाद के दरजा तक पहुंच चुके थे और आपके तमाम अस्हाब और ख़ुलफ़ा भी मुज्तहिद थे आप ख़्वाजा सिर्री सक़ती के मुरीद थे और ख़्वाजा सिर्री सक्ती, ख़्वाजा करख़ी, ख़्वाजा दाऊद ताई और ख़्वाजा हबीब अज्मी यह सब ही मुज्तहिद थे। और ख़्वाजा दाऊद ताई अबू हनीफ़ा कूफ़ी (रज़ि अल्लाहु अन्हु) के शागिर्द और ख़्वाजा हबीब अज्मी के मुरीद थे। जब इमाम अबू यूसुफ़ ने क़ाज़ी होना मन्ज़ूर कर लिया। उस रोज़ से ख़्वाजा अबू दाऊद ताई ने इमाम अबू यूसुफ़ का चेहरा न देखा और ज़ुबान पर उनका नाम भी न लाए। जब साहेबीन (इमाम अबू यूसुफ़ व इमाम मुहम्मद) के दर्मियान कोई बहस होती और अबू यूसुफ़ की बात वज़नी देखते तो फ़रमाते कि बात वही है जो यह कहते हैं और उनका नाम न लेते और अगर इमाम मुहम्मद की बात राजेह पाते तो फ़रमाते कि बात वह है जो इमाम मुहम्मद कहते हैं। हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ि अल्लाहु अन्हु को अगर कोई मुश्किल पेश आती तो इस दुर्वेश की ख़िदमत में हाज़िर होते जो आपके ज़माना में मौजूद था। आप दो ज़ानों हो कर अदब के साथ उनके सामने बैठते और हर मरतबा अपनी मुश्किलें उन से हल कराते।

मन्क़ूल है कि जब ख़्वाजा इब्राहीम अदहम क़ुदिसा सिर्रुहू ने बल्ख़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

की बादशाहत, मर्दानावार छोड़ी और मारिफ़ते इलाही के रास्ता में क़दम रखा तो ख़्याल गुज़रा कि मुसलमानों के इमाम अबू हनीफ़ा कूफ़ी रज़ि अल्लाहु अन्हु दुनिया भर के मुक़्तदा हैं मुझे पहले उनकी ख़िदमत में चलना चाहिए चुनांचे आप कूफ़ा पहुंचे। इमाम को भी उसकी ख़बर पहुंची कि इब्राहीम अदहम मुलाक़ात के लिए आ रहे हैं। आप उनके इस्तिक़बाल के लिए तशरीफ़ ले गये और उन से मुलाक़ात की। हज़रत इब्राहीम अदहम ने दरयाफ़्त किया कि ऐ इमाम मेरे हक़ में क्या इरशाद है, मुझे क्या करना चाहिए? इमाम ने जवाब दिया कि तुम्हें इल्म हासिल करना चाहिए। हज़रत इब्राहीम ने जवाब दिया कि ऐ इमाम मिनजुमला उलूम एक हदीस हम तक पहुंची थी कि दुनिया का तर्क हर इबादत की बुनियाद है और दुनिया की मुहब्बत हर गुनाह की असल।" हमने उसी पर अमल किया। तुमको इतना इल्म मिला भला बताओ कि तुमने भी कोई काम किया। हज़रत इमाम यह ख़बर सुन कर मदहोश हो गये और कुछ देर के बाद होश में आए तो फ़रमाया कि तुम्हें तहसीले इल्म की ज़रूरत नहीं अह्ले मारिफ़त की सोहबत अख़्तियार करो।"

मक़्सूद यह कि अस्हाबे तसव्वुफ़ में अक्सर मुज्तहिद भी गुज़रे हैं और उन्होंने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया है कि हर तरीक़त जिसे शरीअत ठुकरा दे "ज़िन्दिक़ा है"। यह भी फ़रमाया है कि अगर तुम किसी को देखो कि हवा पर उड़ता है या पानी पर चलता है और उसका पैर तर नहीं होता। या आग में घुसता है और नहीं जलता या ग़ैब की ख़बरें देता है और इसी तरह की और बातें उसमें हैं। उसके बावजूद इसमें ज़र्रह बराबर शरीअ़त का ख़िलाफ़ पाओ तो समझ लो कि वह अपने वक़्त का ज़िन्दीक़ और मुल्हिद है। लिहाज़ा यह तरीक़त के मुज्तहेदीन जिन्होंने शरीअ़त में इस क़द्र एहतियात बरती है। अगर बैअ़त बिदअ़त होती तो हरगिज़ वह लोग उसको राहे इरफ़ान का रहबर न बनाते और पीरी मुरीदी को असल मुस्तहकम और बुनियाद मुहकम न जानते। मुतक़द्देमीने मशाइख़ से मन्क़ूल है कि जब वह किसी दुर्वेश को देखते कि वह शरीअ़त के आदाब को क़स्दन तर्क करता है तो उसको दुर्वेशी के दाइरा से ख़ारिज समझते और उसे बुज़ुर्गों के गरोह से शुमार

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

न करते। एक मरतबा चन्द दुर्वेश किसी बुज़ुर्ग की मुलाक़ात के लिए गये। जब वहां पहुंचे तो देखा कि वह क़िबला की जानिब अपने मुंह का थूक फेंकता है तो उस से मुलाक़ात न की और उसकी इस हरकत को बुरा समझ कर वापस लौट आए। और अगर उनमें से कोई शख़्स किसी मुस्तहब या अदब को बिला क़स्द छोड़ बैठता तो उसे कोई सख़्त मुश्किल पेश आती और चन्द रोज़ तक उसकी मुसीबत के मातम में गिरया व ज़ारी करता और दूसरे लोग उसकी मिजाज पुर्सी को आते।

मन्क़ूल है कि हसन बसरी रज़ि अल्लाहु अन्हु से कोई लग़्ज़िश वाक़े हो गई, तमाम उम्र जब आप कोई सफ़ेद कपड़ा पहनते तो बेइख़्तियार रोते और खुद से मुख़ातब हो कर कहते कि तू वही तो है जिस से ऐसी हरकत हो चुकी है। और वही शख़्स तू है कि तुझ से फ़लां ग़लती हो चुकी है। इसी तरह तमाम अस्लाफ़ का तरीक़ा था। मुहाल है कि वह किसी बिदअत को ऐसे एहतमाम से इख़्तियार करें या असल सुन्नत में ज़र्रह बराबर ज़्यादती या कमी गवारा कर लें लिहाज़ा ऐसों पर बिदअत की बदगुमानी करना गुमराही है। और वल्लाह कि बैअत को बातिल समझना खुद ही बातिल है। इस बाब में हम कहां तक लिखे जाएं।

अगर दुनिया में किसी के लिए कोई सआदत है तो उसके लिए सअ्दी का एक हरफ़ भी काफी है।

हज़रत ख़लील अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत के आसार ने चचा का कुफ़्र दूर, और हज़रत नूह की दावत की रौशनी ने बेटे की तारीकी को नूर न किया। मूसा अलैहिस्सलाम जो अंबियाए ऊलुल–अज़्म से हैं। बरसों तक फ़िरऔन को दावत देते रहे और उसे खुदा की निशानियां और मोजिज़े दिखाते रहे मगर वह हर ज़माना में दुश्मनी के रास्ता पर चलता रहा। उस का इंकार पर इंकार बढ़ता रहा और अपनी ज़ात को खुदाई से सराहता रहा यहां तक कि उसे नील की मौजें बहा ले गईं। मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उलूमे मुबारका को अबू जहल के जहल को न उठा सके और आपके दीन की रौशनियों ने अबू लहब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

को भड़कती आग ही में छोड़ दिया। अल-ग़रज़ तमाम नबियों की कोशिशें बदनसीब को रास्ता न दिखा सकीं। बारिश का पानी कि ज़िन्दगी का सरमाया है वह मुरदार में तबाही के सिवा कुछ और नहीं बढ़ाता तो मैं कौन हूं कि मुंकिर को इंकार से रोक दूं या जिन लोगों के दिलों में शुकूक हैं मैं उनमें यक़ीन पैदा कर सकूं। बस (इतना कहना है।) अस्हाबे इरादत और अरबाबे सआदत को ऐसे पीर से रिश्ता जोड़ना चाहिए कि उसका सिक्का खोटा न हो वरना मुरीद को उस रास्ता से कुछ हाथ न आएगा। और पीरी के शर्तों में से जो कुछ थोड़ा बहुत लिख दिया गया है बहुत काफी है।

मुरीदी इल्मे दीन सीखने का नाम है और दिल के चिराग़ को इल्म से रौशन करना है। न किसी ने मुर्दों से कोई इल्म हासिल किया है और न किसी का ख़ाक से चिराग़ रौशन हुआ है।

याद रखना चाहिए कि बैअत के बाज़ मसाइल, निकाह के मसाइल पर मबनी हैं। बाज़ मसाइल, इमाम व मुक़्तदी के मसाइल पर मुतफ़र्रअ़ और बाज़ ख़रीद व फ़रोख़्त के मसाइल पर मौक़ूफ़ हैं। और उनकी तफ़्सील बड़ी तवील। तो इस ख़रीद व फ़रोख़्त पर ख़ुश हो जाओ जिस का तुमने मुआमला किया है। यह भी जान लेना चाहिए कि अगर मुरीद किसी दूसरे मज़्हब का हो (यानी फ़रोगे मसाइल में किसी और इमाम का मुक़ल्लिद हो) तो वह उस पीर से बैअत कर सकता है जो दूसरा मज़्हब रखता है इसलिए कि यह चारों मज़ाहिब हक़ हैं लेकिन अच्छा और बेहतर यही है कि मुरीद और पीर एक ही मज़्हब के पैरू हों ताकि मुरीद अपने मज़्हब और मशरब दोनों में पीर की पैरवी कर सके। हज़रत मख़्दूम शैख़ मीना क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू ने फ़रमाया कि अगर कोई मुरीद अपने पीर की ज़िन्दगी में किसी और की पैरवी और तल्क़ीन की जानिब तवज्जोह करता है तो वह कहीं से कोई हिस्सा नहीं पाता और पीर के होते हुए किसी और शख़्स से मुहब्बत की कुलाह लेना और ख़िलाफ़त क़बूल करना जाइज़ नहीं है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तीसरा सुंबुला

तर्के दुनिया, क़नाअत, तवक्कुल और तबत्तुल के बयान में

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है।

तरजमा : यानी ऐ लोगो! अल्लाह का वादा सच्चा है तो कहीं तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी धोखे में न डाल दे और कहीं वह बड़ा धोखा देने वाला तुम्हें धोखा न दे।

हमें तुम्हारी जानिब से उसका बड़ा ख़तरा है कि तुम अभी बच्चे हो और तमाम घर रंगीन।

यह बात याद रखने की है कि दुनिया अपनी ज़ात के एतबार से बुरी नहीं उस से तअल्लुक़ और मुहब्बत करना बुरा है कि दुनिया की मुहब्बत हर गुनाह की बुनियाद है। दुनिया उसकी क़ाबलीयत नहीं रखती कि कभी तो आला तरीन मक़ामात पर चढ़ा दे और कभी औफ़ा तरीन जगहों पर गिरा दे। हां जो शख़्स दुनिया को दीन का आला बनाता और अपनी जाइज़ ख़्वाहिशाते नफ़सानिया के पूरा करने के लिए दुनिया को नज़र में रखता है और व मिम्मा रज़क़्नाहुम युंफ़िक़ून। जो कुछ अल्लाह तआला ने अता फ़रमाया उस में से ख़र्च करता है वह बज़ाहिर दुनिया में और बबातिन मलए आला में रहता है कि इन्नल्लाहा इबादन अब्दानुहुम फ़िदुनिया व क़ुलूबुहुम इन्दल्लाह। अल्लाह तआला के चन्द ख़ास बन्दे वह हैं जिनके बदन दुनिया और दिल अल्लाह की तरफ़ लगे रहते हैं।" वह ख़ुदा के लिए ज़िन्दा रहता है न कि नफ़्स के लिए। तो अलबत्ता दुनिया उसके लिए सिराते मुस्तक़ीम पर क़ाइम रहने के लिए एक भारी मददगार साबित होती है कि अच्छा माल अच्छों के लिए बड़ी ख़ूब चीज़ है कि सब कुछ अल्लाह तआला की रज़ा के रास्ते में सर्फ़ करता है।

तुम जो कुछ रखते हो ख़ुदा की राह में दे डालो कि ईसार, होशमन्द दुर्वेशों को ज़ेबा है।

सिलकुस्सुलूक में लिखा है कि लोग कहते हैं कि हज़रत सुफ़ियान सूरी ने नज़अ् के वक़्त एक थैली अपनी गुदड़ी में से निकाली जिसमें एक हज़ार दीनार थे और अपने अहबाब को दी कि उसे सदक़ा कर दो।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

लोगों ने कहा कि आप तो हर वक़्त रुपया जमा करने के लिए मना किया करते थे। अपने आप इतना माल रखते हैं। फरमाया कि मैंने अपने दीन को शैतान से इसी रुपया की बदौलत बचाया है यानी वह जब कभी कोई वसवसा डालता कि आज क्या खाओगे आज क्या पहनोगे तो मैं कह देता कि देख मेरे पास यह रुपया है। वह मुझसे मायूस हो कर लौट जाता और उस से यह न हो सका कि मुझे ज़ैद या अमर के दरवाज़ा पर ले जा सके। हां जो शख़्स दुनिया के माल व मताअ़ को शैतानों के रास्तों का आला बनाता है और अपना तमाम वक़्त नफ़्से अम्मारा की ख़्वाहिशों और लज़्ज़तों के हासिल करने में सर्फ़ करता है वह एक नाबीना ढेला है कि उसके सिवा और किसी आलिम से वाक़िफ़ नहीं। वह सिर्फ़ दुनिया की ज़ाहिरी ज़िन्दगी जानते हैं और वह आख़िरत से निरे ग़ाफ़िल हैं।"

हिर्स! और ख़्वाहिश के पीछे दौड़ने वाले! तेरी लज़्ज़तों को मौत ख़त्म कर देगी। तेरी उम्र का गौहर एक नाचीज़ सिक्का के मुक़ाबला में जाता रहा। अफ़सोस कैसी अज़ीज़ कैसी हक़ीर चीज़ के बदला में गई।

हां बसीरत वाले जो कामिल भी हैं और जो ख़्वाहिशों की तारीकियों से इलाहिदा हो चुके हैं और मर्गे तबई से पहले मर्गे इरादती से मुर्दह (और अपनी हर मुराद से दस्तबरदार) हो चुके हैं उनको दुनिया का इस्तेमाल हर सूरत से जाइज़ है उन्हें उस से नुक़सान नहीं पहुंच सकता। किसी बुज़ुर्ग सहाबी ने फरमाया कि फ़ुक़्र और ग़िना दो सवारियां हैं। काश मैं एक ही पर सवार हो लिया होता।" इमाम अहमद ग़ज़ाली कुद्दिसल्लाहु सिर्रुहू ने ख़्वाजा अबू सईद अबुल–ख़ैर कुद्दिसा सिर्रुहू से फरमाया कि आप रोज़ाना दुनिया की बुराई करते और लोगों को उस से रिश्ता तोड़ने पर आमादा करते रहते हैं मगर ख़ुद घोड़ों और ऊंटों के इतने तबोले रेशम की तनाबें और सोने की मेख़ों से बांधे हुए हैं। फरमाया कि मैंने तवैले की मेखें मिट्टी में गाड़ी हैं दिल में नहीं।

दिल में सिवाए एक के और कोई न होना चाहिए। घर में अगरचे हज़ार हों कोई मुज़ाइक़ा नहीं।"

ऐ अज़ीज़! दुनिया की हज़ार सूरतें हैं। अब तो देखने वाले की नज़र

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

पर है कि वह किस तरह देखता है। तुम जिस ज़र्रह पर नज़र करोगे सबसे पहले उसी का जल्वा है लेकिन हर शख़्स नहीं जानता कि दरवाज़ा कौन सा है।

जिन लोगों ने कि इस मुट्ठी भर ख़ाक पर नज़र नहीं डाली हक़ और इन्साफ़ यह है कि वही साहिबे नज़र हैं (हदीसे कुदसी है) "कि जितनी मिक़्दार पर तुम्हारा दिल दुनिया की तरफ़ माइल है उतनी ही मेरी मुहब्बत निकाल डालो इसलिए कि मेरी मुहब्बद और दुनिया की मुहब्बत कभी एक दिल में जमा नहीं हो सकती।" दुनिया दिल में हो तो दर्द है लेकिन अगर हाथों में हो तो दवा है यानी वहां ख़ता होती है और यहां अता।

जब तक तुम अपने दिल और हाथ को ख़ाली न करोगे दर्दे इश्क़ के साथ न चल सकोगे। अगर तुम्हारे दिल में बसा तो मलूल रहोगे और हाथ में रहा तो फ़ुज़ूल ठहरोगे। यह सारा दिल का दर्द ख़ुद तुम पर ज़ाहिर है लिहाज़ा अच्छा यह है कि तुम उन दोनों के दर्मियान से गुम हो जाओ।

ऐ मेरे अज़ीज़! गढ़े में ठेहरे हुए पानी की तरह गंदे न बनो। अल्लाह तआला की तलब व जुस्तजू में रहो। यूं कि तुम्हारा जिगर आतिशे शौक़ में जलता हो। और दिल की आंखें हक़ के अलावा हर चीज़ से बन्द हों।

ज़रा इस तारीक कुंए से बाहर आकर दुनिया भी देख सके। लोगों पर तअज्जुब है कि जब तुम उनके सामने दुनिया और दुनियादारों की कहानियां और मुहमल बातें सुनाओ तो होश के कानों से सुनें और ख़ुशी-ख़ुशी उसी से मज़ा लूटें मगर जब उनके सामने ख़ुदा और रसूल का ज़िक्र और दीनी बातें बयान करो तो वह घबरा जाएं और वहशत व नफ़रत पर उतर आएं। और अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब अल्लाह का ज़िक्र तन्हा किया जाता है तो नफ़रत लाते हैं उन लोगों के दिल जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और जब उसके साथ ग़ैरों का ज़िक्र किया जाता है तो वह ख़ुश ख़ुश रहते हैं।" हां-हां गबरोले के लिए (यानी गोबर के कीड़े) फूलों और गुलाब की ख़ुशबू हलाकत का सबब होती है और सरगीन (गोबर) की बदबू उसकी ज़िन्दगी और मुसर्रत की मूजिब।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

शैख़ फ़रीदुद्दीन अत्तार रहमतुल्लाह अलैह ने (मन्तिकुत्तैर) की एक नज़्म में लिखा है। कि एक दीवाना था जो वीराने में रहता था। अगर वह इत्तिफ़ाक़न किसी शहर में जा निकलता अपनी नाक पकड़ लेता। लोगों ने उस से पूछा कि अपनी नाक क्यों बन्द कर लेते हो? जवाब दिया कि मुरदार दुनिया की बदबू से। ऐ अज़ीज़ दुनिया की उस गन्दगी की बदबू उस शहबाज़ के दिमाग में पहुंचती है जिसका मुर्ग़े जां, फ़िराक़ दोस्त के गुलिस्तां की खुशबू से मुअत्तर हो और महबूब की मुहब्बत और शौक़ की भीनी भीनी हो उसके मशाम तक पहुंची हो। मिठ की तरह मारिफ़त के शहद की लज़्ज़त चखे हो और उसके दिल का हुजरा कुर्ब अग़ियार के शोर व गुल से गुबार की तरह पाक हो चुका हो।

वह तमाम लज़्ज़तें जो दोनों जहां में हैं जब उस से ज़्यादा अल्लाह तआला की दरगाह में मौजूद हैं तो तू उन दोनों को क्यों नहीं छोड़ता और मुश्ताक़ों की तरह उसके लिए क्यों नहीं मरता। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हमेशगी के घर की तस्दीक़ करने वाले पर तअज्जुब और बड़ा तअज्जुब है कि वह दुनिया ही की तलब में लगा रहता है उम्दा में है कि अल्लाह तआला के क़ौल वकाना तहतहु कन्जुल्लहुमा। (उसके नीचे उन दोनों के लिए ख़ज़ाना मौजूद था) कि तफ़सीर में बाज़ लोगों ने कहा है कि वह कंज़ सोने की एक तख़्ती थी जिस में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखा था कि तअज्जुब है कि जो शख़्स क़ज़ा व क़द्र पर यक़ीन रखता है कि वह क्यों उसके लिए मलूल व अफ़सुर्दा रहता है ताज्जुब है उस पर जो रिज़्क़ पर यक़ीन रखता है कि वह उसके लिए मारा-मारा फिरता है। तअज्जुब है उस पर जो हिसाब का यक़ीन रखता है वह ग़ाफ़िल क्यों रहता है। तअज्जुब है उस पर जो मौत पर यक़ीन रखता है कि वह किस बात पर खुश रहता है ताज्जुब है उस पर जो पेशाबगाह से निकला वह किस पर इतराता है और ताज्जुब है उस पर जो दुनिया के फ़ना होने का यक़ीन रखता है वह उसकी तरफ़ से मुत्मइन क्यों है। ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह।

एक शख़्स अमीरुल-मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु वज्हहू की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि चार बातें पूछने के लिए हाज़िर हुआ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हूं। आपने फरमाया पूछो अगरचे चालीस तक। उसने कहा कि क़रीब क्या है और अक़रब क्या? और सोअ्बत क्या है और क्या वाजिब। और औजब क्या है अजब क्या है? और आजब क्या है? और सअबत क्या है और असअबत क्या? मौला अली कर्रमल्लाह ने जवाब दिया कि क़रीब तो क़यामत है और क़रीब तर मौत। वाजिब तौबा है और वाजिब तर गुनाह से बाज़ रहना। अजीब दुनिया है और उस से औजब तर दुनिया का तालिब। और मुश्किल क़ब्र में दाख़िल होना है मगर मुश्किल तर क़ब्र में बग़ैर तोशा के जाना है।

मौत तेरे सामने है और तू दुनिया के पीछे चल रहा है और हर मुरदार पर गिद्ध की तरह दौड़ता है। एक हकीम से लोगों ने पूछा कि दुनिया आक़िल है या अहमक़? जवाब दिया कि अहमक़ है इसलिए कि अहमक़ों के अलावा किसी तरफ़ रग़बत नहीं करती और जिन्स, जिन्स की तरफ़ ही राग़िब होती है। हज़रत सहल तस्तरी कुद्दिसल्लाहु सिर्रुहू ने फरमाया कि अक़्ल के एक हज़ार नाम हैं और उनमें हर नाम से पहले ...ई दुनिया है। वह जवान और बूढ़े जो माल और फ़रज़न्दों के जाल में ...ह आक़िल नहीं बल्कि नासमझ बच्चे हैं। यहिया मुआज़ राज़ी ...मतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि लोग दुनिया की फ़ज़ीहत के ख़ौफ़ ... आख़िरत की फ़ज़ीहत में मुब्तला हो गये।

तू पत्थर फेंक और गौहर हासिल कर। ज़मीन की ख़ाक छोड़ और ...गा ले। इस ज़लील व ख़्वार हक़ीर और फ़ानी दुनिया के बदला में पाक ...र हमेशा बाक़ी रहने वाली दौलत समेट। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व ...ल्लम ने फरमाया। दुनिया में ऐसे रहो गोया कि मुसाफ़िर बल्कि रास्ता ...लने वाले हो और अपने आपको क़ब्र वालों में शुमार करो।

अगर नसीहत मानते हो तो दो तीन रोज़ कोशिश कर लो और दो ...न रोज़ मौत आने से पहले फ़ना हो जाओ। यह दुनिया तो एक बूढ़ी ...रत है तुम्हारा क्या नुक़सान होगा अगर दो तीन रोज़ उसकी तरफ़ ...बत न करो। अबू यज़ीद बुस्तामी कुद्दिसल्लाहु सिर्रुहू ने फरमाया कि ...झ पर कोई ग़ालिब न आया जिस तरह कि बल्ख़ का एक जवान। वह ...रे पास हाजियों के लिबास में आया और मुझ से पूछा ऐ अबू यज़ीद!

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

जुहद की क्या तारीफ़ है आपके नज़्दीक? मैंने कहा कि जब हम नहीं पाते सब्र करते हैं और जब मिल जाता है खा लेते हैं। जवाब दिया कि यह तो हमारे बल्ख़ के कुत्तों की हालत है। मैंने कहा कि तुम्हारे नज़्दीक जुहद की क्या तारीफ़ है? जवाब दिया कि जब हमें नहीं मिलता शुक्र करते हैं और जब मिलता है तो (ईसार करते) दूसरों को दे डालते हैं।

ज़माना के हादिसात से बच कर उन सूफ़ियों की तरफ़ भागो कि जो होने पर ग़म करते हैं और न होने पर खुश होते हैं। फ़ुक़्र की तारीफ़ उन्हीं से सुनो इसलिए कि तस्नीफ़ को मुसन्निफ़ ही ख़ूब बयान कर सकता है।

सलमा रहमतुल्लाह अलैह ने आयते करीमा – की तफ़्सीर में फ़रमाया कि दुनिया व आख़िरत में ग़ौर व फ़िक्र का मतलब यह है कि उन दोनों को रास्ते से हटाने वाला जाने और यह कि वह दोनों अह्लुल्लाह पर हराम हैं।

दुनिया और आख़िरत आशिक़ का एक हिजाब है तो उनकी तरफ़ रग़बत करना आशिक़ को कब ज़ेब देता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया का तालिब मौला का तालिब न होगा। और इसी बिना पर कहा गया है कि सालिकीन और आरेफ़ीन के रास्ता में पहला क़दम दुनिया को उसके तमाम इलाक़ों के साथ तर्क कर देना है। इल्म में वारिद है कि हसन बसरी ने फ़रमाया कि अंबिया को इसी लिए मबऊस फ़रमाया गया कि वह मख़्लूक़ को दुनियादारी से हटाएं। अह्ले मारिफ़त ने फ़रमाया कि जिस ने दुनिया छोड़ दी वह उसका मालिक हो गया और जिसने दुनिया इख़्तियार कर ली वह हलाक हुआ।" लिहाज़ा होना यह चाहिए कि दुनिया से भूख मारने और सतर ढाकने की मिक़्दार से ज़्यादा न ले ताकि वह मुरदार खाने वाला न हो जाए। इसलिए कि दुनिया मुरदार है। उसके तालिब कुत्ते हैं और उनमें सबसे बदतर वह है जो उस पर हरीस हो।

अगर तुम चाहते हो कि उड़ने वाले परिन्द बन जाओ तो इस मुरदार दुनिया को गिधों के सामने डाल दो। और उस मक्कारा को दो रोटियों के एवज़ बेच दो कि मुरदार चीज़ कुत्तों ही को देना चाहिए।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ख़्वाजा इब्राहीम ख़्वास रहमतुल्लाह अलैह से मन्कूल है कि फ़क्र के मक़ामात बहुत हैं और उन मंजिलों को बातिल करने वाली चीजें कदूरत व कीना है और यह चीज़ दुनिया में जाह चाहने और बुजुर्गी व बरतरी ढूंढने से पैदा होती है। तुम जिसे देखो कि वह दुनिया की जाह और रुतबा हासिल करने में मसरूफ़ है और लोगों की मेहरबानी के जाल में फंस चुका है। (उसे बता दो कि) उसको अपने नफ़्स पर बहुत सख़्ती बरतना चाहिए। हज़रत जुनैद कुद्दिसा सिर्रुहू से मन्कूल है कि दुर्वेश के लिए तमाम मज़्हबों में यह बात हराम है कि दुनिया वालों के साथ उठे बैठे और बादशाहों और सरबराहों के पास आए जाए।

नक़ल है कि ख़्वाजा सुहैल तस्तरी को इराक़ के एक बादशाह ने जो तस्तर का हाकिम था आपकी दुआ से इस्तिआनत के लिए बुलाया। जब वह आपकी नेक दुआओं की बदौलत तन्दुरुस्त हो गया। ख़्वाजा मकान पर तशरीफ़ ले आए और तीन साल तक लोगों से किनाराकश रहे इसलिए कि मशाइख़े तरीक़त ने फरमाया है कि मालदारों की सोहबत फ़क़ीरों के लिए ज़हरे क़ातिल है। ख़्वाजा सुफ़ियान सूरी कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि मैंने बन्दे और उसके मौला के दर्मियान दुनिया से बड़ा कोई हिजाब नहीं देखा। ख़्वाजा सिर्री सक़्ती कुद्दिसा सिर्रुहू से मन्कूल है कि मैंने तालिबे मौला के लिए अमीरों और दुनियादारों की सोहबत से बढ़ कर कोई ज़हरे क़ातिल न देखा। इसलिए कि वह दिल को मार देती है और जब मआज़ल्लाह मोमिन का दिल मर जाता है तो वह पत्थर और मिट्टी बन जाता है। उसके बाद वह जो चाहता कहता और जो चाहता करता है और उसे कुछ परवाह नहीं होती। बाज़ मुहक़्क़ेक़ीन ने फरमाया है कि फ़क़ीर के लिए यह हलाल नहीं कि वह सरबराहों और शहनशाहों के पास बैठे इसलिए कि उनकी सोहबत उसके दिल की मौत है।

सोहबत के लाइक़ पीर की सबसे पहली नसीहत यह है कि ग़ैर जिन्सों की सोहबत से परहेज़ करो। ऐ अज़ीज़ तुझ से तमाम चीज़ें छीनते हैं ताकि सब कुछ तेरा हो जाए (याद रखो) जब तक तू तमाम तअल्लुक़ों और रिश्तों से पाक न होगा ख़ुदा का नहीं हो सकता। और जब तक तू ख़ुदा का न होगा कोई चीज़ तेरी नहीं हो सकती। जिसका

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रब है उसका सब है।

दुनिया तेरी मिल्कियत है और तू उस से बेबहरा। तुझ से ज़्यादा महरूम कोई नहीं देखा। ऐ बिरादर तुझे चाहिए कि फ़ुक्र और फ़ाक़ा की शिद्दत से तू तंग दिल न हो कि यह चीज़ रुतबों की तरक़्क़ी, सआदतों के हुसूल और क़ाज़ियुल-हाजात के क़ुर्ब का ज़रीआ है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि जब अल्लाह तआला किसी बन्दे को महबूब रखता है तो दुनिया से उसकी हिफ़ाज़त फरमाता है। जैसे तुम में कोई अपने मरीज़ को पानी से बचाता है।" मालिके दीनार क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि मैं एक रोज़ राबेआ के पास गया। वह सुबह की नमाज़ पढ़ कर मुसल्ले पर बैठी थीं। मैंने उनके तमाम घर में वह प्याले टूटे हुए देखे कि जिन से वह तहारत करती और पानी पीती थीं। उनके सरहाने एक ईंट थी और नरकुल का मुसल्ला था जिस पर वह नमाज़ पढ़ रही थीं। उसके अलावा कोई और चीज़ उनके पास न थी। मैंने अर्ज़ किया कि ऐ मालिका आपकी हालत मुझे दुशवार तर नज़र आ रही है। मेरे चन्द मालदार दोस्त हैं। अगर आप कहें तो मैं उन से आपकी ख़बरगीरी की ताकीद कर दूं। जवाब दिया कि "ऐ मालिक! क्या तुम मख़्लूक़ के राज़िक़ को नहीं पहचानते। क्या तुम यह नहीं जानते कि मेरा और उस मालदार का रोज़ी रसां एक ही है। क्या तुम यह समझते हो कि उसने अमीर को उसकी अमीरी की बिना पर याद रखा और मुझे मेरी फ़क़ीरी की वजह से भुला दिया।" मालिक यह सुन कर रो पड़े। उसके बाद हज़रत राबेआ ने फरमाया कि ऐ मालिक ज़रा मेरे क़रीब इधर आओ। देखो तो मेरी आंख में कोई चीज़ खटक रही है। मालिक अलैहिर्रहमा ने देखा। मुसल्ला के नरकल का एक टुकड़ा कई पोरे आंख में घुस गया था और आंख को ज़ख़्मी कर दिया था। फरमाया कि ऐ सैय्यदा तुम्हारी आंख ज़ख़्मी हो गई है और तुम्हें होश भी नहीं। जवाब दिया कि ऐ मालिक मैं नमाज़ में थी कि यह वाक़या हो गया। जब मैं अपने ख़ुदा के रू-ब-रू होती हूं। अगर तमाम दोज़ख़ भी मेरी आंख से गुज़ार दें तो ख़ौफ़े इलाही के सबब मुझे ख़बर भी न हो।

मख़्दूमुल-मिल्लत शैख़ मीना क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि इमाम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...द ताई अलैहिर्रहमा तारिकुदुनिया अस्हाब की पैरवी करते। इसी ...से आपका घर भी टूटा फूटा था कि आधा साया में रहता और आ... ...में। जब सूरज सर पर आता तो उनकी वालिदा आप पर साया ...के आपका सर साया कर देतीं। आप अपने काम अश्गाल में यूंही ...रहते। एक रोज़ आपकी वालिदा किसी काम में लग गईं। इमाम ...मश्गूल मशगूल रहे। मां ने कहा कि बेटा साया में सर क्यों न कर ...और धूप में अपने आपको क्यों जलता हुआ छोड़ा? जवाब दिया कि ...दरे मेहरबान अल्लाह तआला की याद में ऐसा मशगूल हो जाता हूं ...सूरज की गर्मी की कोई ख़बर मुझे नहीं होती। इन्हीं मख़्दूमे मिल्लत ...शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि इमाम दाऊद ताई के ...के नमाज़ बाजमाअत फ़र्ज़ है (चुनांचे आप जमाअत से नमाज़ें पढ़ते) ...जब जमाअत से फ़ारिग़ होते तो मख़्लूक़े हुजूम की वजह से आपकी ...में हाइल आती और आपकी क़दमबोसी के लिए बहुत मज्मा हो ...। इमाम दाऊद कुद्दिसा सिर्रुहू ने अल्लाह तआला की जनाब में ...की और गिड़ गिड़ाए कि ऐ माबूद! मेरे इज्तिहाद में जमाअत से ...पढ़ना फ़र्ज़ है। अब ख़ल्क़ मुझे घेरती है और उनका हुजूम मुझे ...माता। मुझे ऐसी तक्लीफ़ में मुब्तला कर दे कि जमाअत का फ़रीज़ा ...से साक़ित हो जाए ताकि तेरी इबादत में, बेग़ैर किसी परेशानी के ...हो जाऊं। हक़ तआला ने बाद को (एक मरज़ का नाम है) आप ...मुसल्लत कर दिया कि आप अपनी जगह रहते और बाहर तशरीफ़ ...ला सकते।

...नीज़ मख़्दूमे मिल्लत शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि ...ते नामा में लिखा है कि ख़लीफ़ा बग़दाद हारून अर्रशीद रातों को ...दा दाऊद और दूसरे गोशा नशीन इबादत गुज़ारों से मिलने जाता। ...वह लोग अन्दर न बुलाते। उसके बाज़ मुतअल्लेक़ीन ने उस पर ...त की कि आप ऊलुल–अम्र से हैं और फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु ...हि व सल्लम के अम्मेज़ाद। आपको उन ज़ाहिदों और फ़क़ीरों के ...जाने की कोई ज़रूरत नहीं। हारून ने जवाब दिया कि मेरा जाना ...अल्लाह के लिए है और दुनियादारी के कफ़्फ़ारा की ख़ातिर दो एक

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

घड़ी उस ज़िल्लत को बर्दाश्त करता और सवाब लूटता हूं। और जिन लोगों ने क्योंकि दुनिया को अपना दुश्मन बना लिया है लिहाज़ा मुझे भी दुश्मन जानते हैं और मुझे अन्दर नहीं बुलाते। उन्हें भी सवाब मिलता है।' उसके बाद बाज़ लोगों ने हारून रशीद से कहा कि दाऊद ताई जुमा की रात को अपने हम्साया के घर में जाते हैं जो मज़्दूर और तारिकुदुनिया है। अगर ख़लीफ़ा उसको बीच में डालें हो सकता है कि मुलाक़ात हो जाए। ख़लीफ़ा उनके घर तक पैदल गया। उस मर्द ने जवाब दिया कि मैं मज़्दूर आदमी हूं, मुझ जैसे फकीर के दरवाज़े पर क्या ज़मीन का ख़लीफ़ा क्यों आता है। मुझ से अमीरुल-मुमिनीन का कौन सा काम बन सकता है इन्तेहाई अल्बत्ता जब बग़दाद वाले उसको सुनेंगे कि ख़लीफ़ा पैदल चल कर मेरे दरवाज़े तक आया है हुजूम कर आएंगे और उनकी ताज़ीम व तकरीम की वजह से मैं मज़्दूरी न कर सकूंगा तो फिर बच्चों का नफ़्क़ा कहां से लाऊंगा। ख़लीफ़ा ने जब उस शख़्स को बहुत ज़्यादा सच्चाई और बेचारगी में देखा और उसका उज़्र सुना तो उसके सामने दो थैली दीनार रख दिए। ज़ाहिद ने जवाब दिया कि मुझे बरसों गुज़रे कि घर के गोशा में चन्द रकअत नमाज़ अदा कर लेता हूं और उनके रद्द या क़बूल होने का मुझे हाल मालूम नहीं। सिवाए इस थोड़ी सी इबादत के मेरे पास कोई भी माल नहीं है कि सदक़ा करूं। जिहाद करने की मुझ में ताक़त नहीं। बच्चे छोड़ नहीं सकता कि हज अदा कर लूं। इतना इल्म रखता नहीं हूं कि दूसरों को फाइदा पहुंचा सकूं। मैं उन दो थैलियों का क्या करूं और वह ताक़त कहां से लाऊं कि बैतुल-माल का माल लूं। फिर कल क़यामत के रोज़ उन दो थैलियों के मुतअल्लिक़ जवाब दूं। वह यह कह रहा था और ख़लीफ़ा ज़ार-ज़ार रो रहा था। उसके बाद बोला कि मैं तुम्हारे पास एक हाजत लेकर आया हूं तुम उसे पूरा कर सकते हो। ज़ाहिद ने जवाब दिया कि ख़लीफ़ा वह हाजत मुझ से बयान करे अगर मुम्किन होगा तो अपनी जानिब से कोई कोताही न करूंगा। ख़लीफ़ा ने कहा कि मैंने सुना है कि जुमा की रात को दाऊद ताई तुम्हारे पास आते हैं उन से मेरे लिए

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

यह कह देना कि मैं ऊलुल-अम्र से हूं। कुरैशी हूं बनी हाशिम हूं, रसूले खुदा का चचाज़ाद हूं। आपकी खिदमत में इसलिए हाज़िर आता हूं कि आप मुझे कोई नसीहत फरमा दें। मैं उसे कुबूल करूं। उस पर अमल करूं और आपकी इस नसीहत से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कितनी ही उम्मत को फाइदा पहुंचे। आप मुलाकात से क्यों हिचकिचाते हैं।" ज़ाहिद ने कुबूल कर लिया और कहा कि जब दाऊद तशरीफ लाएंगे खलीफा का पैग़ाम उन तक पहुंचा दूंगा। खलीफा इस वक्त सलामती से वापस तशरीफ ले जाएं और दोबारा ग़रीब खाना पर न आएं। अगर आप दोबारा आएंगे मैं बगदाद छोड़ दूंगा।" खलीफा ने कहा कि जब आप खुद मेरे पास तशरीफ नहीं लाते और मुझे भी हाज़िरी की इजाज़त नहीं देते तो दाऊद का पैग़ाम मुझ तक कैसे पहुंचेगा? जवाब दिया कि अपने उन खादिमों में से जो तुम्हारे सामने हैं एक को हमारे रू-ब-रू कर दें। वह जुमा की सुबह को आए और जवाब ले जाए।

जुमा की रात में जब दाऊद ताई उस ज़ाहिद के मकान पर तशरीफ ले गये तो ज़ाहिद ने वह पैग़ाम पहुंचा दिया। दाऊद उस पैग़ाम के सुनते ही ज़ार-ज़ार रोने लगे कि मैं नहीं समझता कि खलीफा मुझ से क्यों मुलाकात करना चाहता है। बगदाद में और बहुत से ज़ाहिद हैं कि पोशीदा और छुप कर जुह्द इख्तियार किए हुए हैं। अगर मैं मशहूर और जाना पहचाना न होता तो खलीफा मेरी मुलाकात की आरज़ू भी न करता। इसके बाद दाऊद ने फरमाया कि अगर अब खलीफा तुम्हारे पास आएं तो उन से मेरी तरफ से कहना कि मैं जानता हूं कि तुम ऊलुल-अम्र से हो और रसूलुल्लाह के चचाज़ादे हो। लेकिन मैं जो तुमसे मुलाकात नहीं करता और तुमसे कोई चीज़ नहीं लेता। उसकी वजह यह है कि मैं झूठ सच, मख्लूक में ज़ाहिद मशहूर हो गया हूं। अगर मैं खलीफा से मुलाकात करूं और उससे कोई चीज़ लूं, तो जो शख्स मेरे बाद जुह्द इख्तियार करेगा वह ख्याल करेगा कि बादशाहों से मुलाकात करने और उन से रुपया लेने से जुह्द बातिल नहीं होता। इसलिए कि दाऊद ताई ने मुलाकात की और नज़राना लिया है। लेकिन अगर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ख़लीफ़ा मेरे दरवाज़ा पर इसलिए आता है कि कल क़्यामत के रोज़ उस से दुनियादरी का हिसाब न लिया जाए तो उसे ख़ुदावन्दे तआला की बारगाह के उश्शाक़ में से किसी आशिक़ का दामन पकड़ना और उसकी हिमायत में ख़ुद को डालना चाहिए। ज़ाहिदों से यह ग़रज़ हासिल नहीं हो सकती। मैं जो कुछ जानता था। मैंने (उसकी रौशनी में) ख़लीफ़ा की राह नुमाई की और उसका हक़ कि वह मेरे दरवाज़ा पर आता है मैंने अदा कर दिया। अब वह जाने।"

मख़्दूमे मिल्लत शैख़ मीना क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने यह भी फ़रमाया कि एक रोज़ हारून रशीद इमाम अबू यूसफ़ से चपट गया (और कहा) कि मैं दाऊद ताई से मुलाक़ात करना चाहता हूं कोई तरकीब है। इमाम अबू यूसुफ़ अलैहिर्रहमा ने क़ुबूल कर लिया और दोनों मिलकर दाऊद ताई के मकान पर पहुंचे और आवाज़ दी। आपकी वालिदा बाहर तशरीफ़ लाईं। इमाम अबू यूसुफ़ ने फ़रमाया कि जा कर दाऊद से कहिए हारून रशीद ख़लीफ़ा, ज़ियारत को आना चाहता है क्या इजाज़त मिल सकती है कि मैं और हारून रशीद हाज़िर हों।" दाऊद ताई ने जवाब दिया कि ऐ इमाम ख़लीफ़ा से कह दो कि वह जिस काम को बेहतर जानता है उसमें मशग़ूल रहे और मैं उस काम में मस्रूफ़ हूं जो मुझे अच्छा मालूम होता है। उसके बाद इमाम अबू यूसुफ़ ने उनकी वालिदा से फिर यह कहला कि भेजा कि जा कर कहिए कि उस इल्म के तुफ़ैल, जो तुमने मुझ से हासिल किया है हमें इजाज़त दो कि ख़लीफ़ा तुम्हारी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मुझे उसके सामने शर्म न आए। इमाम दाऊद क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने जवाब दिया कि ऐ इमाम तुम्हारा वही इल्म तो मुझे बाज़ रखता है कि उस से मुलाक़ात करूं। इसलिए कि आप ही से यह पढ़ा है कि ज़ालिम के चहरा को देखना क़ल्ब को सियाह कर देता है। वह दिल जिसे मैंने बरसहा बरस, मुहब्बते ख़ुदावन्दी से जगमगाया है मैं उसके लिए यह जाइज़ नहीं समझता कि एक ज़ालिम के देखने से सियाह कर डालूं। बराहे करम तशरीफ़ ले जाइए। इमाम अबू यूसुफ़ ने फिर आपकी वालिदा से कहा कि मैंने ख़लीफ़ा की अर्ज़ को क़ुबूल कर लिया है मुझे शर्म आती है। क्या है कोई ऐसा हीला कि दाऊद उसकी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मुलाक़ात को क़ुबूल कर लें ताकि मेरी शर्मिंदगी दूर हो। फिर आपकी वालिदा घर में आई और दाऊद के सामने खड़ी हो गईं और कहा कि उस दूध की ख़ातिर जो मैंने तुम्हें पिलाया है मुलाक़ात कर लो और उनके अन्दर आने से कोई आर मत समझो। इमाम दाऊद हज़रत माबूद की बारगाह में रोए और बहुत गिड़ गिड़ाए कि "ऐ ख़ुदा तूने फ़रमाया है कि अस्हाब के हुक़ूक़ की रिआयत करो। अब वह मुझ से उलझ रहे हैं मुझे माज़ूर रख और इस मुआमला में मुझ पर अज़ाब न फ़रमा। दाऊद ने अस्हाबे हुक़ूक़ को क़ुबूल कर लिया है। फिर फ़रमाया कि (मन्ज़ूर है मगर) इस शर्त पर कि वह रात को आएं और हुजूम और मख़्लूक़ की कसरत के साथ न आएं।

जब रात हुई तो इमाम अबू यूसुफ़ और ख़लीफ़ा आए। दाऊद अलैहिर्रहमा ने चिराग़ गुल कर दिया। ताकि ख़लीफ़ा का चेहरा न देख सके। इमाम अबू यूसुफ़ ने हाथ बढ़ाए कि दाऊद से मुसाफ़हा करें। दाऊद ने अपना हाथ खींच लिया। इमाम अबू यूसुफ़ ने कहा कि अपना हाथ क्यों नहीं देते और किस वजह से मुझ से आर करते हो। जवाब दिया कि ऐ इमाम मैं जानता हूं कि तुम्हारे हाथ ख़लीफ़ा के खाने में आलूदा हैं। और ख़लीफ़ा का खाना शुबहात से ख़ाली नहीं। ला मुहाला तुम्हें हाथ देना मुझे नुक़्सान पहुंचाएगा। कुछ देर के बाद ख़लीफ़ा ने एक हज़ार दीनार दाऊद के सामने हाज़िर किए और अर्ज़ किया कि यह माल मुझे बाप की वेरासत में मिला है इस माल के ख़र्च करने में कोई कुछ तरद्दुद न कीजिए।" दाऊद ने जवाब दिया कि अगर मैं तुमसे क़ुबूल करो तो इमामे आज़म जो मेरे उस्ताद हैं और अपने हाथ की कमाई के सात सौ दिरहम लाए थे उन से क्यों न क़ुबूल करूं। जब इमाम अबू यूसुफ़ और ख़लीफ़ा रुख़्सत हो गये तो लोगों ने दाऊद की वालिदा से पूछा कि दाऊद कहां से खाते हैं। उनकी मां ने जवाब दिया कि चन्द दिरहम बाप की मीरास में पाए हैं उसी से अपनी मआश करते हैं उसको एक बक़्क़ाल के यहां रख दिया है उसकी क़लील मिक़्दार को अपनी रोज़ाना ज़रूरत में काम लाते हैं और किसी की तरफ़ रग़बत नहीं करते और हमेशा दुआ में कहते हैं कि ख़ुदाया जिस रोज़ यह माल ख़त्म हो दाऊद

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

की उम्र तमाम हो चुकी हो। इमाम अबू यूसुफ़ ने इस बक़्क़ाल से तहक़ीक़ की कि कितने दृहम बाक़ी हैं और अपने दिल में हिसाब करके रखा और उसी रोज़ हज़रत दाऊद की वफ़ात का यक़ीन कर लिया। जब इस मिक़्दार का आख़िर वक़्त आया तो अपने एक शागिर्द को भेजा ताकि वह ख़बर लाए। शागिर्द जब आपके दरवाज़ा के पास पहुंचा तो मालूम हुआ कि दाऊद ताई क़ुद्दिसा सिर्रुहू का सुबह के वक़्त इंतिक़ाल हो गया।

लोगों ने हज़रत जुनैद क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने पूछा कि आप उस शख़्स के बारे में क्या कहते हैं जिसके पास दुनिया (के माल में) से सिर्फ़ एक पुरानी खुजूर की मिक़्दार चबाने के लिए रह गया है। फ़रमाया कि "मुकातब गुलाम ही रहेगा अगरचे उस पर एक दृहम बाक़ी रहे।" बशर पासीं और राबेआ अदविया रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने सुफ़ियान सूरी से कहा कि तुम अच्छे आदमी थे। अगर दुनिया तुम्हें महबूब न होती। आपने फ़रमाया क्या बात है? जवाब दिया कि तुम हदीस की रिवायतें पसंद करते हैं विश्र हाफ़ी रज़ि अल्लाहु अन्हु सात आलमारी हदीस की किताबें जिनका सिमाअ् किया था ख़ाक में दफ़न कर दी और कोई हदीस रिवायत न की और यह फ़रमाया कि मैं इस वजह से रिवायत नहीं करता कि मैं रिवायत की तरफ़ रग़बत पाता हूं। हां अगर मैं ख़ामोशी में रग़बत पाता तो रिवायत करता।

मुरीद मुब्तदी सादिक़ को यह भी चाहिए कि दुनिया वालों से जान पहचान न बढ़ाए शैख़े इस्लाम फ़रीदुल-हक़ वदीन क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने सुल्तानुल-मशाइख़ ख़्वाजा निज़ामुल-हक़ वदीन सिर्रुहू से फ़रमाया कि अगर तुम बुज़ुर्गों के दरजा तक पहुंचना चाहते हो तो अपने ऊपर यह लाज़िम कर लो कि शहज़ादों की तरफ़ इल्तिफ़ात न करो। नीज़ लालची उलमा और हरीस फ़ुक़रा की सोहबत से भी दूर भागो कि उनकी सोहबत दुनियादारों की सोहबत से भी बुरी है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि हर आलिम के पास न बैठो बल्कि उसके पास जो तुम्हें पांच चीज़ों से पांच चीज़ों की तरफ़ बुलाए। शक से यक़ीन की तरफ़, नमूद से इख़्लास की जानिब, दुनियावी रग़बत से

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तर्क दुनिया की जानिब, खुद मुमाई से कसरे नफ़्सी की जानिब और बाहमी व मुतमन्नी से ख़ैर ख़्वाही की जानिब।" सहल तस्तरी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं। "तीन क़िस्म के लोगों से इज्तिनाब और परहेज़ करो बादशाहों, अमीरों और सुल्तानों में से ज़ालिम और ग़ाफ़िल से। दिखावे की क़िरअत करने वालों और बद-दियानतों से और जाहिल सूफ़ियों और हरीस पीरों से।

बुरों के साथ कम बैठो कि बुरी सोहबत अगरचे पाक है तुझे गन्दा कर देगी जैसे चमकते हुए सूरज को भी एक ज़रा सा बादल छुपा देता है। ऐ अज़ीज़ बातिन की गन्दगी तीन क़िस्म की है। दुनिया, ख़ल्क़, नफ़्स, दुनिया मिस्ल नजासते ऐन है। ख़ल्क़ मिस्ले हदस के और नफ़्स मिस्ल जनाबत के। मुरीद जब तक दुनिया, ख़ल्क़ और नफ़्स से पूरी तरह न बचेगा। बातनी तहारत हरगिज़ उसके हाथ नहीं लग सकती।

याद रखो कि क़ब्र का असल अज़ाब दुनिया की दोस्ती की वजह से होता है और यह अज़ाब दुनिया की लज़्ज़तों की मिक्दार, कम ज़्यादा भी होता है। अगर कहो कि क़ब्र का अज़ाब दुनिया के साथ दिली तअल्लुक़ की वजह से होता है तो इस तअल्लुक़ से तो कोई भी ख़ाली नहीं। थोड़ा हो या बहुत। चाहिए कि सब पर अज़ाब हो" तो उसका जवाब यह है कि बाज़ तो वह लोग होते हैं जो तमाम दुनियावी अस्बाब के बावजूद उस से लापरवाह हैं। उन के नज़्दीक होना, न होना, सब बराबर है। बाज़ वह लोग हैं तो दुनिया से मुहब्बत करते हैं मगर खुदाए तआला से उस से बढ़ कर। बाज़ वह हैं जो खुदाए तआला को दोस्त रखते हैं मगर दुनियावी साज़ो सामान को उससे बढ़ कर। यह तीसरे क़िस्म के लोग मुद्दतों अज़ाब चखेंगे। उसके बाद उनका दिल दुनिया से तबर्रा करेगा दुनिया की लज़्ज़तों को भूल जायेंगे और खुदाए तआला की असल दोस्ती जो दिल में दबी हुई थी अब आशकार होगी तो उनका अज़ाब दिल की राहत से बदल जाएगा। हां वह शख़्स जो अल्लाह तआला को बिल्कुल दोस्त नहीं रखता उसको हमेशगी का अज़ाब होगा। रहा यह कि तुम कहो कि जब किसी शख़्स के क़ब्ज़ा में कोई चीज़ नहीं तो यह सवाब व अज़ाब क्यों है और बहुत सी मख़्लूक़ इसी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ख़्याल में डूबी हुई है कि जब हमारे कब्ज़ा में कोई चीज़ नहीं तो सवाब और अजाब किस बिना पर है। उस चीज़ की हकीकत शनासी अगरचे लिखने से किताब में नहीं समा सकती लेकिन जब बात यहां तक पहुंची है तो थोड़ा सा ज़िक्र करते हैं। यूं समझो कि अगर खून और सफ़रा तुम्हारे बातिन में ग़ालिब आ जाएं तो उस से एक हालत पैदा होती है जिसे बीमारी कहते हैं और अगर दो ग़ालिब आ जाए तो एक और हालत पैदा होती है जिसे तन्दुरुस्ती कहते हैं। इसी तरह जब शहवत, ग़ज़ब और दूसरी बुराईयां तुझ पर ग़ालिब आ जाती हैं तो तेरे जिस्म में एक आग सी पैदा कर देती हैं जिससे तू हलाक हो जाता है और जब अक़्ल की रौशनी कुव्वत पकड़ती है, तो ग़ज़ब व शहवत की आग को बुझा देती है लिहाज़ा दोज़ख़ की आग का बीज वह तेरे नफ़्स की बुराईयां हैं और वह तेरे साथ जिस्म में मौजूद हैं। इसी वजह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि इन्नमा हिया आमालुकुम तरुद्दु इलैकुम। यह सब तुम्हारे करतूत हैं जो तुम्हारी तरफ़ पलटते हैं। अगर तू कहे कि अगर मुक़द्दर में शक़ावत है तो कोशिश से क्या फ़ाइदा है तो यह बात तो सच है मगर एक वजह से बातिल और जो शख़्स अज़ली शक्की है उसकी निशानी यह है कि उसके दिल में ऐसी बातें डालें। वह यह क्यों नहीं कहता कि अगर अज़ल में यह हुक्म किया गया है कि मैं भूखा मर जाऊंगा तो मुझे रोटी क्या फाइदा दे सकती है" फिर रोटी न खाए यहां तक कि यकीनन मर जाए।

जानना चाहिए कि बाज़ अफ़्आल तुझ में इज़्तिरारी हैं जैसा कि सांस लेने का इरादा तुझ में मौजूद है। ख़्वाह तू चाहे या न चाहे। या जैसे कि पांव अगर तुम पानी में डालो तो पानी ख़्वाह मख़्वाह फट जाएगा। तुम चाहो या न चाहो। और इसी तरह और बातें। और बाज़ अफ़्आल इख़्तियारी हैं जैसे आना जाना, खाना पीना, सोना जागना, वग़ैरह अफ़्आल। कि चाहो तो करो और न चाहो न करो। इसी वजह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया काम किए जाओ जो जिस काम के लिए पैदा किया गया है उसके लिए वही मयस्सर है। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया। तुम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...म में गिरे पड़ते हो और मैं तुम्हारा बन्द कमर पकड़-पकड़ कर खींच रहा हूं। (तुम्हें गिरने नहीं देता) वल-हम्दुलिल्लाहे रब्बिल-आलमीन।

फस्ल कनाअत का बयान : अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है। "तू इज़्ज़त देता है जिसे चाहे और ज़लील करता है जिसे चाहे।" अरबाबे तरीकत कहते हैं कि इज़्ज़त, कनाअत के शर्फ से मिलती है और ज़िल्लत लालच के रास्ते आती है। जिसने कनाअत की, इज़्ज़त पाई और जिसने लालच किया ज़लील हुआ।

शेर नर इज़्ज़त से कनाअत करने वाले मर्द के कदम चूमना है और कुत्ते की मादह ज़िल्लत के बाइस, दरवाज़े पर आने वाले हर आदमी का पैर चाटती है।

यानी हज़रत अस्मई रहमतुल्लाह तआला अलैह एक रास्ता पर सवार गुज़र रहे थे कि एक जारुब कश को देखा कि अपने काम में मशगूल अपने नफ़्स से कह रहा है कि ऐ नफ़्से नफीस! मैंने तुझे बुरे काम से आज़ाद किया। मैंने हमेशा तुझे इज़्ज़त दी और तेरी नेक नामी में लगा रहा। अस्मई ने फरमाया कि बन्द-ए-खुदा, इस मौका पर तो यह बात न कि। इस बात का यह कौन सा महल है। जब तो खुद नजासत में मशगूल है तो वह कौन होगा जो उस से भी ज़्यादा ज़लील हुआ।" उसने कहा कि उस से ज़्यादा ज़िल्लत यह है कि मैं तुम जैसे लोगों के दर पर पड़ रहूं और खिदमत के लिए आमादा। जो शख़्स मख़्लूक के सामने खिदमत गुज़ारी करता है मेरा काम उस से हज़ार दरजा अच्छा है।

शैख़ काज़िन दाना कन्नौजी कुद्दिसा सिर्रुहू एक बादशाह से मुलाकात के लिए बज़रूरत गये। दरबान ने न जाने दिया तो आपने इन्तिहाई मज्बूरी में यह बैत पढ़ा।"

ऐ बादशाह! किसी सरदार को हुक्म दे कि वह या तो दरबान का हाथ तोड़ दे या मेरा पैर।" इस मौका पर मख़्दूमे मिल्लत जनाब शैख़ ...की कुद्दिसा सिर्रुहू ने मिसरा सानी को ज़रा बदल कर फरमाया कि-दरबान का हाथ न तोड़े मेरा पैर तोड़ दे। मख़्दूम शैख़ फ़रीद अत्तार कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया।

खुदा का शुक्र है कि मैं न दरबारी हूं और न किसी नालाइक के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

साथ बांधा हुआ। मैं किसी की ख़ातिर, दिल में इताअत का बन्द कहां बांधूं और किस-किस निकम्मे को अपना आक़ा कहता फ़िरूं।" इसलिए चाहिए कि आदमी लालच और सवाल का दरवाज़ा अपने ऊपर, हक़ के साथ इस्तिग़ना का कुफ़्ल लगा कर ऐसा बन्द कर ले कि हाजतों और ज़रूरतों की हज़ारों कुंजियों की मार से भी वह दरवाज़ा न खुले।

"तुझ जैसा आली क़द्र हुमा और हड्डियों का लालच, अफ़सोस है। और उस साए के क़स्द पर भी हसरत है जो तू किसी नाअहल पर डाले।" एक दुर्वेश के दिल में रोज़ाना शैतान यह वसवसा डालता कि आज क्या खायेगा। वह कहते "मौत।" और जब वह कहता कि क्या पहनेगा तो कहते कि "कफ़न" और जब वह कहता कि कहां रहोगे तो कहते कि क़ब्र में। वह नाउम्मीद हो कर लौट जाता।

अगर तू इस दरिया की शिनावरी का इरादा रखता है तो दुरुस्त है लेकिन (याद रख) पहली मंज़िल घड़ियाल का मुंह है। नफ़्हात में हज़रत अबू अब्दुल्लाह मिसरी से नक़्ल है कि उनका लड़का उनके पास आया और कहा कि मेरे पास तेल का एक मटका था जो मेरा सरमाया था वह सर से गिर पड़ा और टूट गया और मेरी पूंजी बरबाद हो गई। फरमाया कि ऐ बेटे अपनी पूंजी वही बनाओ जो तुम्हारे बाप की पूंजी है खुदा की क़सम कि तेरे बाप का दुनिया और आख़िरत में सिवाए खुदावन्दे तआला के कुछ नहीं। शैख़ुल-इस्लाम क़ुदिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि उसका तमाम फ़ाइदा उसमें था कि उसका बाप भी न होता। और यह मरतबा फना की तरफ़ इशारा और शौक़े बक़ा के बाज़ार में अपनी पूंजी लगाने और फ़ाइदा कमाने की तरफ़ रहनुमाई है।

तू खुद नुमाई के बाज़ार में कब तक ज़लील होगा। जल्दी कर कि फना के जाम से तू मस्त हो जा। दोनों जहां के फ़ाइदे और पूंजी से अपने हाथ धो ले। तेरा बड़ा फ़ाइदा यही है कि तू ख़ाली रह जाए। बाज़ मुहक़्क़ेक़ीन ने फरमाया है। अगर गेहूं का एक दाना चौदहवीं का चांद बन जाए और तमाम मख़्लूक़ मेरी अयाल हो जाए (कि उनका नफ़्क़ा मुझ पर वाजिब हो) तब भी खुदा की क़सम कुछ फ़िक्र न करूं। बड़ी-बड़ी उम्मीदें बांधना तंग नज़री की निशानी और हिर्स में पड़ना

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बेहुनरी की दलील है।

इस खुशकी और तरी की दुनिया में किसी के लिए क़नाअत से बढ़ कर कोई मुल्क नहीं। क़नाअत पसन्द नफ़्स अगर गदागरी भी करे तो वह हक़ीक़त में बादशाही करता है।

हकीम बुक़रात मर्द पाक ने कहा कि एक मरतबा रास्ते में एक पा प्यादा, थका मांदा पड़ा था। उस से एक फ़क़ीर ने कहा कि तमाम ज़माना तो तेरी तलाश में है और तू एक किनारा पड़ा है। तेरे तो बहुत मोतक़िद हैं किसी से एक घोड़ा मांग ले ताकि तुझे पैदल न चलना पड़े। जवाब दिया कि मेरे पैरों पर मेरे बदन का बोझ हो यह उस से अच्छा है कि किसी के एहसान का बोझ मेरे सर पर हो।

मन्कूल है कि बहलोल बग़दाद क़ुद्दिसा सिर्रहू से एक ख़लीफ़ा ने कहा कि मैं चाहता हूं कि तुम्हारा रोज़ीना मुक़र्रर कर दूं ताकि तुम्हारा दिल उसमें उल्झा न रहे। बहलोल ने कहा कि मैं ऐसा कर लेता अगर चन्द ऐब न होते। अव्वल यह कि तू नहीं जानता कि मुझे क्या चाहिए। दूसरे यह कि तुझे नहीं मालूम कि कब चाहिए। तीसरे यह कि तुझे उसका इल्म नहीं कि कितना चाहिए। और अल्लाह तआला यह सब जानता है और अपनी हिक्मते कामिला से पहुंचा देता है। फिर एक बात और भी है। हो सकता है कि तुझ मुझ से नाराज़ हो जाए और उस रोज़ तू मेरा मुकर्ररह रोज़ीना रोक ले और अल्लाह तआला किसी गुनाह के बाइस भी रोज़ी नहीं रोकता।

यानी पस्ती और बुलन्दी के मालिक ने गुनाहों के सबब किसी पर रिज़्क़ का दरवाज़ा बन्द नहीं किया।"

बुज़ुर्गों ने फरमाया है।

आम लोगों का रिज़्क़ उनके हाथ में है और ख़्वास का हिस्सा उनके यक़ीन में। हज़रत सुल्तानुल-आरेफ़ीन से लोगों ने दरयाफ़्त किया कि ज़ाहिर में तो आप कुछ काम नहीं करते फिर खाते कहां से हैं? फरमाया कि मेरा ख़ुदा तो कुत्ते और सुव्वर को भी रिज़्क़ पहुंचाता है। क्या यह समझते हो कि बायज़ीद को न पहुंचाएगा।

रब तआला ने तुझे इस हाल में भी न फरामोश किया जब तू दफ़न

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

किया हुआ और बेख़बर नुत्फ़ा था तुझ में रूह डाली। अक़्ल, तमीज़ और समझ दी। हुस्न गोयाई, राय फ़िक्र और होश बख़्शा। तेरी हथेलियों पर दस उंगलियां जमाईं और तेरे बाज़ू तेरे कांधे से जोड़े, अब ऐ ज़लील बेक़द्र तू यह समझता है कि वह तेरी रोज़ी भुला देगा। अल्लाह तआला फ़रमाता है। यानी इंसान बेसब्र पैदा किया गया है। किताब लुब्बे लुबाब में मक़ातिल से नक़ल किया है कि हलूअ् कोह क़ाफ़ के पीछे एक जानवर है जो रोज़ाना सात जंगलों को तर घास से ख़ाली कर देता है और तमाम सूखी घास पात खा लेता है सात दरिया का पानी पीता है। गर्मी और सर्दी में बेताब रहता है और हर रात इस ख़्याल में गुज़ारता है कि कल क्या खाएगा। अल्लाह तआला ने इंसान को बेसब्री में उस जानवर के साथ तशबीह दी है।

सिवाए आदमी के हर जानदार का यह हाल है कि जब उसका पेट भर जाए तो वह उसकी बेफ़िक्र का सबब बन जाता है। आदमी ही वह है कि पेट उसका नहीं भर पाता बल्कि पेट भरे पर भी रोज़ी के ग़म में रहता है। अपनी तमाम उम्र ख़्वाह ज़्यादा हो या कम अल्लाह के करम वाले दस्तर्ख़्वान पर रोज़ी खाता है मगर हिर्स की वजह से उसका ग़म ऐसा सवार रहता है गोया सिवाए रोटी के और उसे कोई ग़म नहीं।

अल्लाह तआला का इरशाद है–

ऐ मूसा रिज़्क़ की फ़िक्र न करना जब तक यह न जान लो कि मेरे ख़ज़ाना में कुछ बाक़ी नहीं रहा कहते हैं कि फ़तह मूसली क़ुद्दिस सिर्रुहू मक्का की ज़ियारत को जा रहे थे। ख़ुश्की के रास्ता में एक नाबालिग़ बच्चा को देखा कि ऐसी जगह है जहां कोई आबादी नहीं थी। फ़रमाया अस्सलामु अलैका। बच्चा ने सलाम का जवाब दे दिया। फ़तह अलैहिर्रमा ने पूछा कि ऐ मेरे आक़ा कहां से आते हो। जवाब दिया कि "अपने रब के घर से।" दरयाफ़्त किया कि तुम अभी बच्चे हो। शरीअत के अहकाम के मुकल्लफ़ भी नहीं। तो अपने आपको क्यों तक्लीफ़ में डालते हो। बच्चा ने जवाब दिया कि मेरे बुज़ुर्गवार! अपनी तमाम उम्र फिर ऐसी बात मत कहना – मलकुल–मौत ने मुझ से ज़्यादा कम उम्रों की रूह क़ब्ज़ कर ली और ख़ाक को सौंप दिया है। फ़रमाया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कि ऐ बच्चे तेरे साथ कुछ तोशा और सवारी तो मुझे मालूम नहीं होती। जवाब दिया कि मेरा तोशा यक़ीन है जहां कहीं रहूं। मेरी सवारी मेरे दोनों पैर हैं जिन पर मैं चलता हूं और मेरा बार बरदार मेरा शौक़ और इश्क़ है। फतह मूसली ने जवाब दिया कि मैं तुझ से यह बात नहीं पूछता। रोटी पानी को पूछता हूं। उसने कहा कि आपका नाम क्या है? जवाब दिया कि मुझे फतह कहते हैं। उसके बाद उसने कहा कि ऐ फतह अगर दुनिया वालों में से आपका कोई एक दोस्त आपको बतौर मेहमान बुलाए तो क्या आपको अच्छा मालूम होगा कि खाना लेकर जाएं और अपना खाना खाने में मशग़ूल रहें। जवाब दिया कि नहीं। लड़के ने कहा कि ऐ कमज़ोर यक़ीन वाले! मेरा ख़ुदा कि इतने गुनहगारों, बेगानों और ग़ैर मेहमानों को रोज़ी देता है। उसने जब मुझे अपने यहां बुलाया है तो क्यों कर खाना पानी न देगा।

ऐ क़नाअत तू मुझे मालदार बना दे कि तेरे अलावा कोई नेमत नहीं। सब्र का ख़ज़ाना लुक़्मान का पसन्दीदा है तो जिसे सब्र नहीं उसे अक्ल नहीं। एक बुज़ुर्ग से लोगों ने पूछा कि आप कहां से खाते हैं? जवाब दिया कि उस बादशाह के ख़ज़ाना से, जिस में कोई चोर और कीड़ा नहीं लगता। लोगों ने कहा तो शायद तुम पर आसमान से रोटी के टुकड़े बरसते होंगे? फरमाया कि अगर ज़मीन न होती तो अल्बत्ता आसमान ही से डाल देते। लोगों ने कहा कि तुम तो ऐसी ही बातें कहते हो। जवाब दिया कि आसमान से भी यही कलाम उतरा है। बाज़ लोगों ने कहा है कि रिज़्क़ के एहतमाम में मत रहना वरना तुम रिज़्क़ देने वाले का एहतमाम करने वाले (की मानिन्द) हो जाओगे। अल्लाह तआला फरमाता है कि क्या वह ऊंट को नहीं देखते कैसे पैदा किया गया है।" बुज़ुर्गों ने कहा है कि ऊंट हलीम है। बड़ा बोझ लादता है और फरमांबरदार है। कि हर शख़्स की बात मानता है। और क़नाअत वाला है कि हर घास चर लेता है और तहम्मुल वाला है और भूख और प्यास में सब्र इख़्तियार करता है। ग़रज़ जो चीज़ हैवान से मतलूब होती है यानी नस्ल, हमल, दूध, गोश्त और सवारी वह सब उस से हासिल है। हज़रत रूमी क़ुद्दिसा सिर्रहू ने फरमाया।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अफ़ला यन्जुरून को पढ़ो और हमारी कुदरत देखो। ऊंट पर नज़र दौड़ाओ कि तुम्हें खुदा की सनअत नज़र आए। कांटे खाने में वह खुश और बोझ लादने पर वह राज़ी रहता है। इंसानों में यह वस्फ़ ढूंढना चाहते हो तो अह्ले सफ़ा में ढूंढो।

मुहक़्क़ेक़ीन फ़रमाते हैं कि उन चार परिन्दों के ज़बह करने से जिनका ज़िक्र कुरआन मजीद में यूं किया गया है। यानी और तुम चार परिन्दे लो और उन्हें खुद से हिला लो फिर उन में से हर एक का टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दो। फिर उनको बुलाओ कि वह दौड़ते आएंगे। उसकी तरफ़ इशारा है कि अपने तन के कबूतर को जो हमेशा आदमियों से मानूस रहता है मारो और मुहब्बत का रिश्ता मख़्लूक़ से तोड़ लो और उस मुर्ग़ को जो हमेशा शहवत पर माइल रहता है ज़बह करो और अपने आपको शहवत के जाल से आज़ादी दो। और कव्वे को जो लालच का ख़ज़ाना है उसे क़त्ल करके हिर्स और लालच की सिफ़त छोड़ दो। और मोर जो बहुत ख़ूबियों का जामे है उसे मार दो। और हर मुराद की आंख दुनिया की ज़ीनत से बन्द कर लो ताकि तुम हमेशा ज़िन्दा रहो।

तुझे कुरबते इश्क़ का क़ाबे क़ौसेन उस वक़्त हासिल होगा जब तू अपनी बुराईयों से इतना दूर हो जाए जितना मश्रिक़ से मग़रिब। ख़िंज़ीर की क़तार के साथ बैतुल-मक़्दिस में पांव मत रखो और हाथियों के लश्कर के साथ बैतुल्लाह की तरफ़ मत चलो। अनवार में मज़्कूर है कि जो शख़्स अपने नफ़्स को अबदी ज़िन्दगी से ज़िन्दा रखना चाहता है उसे चाहिए कि बदनी कुव्वतों को रियाज़त की तल्वार से ज़ख़्मी करके बाज़ को बाज़ के साथ मिला दे ताकि उनकी तेज़ी टूटे और वह मुतीअ़ व फ़रमांबरदार बन जाएं। फिर उनको शरअ़ और अक़्ल की आवाज़ों से बुलाए ताकि वह उसकी पैरवी करती हुई जल्दी से लौट आएं। कहते हैं कि चार सिफ़तें इंसान में चार उन्सुरों की वजह से पैदा होती है। अव्वल तकब्बुर जो आग से पैदा हुआ। दूसरे शहवत जो हवा का नतीजा है। तीसरे हिर्स जो पानी की फ़ितरत है। चौथे बुख़्ल जो ख़ाक की सिफ़त है जैसा कि हकीम सनाई ने इन शेअ़रों में बयान किया है।

तरजमा : बदन के चारों उन्सुर चार परिन्दे हैं। दीन के वास्ते उन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

चारों की गर्दन मार दो। उसके बाद ईमान, अक़्ल, शरीअत और दलील से चारों को ज़िन्दा कर लो जैसा कि हज़रत इब्राहीम ख़लील अलैहिस्सलाम ने किया।

फ़सल तवक्कुल और तबत्तुल में अल्लाह तआला फ़रमाता है।

यानी ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे कट कर रब से मिल जाओ और ऐसे कि न हरगिज़ किसी और में मश्गूल हो और न हरगिज़ किसी से दोस्ती मनाओ और अपनी नज़रे हिम्मत को दुनिया व आख़िरत पर मत डालो।" और ख़ुद रसूले ख़ुदा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपने इस इंक़िताअ के मुतअल्लिक़ यह ख़बर दी कि –

"अगर मैं ख़ुदा के सिवा किसी और को अपना हाजत रवा बनाता तो अबू बकर को बनाता लेकिन मेरा हाजत रवा तो अल्लाह है।" ख़्वाजा ज़ुन्नून मिस्री रहमतुल्लाह अलैह ने एक नेक औरत को देखा कि हाथ में छड़ी लिए हुए है। पूछा कहां से आई हो? जवाब दिया "अल्लाह की तरफ़ से।" फ़रमाया किधर जा रही हो? जवाब दिया "अल्लाह की तरफ़।" हज़रत ज़ुन्नून मिस्री ने फ़रमाया "तुम पर अल्लाह की रहमत हो कुछ नसीहत हमें भी करो।" कहा कि ऐ ज़ुन्नून जो शख़्स मौला की मुहब्बत का दम भरता है तो अल्लाह तआला बलाओं से उसका इम्तिहान फ़रमाता है। फिर आख़िरत से। और फिर दुनिया से। पस अगर वह उन में से किसी की जानिब मुतवज्जेह हुआ रब तआला उस से एराज़ फ़रमाता है। और जब अल्लाह तआला उस से एराज़ फ़रमाता है तो हर चीज़ उस से भागती है। आसमान से लेकर तहतुस्सरा तक। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रब से हिकायत फ़रमाते हैं कि फ़रमाया अल्लाह तआला ने कि "ऐ बन्दो! अह्ले ज़माना की तरफ़ देखो। क्या कोई ऐसा है जो सबसे कट कर मुझ से मिला और मैंने उसे इज़्ज़त न दी। और उसने मुझ पर भरोसा किया और मैं उसके लिए काफ़ी न हुआ।

यानी ऐ बन्दे! तू मेरी तरफ़ भाग कर आ। और हर चीज़ से ख़ुद को ला तअल्लुक़ बना। अगर तू दुनिया का शाह न हो जाए उस वक़्त शिकायत कर। जा और तमाम दुनिया के गर्द फिर और अपने पैरों में

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

आबुले डाल ले। अगर कोई मुझ से बेहतर तुझे मिल जाए तो मुझ से बेइलाका हो जाना। अल्लाह तआला ने फरमाया। "जो अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह उसको काफी है।" तवक्कुल उसका नाम है कि बन्दा अपने तमाम कामों को हक सुबहानहू को इस तरह सौंप दे कि फिर उसमें ज़र्रह बराबर तसर्रुफ न करे जब तवक्कुल चीज़ें तर्क न करेगा तेरा तवक्कुल पूरा नहीं।

साहबे कश्फुल-अस्रार कुद्दिसा सिर्रहू ने आयते करीमा की हुवल *अव्वलु वल आखिरु वज़्ज़ाहिरु वल बातिनु* तफ्सीर में फरमाया कि ज़बाने रहमत इस जानिब इशारा कर रही है कि बनी आदम दुनिया की मख़्लूक में तेरे लिए चार गरोह हैं। पहला तो वह गरोह कि अव्वल हाल में तेरे काम आए जैसे मां और बाप। दूसरा गरोह जो आख़िर में तेरा हाथ बटाए जैसे बेटे पोते। तीसरे वह लोग जो ज़ाहिर में तुझ से पैवस्ता हैं जैसे दोस्त अहबाब। चौथे वह जो दर परदा तेरे साथ वाबस्ता हैं जैसे बीबियां और कनीज़ें। रब्बुल-आलमीन फरमाता है कि उन में से किसी पर भरोसा न करो और अपना कारसाज़ उन्हें न जानो। कि सबसे अव्वल तो मैं हूं कि तुझे अदम से वजूद में लाया। और आख़िर मैं हूं कि तेरा रुजूअ मेरी ही जानिब होगा। और ज़ाहिर भी मैं हूं कि तुझे बेहतरीन सूरत देकर संवारा। और बातिन भी मैं हूं कि हकाइक व असरार को तेरे दिल में वदीअत रखा। ऐ अज़ीज़! मर्द को चाहिए कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मानिन्द दुनिया से मुंह फेरे और जान ले कि यह सब मेरे दुश्मन हैं सिवाए रब्बुल-आलमीन के। माल को मेहमानों पर सर्फ करे। फरज़न्दों को कुरबान करने का इरादा रखे। और फिर अपने आपको जलती आग में झोंक दे ताकि दोस्ती का दावा सच्चा उतरे।

तुमने हमारे साथ मुहब्बत का दावा किया है तो कुछ दलील भी चाहिए। मूसा अलैहिस्सलाम की सी मुहब्बत हो और ख़लील अलैहिस्सलाम का दिल। अगर उस महबूबे जलील की कुर्बत मन्ज़ूर है तो माल व जान व जिस्म सबको निशाने राह बनाओ।

जिसे तेरा इरफान नसीब हो गया वह जान व माल। अह्लो अयाल और माल व मताअ का क्या करे। तूने तो उसे दीवाना बना कर दोनों

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...दिए। अब तेरा दीवाना दोनों जहां का क्या करे।
...मशाइख़ फ़रमाते हैं कि मैंने किसी तारिकुद्दुनिया अब्दाल से ...तहकीके हक़ का कौन सा रास्ता है? फ़रमाया कि मख़्लूक़ पर ...रखो कि उस पर नज़र डालना तारीकी है। मैंने कहा कि उस ...नहीं। तो फ़रमाया कि उनकी बात मत सुनो कि उनकी बात ...दिली है। मैंने कहा कि उससे भी गुरेज़ नहीं हो सकता। ...कि उनके साथ मुआमला मत रखो कि उनके साथ मुआमला ...वहशत है। मैंने कहा कि मैं तो उन्हीं में रहता हूं तो उससे फ़रार ...मुम्किन है। फ़रमाया कि उनका सहारा मत तको। कि उनका ...तकना हलाकत है। मैंने कहा शायद (यह हो सके) तो फ़रमाया ...कुलां ग़ाफ़िलों पर नज़र रखो। जाहिलों की बातें सुनो। झूठों से ...करो और चाहते हो कि हक़ के साथ भी तुम्हारा दिल लगा ...वह हरगिज़ नहीं हो सकता।

...अपने आपे में रह और अपना ही हमदम व हम्राज़ हो जा। मुझे तो ...अफ़्सोस है कि कोई ग़ैर तेरे पास बैठे। हज़रत मख़्दूम ख़्वाजा ...-हक़ वद्दीन महमूद कुद्दिसा सिर्रुहू ने फ़रमाया कि मैं अपने ...दौरे तलब में इस हद तक दूसरों की सोहबत से बचता कि ...जमीअत में हाज़िर न होता अगरचे इस वजह से मौलाना ...द्दीन वहिया और मौलाना अलाउद्दीन बनकी को तक्लीफ़ होती ...मैं उसे बर्दाश्त करता। और किसी मज्लिस में उस ज़माना में न ...कि किसी काम का बोझ मुझ पर न रखें। और कोई काम उस ...तक पूरा हो नहीं सकता जब तक कोई दिल को न मारा जाए और ...से दूर गोशा नशीनी इख़्तियार न करे। काम यूं नहीं बनता कि ...इशराक़ और तहज्जुद को रस्म बना कर अदा करे। ज़ाहिर में तो ...दुर्वेशों की सी सूरत रखे और दिल में खुदा जानता है कि क्या ...तमन्नाएं हैं और कैसे-कैसे ख़्यालात आते हैं।

...लोग अह्दे अलस्तु बेरब्बेकुम से मुन्तख़ब हो चुके और इस पैमाने ...से मदहोश हैं, वही हैं जिन्होंने दर्दे इश्क़ की मंज़िल में अपने पांव ...दिए और जांबाज़ी के लिए हाथ कुशादा कर दिए हैं। और ऐसे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

होशियार हैं कि एक ही जस्त में दरियाए हुदूस से बाहर हुए और फ़ानी फ़िल्लाह हो कर बाक़ी बिल्लाह बन गये। यह भी तरफ़ा तमाशा है कि वह है भी और नहीं भी है। बस यह गरोह है अह्ले तौहीद का। बाक़ी सब खुद परस्ती में मुब्तला हैं।

कहते हैं कि एक मरतबा जुनैद कुद्दिसा सिर्रुहू ने राबेआ बसरीया को यह पैग़ाम दिया कि हमें ज़ौजियत में कुबूल कर लो ताकि इबादत में कुछ मदद मिल जाए। राबेआ रज़ि अल्लाहु अन्हा ने जवाब दिया कि मर्द में सिर्फ़ एक हिस्सा शहवत है और नौ हिस्सा अक़्ल जब कि औरत में नौ हिस्सा शहवत है और एक हिस्सा अक़्ल। अब कि तुम्हारा एक हिस्सा शहवत, अक़्ल के नौ हिस्सों पर ग़ालिब आ गया तो चाहते हैं कि मेरा वक़्त भी ख़राब करें और मुझे अल्लाह तआला की मशग़ूली से रोक दें और अपनी ख़िदमत में लगा लें।" जुनैद कुद्दिसा सिर्रुहू ला जवाब हो गये और यह शेअ्र पढ़ा।

तरजमा : यानी जो औरत हज़ार मर्दों से बेहतर है वह तुम हो और जो मर्द एक औरत से शर्मिंदा हो वह मैं हूं।

नक़्ल है कि मरयम सल्लल्लाहु अला नबीयेना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम से लोगों ने कहा कि आप शादी क्यों नहीं कर लेतीं। फ़रमाया कि मेरा दिल अल्लाह तआला की मुहब्बत में मस्रूफ़ है और ज़बान उसके ज़िक्र में और बदन उसकी इबादत में मशग़ूल है। अगर शौहर करूंगी तो मेरा दिल उसमें लगा रहेगा। ज़बान उसको जवाब देही में और बदन उसकी ख़िदमत में। मुझे तो शर्म आती है कि ख़ालिक़ से फिर कर मख़्लूक़ से मशग़ूल हो जाऊं। क़ुतुबे आलम शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रुहू ने फ़रमाया कि सुल्तान इब्राहीम का जब वह वक़्त आन पहुंचा कि आप मुख़ालिफ़त से बाज़ आएं तो एक रोज़ शिकार में एक शिकार के पीछे घोड़ा दौड़ाए जा रहे थे कि वह जानवर अपना मुंह इब्राहीम के पास लाया और कहने लगा कि ऐ इब्राहीम क्या इसी लिए पैदा किए गये हो। इब्राहीम के दिल में उसी वक़्त से एक ख़ौफ़ व दहशत पैदा हो गई। बाज़ लोग यूं कहते हैं कि इब्राहीम के बराबर एक दुकान थी और इब्राहीम उस दुकान पर बैठे हुए थे कि एक शख़्स आया, अमामा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सर बांधे और एक रस्सी का टुक्ड़ा ऊंट वालों की तरह सर से हुए चाहता था कि इब्राहीम के मकान में दाख़िल हो। लोगों ने कि कहां जाते हो जवाब दिया कि उस सराए में।" लोगों ने कहा वह सराए नहीं इब्राहीम का मकान है। उस ने कहा कि इब्राहीमी को मकान किस से पहुंचा। लोगों ने कहा कि बाप की वरासत में पाया उन्होंने कहा कि उनके बाप ने किस से पाया। लोगों ने कहा कि अपने बाप से। उस ने कहा कि बस मुसाफिर ख़ाना भी तो यही है कि एक आए और एक जाए। यह कह कर वह शख़्स पलट इब्राहीम को तंबीह हुई और उसके पीछे चल दिए। जब दरवाज़े बाहर निकले। उस शख़्स को देखा। आवाज़ दी कि अपने माबूद के रुक जा। फिर उससे पूछा कि तू कौन है और क्यों आया। उसने जवाब दिया कि मैं ख़िज़्र हूं और इसलिए आया कि तुझे ख़ुदा की के रास्ते में डाल दूं। कहा कि अगर इजाज़त हो तो सब काम करके आऊं। आपने जवाब दिया कि उस से जल्दी का कोई काम बस यहीं से चल पड़ो।

जब तक तुम दुनिया का काम ठीक करोगे देर होगी और जब देर तो तेरा दिल हम से सैर हो चुका होगा। हज़रत ख़िज़्र ग़ायब हो और इब्राहीम कुद्दिसा सिर्रुहू एक गड़रिए के यहां पहुंचे। अपने उसे दिए और उसके कपड़े ख़ुद पहने। तमाम अह्लो अयाल को के हवाले किया और बयाबान को चल दिए।

तू अपने आपको कश्ती में डाल दे और तस्बीह न पढ़ कि ख़ुद -कुद्दुस फरमाएंगे बिस्मिल्लाह मज्रीहा।

दोस्त का यगाना बन जा फिर मख़्लूक़ का क्या डर। तुझे तो तेरा चाहिए। दुनिया पर ख़ाक डाल।

कहते हैं कि इमाम शिबली कुद्दिसा सिर्रुहू पर कैफ़ियत तारी थी कि शख़्स ने कहा कि आप नहीं जानते कि अल्लाह तआला रहमान है। हां जानता तो हूं लेकिन जब तक मैंने उसकी रहमत को न हरगिज़ न कहा कि मुझ पर रहम फरमा। इसलिए कि जिसे हाजत है उससे मांगेगा और जिसे ख़ुद उसकी हाजत है वह और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

क्या मांगेगा। मख़्दूमे मिल्लत शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि राबेआ रज़ि अल्लाहु अन्हा मुनाजात में यह कहती कि "ख़ुदाया अगर राबेआ ने दोज़ख़ की आग से डर कर तेरी इबादत की है तो उसे दोज़ख़ मे जला दे। और अगर बहिश्त की उम्मीद में तेरी परस्तिश की है तो जन्नत राबेआ पर हराम कर दे और अगर तेरी इबादत सिर्फ तेरे लिए की है तो अपने दीदार से राबेआ को महरूम न रख।

ऐ दोस्त कुछ तो ग़ौर कर कि सल्फे सालेहीन ने और तमाम तबकात के बुज़ुर्गाने दीन ने जो अपनी इज़्ज़त और माल व मताअ् को बरबाद किया। जंगलों मे फिरते रहे। मख़्लूक़ से एक दम किनाराकशी की। महीनों और छिल्लों खाने पीने के पास न फटके। ज़िक्र व मुराक़बा में डूबे रहे और किसी घड़ी किसी सआदत, ज़िक्र व फ़िक्र से ख़ाली न रहे। यह उन्होंने क्यों किया। क्या सिर्फ़ दोज़ख़ से बचने और जन्नत में बसने की ख़ातिर। अस्तग़्फ़िरुल्लाह, इन चीज़ों के लिए ऐसी मुसीबत उठाने और सख़्ती झेलने की क्या ज़रूरत है? शैख़ अहमद ग़ज़ाली कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया है कि मर्द को चाहिए कि तलब का बल्ला हाथ में ले और नियाज़ मन्दी की गेंद से खेले। कभी उस गेंद को आसमान की तरफ़ फेंके। कभी लौह पर, कभी क़लम पर, कभी बुलन्दी पर और कभी पस्ती पर। यहां तक कि नागाहे सआदत नमूदार हो और सिरा पर्द-ए-इज़्ज़त तक उसकी रसाई हो जाए। अब अगर उसका लिबास ख़्वाजगान का लिबास है (यानी दुनियादारों का) तो उसके मुह पर मार देते हैं और अगर फ़क़ीरों का लिबास होता है तो फिर दुर्वेशी के ख़ल्वत ख़ाना में ले जा कर, सद्र मक़ाम पर बिठा देते हैं।

क़ुतबे आलम शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि मरदाने ख़ुदा वह हैं जो तमाम रसूलों के आक़ा की पैरवी करके दम ज़दन में आसमान और फ़रिश्तगान से गुज़र जाते हैं और अपना क़दम क़ाबे क़ौसेन और अदना पर रखते हैं और जिन्न व इन्स के आमाल की जानिब मुतवज्जेह नहीं होते कि आशिक़ों का एक सांस जिन्न और इंसानों की इबादत से बेहतर है।

ऐ दुनिया वालो! सब मिल कर दौड़ो ताकि आशिक़ों के क़ाफ़िले से

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मिल जाओ और ऐ चुपके-चुपके मेहराब में दुआ करने वालो! सैंकड़ों काफ़िले गुज़र चुके हैं। तुम अभी तक नींद में हो। हां-हां ऐ अज़ीज़ाने जवांमर्दों का हाल आम लोग नहीं जानते कि किस क़िस्म के परिन्द हैं। अरे यह रहमान के उश्शाक़, सुबहान के मुश्ताक़ हैं। अपनी जान व जिस्म को आग में झोंकने वाले, हज़रत माबूद के कलन्दर, बेगुनाह दीवाने और उस बादशाह के शोरीदा सर हैं। उन दीवानों का अजीब हाल है। नहीं-नहीं बल्कि उन मर मिटने वालों का अजब हाल है कि उनकी इबादतें सब गुनाह हैं। और मासियतें सब इबादत, उनका गुफ़्तार उनका किरदार है और उनका किरदार, उनकी गुफ़्तार। यह सब ग़ायब हैं मगर हाज़िर और हाज़िर हैं मगर ग़ायब।

बादशाह हैं मगर हमारा कोई मुल्क नहीं। इस बिना पर हम फ़क़ीरी पर नाज़ किया करते हैं हदीसे कुदसी में है कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने फ़रमाया मेरे औलिया मेरे कुबा कुदरत के नीचे हैं कि उन्हें सिवाए मेरे कोई नहीं पहचानता।" इरशाद फ़रमाया। (बाहर निकलो हल्के जी या भारी दिल से) इमाम कुशैरी कुदिसा सिर्रुहू ने इरशाद फ़रमाया कि ख़फ़ाफ़ (हल्के जी वह हैं जो खुदा के सिवा हर तमन्ना से पाक और आज़ाद हैं और सिक़ाल भारी दिल वह हैं जो तअल्लुक़ात की क़ैदों में जकड़े हुए हैं। बहरुल-हक़ाइक़ में मज़्कूर है कि ख़िफ़ाफ़ मज्ज़ूब हैं जो इनायत की कशिश से सुलूक की राह पर चल पड़े हैं और सिक़ाल वह सालिक हैं कि हिदायत की परवरिश से जज़्ब-ए-हक़्क़ानी की जानिब हैं। यह दोनों ही राहे सुलूक के रहरु हैं। एक कशिश के बाज़ू से उड़ता है और दूसरा सईए पैहम के पैरों से चलता है वह जो कोशिशे मुसलसल के पैरों से रास्ता तय करता है हर क़दम के नीचे एक दुनिया रौंदता चलता है और वह जो कशिश व इक़बाल के बाज़ुओं से उड़ता है आंख झपकने में मासिवा अल्लाह का मुशाहिदा कर लेता है।)

बन्द-ए-आरिफ़ जब उन परों से उड़ता है तो चश्म ज़दन में नौ आसमानों से गुज़र जाता है। ज़ाहिद की सैर एक दम में एक रोज़ा राह के बराबर होती है और आशिक़ की सैर हर साअत अर्शे इलाही तक रहती है। हज़रत ज़ुन्नून मिस्री ने फ़रमाया कि मैंने शाम के बाज़ साहिलों पर एक

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

औरत को देखा। मैंने उस से कहा कि कहा से आती हो जवाब दिया। उस क़ौम के पास से कि – जिसके पहलू बिछौनों से दूर रहते हैं और वह अपने रब को डरते हुए उम्मीद लगाए पुकारते हैं।" मैंने कहा कि कहां का इरादा है। जवाब दिया कि उन लोगों की जानिब कि जिन्हें न तिजारत अल्लाह के ज़िक्र से रोके और न ख़रीद व फरोख़्त। मैंने कहा कि उनका हाल बयान करो।

वह क़ौम जिसने अपने तमाम हौसले, अल्लाह तआला से मुतअल्लिक कर दिए हैं। उन की कोई मुराद ऐसी नहीं जिसकी तरफ़ तुम उन्हें मन्सूब कर सको। उस क़ौम का मक़्सूद तो उनका मालिक और आक़ा है और कैसे साहबे जमाल हैं वह जिनका मक़्सूदे कुल वह बेनियाज़ माबूद है।

शैख़ुल–इस्लाम क़ुद्दिसा सिर्रुहू से मन्कूल है कि अहमद बिन ख़ज़िरा दमिश्क़ी एक रोज़ अपने मां–बाप के पास बैठे थे और इस्माईल अलैहिस्सलाम की क़ुरबानी का वाक़या क़ुरआन शरीफ़ से पढ़ कर उन्हें सुना रहे थे कि उनकी मां ने कहा कि ऐ अहमद हमारे पास से उठो और जाओ हमने तुम्हें राहे ख़ुदा के लिए कर दिया। आप उठ बैठे और अर्ज़ किया कि "ख़ुदाया अब तेरे सिवा मेरा कोई और नहीं।" और काबा की तरफ़ चल पड़े। अरसा–ए–दराज़ के बाद कि आप सुलूक की चौबीस मंज़िलें तय कर चुके थे। वालिदैन की ज़ियारत का क़स्द किया। जब दमिश्क़ में अपने घर के दरवाज़े पर पहुंचे तो ज़ंजीर हिलाई। उनकी वालिदा ने फरमाया कि कौन है दरवाज़ा पर जवाब दिया कि मैं हूं अहमद। उस वक़्त आपकी वालिदा ने कहा कि उस से पहले हमारा एक बेटा था जिसे हमने ख़ुदा की राह में दे डाला। अब किसी अहमद व महमूद का हम से क्या वास्ता।

हम जो कुछ रखते थे तेरे नाम पर फ़िदा कर चुके जान को तेरी तमन्ना की क़ैद में असीर करके हमने ख़ुद अपने को भुला दिया और दोनों जहां को भी। और जो कुछ है सब तेरे ही लिए किया है।

अल्लाह तआला का इरशाद है।

यानी हम ने इब्राहीम और इस्माईल अलैहिमस्सलाम की जानिब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

वही भेजी कि अपने ख़ान–ए–दिल को दुनिया व आख़िरत से तअल्लुक़ात की कसाफ़तों से पाक साफ़ रखो कि यह दोस्त का हरम है। घर की सफ़ाई नजासतों और गन्दगियों के दूर करने से होती है और दिल की सफ़ाई मुलाहिज़–ए–अग़ियार की तत्हीर से। कहते हैं कि एक आक़ा शराब ख़ाने से घर लौट कर आया और ख़ादिम से कहा कि मुझे कोई जगह बता कि नमाज़ पढ़ लूं। उसने जवाब दिया कि पहले अपने दिल को मासिवा अल्लाह से पाक करो उसके बाद जहां चाहे नमाज़ अदा करो।

उस मेहराबे अबरू से मुंह न फेरो अगरचे तुम मस्जिद में न सही शराब ख़ाना में हो।

ज़ादुल–अबरार से मन्क़ूल है कि यहिया मआज़ राज़ी क़ुद्दिसा सिर्रुहू के एक भाई मक्के तशरीफ़ ले गये और वहां जाकर मुजावर बन गये और यहिया की ख़िदमत में एक ख़त लिखा कि मेरी तीन तमन्नाएं थीं। दो पूरी हो चुकीं तीसरी के लिए दुआ करो कि वह भी हासिल हो। पहली आरज़ू तो यह थी कि अपनी आख़िर उम्र में उस ज़मीन पर पहुंचूं जो तमाम ज़मीनों से अफ़ज़ल है चुनांचे मैं हरम में वारिद हो चुका जो तमाम ज़मीनों से मुअज़्ज़म है। दूसरी तमन्ना यह थी कि अल्लाह तआला मुझे एक गुलाम दे जो मेरी ख़िदमत करे। अल्लाह तआला ने एक कनीज़ बख़्श दी। तीसरी तमन्ना यह है कि मौत से पहले आपको देख लूं। दुआ कीजिए कि यह भी मयस्सर हो जाए।" यहिया क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने जवाब लिखा कि यह जो तुमने लिखा कि मेरी आरज़ू बेहतरीन ज़मीन के लिए थी तो तुम खुद बेहतरीन मर्द बन कर जहां चाहे रहो। ज़मीन मर्द से मुअज़्ज़ज़ होती है न कि मर्द ज़मीन से। और यह जो लिखा कि एक ख़ादिम की आरज़ू थी वह मिल गया तो अगर तुममें मुरव्वत व जवांमर्दी होती तो हक़ के ख़ादिम को अपना ख़ादिम न बनाते और अल्लाह की इबादत से उसे अपनी ख़िदमत में मशग़ूल न करते तुम्हें तो ख़ादिम बनना चाहिए था जब कि तुम मख़्दूम बनने के हरीस हो। और यह आरज़ू रखते हो कि मुझे देख लो। अगर तुम्हें खुदाए तआला की कुछ ख़बर होती तो मेरी याद न आती। हक़ में ऐसे मुस्तग़रक़ हो जाओ कि तुम्हें किसी की याद न आए। अगर उसे तुमने पा लिया तो मेरा क्या

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

करोगे और अगर उसे नहीं पाया तो फिर मुझ से क्या फ़ाइदा।

इब्राहीम ख़्वास से हिकायत की जाती है कि उन से कहा गया कि इब्राहीम बिन अदहम आए हैं उन से मुलाक़ात न करोगे? जवाब दिया कि मैं एक हरीस शिकारी व ज़िन्दा से मुलाक़ात करूं यह उस से अच्छा है कि इब्राहीम से मिलूं।" कहा गया कि यह क्यों। जवाब दिया कि जब मैं उन्हें देखूंगा बात बनाने की कोशिश करूंगा और मेरा नफ़्स मेरे अच्छे अहवाल का इज़्हार, पसन्द करेगा। और इसमें फ़ित्ना है। यह एक आलम बिन्नफ़्स का कलाम है कि नफ़्स के अख़्लाक़ भी जानता है और वाक़ई यह चीज़ हम नशीनों में ज़ाहिर होती रहती है मगर हां जिसे अल्लाह तआला महफ़ूज़ रखे। बाज़ (मशाइख़ ने फरमाया कि आया इससे भी ज़्यादा शर कोई देखा जिसे तुम पहचानते हो।)

मैं उस दोस्त की सोहबत से आज़ुरदा रहता हूं जो मेरी बुराइयां अच्छी करके दिखाता। मेरे हर ऐब को कमाल जानता और मेरे कांटों को गुलाब और या सुमन बताता है। वह शख़्स उस वक़्त तक मेरा बेबाक और बेवफ़ा दुश्मन है जब तक कि मेरा ऐब मुझे न दिखाए।

फ़ुज़ैल अयाज़ क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि मैं उस शख़्स का बहुत एहसानमन्द हूं जो मुझ पर गुज़रे और सलाम न करे। और जब मैं बीमार पड़ूं तो मेरी अयादत को न आए। और वाक़ई ऐसा होता भी है कि मुरीदे सादिक़ अह्ले सलाह की सोहबत से उस से ज़्यादा बिगड़ जाता है जितना अह्ले फ़साद की सोहबत से। उसकी वजह यह है कि वह अह्ले फ़साद और अह्ले फ़साद के तरीक़े अमल को जान कर उससे परहेज़ करेगा और अह्ले सलाह का सलाह उसे धोखे में डाल देगा। वह हम जिन्स होने के सबब उनकी तरफ़ माइल हो जाता है। अब उनके दर्मियान फ़ितरी और आदी इस्तेराहत रूनुमा होती है जो उनके और हक़ीक़ी सोहबत के दर्मियान जो अल्लाह के लिए होती है हाइल हो जाती है। नतीजतन उनकी सोहबत से उस शख़्स की तबीअत में फ़ुतूर पैदा हो जाता है। मुरीदे सादिक़ को हमेशा उस नुक्ता पर मुतनब्बह रहना चाहिए।

किसी अमन की जगह जा और वक़्त की फ़ुर्सत को ग़नीमत जान

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

इसलिए कि उम्र की कमीनगाह में राहज़न भी होते हैं। अल्लाह तआला का इरशाद है। (जन्नत में जन्नतियों के लिए उनकी मन मानी और आंख भाती नेमतें हैं) (उसकी तशरीह में) एक दुर्वेश ने फरमाया है कि अहले नज़र जानते हैं कि आंखों की लज़्ज़त किस चीज़ में है? वह अहले नज़र जिनकी इबरत वाली नज़रों पर यक्सूई के हिजाब तारी हो चुके हैं और उन्हें अनवारे जमाल (तुम अन्क़रीब अपने रब को देखोगे) की ताबिशों ने छुपा लिया है ज़रा उन से पूछो कि तलज़्ज़ुल–आयुनु की क्या तफ्सीर है? हर साहिबे बसीरत पर रौशन है कि अहले शौक़ को जमाले महबूब की ज़ियारत के अलावा कुछ और मतलूब नहीं।

सामने से पर्दा उठा कि तेरे चाहने वालों की आंखों की लज़्ज़त, तेरे दीदार के सिवा किसी और चीज़ में नहीं। रास्त रफ्तार, मुश्ताके हज़रत परवरदिगार यानी हज़रत मालिक दीनार रज़ि अल्लाहु अन्हु मुनाजात में यूं अर्ज़ किया करते थे कि इलाही जब तू मुझे जन्नत में दाखिल फरमा कर यह फरमाए कि ऐ मालिक मैं तुम से राज़ी हूं तो उस वक्त मुझे ख़ाकिस्तर कर देना और जन्नत अहले जन्नत को बख़्श देना।

तेरा मस्ताना रक़्स उसी वक़्त तेरे काम आ सकता है कि तू दोनों जहान से अपनी आस्तीन झाड़ ले।

कहते हैं कि अगर बहिश्त में दीदारे इलाही का वादा न होता तो आरिफ़ों की ज़बानों पर बहिश्त का नाम भी न आता। जन्नत अहले मारिफ़त के लिए ज़िन्दां है जिस तरह दुनिया अहले ईमान के लिए क़ैदख़ाना।

कहा जाता है कि अगर हज़रत सुल्तानुल–आरेफ़ीन कुद्दिसा सिर्रुहू की ज़बान पर दुनिया का ज़िक्र आ जाता तो आप वुज़ू करते और अगर जन्नत का ज़िक्र आ जाता तो गुस्ल फरमाते। लोगों ने अर्ज़ किया कि हज़रत यह क्या बात है और क्यों। फरमाया कि दुनिया मुहद्दिस है लिहाज़ा उसका ज़िक्र हदस हुआ और हदस से वुज़ू करना चाहिए और जन्नत ख़्वाहिशात के पूरा करने की जगह है तो उसका ज़िक्र बहाले मौजूद जनाबत हुआ और जनाबत से गुस्ल ही करना चाहिए। यह मरदाने खुदा का ज़िक्र हो रहा है। मुख़न्नसों का ज़िक्र नहीं। कोई भी फ़ुज़ूल बकवास न करे। वह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

जो तल्वार चलाता और तल्वार का ज़ख़्म खाता है वह और है। और जो प्याला साफ़ करता और दूसरों का झूठा सुरीद खाता है वह और बादशाहों के बराबर कब हो सकते हैं। नक़्ल है कि बा यज़ीद बुस्तामी कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि मैंने चालीस साल रियाज़त के बाद अस्सी हज़ार पर्दे उठाए और गिड़ गिड़ाया कि अब मुझे राह बताई जाए। ख़िताब हुआ कि तुम्हें इस टूटे हुए पियाले और पोस्तीन के टुकड़े के होते हुए राह नहीं मिल सकती (जो कुछ रखते हो उसे फेंक दो।) मैंने फौरन उसे फेंक दिया। निदा आई कि ऐ बायज़ीद अब उन मुद्दयाने फ़ुक़्र से कह दो कि बायज़ीद ने चालीस साल की रियाज़त के बावजूद जब तक टूटा हुआ प्याला और पोस्तीन का टुकड़ा न फेंक दिया उसे कोई समरा न मिला। जबकि तुम इतने तअल्लुक़ात से बंधे होने के बावजूद फ़ुक़्र के मुद्दई हो और तुमने तरीक़त को अपनी ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया का दाना और जाल बना रखा है। क़सम है कि तुम हरगिज़ कोई फल न पा सकोगे।

नकल है कि हज़रत शफ़ीक़ बल्ख़ी कुद्दिसा सिर्रुहू के मुरीदों में से एक मुरीद को हज पर जाने के अस्बाब मयस्सर हुए। हज़रत शफ़ीक़ बल्ख़ी से इजाज़त चाही। आपने फरमाया कि जाओ ख़ुदा को सौंपा लेकिन जब बस्ताम में पहुंचो तो हज़रत सुल्तानुल-आरेफ़ीन कुद्दिसा सिर्रुहू की क़दमबोसी से ज़रूर शर्फ़ हासिल करना। और मेरी जानिब से उन्हें सलाम दुआ कहना। जब वह मुरीद बस्ताम पहुंचे और बायज़ीद की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए तो आपने पूछा कि तुम कौन हो और कहां से आए हो? जवाब दिया कि हज़रत शफ़ीक़ बल्ख़ी के मुरीदों में से एक मुरीद हूं। हज के इरादा से निकला हूं। दरयाफ़्त किया कि तुम्हारे पीर क्या काम करते हैं? जवाब दिया कि तवक्कुल की मंज़िल पर ख़ुद को संवार रहे हैं और आपके तवक्कुल का पाया यहां तक पहुंचा है कि आप कहते हैं कि तमाम आसमान लोहे का हो जाए और तमाम ज़मीन पथरीली हो जाए। न आसमान से कुछ बरसे। न ज़मीन से कुछ पैदा हो और तमाम मख़्लूक़ मेरी किफ़ालत में आ जाए तब भी तवक्कुल से न फिरूंगा। और अगर गेहूं का दाना चौदहवीं का चांद हो जाए और तमाम मख़्लूक़ मेरी अयाल हो तब भी ख़ुदा की क़सम परवाह न करूंगा।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned with CamScanner

कुत्लानुल–आरेफ़ीन ने फरमाया कि यह तो बड़ा सख़्त काफिर मनुष्य और बड़ा ढीठ मुश्रिक सरिश्त है। अगर अबू यज़ीद एक परिन्दा भी हो तो उस मुश्रिक के मकाम पर न उड़े। उस से मेरी जानिब से कह देना कि खुदाए तआला को दो रोटियों के लिए क्यों आज़माता है। अगर तुझे रोटी की जरूरत है, तो हम जिन्स से मांग खा। ताकि तेरी नहूसत से यह शहर और वह विलायत तबाह न हो।

अब यहां मुअल्लिफ़ कहता है कि हज़रत शफीक़ कुद्दिसा सिर्रुहू का तवक्कुल जो तमाम मख़्लूक़ के वहम व गुमान में नहीं आता उस पर गिरह के लिए अबू यज़ीद जैसे आरिफ़ ही जुरअत कर सकते हैं वरना किस की मजाल और किस में दम है कि इस तवक्कुल में बात कर सके।

नक्ल है कि लोगों ने हज़रत ओवेस से अर्ज़ किया कि एक शख़्स तीस साल से क़ब्र के किनारे, पांव क़ब्र में लटकाए और कफन गले में डाले हुए मुसलसल रोता रहता है। हज़रत ओवेस ने फरमाया कि हमें वहां ले चलो। चुनांचे सब वहां पहुंचे और उस शख़्स की यह कैफ़ियत देखी। तो आपने फरमाया कि ऐ बन्द–ए–खुदा! तीस बरस से तुझे इस क़ब्र और कफन ने खुदाए तआला से फेर कर अपनी जानिब मशग़ूल कर लिया है और तू इन्हीं दो के बाइस पीछे रह गया है। यह दोनों तेरी राह के बुत हैं। वह शख़्स इस बात की तह को पहुंचा। एक नारा लगाया और जान दे दी। और क़ब्र में गिर पड़ा। सुबहानल्लाह! अगर क़ब्र और कफ़न भी हिजाबे राह हैं तो फिर बन्दगी क्या है। आज हर शख़्स अपने गुमाने फासिद और ख़्याल बातिल में मदहोश है। अगर दीन इस आसानी से हासिल होता जैसा कि लोग समझते हैं कि मरदाने खुदा के दिल पानी–पानी और अंबिया व मुरसलीन के जिगर कबाब न होते। ऐ अजीज तुझे उन मरदाने हक़ के दीन की क्या ख़बर? उनकी जान दिन रात हसरत में जलती रहती है। अगर तुझ से हो सके कि उनमें से किसी एक के तऐयुन की ख़िदमत कर सके तो यह भी एक बड़ा काम है (तलाश कर कि) वह लोग कहां हैं जिनके क़दमों की खाक का सुर्मा लगाया जाता है।

"तेरे ज़माने वालों में से अगर एक भी बरगुज़ीदा मिल जाए तो मक़सूद हासिल है। मगर वह एक भी कहां है।" ऐ अज़ीज़! अगर पाक

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

[illegible] शराबे हक़ हाथों से जाती रहती तो उसका क्या दरमान। और [illegible] बाक़ी रही तो यह है सारी उल्झनों का सामान। शायद [illegible] लुटेरों को हर शख़्स शुयूख़े इज़ाम कहने लगा। उसका नतीजा यह [illegible] कि मशाइख़ में (इज़ाम) हड्डियों के सिवा कोई बाक़ी न रहा।

[illegible] बेश क़ीमत लअ्ल, किसी और ही कान से मिलता है और [illegible] मोती की अलामत ही कुछ और है। ई व आं का अन्देशा और [illegible] का ख़्याल नहीं। इश्क़ के अफ़्साना का उनवान ही कुछ और है।

अज़ीज़े मन! अगरचे शेख़ी (बुज़ुर्गी) का शीन शुक्रे शीर और शहद के [illegible] की तरह है और उसकी ख़ा ख़ुशी और ख़ुर्मी में इज़ाफ़ा करती है मगर दर्मियान की या हर्फ़े इल्लत है यह इल्लतें बढ़ाती और मुसीबतों और बलाओं को लाती है। मख़्लूक़ की तवज्जोह और उनमें क़बूलियत लोहे की ज़ुन्नार है मगर अल्लाह तआला की इनायत से यह भी पिघल जाती है। तो शेर नर, शेर मर्द और सादिक़ को चाहिए कि इस जाल से क़लन्दर की तरह बाहर आ जाए।

यह मलामत की गेंद हलाकत का मैदान है। इस मैदान में बाज़ी ले जानेवाला, ऐसा माहिर होना चाहिए जो चाक दामन क़लन्दरों की तरह हो और गुबारे राह के मानिन्द बेख़ौफ़ व ख़तर गुज़र जाए। ऐ अज़ीज़ बन्दा होना भी यक़ीनन क़तअ़न एक बड़ा काम है मगर बन्दा कहलाता वह है जो तमाम तअल्लुक़ात से पाक और आरज़ुओं के जाल और अपनी ख़्वाहिशों की लज़्ज़तों से आज़ाद हो।

नक़्ल है कि ख़्वाजा जुनैद क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने फ़रमाया कि मैं एक मरतबा बीमार हुआ। मैंने दुआ की कि इलाही मुझे शिफ़ा दे। एक आवाज़ सुनी कि ऐ जुनैद बन्दे और मौला तआला के दर्मियान तेरा क्या काम तू दर्मियान में न पड़। जो कुछ तुझ से फ़रमाया गया है उसमें मशग़ूल रह और जिस में मुब्तेला किया गया है उस पर सब्र कर। तुझे अख़्तियार से क्या वास्ता। एक मरतबा आपके पैर में दर्द हुआ। सूरः फ़ातिहा पढ़ कर पैर पर फूंक दी। हातिफ़ ने आवाज़ दी कि ऐ जुनैद! क्या तुम्हें शर्म नहीं आती कि अल्लाह तआला का कलाम अपने नफ़्स के हक़ में सर्फ़ करते हो।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

नक़्ल है कि एक मरतबा बायज़ीद बुस्तामी कुद्दिसा सिर्रुहू ने एक सेब हाथ में लिया और फरमाया कि कितना लतीफ़ है। ऊपर से आवाज़ आई कि ऐ बायज़ीद शर्म नहीं आती कि हमारा नाम सेब को देते हो। चालीस रोज़ आपको खुदाए तआला का इस्मे आज़म याद न आया तो क़सम खाई कि बाक़ी उम्र बुस्ताम का मेवह न खाऊंगा। सुबहानल्लाह यह कौन से मक़ामात हैं कि ज़माना के दानिशवरों की अक़्लें उसके समझने से परेशान हैं जबकि हम में से हर एक उन से महज़ मुशाबिहत पर नाज़ां है।

ऐ अपनी मां के प्यारे जा और अपना रास्ता ले। जब तू आशिक़ नहीं है तो अपना काम कर। तू इस गदागरी और बग़ल की गन्दगी के साथ बादशाहों के दरबार में जगह नहीं पा सकता। खोटे सिक्के न चलाओ कि परखने वाला बड़ी बसीरत रखता है। कोई उसे कुतबुल–अक़्ताब कहता है कोई कुदव–ए–अस्हाब कह कर पुकारता है मगर उस बेचारे ने अभी तक मुसलमानी का चेहरा भी नहीं देखा। यह अपनी ही सना व नेक नामी पर फ़रेफ़्ता व फ़रेब ख़ूरदह है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बन्दा नेक नामी की बदौलत मश्रिक़ व मग़्रिब में मशहूर हो जाता है मगर अल्लाह के नज़्दीक एक मक्खी के पर के बराबर भी वज़न नहीं रखता। अगर मतलूब यह है कि ख़ल्क़ रुजूअ़ करे तो पत्थरों की सूरतें भी बाज़ लोगों का मरजा व मअ़बद हैं और अगर शोहरत मक़्सूद है तो इब्लीस सबसे ज़्यादा मशहूर है।

मलऊन और बेशहादत इब्लीस से हज़ारों बातें आदत के ख़िलाफ़ सादिर होती हैं। कभी यह दीवार से ज़ाहिर होता है और कभी बालाख़ाना से। कभी वह दिल में बैठता है कभी जिस्म में। तेरी तमाम करामतें हक़ परस्ती में हैं। इस गुरूर, नमूद, खुद बीनी और फ़रेब हस्ती से मावरा। और अगर तेरी करामतें तेरी ख़ुद नुमाइयां हैं। तो तू फ़िरऔन है और यह ख़ुदाई का दावा। तेरी तमाम तजवज्जोह मख़्लूक़ की जानिब है तू हरगिज़–हरगिज़ अपने आपको इस "बीमारी" में गिरफ़्तार न कर।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

चौथा सुंबुला

दुर्वेशों की इबादतों और अच्छी आदतों का बयान उन्हीं में वुज़ू पर हमेशगी है

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि "जिस किसी को कोई मुसीबत पहुंचे और हो वह बेवुज़ू तो वह मुलामत न करे मगर अपने नफ़्स को" लिहाज़ा चाहिए कि एक घड़ी भी बग़ैर वुज़ू के न रहे कि सालिक मोमिन वुज़ू की हिमायत में रहता है। वह पलक झपकने पर भी बेवुज़ू न रहे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि "अल-वुज़ूओ हिस्नुल-मोमिन।" वुज़ू मोमिन का मुहाफ़िज़ है।" मख़्दूमे मिल्लत शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रुहू जब ख़्वाब से बेदार होते तो फौरन ही तयम्मुम करते और उसके बाद वुज़ू की तैयारी करते और फरमाते कि इंसान की असल पैदाइश पानी और मिट्टी से है और उन दोनों से दुनिया की आग बुझाई जाती है तो क़वी उम्मीद है कि आख़िरत की आग भी उसके बाइस बुझा दी जाए। अह्ले मारिफ़त कहते हैं कि जो शख़्स हमेशा बावुज़ू रहता है अल्लाह तआला उसे सात ख़स्लतों की इज़्ज़त बख़्शता है। अव्वल फ़रिश्ते उसकी सोहबत से रग़बत करते हैं। दूसरे आमाल के लिखने वालों का क़लम हमेशा सवाब लिखने में जारी रहता है। तीसरे उसके बदन के तमाम अज्ज़ा तस्बीह करते हैं। चौथे उस से पहली तक्बीर फौत नहीं होती, पांचवे फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त करते और उसके सोते वक़्त देवों और परियों से। छठे अल्लाह तआला जांकनी की दुशवारी को आसान फरमा देता है। सातवें यह कि वह अल्लाह तआला की अमान में रहता है जब तक बावुज़ू रहे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि "अत्ताहूरु निस्फ़ुल-ईमान" पाकी आधा ईमान है। इसलिए कि काफिर जब मुसलमान होता है तो उसका ईमान दो चीज़ों को मिटा देता है। एक कुफ़्र दूसरा गुनाह। और मुहदिस (बेवुज़ू) जब पाक होता है तो उसकी पाकी एक चीज़ को मिटा देती है यानी गुनाहों को। लिहाज़ा साफ

https://t.me/AhleSunnat_HindiBooks

ज़ाहिर होता है कि पाकी आधा ईमान है लिहाज़ा मुरीदे बासफ़ा को चाहिए न खाए न पिए न कोई बात कहे और न सोए मगर पाकी की हालत में। ताकि ज़ाहिरी पाकी की बरकत से बातिनी पाकी भी हासिल हो।

मख़्दूमे मिल्लत शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि सूफी को एक करवट से दूसरी करवट बदलना, बेग़ैर वुज़ू के हराम है। अगर जान उसी वक़्त निकल जाए तो रूह जिस्म से बेग़ैर वुज़ू के निकलेगी। और जो शख़्स बावुज़ू रहता है और उस हालत में उसे मौत आती है तो उसे शहादत का मरतबा दिया जाता है। लिहाज़ा अक़लमन्द को यह बात देखा है कि मौत के लिए हमेशा तैयार रहे कि जब उसे मौत अचानक आ जाए तो रूह दुनिया से पाक हो जाए। आपने यह भी फरमाया है कि शरीअत में फ़र्ज़ अदा करने के लिए वुज़ू फर्ज़ है। ख़ाना काबा के तवाफ़ के लिए नीज़ दूसरे मवाक़े पर वुज़ू वाजिब है और सोते वक़्त ग़ीबत, झूठ, बेहूदा बात करने, कहक़हा मार कर हंसने और ला यानी अमल के बाद मुस्तहब है लिहाज़ा उसे चाहिए कि वुज़ू पर हमेशगी रखे ताकि उसके दिल में रब्बानी अनवार जल्वागर हों और तारीकी में उसे वह चीज़ नज़र आने लगें जो उस से पहले न देख सकता था। बुज़ुर्गाने दीन फरमाते हैं कि वुज़ू फसल है और नमाज़ वसल। साहिबे बहरुर्राइक ने फरमाया है कि आयते करीमा या ऐयुहल्लज़ीना आमनू इज़ा कुमतुम इलस्सलाते अल-आयह। के मानी अह्ले बातिन की ज़बान में यह हैं कि ईमान वालो जब तुम नींद की ग़फ़लत से जागो और नमाज़ की जानिब मुतवज्जेह हो जो तुम्हारी मेअ्राज है तो मक़ामे कुर्बत में। तुम अपने चेहरों को जिनसे तुमने दुनिया की तरफ़ तवज्जोह की, तौबा और इस्तिगफार के पानी से धो डालो और अपने हाथों को दुनिया व आख़िरत के इलाक़ों के थामने और दोनों आलम के तअल्लुक़ों से पाक करो। और सर का मसह करो यानी अपने नफ़्सों को अल्लाह तआला की रज़ा के रास्ता में डाल दो। और अपने पीरों को ज़ेबिल्लत की मिट्टी और अनानियत के मक़ाम से धो लो। और अगर तुम्हें जनाबत हो कि तुम हमारे अलावा किसी और की जानिब तवज्जोह कर बैठे तो उस से पाक साफ़ हो जाओ।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ऐ शख़्स पिन्दार से अपने लुथड़े हुए वजूद को कुबूल (के पानी) से पाक व साफ़ कर इसलिए कि यह पाकी राहरो को नमाज़ी बना देती है।

नमाज़ में हुज़ूरी :

हज़रत मूसा बिन जाफ़र से कहा गया कि लोग आप की नमाज़ को फ़ासिद कर देते हैं कि आपके सामने से गुज़रते रहते हैं। फ़रमाया कि वह ज़ात जिसकी ख़ातिर मैं नमाज़ पढ़ता हूं मुझ से ज़्यादा क़रीब है। उन लोगों के मुकाबला में जो मेरे सामने से गुज़रते हैं।

हक़ की जानिब तवज्जोह करने। हुज़ूरी क़ल्ब मुतहक़्क़िक़ हो जाने सबसे हट कर उसकी तरफ़ भागने। और उसकी राह में नियाज़मन्दी से हक़ीक़तन नमाज़ से हासिल होती है। हज़रत ज़ैनुल-आबेदीन अली बिन हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की यह हालत थी कि जब आप नमाज़ पढ़ने का इरादा करते तो आपके चेहरे का रंग बदल जाता और आप पहचान में न आते। आपसे जब उसके मुतअल्लिक़ कुछ कहा जाता तो फ़रमाते कि "क्या तुम जानते हो मैं किस के सामने खड़े होने का इरादा करता हूं।" ऐ अज़ीज़ शरीअत में एक वुज़ू से पांचों नमाज़ें अदा की जा सकती हैं लेकिन तरीक़त में दस बार गुस्ल के बाद भी एक नमाज़ का अदा करना मुश्किल होता है। उसकी शर्त कपड़ों (वग़ैरह का) पाक होना है मगर उसकी शर्त जान का पाक होना। शरीअत में हाथ सीना पर बांधते हैं और यहां सर पर पांव होते हैं। (रुख़्सत करने वाले की सी नमाज़ पढ़ो) यह साहबे शरीअत अलैहिस्सलातु वत्तहीयत का इरशाद है यानी असल के हो जाओ। फ़रअ् पर क्या क़याम है।

ज़ाहिदों की नमाज़ को रुकूअ् व सुजूद है और आशिक़ों की नमाज़ तर्क वजूद। क़याम कअ्दा तक्बीर और नीयत यह सब ऐने मईयत में महव है।

इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला ने-

इन्नस्सलाता तन्हा अनिल-फ़हशाए वल-मुंकर।

यानी नमाज़ की यह ख़ासियत है कि बन्दा को फ़हशा यानी बुरे काम से जो अक़्ला "मज़्मूम है और मुंकर से यानी उन कामों से जो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

फ़हशा व मअ़यूब हैं रोक देती है। रिवायत है कि एक अन्सारी जवान हमेशा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हमराह जमाअत से नमाज़ अदा करता मगर कोई ऐसी बुराई न थी जिसमें वह मुब्तेला न हो। लोगों ने उसका माजरा हुज़ूर रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया। फरमाया कि उस को उसकी नमाज़ तमाम बुराईयों से रोक देगी। चुनांचे थोड़े ही अरसा में उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ हुई और वह तारिकुद्दुनिया सहाबा में शुमार हुए।

साहिबे तावीलात ने बयान किया है कि जिस्म व जान, क़ल्ब व रूह और सिर्र व ख़फ़ी से हर एक के लिए जुदागाना नमाज़ है जो उसे बाज़ रखती है। चुनांचे जिस्म की नमाज़, आदमी को गुनाहों और मम्नूअ़ बातों से रोकती है। नफ़्स की नमाज़ बुरी आदतों और बुरे ताल्लुक़ों से मना करती है दिल की नमाज़ फुज़ूल बातों के ज़ुहूर और गफ़लत में पड़े रहने से रोकती है रूह की नमाज़ मुलाहिज़ा अग़्यार से बाज़ रखती है। सिर्री नमाज़ मासिवा अल्लाह की तरफ़ इल्तिफ़ात से रोक देती है। और नमाज़ ख़फ़ी सालिक को, दोई के शुहूद और अनानियत के ज़ुहूर से गुज़ार देती है यानी उस पर (उसके आसार) ग़ालिब आ जाते हैं।

इस आलम का सीम व ज़र सिर्फ़ वही एक है उसी को देखो। उसी पर नज़रें लगाओ और किसी क़ीमत पर उसे फ़रोख़्त न करो।

याद रखो कि इख़्लास में सबसे बढ़ कर इंतिशार पैदा करने वाली चीज़ नुमाइश व नुमूद है। मसलन अगर कोई शख़्स नमाज़ पढ़ता हो और दूसरा आदमी उसे देखे, या उससे मिलने आए तो शैतान कहता है कि नमाज़ अच्छी तरह पढ़ो ताकि उस देखने वाले की नज़र में पसन्दीदा हो जाओ।" चुनांचे उसके आज़ा में इंकिसार और अतराफ़ में ख़ुशूअ़ पैदा हो जाता है और वह अच्छी तरह नमाज़ पढ़ने लगता है। ज़ाहिर है कि यह खुली हुई नुमाइश व रिया है। दूसरा दरजा यह है कि अगर नमाज़ी इस आफ़त को जानता और उस से परहेज़ करता है और अपनी नमाज़ जैसा पढ़ रहा था, पढ़ता रहता है तो अब शैतान उसके दिल में यह बात डालता है कि तू मत्बूअ़ व मुक़्तदा है नमाज़ अच्छी तरह अदा कर ताकि लोग तेरी इत्तिबा व पैरवी करें और तेरे आमाल को हुज्जत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बनाएं। यह चीज़ पहले से ज़्यादा दिल में उतर जाने वाली है। हो सकता है कि उसमें वह शख़्स मुब्तला हो जाए जो पहली में न फंसा था। और यह चीज़ भी रिया और इख़्लास को बरबाद करने वाली है कि जो शख़्स उसकी इक़्तिदा व पैरवी करेगा सवाब पाएगा मगर ख़ुद यह नमाज़ी एताब व एक़ाब का मुस्तहिक़ है। तीसरा दरजा उन पहले दोनों दरजों से भी ज़्यादा दक़ीक़ है। और वह यह है कि नमाज़ी यह जाने कि मेरा इख़्लास यही है कि मेरी नमाज़ तन्हाई में भी वैसी ही हो जैसे सब के सामने। और उसे अपने नफ़्स परवरदिगार से उसकी शर्म आती है कि मख़्लूक़ के सामने अपनी आदत से ज़्यादा ख़ुशूअ़ का इज़्हार करे, लिहाज़ा वह ख़ल्वत में भी वैसी ही नमाज़ पढ़ता है जैसी ख़ल्वत में चाहता है और सबके सामने भी वैसे ही। और यह भी दिल में जल्द उतर जाने वाली रिया है इसलिए कि उसने अपनी नमाज़ तन्हाई में अच्छी तरह अदा की मगर इस ख़्याल से कि सबके सामने भी अच्छी तरह पढ़े और उन दोनों नमाज़ों में कोई फ़र्क़ न रहे। लिहाज़ा ख़ल्वत व जल्वत में उसकी तवज्जोह मख़्लूक़ की जानिब रही। गोया यह शख़्स हर वक़्त, ख़ल्वत व जल्वत में ख़ल्क़ के साथ मशग़ूल रहता है और यह भी शैतान के छुपे हुए मकरों में से है।

तू अपनी परस्तिश का चेहरा हक़ से मत फेर। सबको छोड़ कर उसी में मशग़ूल रह। यहां तक कि दुनिया वाले तुझे हैच व ला शय जानें। जब तेरी बन्दगी का इल्तिफ़ात ख़ुदा की तरफ़ और तुझे जिब्रील भी न देखें तो यह भी रवा है। चौथा दरजा कि उन सबसे दक़ीक़ तर और पोशीदा तर है यह है कि शैतान उस से कहता है कि तू अल्लाह की अज़मत, जलाल की बारगाह में दाख़िल हो चुका उसके रू-ब-रू खड़ा है ज़रा शर्म कर कि अल्लाह तआला तेरे दिल को देख रहा है और तू उस से ग़ाफ़िल है। और इस ख़्याल के आते ही वह अपने दिल में ख़ुज़ूअ़ और आज़ा में ख़ुशूअ़ पैदा कर लेता और समझता है कि यह तो ऐन इख़्लास है हालांकि वह निरा शैतान का धोखा और फरेब है। इसलिए कि इसका ख़ुशूअ़ अगर जलाले इलाही के बाइस होता तो ला मुहाला यह

https://t.me/AhleSunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ख़तरा उसे तन्हाई में भी लाज़िम रहता। और उसके दिल का ख़ुज़ूअ़ व हुज़ूर किसी और की मौजूदगी के वक़्त नुमायां न होता।

वह पारसा जिनकी पारसाई का रुख़ मख़्लूक़ की जानिब होता है वह दर हक़ीक़त क़िबला की तरफ़ पीठ करके नमाज़ पढ़ते हैं। एक मरतबा एक कफ़न चोर हज़रत बायज़ीद बुस्तामी की ख़िदमत में हाज़िर आया और इस हरकत से तौबा की। हज़रत ख़्वाजा ने उस से दरयाफ़्त किया कि तूने कितने मुर्दों का कफ़न चुराया होगा? जवाब दिया कि एक हज़ार मुर्दों का। दरयाफ़्त फ़रमाया कि उनमें ऐसे कितने थे जिनका मुंह क़िबला की तरफ़ था? जवाब दिया कि सिर्फ़ दो का। बाक़ी लोगों का मुंह मैंने क़िबला से फिरा हुआ पाया।

उन्हीं में से रोज़ा और भूख है। मशाइख़े सूफ़िया का इस अम्र पर इत्तिफ़ाक़ है कि मुतवातिर चार रोज़ तक रोज़ा न रखना मक्रूह है। मुन्तख़बुल-हक़ाइक़ में मन्क़ूल है कि रोज़े की दो क़िस्में हैं। एक तो खाने पीने से रुकना दूसरे गुनाहों से बाज़ रहना। कहा गया है कि सौम में तीन हरफ़ हैं साद दलालत करती है नफ़्स की सियानत व हिफ़ाज़त पर गुनाहों से। वाव नफ़्स की विलायत पर कि आज़ा को ताअत पर लगाए और मीम रोज़ादार की रोज़ा पर मुदावमत व हमेशगी पर। मौत के वक़्त तक। बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि मैंने अपने घर में एक दिन रात का खाना कभी जमा न किया और जब से मैं मुसलमान हुआ पेट भर के खाना न खाया इसलिए कि शिकम सेरी को कुफ़्र की कुन्नियत दी जाती है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "भूखे का हंसना पेट भरे के रोने से अच्छा है।"

और मुसलमान भाई के कहने से रोज़ा नफ़्ल तोड़ने की इजाज़त ज़वाल से पहले है। ज़वाल के बाद रोज़ा न तोड़े हां जब कि बाप उस्ताद या पीर कहे (तो रुख़्सत है।) हमारे बुज़ुर्गों ने अपने मुर्शिदों के उर्स के रोज़ भी इफ़्तार जाइज़ क़रार दिया है अगरचे ज़वाल के बाद हो। यह भी याद रहे कि नफ़्ल रोज़ा का मुसलमान भाई के कहने से तोड़ना उसी वक़्त सही व जाइज़ है जब ख़ुद उसके नफ़्स की ख़्वाहिश खाने में शामिल न हो इसलिए कि बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि –

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

यानी नीयत का ख़ालिस करना सिर्फ़ मुवाफ़िक़त के लिए, जब कि नफ़्स का शर भी हो, बहुत दुश्वार है। बुज़ुर्गों ने यह भी फ़रमाया है कि शिकम सेरी नफ़्स में एक नहर है कि उस जगह शैतान पहुंच जाते हैं और भूख रूह में एक नहर है जहां फ़रिश्तों का गुज़र होता है। बिश्र बिन हारिस रज़ि अल्लाहु अन्हु कहते हैं कि भूख दिल में सफ़ा पैदा करती ख़्वाहिशात को मारती। उन्हें दूर भगाती और उस पर इल्मे दक़ाइक़ की राहें खोलती है। जुनैद क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने फ़रमाया है कि हम ने तसव्वुफ़, क़ील व क़ाल से नहीं, बल्कि भूख, तर्के दुनिया और अपनी मरग़ूब और नफ़्स की मत्लूब चीज़ों को छोड़ देने से हासिल किया है।

हक़ीक़त के असरार सवाल से हल नहीं होते और न इज़्ज़त व माल की दरयाफ़्त से; बल्कि जब तक तुम बीसियों साल तक अपनी आंखों और दिल का ख़ून न करोगे क़ाल से हाल की तरफ़ रास्ता न पा सकोगे।

यानी भूख को अपनी ख़ूराक बना लो ताकि तुम ख़ुदा के मक़्बूल बन्दे हो जाओ और जब तुम ख़ुदा के मक़्बूल हो जाओ फिर तमाम दुनिया पर नाज़ कर सकते हो। हज़रत सिद्दीक़ा आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि आपने फ़रमाया कि आलमे मलकूत के दरवाज़े से चिपटे रहो, यहां तक कि वह खुल जाए। लोगों ने अर्ज़ किया कि वह किस तरह। फ़रमाया कि हमेशा भूखे रहने और प्यासे रहने को लाज़िम कर लो यहां तक कि तुम पर इस आलमे मलकूत का दरवाज़ा खुले और तमाम आलमे मलकूत में दाख़िल हो जाओ।

मन्क़ूल है कि एक रोज़ मख़्दूमे मिल्लत शैख़ फ़रीद शकरगंज क़ुद्दिसा सिर्रुहू सुल्तानुल–मशाइख़ निज़ामुद्दीन क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू के ज़ानों पर सर रखे हुए आराम फ़रमा रहे थे कि हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ के दिल में यह ख़्याल पैदा हुआ कि रोज़ा पर हमेशगी में क्या फ़ाइदा है? मख़्दूम शैख़ फ़रीद शकरगंज ने आंखें खोलीं और फ़रमाया कि बाबा निज़ामुद्दीन उस रास्ता का तीसरा हिस्सा रोज़ा पर हमेशगी से मुतअल्लिक़ है।" उसके बाद फिर आराम फ़रमाने लगे। सहल तस्तरी रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इबादत तीन चीज़ों से होती है। ज़िन्दगी, अक़्ल और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...फ़ेज़ाब पर

...से। अगर तुम्हें यह ख़ौफ़ हो कि भूखे रहने से कमज़ोर हो जाओगे और ताक़त जवाब दे जाएगी तो भी खाना न खाओ कि भूखे कमज़ोर का बैठ कर नमाज़ अदा करना, पेट भरे ताक़तवर की खड़े हो कर नमाज़ पढ़ना से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है और जब तुम्हें यह अन्देशा हो कि ज़िन्दगी या अक़्ल को कुछ नुक़्सान पहुंचेगा तो खा लेना चाहिए कि फ़ुक़्हा फ़रमाते हैं कि "सैरी से ज़्यादा खाना हराम है और ... गरोहे सूफ़िया के नज़्दीक, सैर हो कर खाना असराफ़ है और जो कुछ रग़बत से खाएं वह भी असराफ़ है। अब्दुल–वाहिद ज़ैद रज़ि अल्लाहु अन्हु से एक शख़्स ने कहा कि फ़लां शख़्स अपने दिल की जो कैफ़ियत बयान करता है वह मुझ में नहीं। फ़रमाया कि वह ख़ाली रोटी खाता है और तू रोटी और खजूर। उसने कहा कि अगर मैं उस से हाथ खींच लूं तो क्या इस मरतबा तक पहुंच जाऊंगा? फ़रमाया हां। उसने कहा मैंने उसे छोड़ा और फिर रोने लगा। लोगों ने कहा खुजूर के लिए रोते हो। अब्दुल–वाहिद रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि उसका नफ़्स खुजूर को पसन्द रखता था और मैंने उसका अज़्मे रासिख़ मालूम कर लिया कि हरगिज़ न खाएगां वह इसलिए रोता है।

यह भी लाज़िम है कि इफ़्रात व तफ़्रीत न करे यानी खाने और न खाने में हद से न गुज़र जाए। सैय्यदुत्ताइफ़ा जुनैद क़ुद्दिसा सिर्रुहू अपने असहाब से फ़रमाया करते कि चार चीज़ें मुझ से क़ुबूल कर लो फिर जो कुछ भी मुझ से चाहो मैं तुम्हारे रू–ब–रू हूं। (मिल जाएगी) कम कहना, कम सोना, कम खाना और कम आना जाना।

मर्दे आरिफ़ जब क़ुर्ब की लज़्ज़त पा लेता है तो उसे न खाने की कोशिश होती है और न पीने की।" कहा गया है कि आरिफ़ों का खाना मरीज़ों का सा, उनका सोना डूबे हुवों का सा, और उनका कलाम उस औरत का सा होता है जिसका बच्चा जाता रहे।

अगर तू लज़्ज़तों को छोड़ने की लज़्ज़त जान ले तो फिर नफ़्स की लज़्ज़त को लज़्ज़त न जाने। तफ़्सीर अराइस में आयते करीमा *या अईयुहल लज़ीना आमनू कुतेबा अलैहिमुस सियामु* के तहत में फ़रमाया कि हज़रत रब्बुल–अरबाब की जानिब से, आसमाने ग़ुयूब के अतराफ़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

में। बिलाले मुशाहिदा के मुतलाशियों को खिताब मुस्तताब होता है और यह खिताब ग़म व कर्ब को दूर करने वाला, दिलों के लिए फरहत अफ़्ज़ा होता है कि अहले यक़ीन! तुम पर फ़र्ज़ किया गया बाज़ रहना। अपनी तमाम मरग़ूबात से।" इसलिए कि मुशाहिदा की तरफ़ तवज्जोह करने वालों पर यह रोज़ा वाजिब है दिल की मानूस चीज़ों से।" इसी वजह से एक बुज़ुर्ग ने फरमाया कि अदुन्निया यौमुन व लना फ़ीह सौमुन। दुनिया सिर्फ़ एक रोज़ की है और हमें इसमें रोज़ा रखना है ऐनुल-कुज़ात कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि रोज़ा शरीअ़त में न खाने और न पीने का नाम है और हक़ीक़तन एक मतऊम और मशरूब की तरफ़ इशारा है खाना तो यह है कि जिसकी तरफ़ इशारा फरमाया नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि ऊतीतु इन्दा रब्बी। मुझे मेरे रब के पास इनायत फरमाया गया" और वह है जिसका कुरआन में ज़िक्र है कि सक़ाहुम रब्बुहुम शराबन तहूरा। अल्लाह तआला ने उन्हें पाकीज़ा शराब पिलाई।

उन्हीं में हलाल कमाई है :

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है।

तरजमा : ऐ पैग़म्बर पाकीज़ा खाओ और नेक अमल करो।

कुव्वतुल-कुलूब में बयान किया है कि अकले हलाल को हर अच्छे अमल पर मुक़द्दम किया इसलिए कि अमले सालेह, तआमे तैयब का नतीजा है। हज़रत शैखुल-इस्लाम कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि तुख्म तख़ुम है और अमल उसका फल। तो बीज जितना अच्छा होगा उसका फल उतना ही उम्दा। मनाहिज में बयान किया कि हर वह ग़िज़ा जिसे शरीअ़त ने हलाल बताया है उसका असर, जो बहुक्मे शरीअ़त, अदालत इस्तिक़ामत वग़ैरह है और उसके साथ मौजूद है। वह नफ़्स में और तमाम आज़ा में ज़ाहिर होता है और उस वक़्त वह नफ़्स, इबादत की अदाइगी में नर्म और फरमांबरदार बन जाता है। इरशादे बारी है। यानी फिर उनके बदन और दिल अल्लाह के ज़िक्र के लिए नर्म पड़ जाते हैं। उसमें इसी तरफ़ इशारा है। और शरीअ़त ने जिस ग़िज़ा को हराम बतलाया है या उसके हलाल होने की वजह मुश्तबह या पोशीदा है उस

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ग़िज़ा का असर जो इंहिराफ़ व सरकशी है उसके साथ बदन में पहुंचता है। अगरचे वह एक ही लुक़्मा हो। उस वक़्त उस ग़िज़ा का असर नफ़्स और अज्ज़ाए बदन में दौड़ जाता है और गुनाह कोशी, सरकशी, मम्नूआत की बजा आवरी और ख़राब आदतों का चस्का, यह बातें ज़ाहिर होती हैं। हदीस शरीफ़ में फरमाया कि अल्लाह तआला तैय्यब है। वह तैय्यब ही को कुबूल फरमाता है।"

हाथ और दिल ज़मज़म व कौसर से धो और उसका पानी परहेज़गारी के चश्मे से ढूंढ। वह निवाला जो असल में हलाल नहीं होता। उस से आदमी सिर्फ़ गुमराही में पड़ता है। तेरी बारिश का क़तरा जब साफ़ नहीं है तो फिर तेरे दरिया का गौहर भी शफ़्फ़ाफ़ न होगा। हां (ऐ ग़ाफ़िल) यह मुआमला भी अजीब है कि बाज़ वक़्त शुबह वाली चीज़ें और ग़ैर ज़रीआ हलाल के चन्द लुक़्मे खाने से, ताअत और इबादत में ज़्यादती महसूस होती और नेक कामों की तरफ़ रग़बत बढ़ती मालूम होती है (मगर ला हासिल)।

नक़्ल है कि एक जवान ने इब्राहीम अदहम कुद्दिसा सिर्रुहू से बैअत की। और फरमांबरदारी और इबादत में इतना आगे बढ़ गया कि उसे ज़िक्र व फ़िक्र व मुराक़बा और तिलावत के बग़ैर चैन न पड़ता। यहां तक हज़रत इब्राहीम अदहम को हैरत भी हुई और शर्मिंदगी भी। कि यह नौजवान इतनी इबादत करता है कि मुझे मयस्सर नहीं होती। कुछ मुद्दत बाद आपने नूरे बातिन से मालूम किया कि उसकी यह इबादत सब बेसूद है। उसकी कोई बुनियाद नहीं कि उसका खाना पीना ग़ैर शरई ज़रीओं और शुबहों से है। आपने फरमाया कि "ऐ जवान जो खाना तू खाता है मत खा। तुझे जो कुछ खाना है मेरे साथ खा।" उसने ऐसा ही किया यहां तक कि उसकी वह तमाम रियाज़तें और इबादतें ना तमाम व नाक़िस रह गईं। और यह हालत हो गई कि फ़र्ज़ नमाज़ का अदा करना भी उस पर दुश्वार हो गया। एक रोज़ हज़रत इब्राहीम से अपनी रियाज़त और इबादत की कमी और कोताही का ज़िक्र किया और अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला की इबादत में जो रग़बत और कोशिश मुझे इससे पहले थी अब वह बाक़ी नहीं रही। इब्राहीम अदहम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि हलाल रोज़ी खाओ। फिर तुम पर यह वाजिब नहीं कि रात को क़याम करो और दिन में रोज़ा रखो (क्योंकि हलाल खुद तमाम इबादात की असल है)।

शुबह का लुक़्मा पलीद बीज है जिसकी पैदावार सिवाए नापाकी के कुछ नहीं। तुझे पाक दरबार में हाज़िर होना है लिहाज़ा पाकीज़ा और पाक व साफ़ हदिया लेकर चल।

सिद्दीके अकबर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अपने गुलाम की कमाई का दूध पिया फिर उस गुलाम से पूछा कि यह दूध कहां से लाए। उसने जवाब दिया कि मैंने एक गरोह की किताबत की उन्होंने यह दूध मुझे दिया। सिद्दीके अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी उंगली मुंह में डाली और उस दूध को सख़्ती और तक्लीफ़ से बाहर उगल दिया और इस तरह कि दूसरे यह समझे कि यह शायद अपनी जान दे देंगे। इसके बाद सिद्दीके अकबर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि या इलाही उस दूध का माज़रत ख़्वाह हूं जो रगों में पहुंच चुका और वरीद में मिल गया। किसी ने यह वाक़या रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया। आपने इरशाद फरमाया कि क्या तुम यह नहीं जानते कि सिद्दीक़ के पेट में सिवाए पाकीज़ा खाने के कुछ और नहीं जाता। मन्क़ूल है कि जो शख़्स चालीस रोज़ तक शुबह का खाना खाता है उसका दिल अन्धा हो जाता है। इमाम सहल तस्तरी रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि जिसे यह महबूब हो कि सिद्दीक़ों की निशानियां उस पर मुंकशिफ़ हो जाएं उसे चाहिए कि सिवाए हलाल के कुछ और न खाए और सिवाए हाजत और ज़रूरत के कोई काम न करे। लिहाज़ा ख़्याल रखना चाहिए कि सिवाए हलाल व तैय्यब के कुछ न खाए कि जो गोश्त हराम से पैदा हो उसके लिए दोज़ख ही ज़्यादा बेहतर है। हलाल वह है कि उसकी हिल्लत पर शरअ़ फतवा दे और तैय्यब वह है जिसका दिल फतवा दे।

मख़्दूमे मिल्लत शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि एक मरतबा कुछ लोग एक दुर्वेश को खुशामद व मिन्नत से एक बादशाह के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

दस्तरख़्वान पर ले गये। जब खाना चुना गया उस दुर्वेश ने अपनी आस्तीन से चन्द रोटियां निकालीं और खाना शुरू कर दिया। बादशाह ने कहा कि यह खाना हलाल ज़रीए का है उसे खाइए। दुर्वेश ने कहा कि अगरचे हलाल है मगर मेरा दिल फतवा नहीं देता। बादशाह ने कहा कि मैं आपसे फिर अर्ज़ करता हूं कि हलाल ज़रीआ से मैंने यह खाना तैयार कराया है आप खाते क्यों नहीं? मेरे खाना खाने से किसी का ईमान तो नहीं चला जाएगा। जवाब दिया कि अगरचे ईमान तो न जाएगा मगर ईमान की हलावत ज़रूर चली जाएगी। तफ़सीर में है कि जब आदम अलैहिस्सलाम ने वह दाना जिससे मना फरमा दिया गया था खा लिया, और उसकी शोमी से तख़्त व ताज चला गया और लिबास व हुल्ला ज़ाइल हो गया और आप जन्नत से बाहर तशरीफ़ लाए, तो आपने पशीमानी की हालत में मुंह में उंगली डाली और क़य कर दी। ज़मीन के कीड़े मकोड़ों और हशरातुल–अर्ज़ सांप वग़ैरह ने वह क़य खा ली। तो उसका ज़हर उनके तालुओं, डंकों और दांतों में असर कर गया। और जो घास उस क़य की जगह उगी उसमें ज़हर का असर ज़ाहिर हुआ और जो नुत्फ़ा कि उस लुक़्मा की ग़िज़ा से पैदा हुआ, उससे क़ाबील पैदा किया गया। जो कुफ़्र व फसाद का मन्शा था और जिसने क़त्ल व ज़ुल्म की बुनियाद रखी। उससे तुम अन्दाज़ा लगा सकते हो कि नाजाइज़ लुक़्मा क्या असर रखता है।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने फरमाया कि अगर तुम नमाज़ पढ़ो यहां तक कि बूढ़े हो जाओ और तुम रोज़ा रखो यहां तक कि कमानों के चिल्लों की तरह हो जाओ। तुम से हरगिज़ कबूल न किया जाएगा मगर उस परहेज़गारी के साथ जो तुम्हें बाज़ रखे। (मन्क़ूलात से) इमाम अहमद बिन हंबल हज़रत यहिया बिन मईन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा के पास बहुत ज़्यादा आम्दो रफ़्त रखते। एक मरतबा यहिया बिन मुईन ने फरमाया कि मैं किसी से कुछ न मांगू और न यह पूछूं कि कहां से आया और अगर वह दे तो खा लूंगा। इमाम अहमद बिन हंबल कुद्दिसा सिर्रुहू ने उनकी सोहबत छोड़ दी। ख़्वाजा यहिया रहमतुल्लाह ने फरमाया कि मैंने मज़ाक़ में यह बात कही थी और आप

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

से मुआफ़ी चाही। इमाम अहमद ने फ़रमाया कि दीन के कामों में मुझ से मज़ाक़ करते हो। क्या नहीं जानते कि खाना भी उमूरे दीन से है और अल्लाह तआला ने उसे अमले सालेह पर मुक़द्दम किया है और फ़रमाया है। कि कुलू मिनत्तैय्यिबाते वअ्मलू सालेहन।

कहते हैं कि फ़ुज़ैल अयाज़ इब्ने उतबा और इब्ने मुबारक मक्का में हज़रत वहब के पास गये। कुछ अरसा के बाद ताज़ा खुजूरें याद आईं। हज़रत वहब ने फ़रमाया कि मैं ताज़ा खुजूरें नहीं खाता हूं इसलिए कि मक्का की खुजूरें ज़ुबैदा वग़ैरहा के बाग़ों से मिलती जलती हैं। इब्ने मुबारक ने फ़रमाया कि अगर इन बातों का ख़्याल करोगे तो तुम पर रोटी खाना भी दुशवार हो जाएगा। इसलिए कि ख़ालिस भी शुबह से ख़ाली नहीं। वहब पर ग़शी तारी हो गई. हज़रत सुफ़ियान ने इब्नुल-मुबारक से कहा कि उस शख़्स को तुमने मार दिया। उन्होंने कहा कि मेरी मुराद सिवाए उसके और कुछ न थी कि उनका काम उन पर आसान कर दूं। जब आप होश में आए तो मिन्नत मानी कि रोटी हरगिज़ न खाऊंगा। चुनांचे उस रोज़ से दूध पीना शुरू किया। एक रोज़ आपकी वालिदा उनके लिए दूध लाईं। आपने पूछा कहां से आया? वालिदा ने जवाब दिया कि फ़ुलां क़बीला की बकरियों का है। फ़रमाया कि उन्हें वह बकरियां कहां से मिलीं। आपकी वालिदा ने सब हाल बयान किया। जब आप दूध अपने मुंह के क़रीब ले गये तो फ़रमाया कि बकरियां चरती कहां हैं? फ़रमाया कि उस मक़ाम पर कि मुसलमानों का उसमें हक़ है। और फ़रमाया कि अल्लाह तआला मुआफ़ फ़रमाएगा। पी जाओ। फ़रमाया कि हरगिज़ न पियूंगा। मैं नहीं चाहता कि उसकी मग़फ़िरत गुनाह के बदला में लूं। बाज़ सलफ़ ने फ़रमाया है कि मैं अल्लाह तआला से उसकी शर्म रखता हूं कि मैं दो सौ साल के बाद हलाल रिज़्क़ मांगूं। हां वह रिज़्क़ मांगूंगा कि मुझे उस पर अज़ाब न दे।

उन्हीं में से रात का क़याम है : अल्लाह तआला फ़रमाता है। हमने रात को लिबास बनाया। फ़ुतूहात में बयान किया गया है कि रात असहाबुल्लैल यानी रात में क़याम करने वालों का लिबास है कि उन्हें दूसरों की नज़र से छुपा देती है ताकि वह अपनी तन्हाई में मुकालमा व

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मुहासरा या मुशाहिदा में से हर एक की लज़्ज़त का हिस्सा अपनी लियाक़त के मुताबिक़ पाएं। हज़रत शैख़ुल-इस्लाम ने फ़रमाया कि रात रास्ता चलने वालों की पर्दादार और दिन सुबह के वक़्त जागने वालों का बाज़ार है।

रात आशिक़ों के लिए पर्दा है। ऐ काश कि उसका वक़्त हमेशा रहता।

जब रातों को उस दोस्त का ख़्याल मेरे दिल में बसा रहता है तो मैं रात का गुलाम हूं और दिन मेरा बाज़ार है।

ख़्वाजा ओवेस क़रनी क़ुद्दिसा सिर्रुहू से मन्क़ूल है कि आप किसी रात को यह कहते कि यह रुकूअ़ की रात है और एक ही रुकूअ़ में रात गुज़ार देते और किसी रात में फरमाते कि यह सज्दा की रात है और एक सज्दा में सुबह निकालतें। लोगों ने अर्ज़ किया कि ऐ ओवेस आप तो इतनी ताक़त रखते हैं कि एक ही हालत में इतनी बड़ी-बड़ी रातें गुज़ार देते हैं। फ़रमाया कि रातें बड़ी-बड़ी कहां हैं। ऐ काश कि अज़ल से अबद तक एक ही रात होती ताकि उसे मैं एक ही सज्दा में गुज़ार देता और उस सज्दा में बहुत ज़्यादा नाला व शुयून और गिरया व ज़ारी करता।

आधी रात को जब सब लोग मीठी नींद में मदहोश होते हैं। उस वक़्त मैं होता हूं, तेरा ख़्याल होता है और दर्द भरे नाले।

अल्लाह तआला का इरशाद है :

उनके पहलू ख़्वाबगाहों से जुदा रहते हैं।' इसकी तफ़्सीर में मुफ़स्सेरीन ने बयान किया है कि यह आयत तहज्जुद गुज़ारों और रात जाग कर गुज़ारने वालों की शान में है कि जब सब लोग रात का पर्दा गिराए और गफ़्लत के तकिए पर सर रखते हैं, तो यह लोग अपने गरम बिस्तरों और नर्म फ़रशों से उठते, नियाज़मन्दी के क़दमों पर क़्याम करते, और सारी-सारी रात ख़ुदाए क़ुद्दूस की बारगाह में बहालत राज़ व नियाज़ गुज़ार देते हैं।

ख़ुदा के दोस्तों की अन्धेरी रातें रोज़े रौशन की तरह ताबनाक रहती हैं। यह सआदत अपने बाज़ू के बल पर नहीं जब तक वह बख़्शने वाला

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

न बख़्शे।

ऐ अज़ीज़! सुबह तक जागने वालों के लिए उस वक़्त ख़ुदा... व जल्ला के यहां बड़ी इज़्ज़त है। और इबादत में रात का गुज़ार... दिल की सख़्ती को दूर करता और मुहब्बत को रास्त बना देता। लिहाज़ा बन्द-ए-मुसलमान अपना दिल गुनाहों से गन्दा न करे... उसकी नहूसत से रात के क़्याम से महरूम रह जाएगा ख़्वाजा... कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि मैं एक गुनाह की वजह से पांच... रात के क़्याम से महरूम रहा। लोगों ने दरयाफ़्त किया कि वह कौन... गुनाह था। फरमाया कि मैंने एक शख़्स को रोते हुए देखा तो मैंने... में कहा। यह रियाकर है। यह भी एहतियात रहे कि दोपहर के... के बाद क़द्रे आराम करना न छोड़े कि यह क़ैलूला है और सुन्नत। ... क़्यामे शब का मुआविन। याद रखें कि इशा की नमाज़ के बाद ... वुज़ू और गुस्ल भी शब बेदारी में असरे तमाम रखता है। और म... व इशा के दर्मियान जागना सुन्नते मुअक्कदा है।

इमाम कुशैरी कुद्दिसा सिर्रुहू ने आयते करीमा यअ्लम ख़ाइनतुल आयुने। (वह आंखों की ख़्यानतें जानता है) की तफ़्सीर में ... फरमाया कि दोस्तों की आंखों की ख़्यानत यह है कि मुनाजात के व... में उनकी आंखों में चारों तरफ़ नींद घूमे। चुनांचे ज़बूर में है।

"वह शख़्स झूठा है जो मेरी मुहब्बत का दावा करे और जब उस ... रात छा जाए तो वह सो जाए हमें भूल कर। और जो हमें भूल कर ... हमारा विसाल उस से दूर हुआ।

आशिक़ाने इलाही की आंखों में (ग़फ़लत की) नींद नहीं आती और न उनकी आंखें अश्क बारी से कभी ख़ाली रहती हैं। ऐसी नींद को आशिक़ों की आंखों से क्या वास्ता। उनकी आंखें तो शमअ् की मानिन्द बहती रहनी चाहिए।

कहा गया है कि हज़रत ज़ुन्नून मिसरी ने हज़रत अबू यज़ीद की तरफ़ एक आदमी भेजा और उस से कहा कि उन से अर्ज़ करना कि सोने और आराम करने का वक़्त कब से कब तक है जब कि क़ाफ़िला चल पड़े। आपने उस शख़्स को जवाब दिया कि मेरे भाई से कहो कि

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मर्द वह है जो तमाम रात सोता रहे उस पर भी क़ाफ़िला से पहले मंज़िल में सुबह करे। हज़रत ज़ुन्नून ने फरमाया कि उन्हें मुबारक हो उस कलाम की तह तक हमारे अहवाल नहीं पहुंचते। कहते हैं कि हुसने सालेह ने एक कनीज़ किसी को फ़रोख़्त कर दी। जब आधी रात गुज़री वह कनीज़ बेदार हुई और उसने कहा कि ऐ अह्ले ख़ाना उठो! नमाज़ का वक़्त है नमाज़ का। उन लोगों को उस पर हैरत हुई (मगर सो गये)। सुबह हुई तो उस कनीज़ ने उन लोगों से कहा कि क्या तुम लोग सिवाए फ़र्ज़ के कोई और नमाज़ नहीं पढ़ते। जवाब दिया कि नहीं। वह कनीज़ ख़्वाजा हसन के पास वापस आई और अर्ज़ किया कि ऐ ख़्वाजा मुझे इस कौम के हाथ न बेचिए जो तहज्जुद गुज़ार नहीं। मुझे उन से वापस कर लीजिए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुसैन के यहां एक अज्मी कनीज़ थी। आप फरमाते हैं कि मैंने उसे आधी रात के वक़्त सज्दा में गिरा देखा कि वह कह रही थी। इलाही सदक़ा अपनी मुहब्बत का जो तुझे मुझ से है मेरी बख़्शिश फरमा दे। मैंने उससे कहा कि कि यूं मत कहो बल्कि यूं कहो कि इलाही उस मुहब्बत के तुफ़ैल जो मुझे तुझ से है मेरी मग़्फ़िरत फरमा दे। हो सकता है कि वह तुझे महबूब न रखता हो। उस ने कहा कि ऐ फ़ुज़ूल गो! ख़ामोश रह। उसी की मुहब्बत ने जो उसे मेरे साथ है मुझे दारे कुफ़्र से निकाल कर दारुस्सलाम में दाख़िल किया और उसी की मुहब्बत ने जो उसे मेरे साथ है मुझे बेदार किया और अपने आगे झुकाया और तुझे तेरे बिस्तर पर छोड़ा। मैंने उस से कहा कि जा तू अल्लाह की राह में आज़ाद है। उसने कहा कि ऐ आक़ा आपने मेरे साथ बुरा किया। मेरे लिए दो अज्र थे। अब सिर्फ़ एक अज्र रहा। उसके बाद एक चीख़ मारी और कहा यह तो मेरे अदना आक़ा का आज़ाद करना है। मौलाए कुल का आज़ाद करना कैसा होगा। उसके बाद बहालते मुर्दा ज़मीन पर आ रही।

उन्हीं में ज़िक्र पर हमेशगी है:

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया गया कि कौन सा अमल सबसे बेहतर है इरशाद फरमाया – यानी यह कि जब तुम्हारी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मौत का वक़्त आए तुम्हारी ज़बान ज़िक्रे इलाही में तर हो।

यानी उस शख़्स की दौलत का क्या पूछना जिस पर ख़ुदा का फ़ज़्ल व करम हो। फ़रमाने इलाही है। और जो रहमान के ज़िक्र से मुंह फेरे, मुसल्लत कर देते हैं हम उस पर एक शैतान तो वह उसका साथी बन जाता है।"

नफ़हात में मज़्कूर है कि शैख़ अबुल–क़ासिम क़ुशैरी रहमतुल्लाह अलैह की एक मुसलमान जिनके साथ दोस्ती थी। आप एक मरतबा मस्जिद में बैठे हुए थे कि उस जिन्न ने कहा कि ऐ शैख़ आप उन लोगों को किस हालत में देख रहे हैं? फ़रमाया कि बाज़ को नीम ख़्वाबी में और बाज़ को जागने की हालत में कहा कि जो चीज़ उनके सरों पर है उसे भी आप मुलाहिज़ा फ़रमा रहे हैं? फ़रमाया "नहीं"। उस वक़्त उस जिन्न ने आपकी आंखों पर हाथ फेरा तो आपने देखा कि उन में से हर एक के सर पर एक कव्वा बैठा है। उनमें से किसी के बाल उसकी आंखों से नीचे लटके हुए हैं। (कि आंखें बिल्कुल बन्द हैं) किसी के सर पर वह सवार हैं मगर कभी–कभी उड़ जाते हैं। और किसी के सर से कभी नीचे और कभी ऊपर उड़ते हैं। शैख़ ने पूछा कि यह क्या बात है जवाब दिया कि क्या आपने ने नहीं पढ़ा। यह शैतान हैं जो उनके सिरों पर मुसल्लत हैं और उनमें से हर एक अपनी ग़फ़लत की मिक़्दार, इस हालत में मुब्तला है।

ऐ बन्द–ए–ख़ुदा, तू हर लेहज़ा, हर लम्हा, एक नए फ़रेब का शिकार है। और तेरे हर बाल की जड़ में शैतान छुपा हुआ है। ऐसी हालत पर कि दुनिया में कम है हंसने की जगह नहीं, रोने का मक़ाम है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि "शैतान हर इब्ने आदम के दिल पर बेहिस व हरकत बैठा हुआ है। जब बन्दा, अल्लाह तआला का ज़िक्र अपनी ज़बान से करता है, तो शैतान उठ खड़ा होता और दूर चला जाता है। फिर जब वह अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाता है तो शैतान उसको अपना लुक़्मा बना लेता है यानी उसे अपने क़ब्ज़ा व तसर्रुफ़ में लेकर उसे ला यानी बातों में लगाता और फ़ासिद तमन्नाओं में मशग़ूल कर देता है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

नबी करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम इरशाद फरमाते हैं 'कि अगर शयातीन बनी आदम के दिलों को न घेरता तो अल्बत्ता वह आसमान के फ़रिश्तों को देख लेते।'

लिहाज़ा ज़िक्र के तरीक़ों में यह बात बड़ी अहम है कि बन्दा हर वक़्त ज़िक्र में डूबा रहे। हुज़ूरे क़ल्ब से ज़िक्र करे और ज़िक्र में ग़फ़लत न बरते। ज़िक्र में ग़फ़लत, ज़िक्र से ग़फ़लत से बदतर है लिहाज़ा बन्दा अपनी ज़बान को और दिल को, ज़िक्र और मानीए ज़िक्र से ख़ाली न रखे। जब कुछ मुद्दत इसी हाल में गुज़रेगी दिल में ज़िक्र घर कर जाएगा और जब ज़िक्र को लाज़िम कर लेगा तो दिल कहने से भी बाज़ रहेगा और अब मानीए ज़िक्र, दिल पर ग़ालिब आ जाएंगे। यह वह मानी हैं जिनमें कोई हरकत और कोई आवाज़ नहीं इसलिए कि दिल से कहना भी बयान है और बयान उस शजर का ग़िलाफ़ व पोस्त है। न कि बेऐनेही शजर। कलमा तैय्यबा की तरह यह वह दरख़्त है जिसकी जड़ सालिम है और शाख़ें आसमान में हैं। इंतिहाई कैफ़ की हालत में लोगों ने हज़रत सुल्तानुल–आरेफ़ीन से दरयाफ़्त किया कि हम आपकी ज़बान से ज़िक्र नहीं सुनते। क्या वजह है। फरमाया कि ज़बान (भी) बेगाना हो जाती है और हमारे दर्मियान नहीं समाती। हज़रत वास्ती कुद्दिसा सिर्रहू ने फरमाया कि ज़िक्र की हक़ीक़त ज़िक्र को भूल कर, मज़्कूर (ज़िक्र वाले) के साथ क़ाइम हो जाना है।

सिवाए तेरी याद के दिले नाशाद से हर चीज़ जाती रही। सीने से गुलाब और शमशाद की ख़्वाहिश निकल गई और अब तेरे ज़िक्र में इस क़द्र डूबा हुआ हूं कि तेरे ज़िक्र में तेरा ज़िक्र मेरी याद से जाता रहा।

यह भी ज़रूरी है कि ज़िक्र, सिद्क़ व अक़ीदत की नीयत से हो इम्तिहान की नीयत से न हो। यूं न आज़माए कि मुकाशिफ़ात और मुशाहिदात के मुतअल्लिक़ जो कुछ मशाइख़ ने फरमाया है वह दुरुस्त है या नहीं। कि उसमें सिद्क़े नीयत नहीं तो कुछ हाल न खुल सकेगा।

मख़्दूमे मिल्लत शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रहू जब ज़िक्र शुरू फरमाते तो पहले तीन मरतबा दुरूद शरीफ पढ़ कर यह आयते करीमा पढ़ते। और उसके बाद कलिमा तैय्यबा ला इलाहा इल्लल्लाह बुलन्द आवाज़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

से पढ़ते और तीसरी मरतबा मुहम्मद रसूलुल्लाह फरमाते। उसके बाद बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र शुरू करते जब तक ज़ौक़ तारी रहता और सांस साथ देता। आप ज़िक्रे जेहरी में मशगूल रहते। जब अपनी हालत पर वापस आते तो फिर मुहम्मद रसूलुल्लाह कहते और उस से फ़ारिग़ हो कर फिर दुरूद शरीफ़ पढ़ते और यह दुआ करते।

(इलाही हमने कम अक़्ली, बेइल्मी और अपनी नाफ़हमी के तहत तेरा ज़िक्र किया। तू हमें अपनी रहमतों की उस्अत और फ़ज़्ल के मुताबिक़ हमारा ज़िक्र फरमा और याद रख। ऐ सबसे बेहतर याद फरमाने और रहम फरमाने वाले) मख़्दूमे मिल्लत शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि ज़िक्र की हालत में हल्क़ा बांधना, मशाइख़ की सुन्नत और जाइज़ व पसन्दीदा है। अगर कोई जमाअत को यक्जा कर ले और मज्मा के साथ ज़िक्र करे वो और अच्छा है।

ऐ अज़ीज़ यह भी याद रखो कि बाज़ सूफ़िया ने ज़िक्रे जेहर को इख़्तियार किया है और बाज़ ने ज़िक्रे ख़फ़ी को। हर दो फ़रीक़ का इस्तिदलाले आयात व अहादीस और रिवायात से है। चुनांचे वह आयात व अहादीस व रिवायात जिन्हें ज़िक्रे जेहर के इख़्तियार करने वालों ने दलील ठहराया है यह हैं।

आयात इस बाब में कसीर हैं। अज़ां जुमला एक यह आयत है। *उदऊ रब्बकुम तज़र्रुअ व खफ़ीफ़तन इन्नहू ला युहिब्बुल मुअ्तदीन* ख़ज़ाना में है कि उसके मानी यह हैं कि ज़ाहिर व पोशीदा अपने रब को पुकारो। इसलिए कि तज़र्रुओ ज़राअतुन। से माख़ूज़ है और उसके मानी हैं शिद्दते हाजत का इज़्हार। और ख़ुफ़िया जेहर और सर में मुश्तरक और मुतज़ाद मानी का हामिल है। ऐसा ही अत्ताइफ़ अल-कुशैरी में है और इम्लाउत्तफ़्सीर में है कि यह भी कहा गया कि माना यह है कि उसे पुकारो और उसकी तरफ़ अपनी हाजतें बयान करो, गिरया व ज़ारी से और तन्हाई में। ज़राअते ज़िल्लत व ख़्वारी का है और ख़ुफ़िया वह है जिसमें रिया का दख़ल न हो।

सुबूते जेहर में यह आयत भी है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने कोई चीज़ फ़र्ज़ न की मगर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

.. कि उसके लिए एक हद मुक़र्रर फरमा दी। सिवाए ज़िक्र के कि उसके लिए कोई हद मुकर्रर न की जहां उसकी इंतिहा हो, बल्कि बन्दों को हुक्म दिया कि वह हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र करते रहें। और फ़रमाया उज़्कुरुल्लाहा ज़िक्रन कसीरा। यानी अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करते हो। रात में, दिन में, सफर में, हज़र में, मालदारी में, फ़क़ीरी में, खुले छुपे, ग़र्ज़ेकि हर हाल में।

इन्हीं आयात में अल्लाह तआला का क़ौल यह है। अगर सदके खुल कर दो तो बड़ी अच्छी चीज़ है। अक़ीद-ए-शैख़ अबू नजीब सुहरवर्दी में बयान किया गया है कि मुराद उस से यह है कि बन्दा सुन्नत और फ़र्ज़ के माबैन ज़िक्रे जेहरी को इख़्तियार करे।

तफ़्सीर दुरे मआनी में है कि अव्वाह वह है जिसकी आवाज़ ज़िक्र व दुआ और तिलावते कुरआन में ज़ाहिर हो। तफ़्सीरुन्नबी में ज़िक्र किया गया है कि अल्लाह तआला के क़ौल सब्बेहिस्मा रब्बिकल-आला में चार तावीलें हैं और तमाम का हासिल यह है कि अपनी आवाज़ को बुलन्द करो और इस बाब में जो अहकाम वारिद हैं उन्हें ज़ेहन नशीन रखो।

और अहादीस जो इस बाब में वारिद हैं। उन्हीं में वह हदीस भी है जो रौज़तुल-उलमा में हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि जिस शख़्स ने अल्लाह की राह में बुलन्द आवाज़ से अल्लाहु अक्बर कहा। अल्लाह तआला उसके लिए अपनी बड़ी रज़ा लिख देगा।" अल-हदीस। उन्हीं में वह हदीस है जो ख़ज़ानतुल-जलाली में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ज़िक्र का सुनने वाला भी ज़िक्र में शरीक है। जो ख़ज़ानतुल-जलाली में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ज़िक्र का सुनने वाला भी ज़िक्र में शरीक है। उन्हीं में वह हदीस है जो मसाबीह में हज़रत सअद रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है वह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ का सलाम फेरते तो बुलन्द आवाज़ से फरमाते। ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू इला आख़िर। और वह हदीस भी है जिसे बुख़ारी, मुस्लिम और तिर्मिज़ी ने अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रिवायत किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि (अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है) मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूं और मैं उसके साथ हूं जब वह मेरा ज़िक्र करे तो अगर वह मेरा ज़िक्र अपने दिल में करता है तो मैं भी उसको तन्हा याद फरमाता हूं और जब वह ज़िक्र मज्मा के साथ करता है तो मैं उसके मज्मा से बेहतर मजमा में उसका ज़िक्र फरमाता हूं।

और रिवायात इस बाब में वह हैं जो शरहुल–औराद, उम्दतुल–अबरार, मज्मूअ् अन्नवाज़िल, फतावा ख़ानिया, हामिया, मुल्तकित और मज़ीद में हैं कि हम्माम में बुलन्द आवाज़ से कुरआन पढ़ना मक्रूह है और आहिस्ता–आहिस्ता जी में पढ़ना मक्रूह नहीं। अल्बत्ता तस्बीह व तहलील (सुबहानल्लाह कहना। ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ना) मक्रूह नहीं अगरचे बुलन्द आवाज़ से हो। जामे इस्मतुल्लाह ने फरमाया कि यह बात तो मालूम है कि हम्माम में अक्सर नजासतें वग़ैरह होती हैं। और बाज़ आदमी अपना सतर खोले होते हैं, फिर भी तस्बीह व तहलील हम्माम में बुलन्द आवाज़ से जाइज़ है तो घरों में, मस्जिदों में, गोशो में, मकान की पाक खल्वतों में जाइज़ होना बदरज–ए–औला साबित है।

उसी की ताईद फ़कीह ज़ाहिद अबुल्लैस रहमतुल्लाह का वह कौल करता है जो किताब अन्नबीह में है कि मस्जिदों का एहतराम पन्द्रह तरह होता है और। उन्हीं में यह ज़िक्र किया कि अल्लाह के ज़िक्र के अलावा और बात में अपनी आवाज़ ऊंची न करे। मारिफ़तुल–मुरीदीन और दलीलुस्सालेकीन में लिखा है कि अक्सर सुबह के वक़्त ज़िक्र, बुलन्द आवाज़ से करे ताकि अह्ले ज़ौक़ भी उस से लुत्फ़ अन्दोज़ हों। ग़रज़ यह कि ज़िक्रे जेहरी बड़ी बरकतों का मूजिब है। और याद रखना चाहिए कि आयात व अहादीस व रिवायात ज़िक्रे जेहर के बारे में बहुत ज़्यादा हैं और उनमें से अक्सर हिस्सा मज्मा सुलूक में है कि मख़्दूम शैख़ सअद बदहन कुद्दिसा सिर्रहू की तस्नीफ़ है। यहां उनमें बाज़ हिस्सा महज़ तबर्रुक के लिए लिख दिया गया है जिसे शौक़ हो वह इस मुतबर्रक किताब का मुताला करे कि ज़िक्रे जेहरी और ज़िक्रे खफ़ी के मुतअल्लिक वाफ़ी व शाफ़ी बयान पर मुश्तमिल है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...झे जो तरीक़ा भला मालूम हो उसी को इख़्तियार कर कि ज़िक्र ...ल–जेहर भी एक तरीक़ा है और ज़िक्रे ख़फ़ी।

...फ़सल ज़िक्रे ख़फ़ी की सनद यह है कि सांस निकलते वक़्त ला ...इलाहा का तसव्वुर बा मानी करे। और सांस लेते वक़्त इल्लल्लाह। ...मानी के तसव्वुर करे। और मानी यह हैं कि उन तीनों के तसव्वुर ...के दौरान एक ही मानी का इरादा करे। यह ज़िक्र हर वक़्त हो सकता ...है यानी उस पर खड़े, बैठे, लेटे, तन्हाई में, मज्मा में, चलते हुए, ठहरे ...हुए, खाने पीने की हालत में, ग़रज़ हर तौर पर अमल किया जा सकता ...है। नबी करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने भी इरशाद फ़रमाया कि ...सबसे अच्छा ज़िक्र, ज़िक्रे ख़फ़ी है। लिहाज़ा इस पर इतनी हमेशगी ...करे कि कोई सांस आने जाने में उससे ख़ाली न रहे। बल्कि इस हद ...तक पहुंच जाए कि सोते में भी कोई सांस निकलने और अन्दर जाने में ...ज़िक्र और मानी ज़िक्र के तसव्वुर से बेकार न रहे और यह बात तजरबा ...शुदह है कि जब जागते में कोई सांस बेकार नहीं गुज़रता तो सोते में ...भी ज़ाए नहीं होता।

तेरी उम्र की सांसों में हर सांस एक गौहर है तू इन नफ़ीस गौहरों ...को बरबाद मत कर।

और जब ज़िन्दगी में इस तसव्वुर और ख़्याल में रहेगा तो मौत के ...बाद भी इसी तसव्वुर और ख़्याल पर क़ाइम रहेगा और कल बरोज़े ...क़यामत भी इसी हाल पर उसका हश्र होगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि ...व सल्लम फ़रमाते हैं कि तुम जिस तौर पर ज़िन्दगी गुज़ारते हो उसी ...तौर पर मरोगे और जिस हाल में मरोगे उसी हाल पर उठाए जाओगे ...और यह ज़िक्र वह सूई है कि दिल का पैवन्द अल्लाह तआला की याद ...के साथ, सिद्क़ के डोरे से सी देती और फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम के ...अमल ख़ाना में रफ़ूगरी सिखाती है। हां अगर कोई चाहे कि दिल की ...गहराइयों से दीनी उलूम को। जो अबदी ज़िन्दगी का सरमाया हैं, ...निकाल ले, तो यह ज़िक्रे ख़फ़ी से हासिल नहीं हो सकता कि कुंवां सोई ...से नहीं खोदा जा सकता। उस कुएं की कुदाल ज़िक्रे जेहर है। तो जो ...कोई ज़िक्रे जेहर पर शराइत व आदाब और हुज़ूरी–ए–क़ल्ब के साथ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हमेशगी करेगा, थोड़ी ही मुद्दत में दिल की गराई से दीनी उलूम बाहर निकाल सकता है। और जब वह ज़िक्रे जेहर शुरू करता है तो नया एक अजीब ज़ौक़ व शौक़ और लज़्ज़त पैदा हो जाती है।

मूसा अलैहिस्सलाम ने मुनाजात की कि कि इलाही वह इबादत तालीम फरमा जो बहुत शाक़ और दुशवार तर हो। फरमान हुआ के ज़िक्रे जेहर करो।" मूसा अलैहिस्सलाम जिस क़द्र ज़िक्रे जेहर करते ज़ौक़ व शौक़ और सुकूने क़ल्ब में ज़्यादती होती। फिर अर्ज़ किया के इलाही मैंने तो ऐसी इबादत का सवाल किया था कि उसमें मशक़्क़त व सऊबत हो। इस ज़िक्रे जेहर में तो मुझे राहत व सुकून मिलता है। फरमान हुआ कि ऐ मूसा! तुम मेरे नाम की दुश्वारी और सख़्ती क्या जानो। फिरऔन से पूछो कि उस ने अपनी तमाम इज़्ज़त व वजाहत और बादशाहत को, तबाह करके, अपने आपको अपने अज़ीज़ों और क़रीबों के साथ दरियाए नील को सौंप दिया मगर एक मरतबा भी मेरा नाम लेना उसे मयस्सर न हुआ। तुम कि मेरे नाम के ज़िक्र से राहत और आराम पाते हो, यह मेरी तौफ़ीक़ और मेहरबानी है कि मैंने तुम पर मब्ज़ूल फरमाई।

यह भी ज़रूरी है कि ज़िक्रे जेहर में ऐसा शौक़ पैदा करे कि अपनी जान, इज़्ज़त और माल व मनाल को। उस ज़िक्र पर कुरबान कर सके।

नक़्ल है कि फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया! खुदाया तूने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अपना ख़लील (दोस्त) बनाया है हालांकि उनके पास कसरत से माल मौजूद है। इसके बावजूद हमेशा अफ़ज़ोनी का सवाल करते रहते हैं। फरमान आया कि अगरचे वह कसीर माल रखता है मगर उसका दिल उस माल से मुतअल्लिक़ नहीं। अच्छा जाओ आज़माइश कर लो। जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नज़र से छुप कर कहने लगे या अल्लाह! इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि ऐ दोस्त का नाम लेने वाले! उसका नाम, दोबारा ले।" उन्होंने कहा कि कुछ हदिया दीजिए। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि जो कुछ मेरी मिल्कियत में है वह सब मैंने दोस्त के नाम पर कुरबान किया। अब तो उसका नाम ले।" फ़रिश्तों ने फिर अर्ज़ किया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned with CamScanner

कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को औलाद से बहुत मुहब्बत है वह तेरे खलील कैसे हो सकते हैं? उन्हें ख़्वाब में बताया गया कि अपने बेटे को ज़िबह करो। जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बिला तरद्दुद अपने बेटे के हलक पर छुरी फेरी और छुरी ने अपना काम न किया। तो अर्ज़ किया खुदाया! छुरी अपना काम नहीं कर रही है।" इरशाद हुआ कि हमें एक मासूम के हलक पर छुरी चलाने से संरोकार नहीं बल्कि फ़रज़न्दों की मुहब्बत से तुम्हारे दिल को काटना मन्ज़ूर है, जिसको हमने ज़ाहिर कर दिया। फ़रिश्तों ने फिर अर्ज़ किया कि इब्राहीम को अपनी जान बहुत प्यारी है। फ़रमान हुआ कि ग़लत कहते हो। जब नमरूद ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के हाथ पैर, लोहे की ज़ंजीर से बांध कर एक फलाख़न के ज़रीआ, भड़कती हुई आग में फेंका। उसी वक़्त जिब्रील पहुंचे और कहा कि "क्या तुम्हें कोई हाजत है।" फरमाया कि "तुम्हारी तरफ़ तो नहीं।" हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया कि "फिर अपने रब ही से सवाल करें।" फरमाया कि इल्मुहू बेहाली यक्फ़ी अन सवाली। उसका मेरे हाल से वाक़िफ़ होना ही, मेरे सवाल को काफ़ी है।

यह भी याद रखें कि जब ज़िक्रे जेहर में ज़ौक़ व शौक़ और राहत व सुकून मिले तो खुदाए तआला पर कोई एहसान न माने। नक़्ल है कि एक शिकारी ने एक मछली पकड़ी। मछली बोली कि मैं अल्लाह तआला की तस्बीह व ज़िक्र में मशग़ूल हूं मुझे तूने क्यों पकड़ा है। उसने कहा इसलिए कि तू अपनी तस्बीह का एहसान खुदाए तआला पर रखती है।

सनदे ज़िक्रे जेहर जो हमें बुज़ुर्गों से पहुंची है यह है कि ज़िक्र करने वाला बावुज़ू हो और क़िबला की जानिब मुंह करके, पालती मार कर इस तरह बैठे कि सीधे ज़ानों के दर्मियान और उलटे पांव की उंगलियां सीधे ज़ानों के दर्मियान हों। उस वक़्त कलिमा ला इलाहा को नाफ़ से बुलन्द आवाज़ से खींचे और सर सीधी जानिब ले जाए। उसके बाद इल्लल्लाह की ज़रब बाएं जानिब मारे। इसी हाल पर उस वक़्त तक रहे कि सांस साथ दे और कुव्वत बाक़ी रहे। जब ताक़त जवाब दे दे तो ख़ामोश हो जाए और मुहम्मद रसूलुल्लाह कहे। उसे ज़िक्रे नफ़ी व इस्बात कहते हैं। और वह मानी जो हम पहले बयान कर आए हैं दिल

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

में हाज़िर रखे। यह भी ज़रूरी है कि ज़िक्र की हालत में पीर व मुर्शिद की रूहानियत को अपनी मदद पर हाज़िर जाने और पीर का मुशाहिदा अपने तसव्वुर से जुदा न करे। जब ख़ामोश हो तो जब तक हो सके दम रोके रहे और दम रोकने की हालत में अल्लाह–अल्लाह का ज़िक्र करे, जिसके मानी यह हैं कि हम तुझे चाहते हैं हम तुझे चाहते हैं। जब सांस छोड़े तो आहिस्ता–आहिस्ता। उसके बाद इस्बात का ज़िक्र करे यानी इल्लल्लाह इल्लल्लाह। उसके बाद ज़ात का ज़िक्र करे (यानी अल्लाह अल्लाह) उससे फ़ारिग़ हो कर सांस रोके और जब हो सके दम न तोड़े और जब ताक़त ज़ब्त न रहे तो थोड़ा–थोड़ा छोड़े और ज़िक्र और हब्से नफ़्स से फ़ारिग़ हो कर दुआ पढ़े।

और इसमें इतनी मश्क़ पैदा करे कि दिन रात में चार हज़ार मरतबा ज़िक्र कर सके। उस से कम नहीं।

दूसरी सूरत ज़िक्रे अवेसी बद लाई तैफ़ूरी और ख़राज़ी। मुरीद ज़ानुवे अदब पर (दो ज़ानो) क़िबला रू बैठे, और अपने दोनों हाथ अपने मुंह के बराबर उठा ले और कलिमा नफ़ी शुरू करे। उसके बाद बंधे हुए हाथ नफ़ी की मद के साथ फ़िज़ा में उठाए और खोल दे। उसके बाद फ़िज़ा में फिर बन्द कर ले और मुंह ही मुंह में इल्लल्लाह की ज़र्ब करे। उसका ख़्याल रखे कि जब हाथ इख़राज नफ़ी के वक़्त फ़िज़ा की तरफ़ ले जाए। तो ज़ानों पर खड़ा हो जाए और ज़र्ब के वक़्त बैठ जाए। उस ज़िक्र में दो रम्ज़ हैं। अव्वल यह कि अल्लाह तआला के अलावा हर चीज़ की मुहब्बत मैंने दिल से निकाल कर फ़िज़ा में फेंक दी। दोम यह कि कलिम–ए–इस्बात की ज़र्ब के वक़्त, मैंने ख़ुदा की मुहब्बत और मारिफ़त ला मकान से खींच कर डाली और जल्व–ए–ज़ाते हक़ को दिल में बसाया।

तीसरी सूरत ज़िक्र बद लाई। कलिम–ए–नफ़ी को उसी तरीक़ा पर मुंह से खींचे और सिर्फ़ सीधा हाथ मुंह के क़रीब रखे और यह बंधा हुआ हाथ फ़िज़ा में बुलन्द करे। और खोल दे। फिर फ़िज़ा में उसे बुलन्द कर ले और कलिम–ए–इस्बात की मुंह ही मुंह में ज़र्ब लगाए। फिर हाथ खोल दे। उसके बाद उलटा हाथ बांधे और ऐसा ही करे।

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks
Scanned with CamScanner

…ह दोनों ज़िक्र बड़ी तासीर रखते हैं। याद रहे कि ला इलाहा …ल्लल्लाह के ज़िक्र के वक़्त मुहम्मदुन रसूलुल्लाह। नहीं कहा जाता। …सकी वजह यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के …ज़िक्र को अल्लाह तआला के ज़िक्र से ख़ास तअल्लुक़ है कि हदीसे …कुदसी में है। इज़ा ज़ुकिरतु ज़ुकिरता मइया। जब मेरा ज़िक्र किया …जाता है तो तुम मेरे साथ मज़्कूर होते हो।" और अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु …व्हहू ने कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह को तीन …हर्फ़ों में जमा किया है कि आपने ला इलाहा सिर्रुहू को लिया और …इल्लल्लाह सिर्रुहू को लिया और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सिर्रुहू को लिया …और सीधी जानिब मुंह करके ह फरमाया फिर उलटी तरफ़ मुंह किया …और हू अदा की। फिर ज़र्ब लगाई और ही फरमाया।

मुराक़बा में शुग़ल सेह पाया भी दाख़िल है और वह यह है कि …अल्लाह तआला के तीन नामों की, तसव्वुर में तकरार करता रहे। यानी …समीउन बसीर और अलीम। फिर अलीमुन बसीर समीउन कहे। या फ़ार्सी …में उसके माना का लिहाज़ा करले यानी शनवा, बीना, फिर कहे दाना, …बीना, शनवा, यानी हर दानाई, बीनाइ और शनवाई जो दुनिया में है वह …क वहदहू ला शरीक लहू की दानाई, बीनाई, और शनवाई है।

जो जानता है वह अलीम जानता है। जो देखता है वह बसीर …देखता है और जो सुनता है वह समीअ़ सुनता है। ऐ जवान! तू दर्मियान …में कौन?

और जो मुराक़बा हैं अपने मशाइख़ से पहुंचा है वह यह है। अल्लाहु …हाज़िरी, अल्लाहु फ़ाज़िरी, अल्लाहु शाहिदी, अल्लाहु मइया।

…चन्द और मुराक़बे : मुराक़बा मईयत, अल्लाह तआला फरमाता है। …वहुवा मअ़कुम ऐनमा कुन्तुम। मुराक़बा क़ुर्ब, नहनु अक़्रबु इलैहि मिन …हब्लिल–वरीद। अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है। कि हम तुम्हारी …गले की रगे …ज़ुलू से भी ज़्यादा तुम से क़रीब हैं। तेरे कान की शनवाई से, तेरे …ज़बान के ज़्यादा क़रीब हैं और तेरी ज़बान की गोयाई से, तेरी ज़बान के …ज़्यादा क़रीब हैं। हासिल इस कलिमा का यह है कि तेरी हस्ती तो हम …से है वरना तू कहां। मुराक़बा मा रऐतु शैअन इल्ला व रऐतुल्लाहा फ़ीहे।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

यानी मैंने कोई चीज़ नहीं देखी मगर उसमें खुदा की तजल्ली पाई।

यानी तौहीद यह है कि सबकी हस्ती, उस से है न यह कि सब वजूद में उस से मुत्तहिद हैं और वह सारी मख़्लूकात में हलूल किए हुए है (वहदतुल–वजूद हक है और वजूदे इत्तिहादी कुफ़्र। कि खुदा एक है न कि मआज़ल्लाह ईं व आं)। मुराकबा – मैं तेरा हाथ (दस्तगीर) हूं तू अपने हाथ को लाज़िम पकड़। यानी हादिस के वाजिब से काइम होने में कोई शक नहीं।

तू बनफ़्से खुद एक कदम की मिक्दार भी काइम नहीं बल्कि तुझे गैब से हर दम मदद पहुंचती रहती है। मुराकब–ए–आदमी बर्फ़ के तो वह मैं गौर करे कि यह बर्फ़ पानी की एक सूरत है लेकिन उसे पानी कहना गलत है। हां पानी, जानना और समझना सही है।

समुन्द्र तो कदीम से समुन्द्र ही है। नौपैद तो उसकी मौजें और लहरें हैं। यह मुख़्तलिफ़ सूरतें कहीं तेरे लिए हिजाब न बन जाएं उस ज़ात से जो उनमें जल्वा फ़रमा हैं। यह तो महज़ हकीकत तक रसाई के लिए पर्दे हैं।

हमने जब आदम को पर्दा अदम से बाहर निकाला तो तुझ में फ़रिश्तों के माबूद का अक्स था। उसमें जब हम ने अपने जमाल का नूर रखा तो तू उसकी वजह से फ़रिश्तों का मस्जूद इलैह बन गया।

मुराकबा : बांसुरी की हिकायत सुनो। जब वह बयान करे और जुदाईयों की शिकायत करे। यह नए जो हर दम नगमा आराई करती है। यह दर हकीकत बांसुरी बजाने वाले के सांस से है। बस यूं समझ लो कि इश्क बांसुरी वाले की मानिन्द है और हम बांसुरी की तरह। न वह बेगैर हमारे नगमा सरा। और न हम उसके बेगैर आवाज़ व नगमा।

क्या मैं या तू यह ऐन दर ऐन है। दूर बहुत दूर है, मुझ में और उसमें दूई का साबित करना। और उसकी हवैयत जो तुझे मुझ में नज़र आती है मेरा कयाम साबित नहीं करती कि कल का कल पर होना दो तरह का फ़रेब है।

ऐ जाने जांनां एक भरा हुआ जाम दे और मुझ से मेरी जान के लिए। मुझे मस्त बना दे और दोनों जहान से मुझको उठा ले। मुसलमान या

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...किर हनो तो नागुज़ीर है मगर तू हमें अपनी तजल्ली दिखा और यह ...ब ई व आं हम से ले ले। मुराक़बा अलम यालम बेअन्नल्लाहा यरा। ...सूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि अपने रब की इबादत इस तरह करो गोया कि तुम उसे देख रहे हो। और अगर तुम ...ह न समझ सको कि तुम उसे देख रहे हो तो (यूं कि) वह तुम्हें देख ...हा है मुराक़बा यतनज़्ज़लुल–अमरु बैनहुन्ना। ज़ुहूर और तनज़्ज़ुल अपने ...र मुम्किन मानी और वस्फ़ के साथ, उसका कमाले अज़मत है। और तजल्ली की हर सूरत जिसका इम्कान है उसकी किब्रियाई है। और ...सका इरशाद कि – अज़मत मेरी एज़ार और किब्रियाई मेरी रिदा (चादर) है। उसी की जानिब इशारा है। मुराक़बा अल्लाहु नूरुस्समावाते ...ल–अर्ज़े।

ऐ वह कि तमाम आलम तेरे हुस्न का पर तो है। आख़िर यह कौन सा ...माल है। तो ज़ाहिर भी है और बातिन भी। यह कितना अज़ीम कमाल है। मैं जिस चीज़ में नज़र करता हूं तेरे सिवा कुछ नज़र नहीं आता और तेरे सिवा और हो भी कौन सकता है। उसकी गुंजाइश ही कहां है। मुराक़बा : यानी अल्लाह तआला के इल्म का हम को मुहीत होना हमारे ...र के एहाता से भी क़रीब है। लेकिन हम उसका एहाता कर सकें यह बहुत दूर (बल्कि मुहाल) है।

हमारा दोस्त हम से बमुक़ाबला हमारे ज़्यादा क़रीब है। और यह बड़े हैरत की बात है कि हम उस से दूर हैं। क्या करें और किस से कहें कि वह हमारी आग़ोश में है। और हम उस से महजूर।

ग़रज़ हर क़िस्म के मुराक़बे और हर तरह के ज़िक्र व फ़िक्र से अपने औक़ात को आबाद रखना चाहिए। मख़्दूम शैख़ सअद ने यह हदीस मज्मा सुलूक में बयान फरमाई है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ला इलाहा इल्लल्लाह का विर्द दिल में ईमान इस तरह उगाता है जिस तरह पानी सब्ज़ी को।

फ़ाइदा अगर ज़िक्र के दौरान में जब कि ख़ल्वत हो, कुछ अच्छी या बुरी सूरतें नज़र आएं तो हरगिज़ उनकी जानिब तवज्जोह न करे और न उन से डरे बल्कि अपने शैख़ की विलायत में पनाह ढूंढे और अपनी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तवज्जोह और बढ़ाए ताकि आईना क़ल्ब, तबीअ़त के ज़ंग और बशरियत की तारीकी से जिला पाए और ग़ैबी अनवार जल्वागर हों। शुरू-शुरू में तो यह रोशनियां अक्सर बरूक़, लवामे, लवाइह, तवाए, फ़वाइह और मनाइज की मानिन्द ज़ाहिर होती हैं। ज़ाकिर को चाहिए कि उनकी तरफ़ भी मुतवज्जेह न हो। बरूक़ यह हैं कि (नूर) बिजली की तरह ज़ाहिर हो और जल्द ज़ाइल हो जाए। लवामे की चमक पय दर पय होती और कुछ देर ठेहरती भी है। लवाइह जैसे सूरज की रौशनी पानी या आईना के अक्स से किसी जगह पड़ती, कुछ देर ठहरती और फिर हिजाब में हो जाती है। तवाले जैसे सितारों और सूरज की रोशनियां। फ़वाइह कश्फ़ नफ़्स कश्फ़े दिल, कश्फ़े रूह, कश्फ़े सर और कश्फ़े ख़फ़ी का नाम है और मनाइह मिनहा की जमा है जिसके मानी अतीया के हैं।

याद रखना चाहिए कि मन्शाए अनवार मुख़्तलिफ़ होता है जैसे ला इलाहा इल्लल्लाह का ज़िक्र और दूसरे अज़्कारे मुख़्तलेफ़ा। कु़रआन, ईमान, एहसान और इस्लाम भी नूर का मन्शा हैं कि उन से अनवार पैदा होते हैं। और इबादतें रियाज़तें सालिक की रूहानियत शैख़ की विलायत या मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत की विलायत और अंबिया व औलिया की अरवाह भी अनवार का मन्शा हैं। उनके अलावा भी बेइंतिहा चीज़ें हैं जैसे ज़ुह्द सलाह वग़ैरह लेकिन हर एक की लज़्ज़त और रंगत जुदागाना है।

यह भी जानना चाहिए कि चिराग़ शमअ़ और दूसरी इसी तरह की जो सूरतें नमूदार होती हैं वह भी अनवार हैं जो शैख़ की विलायत या विलायते नुबुव्वत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से या इस्तिफ़ादा इल्म से या क़ुरआन और ईमान से मुक़्तबिस होते हैं और वही चिराग़ या शमअ़ दिल होता है। हां अगर क़िन्दील या क़िन्दील के चिराग़ की सूरत में नज़र आए तो वह मारिफ़त का नूर होता है। और जो कुछ अल्वियात यानी तारे चांद और सूरज की शक्ल में देखता है वह रूहानियत का नूर होता है। और जब आईन-ए-क़ल्ब पूरा साफ़ होता है तो माहे तमाम नज़र आता है वरना नाक़िस। और अगर सफ़ाई में कमाल हासिल कर ले तो वही रूह का नूर हो जाता है जिसे वह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...ताब की तरह देखता है जिस क़द्र सफ़ाई क़ल्ब ज़्यादा होगी उसी ... आफ़ताब ज़्यादा रौशन होगा। और अगर चांद सूरज एक दम देखे ... वह चांद दिल होता है जो रूह की रौशनी के अक्स से रौशन है और ... खुर्शीद उसकी रूह। लेकिन अभी पर्दों के अन्दर से चमकता है। या ... ने बसूरत खुर्शीद उसके मुनासिब नक़्शबन्दी कर दी है। वरना ... का नूर तो बेग़ैर किसी शक्ल रंगत और सूरत के होता है। और ... सितारे चांद या आफ़ताब हौज़ में यावर या इसी तरह की किसी ... चीज़ में देखे तो वह भी रूहानियत का नूर होता है मगर मुख़्तलिफ़ ... से। कभी ऐसा भी होता है कि वह अनवार, ईमान, ताआत, ... तस्बीहात मुख़्तलिफ़ अज़्कार की होती हैं जिनका मुशाहिदा दिल ... होता है और कभी ऐसा भी होता है कि सिफ़ाते इलाही के अनवार का ... रूहानी हिजाबों के पीछे से दिल के आईना पर जल्वागर होता है ... बक़द्र सफ़ाए क़ल्ब ज़ाहिर हो जाता है।

ऐ अज़ीज़! यह अनवार जिस मक़ाम पर मुशाहिदा होते हैं इलाहिदा ... रखते हैं, चुनांचे तो अगली नफ़्स (यानी मलामते नफ़्स) के मक़ाम में ... नूर नीलगूं ज़ाहिर होता है और यह नतीजा होता है। नूर रूह या ... ज़िक्र के ज़ुल्मते नफ़्स से इम्तिज़ाज़ व आमेज़िश का। इसलिए कि ... रूह और ज़ुल्मते नफ़्स का आपस में एक मिज़ाज होना नीलगूं ... पैदा करता है। और जब रूह का नूर ज़्यादा होता है और नफ़्स की ... की कम, तो वह नूर सुर्ख़ रंग का होता जाता है जैसे बेधुएं की आग ... रंग। और अगर सालिक लज़ीज़ लुक़्मों से महफ़ूज़ होता है तो उस ... में धुवां भी होता है, फिर जिस क़द्र सफ़ाई क़ल्ब बढ़ती जाती है ... में सफ़ेदी आती जाती है। जब रूह का नूर, दिल से इम्तिज़ाज पाता ... सब्ज़ नूर ज़ाहिर होता है। जब अल्लाह तआला के नूर का अक्स, ... के नूर पर पड़ता है तो मुशाहिदा, ज़ौक़े शुहूद से मिल जाता है और ... हक़ तआला का नूर, रूह और दिल के हिजाबों के बेग़ैर ज़ाहिर ... है तो फिर वह नूर हुवैदा होता है जिसमें न रंग है न कैफ़ और ... और जो ला मिसाल व बेनिहायत वहद होता है। तमाम हस्तियों ... औहाम उठ जाता है लेकिन इन तमाम अनवार का कश्फ़, हिजाबे रैबी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

व ग़ैबी के उठाए बेग़ैर मुम्किन नहीं होता। हिजाबे रैबी वह तबई पर्दा है जिसको बन्दे के साथ निस्बत होती और हिजाबे ग़ैबी वह पर्दा है जो रब तबारक व तआला की जानिब मन्सूब है।

यह सितारे और यह माहताब व आफ़ताब, अक़्ल रौशन का हुस्न व ख़्याल हैं। ऐ राहरो! उन सबसे अपना मुंह फेर ले और यह कहता हुआ बढ़ कि ला उहिब्बल–आफ़ेलीन। (मैं डूबने वालों को महबूब नहीं रखता।)

याद रहे कि तमाम अंबिया औलिया और अस्फ़िया, आरेफ़ीन, आशेक़ीन और मुक़र्रबीन हमेशा अपने आमाले हसना और सिफ़ाते पसन्दीदा से इस्तिग़फ़ार करते रहे हैं ताकि ताअत और बन्दगी का घमण्ड, मग़फ़िरत और बख़्शाइश के लिए आड़ न बन जाए। (हदीस शरीफ़ में है) कि – तहक़ीक़ मेरे दिल पर उजबे ताआत छा जाता है। और मैं ख़ुदावन्दे क़ुदूस से हर रोज़ सत्तर मरतबा इस्तिग़फ़ार करता हूं।

जानना चाहिए कि नूरानी हिजाबों से गुज़रना मुश्किल तर है। हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ निज़ामुल–हक़ वद्दीन क़ुद्दिसा सिर्रुहू ख़िलाफ़त पाने से क़ब्ल और मख़्दूम शैख़ुल–इस्लाम फ़रीदुल–हक़ क़ुद्दिसा सिर्रुहू से बैअत और इरादत के बाद एक मरतबा एक मस्जिद में तशरीफ़ लाए। आप उस वक़्त एक शरई मस्अला पर ग़ौर कर रहे थे। एक साहबे कश्फ़ मज्ज़ूब ने जो उस मस्जिद में करवट लिए लेटे हुए थे, फ़रमाया कि मौलाना निज़ामुद्दीन अल–इल्मु हिजाबुन अज़ीमुन। "इल्म हिजाबे अकबर है।" हज़रत मख़्दूम के दिल में ख़्याल आया कि इल्मे हिजाब तो हो सकता है मगर हिजाबे अज़ीम किस लिए। मज्ज़ूब ने कहा कि जब उस मक़ाम पर पहुंच लोगे तो जान जाओगे। यहां तक कि शैख़ुल–इस्लाम फ़रीदुल–हक़ वद्दीन ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि मज्ज़ूब ने क्या कहा? आपने तमाम माजरा अर्ज़ कर दिया। शैख़ुल–इस्लाम ने फ़रमाया कि मुअल्लिम एक नूरानी हिजाब है, इससे गुज़र जाना हर शख़्स के बस का काम नहीं।"

जानना चाहिए कि मुहब्बत भी हिजाबे नूरानी है। "ऐ ग़ौसे आज़म! मुहब्बत, महबूब और मुहिब्ब के दर्मियान एक हिजाब है तो जब मुहिब्ब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...में फना हो जाता है महबूब से मिल जाता है। इसी तरह इश्क़ ...आशिक और मअ्शूक़ के दर्मियान एक हिजाब है। इसी तरह ...अरिफ़त एक हिजाब है। हज़रत ज़ुन्नून मिसरी कुद्दिसा सिर्रहू ने ...फ़रमाया कि मेरे लिए सबसे बड़ा गुनाह मेरा इरफ़ान है। इसी तरह ...तौहीद हिजाब है। हुसैन मन्सूर कुद्दिसा सिर्रहू ने फरमाया कि तौहीद, ...वहदानियत के जमाल से मुवह्हिद का हिजाब है। इसी तरह कुर्ब हिजाब ...! ऐ गौसे आज़म मुकर्रबीन,. कुर्ब से फरियाद करते हैं जिस तरह ...महजूर दूरी से। इसी तरह अफ़आल और सिफ़ात का हिजाब है।" ...ज़ुब्दतुल-कुलूब से मन्कूल है कि ज़ात का हिजाब सिफ़ात है, और ...सिफ़ात का हिजाब अफ़आल से होता है। मिरसाद में है कि ज़मान और ...मकान भी हिजाब है और जब यह हिजाब उठ जाता है तो ...ज़माना-ए-गुज़िश्ता में जो कुछ हो गुज़रा और आइन्दा ज़माना में जो ...पेश आने वाला है फौरन मालूम हो जाता है और कुछ माज़ी व ...मुस्तक़बिल बाक़ी नहीं रहता और (तुम्हारे रब के नज़्दीक न सुबह है न ...शाम) का राज़ इज़्ज़त के नक़ाब से बाहर आ जाता है और या ...मअ्शरल-जिन्ने वल-इन्से इनिस्ततातुम अल-आयह। (ऐ जिन्न व इन्स ...के गरोह! अगर तुम से हो सके कि आसमानों और ज़मीन के किनारों ...से निकल जाओ, तो निकल जाओ। जहां निकल कर जाओगे उसी की ...सल्तनत है) अपना जमाल दिखाती है। हुसैन बिन मन्सूर से मन्कूल है ...कि गायब, अलस्तु बेरब्बेकुम। के हक़ाइक़ का क्योंकर जवाब दे सकता ...है लिहाज़ा यहां मुख़ातब और मुजीब का फ़र्क़ बहुत दुश्वार है।

वह ख़ुद ही अलस्तु फरमाता है और ख़ुद ही बला।

वह अहवाल और मक़ामात, सब ज़िक्र के नतीजे हैं। जब सालिके ...हिदायत की बदौलत यहां तक पहुंचता है तो हो सकता है कि उसे फिर ...इस आलमे मजाज़ की जानिब वापस लौटना हो ताकि वह मख़्लूक़ को ...फ़ायदा पहुंचाए और रहनुमाई करे। मगर यह आलम उसकी नज़रों में ...क़फ़स की मानिन्द रहता है। वह शफ़क़त और रहमत की नज़र से मख़्लूक़ ...की जानिब देखता है इसलिए कि वह इस जमाल से महरूम हैं। उसे ...मख़्लूक़ के इस आलम मजाज़ी पर क़नाअत कर लेने से तअज्जुब होता

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

है। जो साया की मानिन्द है और उनके इस आलमे दुनिया पर फरोशा होने से भी उसे हैरत होती है। बज़ाहिर वह मख़्लूक़ में मौजूद होता है मगर दिल से ग़ायब। यही कैनूनियत और बैनूनियत का मकाम है। अल्लाह तआला का इरशाद है। यानी वह लोग हैं जिन्हें तिजारत और ख़रीद व फरोख़्त अल्लाह के ज़िक्र से नहीं रोकती। साहिबे कश्फ़ुल-असरार कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि दुर्वेशों का ज़ाहिर मख़्लूक़ के साथ है और उनका बातिन अस्मा और सिफ़ात के शुहूद हैं। और दरहक़ीक़त यह मावराउन्नहर के दुर्वेशों का तरीक़ा है।

कहते हैं कि मलिक हुसैन वालिए-हेरात ने हज़रत कुतबुल-अक़्ताब ख़्वाजा बहाउल-हक़ वद्दीन मुहम्मद नक़्शबन्द कुद्दिसा सिर्रुहू से पूछा कि आपके तरीक़े का मबना क्या है? फरमाया कि जल्वत में ख़ल्वत (अंजुमन में तन्हाई)

अन्दर से आशना और बेगानों की तरह रह। ऐसी लाइक रविश दुनिया में कम होती है।

अल्लाह तआला का इरशाद है।

कश्फ़ुल-असरार में इस आयत के तहत में फरमाया कि जब तुम मरदाने ख़ुदा के ज़ाहिर को देखोगे तो उन्हें मैदाने अमल में जल्वागर पाओगे लेकिन जब तुम उनके असरार से वाक़िफ़ होगे तो तमाम इबादतों से फ़ारिग़ नज़र आएंगे। वह बातिन में मस्त और ज़ाहिर में होशियार, हक़ीक़तन सबसे आंखें बन्द, और ज़ाहिरन बेदार हैं।

ज़ाहिर में ई व आं से मिलते जुलते और बातिन में सबसे सिमटे हुए और दूर। क़ौले ख़ुदावन्दी है कि देखोगे तुम पहाड़ों को कि अपनी जगह ख़ामोश हैं और हक़ीक़तन वह बादल की तरह चलते हैं।" जुनैद बग़दादी कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि औलिया अल्लाह रुसूमे ख़ल्क की सरहदों पर खड़े हुए नज़र आते हैं मगर मख़्लूक़ उनके बातिन की परवाज़ों से कि एक पल में हज़ार आलम तय कर लेते हैं। ग़ाफ़िल हैं।

ख़ल्वतों के सलातीन, हैय्युन व क़ैय्यूम के गदा हैं कि अपनी मंज़िल से आशना हैं और निशाने राह भूले हुए।

उन्हीं में सिदक़ इख़्लास और आदाब हैं। मुब्तदी मुरीद को चाहिए

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...के नीयत ख़ालिस रखे। इमाम सालिम बिन अब्दुल्लाह ने उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ कुद्दिसा सिर्रुहुम को लिखा कि ऐ उमर जान लो कि अल्लाह तआला की मदद बन्दे की नीयत के मुताबिक़ है। तो जिसकी नीयत तमाम है अल्लाह की मदद भी उसके लिए ताम है और जिसकी नीयत तमाम है अल्लाह की मदद भी उसके लिए ताम है और जिसकी नीयत में फ़ुतूर है अल्लाह की मदद भी उसके लिए इतनी ही कम है। मुरीद को हुस्ने नीयत का आलम भी होना चाहिए। अगर हुस्ने नीयत से वाक़िफ़ न हो तो अहले नीयत की सोहबत अख़्तियार करे ताकि वह उसे हुस्ने नीयत से वाक़िफ़ करें। नीज़ यह कि वह बुरी आदतों से दूर रहे और बुरी आदतों में से दुनिया तलबी भी है कि जिसने दुनिया तलब की उससे आख़िरत फ़ौत हुई और जो आख़िरत का तलबगार हुआ उससे मौला अज़्ज़ा व जल्ल छोटा और जिसने तलबे मौला को अपना मक़सूदे कुल बनाया उसकी दुनिया भी है और आख़िरत भी।

सिद्क़ की कमी का बाइस, मख़्लूक़ की तरफ़ आना जाना है।

लोगों से मुलाक़ात के लिए आना जाना, कुछ मुफ़ीद मतलब नहीं। महज़ फ़ुज़ूल बक्वास और नाहक़ क़ील व क़ाल है। तो किसी इंसान की सोहबत, मत इख़्तियार करो मगर हुसूले इल्म या इस्लाहे हाल के लिए क़ुत्बे आलम शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि आमाले सालेहा और सलाहे अहवाल आदमी को जन्नत में ले जाते और आदाबे ख़ुदाए बहिश्त तक पहुंचाते हैं। हदीसे क़ुदसी में है कि रब अज़्ज़ा व जल्ला ने फ़रमाया कि 'जब बन्दा अपनी ख़्वाहिशात को मेरी ताअत पर मुक़द्दम रखता है तो कम अज़ कम मुआमला उस से यह करता हूं कि उसको अपनी मुनाजात की लज़्ज़तों से महरूम कर देता हूं। हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि बन्दे और अल्लाह तआला के दर्मियान एक हद है जो नाफ़रमानियों से मिली हुई है। जब बन्दा (नाफरमानी की) इस हद पर पहुंचता है तो अल्लाह तआला उसके दिल पर मुहर कर देता है। मरवी है कि अल्लाह तआला ने याक़ूब अलैहिस्सलाम को वही भेजी कि जानते हो मैंने तुम्हारे फरज़न्द को तुमसे क्यों इलाहिदा कर दिया। तुम से एक लग़्ज़िश सादिर हुई और वह यह कि तुमने उनके भाईयों से कहा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

था कि "मैं डरता हूं कि उसे भीड़िया खा जाए और तुम ग़ाफ़िल रहो। तुमने उनके भाईयों की ग़फ़लत पर निगाह क्यों डाली हमारी हिफ़ाज़त पर नज़र क्यों न रखी।" इसी तरह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था। (अपने आक़ा के रू–ब–रू मेरा ज़िक्र कर देना)। अल्लाह तआला ने सिर्फ़ इस बिना पर कि हमारी ग़ैर की जानिब तवज्जोह की [illegible] एताब फ़रमाया और आप सात साल क़ैदख़ाना में रहे।

ऐ अज़ीज़! इस बयान से मक़्सूद, तुझे इबरत दिलाना और [illegible] बसीरत बनाना है। हर मुसलमान को चाहिए कि वह गुनाह से बाज़ [illegible] और हमेशा सिद्क़ व अदब को इख़्तियार करे। ख़ुसूसन वह शख़्स [illegible] मुहब्बत का दम भरता है इसलिए कि गुनाह में मुलव्विस होने [illegible] बावजूद, अल्लाह तआला की तलब और मुहब्बत मुहाल है। अहमद ग़ज़ाली क़ुद्दिसा सिर्रुहू फ़रमाते हैं कि अगर आज ईमान ने तुझे गुनाह से बाज़ न रखा तो कल दोज़ख़ की आग से कैसे बचा सकेगा। मख़्दूमे मिल्लत शैख़ मीना क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने फ़रमाया कि "जो शख़्स मुस्तहिबात के अदा करने में सुस्ती करता है, सुन्नत से महरूमी का उसे एक़ाब दिया जाता है और जो शख़्स सुन्नतों की अदाइगी में काहिली बरतता है उसे फ़र्ज़ों से महरूमी का अज़ाब दिया जाता है और जो फ़र्ज़ों की अदाइगी में तन आसानी दिखाता है उसे मारिफ़त से महरूमी के अज़ाब में मुब्तला किया जाता है।

क्या तुझे इस बात पर शर्म नहीं आती कि तू गुनाहों में मसरूफ़ रहता और अपने आमाल नामा को सियाह करता है। कुत्ता भी ग़ैरों के सामने उसकी जुरअत भी नहीं करता जो तू बादशाह के रू–ब–रू करता रहता है। ख़्वाजा सिर्री सक़्ती क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने फ़रमाया कि एक रात मैंने वज़ीफ़ा से फ़ारिग़ हो कर, मेहराब की जानिब ज़रा पांव फैला दिए फ़ौरन आवाज़ सुनी कि "ऐ सिर्री क्या बादशाहों के दरबार में इसी तरह बैठते हैं।" मैंने फ़ौरन पांव समेट लिए और कहा कि तेरी इज़्ज़त की क़सम अब तमाम उम्र पांव न फैलाऊंगा।" कहते हैं कि ख़्वाजा जुनैद क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने तीस साल तक शबो रोज़ के किसी लम्हा में अपने पांव न फैलाए। तमाम उमूर का दारोमदार आदमी के हौसला पर है जो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

आली हिम्मत और बुलन्द हौसला होते हैं, उनके अफ़आल व आदाब भी उन्हीं के मुताबिक़ होते हैं।

जानना चाहिए कि इख़्लास की तीन निशानियां हैं अव्वल : अपनी तारीफ़ व ख़िदमत को बराबर जाने। दोम : अमल के वक़्त अपने आमाल पर नज़र न डाले। सोम : इबादत और बन्दगी में सवाब का मुन्तज़िर न हो बैठे। कि बन्दगी में एवज़ का लालच और इबादत में अज्र व सवाब का ज़हरे क़ातिल है। अगर हज़ार साल तुम इस बारगाह में रहो और दुनिया भर में जितनी ताअत और इबादत है तुम तन्हा बजा लाओ। उसके बाद तुम से ख़तरे फरमाएं कि तुम हक़े इबादत अदा न कर सके तो समझ लो कि तुम्हारी तमाम इबादत का हक़ तुम्हें दे दिया।

ऐ अज़ीज़! जिस शख़्स ने ख़ुद को शहनशाहे अम्र व नही के हुक्म के मुक़ाबिल बेक़द्री की तराज़ू में न तौला। उससे इबादत कमा हक़्क़ुहू अदा नहीं हो सकती। बुज़ुर्गाने दीन का इरशाद है कि इन अज़ीज़ों की रूहें नजासत घरों के कुत्तों के सामने लायी गईं तो किसी ने उनकी जानिब आंख न उठाई। अहले तरीक़त का उस पर इज्मा है कि जो शख़्स अपने आपको फ़िरऔन से ज़र्रह बराबर अच्छा जाने वह फ़िरऔन से ज़्यादा बदतर है।

तुम क्या पूछते हो कि बन्दगी क्या होती है? बन्दगी सिवाए ज़लील बन कर पड़ रहने के कुछ और नहीं। नक़ल है कि मख़्दूम शैख़ सअद क़ुद्दिसा सिर्रुहू की ख़ानक़ाह में एक ग़ुलाम बच्चा था जिसका नाम सफ़ीया था। उसे जिस वक़्त कोई पुकारता और बुलाता तो हज़रत मख़्दूम शैख़ सफ़ी क़ुद्दिसा सिर्रुहू ख़ुद जवाब देते और जा कर पूछते कि क्या कहते हो।" आपके ख़्याल शरीफ़ में कभी भी यह बात न आई कि आपको कोई सफ़ीया क्योंकर कहेगा।

जो शख़्स अपनी कोताह अमली पर निगाह रखे और किसी और पर नज़र न डाले, वह मर्द ख़ुद आगाह और ख़ुदा पसन्दीदा है।

सहल तस्तरी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि मैंने इस मुआमला में जहां तक निगाह दौड़ाई, तो नियाज़मन्दी से ज़्यादा क़रीब कोई और राह न पाई और दावा करने से ज़्यादा कोई मुश्किल नज़र न आई।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ऐ सअ़्दी राहे हक़ तो यह है कि मरदाने हक़ कभी इज़्ज़त की नज़रों से खुद को नहीं देखते।

कहते हैं कि शिबली कुद्दिसा सिर्रुहू को यह ख़्याल गुज़रा कि मुझ से यह काम बन न पड़ेगा। मैं तो मरदाने खुदा के रास्ता पर पड़ कर निकम्मा हो गया। मुझ से मर्दों का कोई काम नहीं लिया जाता। मैं ना मर्दों यानी आम लोगों में चलता हूं और जब तक मुझ से मर्दों यानी बन्दगाने ख़ास का काम नहीं लिया जाता उन्हीं में रहूंगा। फिर आपने अपनी दाढ़ी मोंछ तराशी। मुख़न्नसों का लिबास पहना और मुख़न्नसों में चले गये। पन्द्रह रोज़ और बक़ौले बाज़ बीस रोज़ गुज़रे तो हातिफ़ ने आवाज़ दी कि ऐ शिबली जिसे अल्लाह तआला ने मर्द बनाया है वह नामर्द हरगिज़ नहीं हो सकता। यह भी तो मर्दों का काम है कि कारगार मर्द बन कर रहें और खुद को नाकारा जानें। शिबली ने अपना सर सज्दा में रखा, यहां तक कि कुछ देर बाद फिर ग़ैब से आवाज़ आई कि सर उठाओ और ऐसा अच्छा चेहरा इतनी देर ख़ाक में न रखो हमें ग़ैरत आती है।"

खुद नुमाई में मुब्तला मत हो। अगर तू सुन सकता है तो समझ ले कि आलम में तुझे किसी ने न देखा। (फिर ख़ुद नुमाई का क्या हासिल)।

शैख़ अबू सईद अबुल-ख़ैर कुद्दिसा सिर्रुहू ने फ़रमाया कि मर्द को चाहिए कि बरसहा बरस तक राहे इख़्लास पर चलता रहे। इख़्लास वह कीमिया है कि जो उसकी आदत डालता है बेश क़ीमत गौहर हो जाता है और जिसे इख़्लास अता फ़रमाते हैं उसे गोया सब कुछ दे देते हैं। ख़्वाजा सिर्री कुद्दिसा सिर्रुहू ने फ़रमाया कि दो रकअत नमाज़े नफ़्ल जो तुम ख़ुलूस के साथ तन्हाई में अदा करो यह उससे अच्छा है कि तुम सत्तर या सात सौ हदीसें आला सनदों के साथ लिखो। ऐ बिरादर तेरे लिए ख़ुद बीनी व ख़ुद नुमाई दो जाल हैं। और मेरी यह एक बात हज़ार नसीहतों से बढ़ कर है कि जिसने इन दो जालों से नजात पाई उसने बख़ुदा इख़्लास की हक़ीक़त पाली। मख़्दूमे मिल्लत शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रुहू से मन्क़ूल है कि अबू मुस्लिम फ़ारस ने फ़रमाया कि मैं

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...खुद को मुजाहिदा व रियाज़त में नातवान व ज़ईफ़ महसूस करता था। ...में शैख़ अबू सईद अबुल-ख़ैर की ज़्यारत की नीयत की। वहां पहुंचा तो देखा कि एक तख़्ता पर मसनद के सहारे मिस्री पशमीना ओढ़े हुए आराम फरमा रहे हैं। मेरे दिल में उनकी जानिब से एक अचंभा पैदा हुआ कि यह कैसे दुर्वेश हैं। हम तो उस मुजाहिदा व रियाज़त में मसरूफ़ हैं और यह इस आराम व राहत में। आप इस ख़्याल पर मुत्तला हो गये और फरमाया कि ऐ अबू मुस्लिम तुमने कौन सी किताब में पढ़ा है कि खुद पसन्दी और खुद नुमाई दुर्वेशी का शेवह है। हमने सब कुछ हक़ के नाम पर दे डाला तू हमें इज़्ज़त के तख़्त पर बिठाया गया। और तुमने अपने नफ़्स को देखा तो तख़्त के सामने ही छोड़ दिया गया। हमारा हिस्सा मुशाहिदा है और तुम्हारा हिस्सा मुजाहिदा"। अबू मुस्लिम फरमाते हैं कि दुनिया मेरी आंखों में अन्धेर हो गई और मेरा भरम खुल गया। जब मुझे होश आया तो मैंने माज़रत की और आपने मेरी माज़रत को क़बूल फरमाया।

अबू बकर ज़काक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि हर मुख़्लिस के इख़्लास में कमी यह है कि उसकी नज़र अपने इख़्लास पर है। जब अल्लाह तआला उसके खुलूस को ख़ालिस फरमाना चाहता है तो उस से यह चीज़ गिरा देता है कि वह अपने इख़्लास को देखे।

मर्द जब तक इश्क़ की तलवार से बे सर नहीं होता आशिक़ों के मज़हब में पाक नहीं माना जाता। तुम इश्क़ भी करते हो और सर की तलब है। हां-हां तुम मांगते तो हो मगर वह मिल नहीं सकता।" बुज़ुर्गों ने फरमाया है कि इल्म तख़्म है। अमल काश्त और इख़्लास उसका पानी। मुहम्मद बिन अल-अफ़ज़ल कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि बदक़िस्मती की तीन निशानियां हैं। अव्वल : तो यह कि इल्मे दीन दें मगर अमल से महरूम कर दें। दोम : यह कि अमल की तौफ़ीक़ तो दें मगर इख़्लास न दें। सोम : यह कि अच्छों की सोहबत तो उसे मयस्सर हो मगर ख़िदमत और सिद्क़ से महरूम रहे।

लिहाज़ा मुरीद मुब्तदी को चाहिए कि अपनी ज़ात को अहकामे शैख़ के सुपुर्द कर दे। ख़्वाजा जुन्नून मिस्री कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि जब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मुरीद आदाब से बाहर हो जाता है तो जहां से चला था वहीं लौटा दिया जाता है। इसलिए तरक़्क़ी का सबब अदब था और जब सबब न रहा तो यक़ीनन वह वापस पलटेगा इसलिए कि बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि पीर के हुकूक़, पैग़म्बर के हुकूक़ की मानिन्द हैं और मां-बाप के हुकूक़ से ज़्यादा। फ़वाइदुस-सालेकीन में है कि ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती कुद्दिस सिर्रुहू ने फ़रमाया कि मैं हज़रत मख़्दूम शैख़ यूसुफ़ चिश्ती कुद्दिस सिर्रुहू की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक शख़्स बैअ़त के इरादे से आया। ख़्वाजा के क़दमों पर अपना सर रखा और अर्ज़ किया कि बैअ़त के लिए हाज़िर हुआ हूं। ख़्वाजा पर कैफ़ियत तारी थी फ़रमाया कि अगर तुम कहो कि "ला इलाहा इल्लल्लाह चिश्ती रसूलुल्लाह।" तो मैं तुम्हें मुरीद कर लूं। चूंकि वह शख़्स धुन का पक्का और सच्चा था उसने फ़ौरन इक़रार कर लिया। ख़्वाजा ने बैअ़त के लिए उसे अपना हाथ दिया और उसे बैअ़त कर लिया। फिर फ़रमाया कि सुनो कि मैं कौन हूं और क्या हूं। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरबार के कमीने ग़ुलामों में से एक हों। कलिमा वही है मगर मैंने तेरे कमाल और एतक़ाद और सिद्क़ को आज़माया था।" लिहाज़ा पीर के साथ सिद्क़ यही है कि ज़ाहिर और बातिन की किसी हालत पर, ज़र्रा बराबर एतराज़ न करे। इसलिए कि वह हक़ीक़ी जुदाई का सबब है। जहां तक बन पढ़े उसकी सोहबत व ख़िदमत की बरकत से कुछ नेमत हासिल कर। चुनांचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम पर एतराज़ किया तो हाज़ा फ़िराक़ुन बैनी व बैनेका। (यह है हम में और तुममें जुदाई) सुना।

नक़्ल है कि ख़्वाजा अबुल-क़ासिम गरगानी कुद्दिसा सिर्रुहू के मुरीदों में से एक मुरीद ने शैख़ के रू-ब-रू एक ख़्वाब बयान किया कि आप ख़्वाब में कुछ फ़रमा रहे थे। मैंने अर्ज़ किया कि आप मुझसे मुंह क्यों फेरे हुए हैं।" फ़रमाया कि अगर "क्यों" के लिए तुम्हारे दिल में जगह बाक़ी न रही होती तो ख़्वाब में तुम्हारी ज़बान पर "क्यों" जारी न होता।" लिहाज़ा पीर के साथ सिद्क़ और अदब, मुरीद की दाइमी ख़सलत होनी चाहिए कि उस रास्ता के तय करने की बुनियाद है

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

शिर्क पर है। मख़्दूमे मिल्लत शैख़ सअद बुढ़न कुद्दिसा सिर्रुहू ने फ़रमाया कि अगर मुरीद इब्तिदाई दौर में उन चीज़ों की तरफ़ रग़बत करे जो उसका नफ़्स चाहता है वह हरगिज़ कामयाबी को नहीं पहुंच सकता। और पीर को जिन बातों की शरअन रुख़्सत है मुरीद उनका तक़्लीद न करे कि अभी उसमें नफ़्स का असर बाक़ी है और रुख़्सत में नफ़्स का लिहाज़ा रखा ही जाता है। यानी यह कुफ़्र की बुनियाद है कि आदमी अपनी ख़्वाहिशात पर क़ाइम रहे।

ऐ अज़ीज़! वह मामूली गुनाह जो तेरी नज़र में खटकता, हक़ीक़त की तराज़ू में कोहे क़ाफ़ से चन्द गुना बड़ा होता है कि "मुसलमान अपने मामूली गुनाह को एक पहाड़ की तरह जानता है जो उस गिरा पड़ता है और मुनाफ़िक़ उसे मक्खी की तरह यक़ीन करता है जो उस से उड़ जाए।" और यह हरगिज़ गुमान नहीं करता कि इस मामूली से गुनाह से हमारे दीन को क्या नुक़्सान पहुंच सकता है। इसलिए कि वह बाल जो तुम्हारी आंख में पड़ जाता है, वह तुम्हारा इक़रार छीन लेता है, तो दीन की आंख तो बहुत नाज़ुक है तुम्हारी इस आंख के मुक़ाबिल, फिर वह बाल की ताब कहां ला सकती है। (हदीस शरीफ़ में फरमाया) शिर्क मेरी उम्मत में इस च्यूंटी से भी कम रफ़्तार है जो अन्धेरी रात में काले पत्थर पर चले।" (अरे ग़ाफ़िल) वह शिर्क जो बाल से ज़्यादा बारीक है तेरे दीन की आंख में आ पड़ा है। तेरे दीन की आंख बेक़रार है अगर तुझे उसका होश अब भी नहीं तो समझ ले कि तू मुर्दा हो चुका और तूने अपने बदन के चौपाया को ग़फ़लत की नींद के सुपुर्द कर दिया है। अब ईमान के आईना में देख कि वह आईना भी प्यारा है अगर तूने इस बाल को दीन की आंख से न निकाला तो तेरी आंखें जाती रहेंगी। उसके लिए सुर्म–ए–इख़्लास की ज़रूरत है ताकि वह उस बीमार आंख को सेहत बख़्शे।

हां–हां ऐ बिरादरे अज़ीज़! यह नफ़्स एक काला कुत्ता है जो तेरे दर का पाला हुआ है। अपना मुंह हमेशा तेरे दिल की चौखट पर झुकाए (बसूरत मिस्कीन पड़ा) रहता है तो उसे हर रोज़ टुकड़ा डाल कर परवरिश करता रहता है। मगर (याद रख) यह तुझे खा जाएगा और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तुझे ख़बर भी न होगी। मख़्दूमे मिल्लत शैख़ मीना कुद्दिसा सिर्रहू ने फ़रमाया कि इस गरोहे सूफ़िया को नज़राना कुबूल करना सिर्फ़ उस वक़्त जाइज़ है कि नफ़्स की ख़्वाहिश और खाने पीने और पहनने की आरज़ू से बिल्कुल बाहर हो जाएं। और ख़ुलूस के मक़ाम तक जो बहुत ज़्यादा नाज़ुक मक़ाम है तरक़्क़ी करके पहुंच चुके हों। बुज़ुर्गाने दीन का इरशाद है कि बन्दा शैतान से उस वक़्त तक छुटकारा हासिल नहीं कर सकता जब तक मुख़्लिस न हो जाए। अल्लाह तआला का इरशाद है। "मगर तेरे पुर ख़ुलूस बन्दे।"

नक़्ल है कि पिछली उम्मतों में एक आबिद था उसे ख़बर मिली कि फ़ुलां बयाबान में एक दरख़्त है जिसे लोग बतौरे ख़ुदाई पूजते हैं उसे गुस्सा आया और बतर हाथ लेकर उस पेड़ के काटने के इरादा से चला। शैतान एक बुज़ुर्ग की सूरत में उसके सामने आया और कहा कि अपनी इबादत छोड़ कर किस बेहूदगी में फंस गये। फ़रमाया कि यह भी मेरी इबादत है। इब्लीस ने कहा कि मैं तुम्हें न छोडूंगा और उन से लड़ने पर आमादा हो गया। आबिद ने उसे ज़मीन पर दे मारा और सीना पर चढ़ बैठे। उसने कहा कि मुझे छोड़ो और एक बात सुनो। उन्होंने छोड़ दिया। उसने कहा कि अल्लाह तआला ने तुम से यह काम साक़ित कर दिया है और तुम पर फ़र्ज़ नहीं किया अगर वह है पैग़म्बरों से फ़रमा दे वह काट कर फेंक देंगे। आबिद ने कहा कि मैं तो बेग़ैर काटे न रहूंगा। फिर लड़ाई हो गई और आबिद ने उसे फिर ज़मीन पर पटक दिया। आख़िर इब्लीस ने आजिज़ आकर उस से कहा कि उस चीज़ से भी कुछ रग़बत रखते हो जो तुम्हें बहुत ज़्यादा फ़ाइदा पहुंचाए? ज़ाहिद ने कहा अच्छा वह क्या चीज़ है? कहने लगा कि मैं तुम्हें हर रात दो दीनार दूंगा। उन्हें अपने बच्चों भाईयों और फ़क़ीरों पर ख़र्च करना और मुसलमानों को भी सदक़ा देना। यह तुम्हें उस पेड़ के काटने से ज़्यादा मुफ़ीद है। इसलिए कि हो सकता है कि वह दूसरा पेड़ लगा लें।" ज़ाहिद सोचने लगा कि यह बुज़ुर्ग ठीक ही कहते हैं। मैं पैग़म्बर हूं नहीं और ख़ुदाए तआला ने मुझे उसका हुक्म दिया नहीं है कि न मानने पर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...गार हूँ और यह बुजुर्ग जो कुछ कहते हैं उसमें मुसलमानों का भला ...ता है। गरज़ वह आबिद लौट आया और तीन रोज़ तक अपने ...हाने दो दीनार पाता रहा। चौथे रोज़ कुछ न देखा तो गुस्सा आया ...और कुल्हाड़ी हाथ में ली। इब्लीस फिर उलझ पड़ा और आबिद को ...मीन पर दे मारा और अपने पैरों से कुचल दिया। जाहिद ने कहा कि ...अब तू मुझ पर कैसे ग़ालिब आ गया। उसने कहा कि पहली मरतबा ...तुझे सिर्फ खुदा के लिए गुस्सा आया था लिहाज़ा अल्लाह तआला ने ...तुझे मुझ पर बाज़ी दी और इस मरतबा सिर्फ़ अपने नफ़्स और दो दीनार ...के लिए गुस्सा था लिहाज़ा मैं तुझ पर ग़ालिब आ गया।

उन्हीं में है एहसान, ईसार और बुराई का बदला भलाई से। अल्लाह तआला का इरशाद है। यानी और वह लोग अपने नफ़्स पर दूसरों को तरजीह देते हैं अगरचे उन्हें एहतियाज हो।" आयते करीमा के अस्बाबे नुज़ूल में हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से मन्कूल है कि कुछ लोग एक बच्चा बकरी का भुना हुआ किसी दुर्वेश सहाबी के लिए लाए। उन्होंने वह बच्चा अपने से ज़्यादा हाजतमन्द को भेज दिया। उन्होंने एक और दुर्वेश की ख़िदमत में हाज़िर कर दिया। इसी तरह वह बच्चा यके बाद दीगरे नौ सहाबा तक पहुंचा। यह आयत उन्हीं दिल के तवांगर, दुर्वेशों की शान में नाज़िल हुई।

ईसार यह है कि आदमी खुद को किसी चीज़ का हाजतमन्द हो और दूसरे को उसका हक़दार जाने लिहाज़ा अपने सर्फ़ में न लाए और ...स दूसरे को दे डाले।

मैं इस ज़माना में पूरा सख़ी उसे समझता हूं कि अगर उसे गर्दिशे ...दौरां की चक्की से एक रोटी मयस्सर हो तो फ़कीरी और मुहताजी के ...बावजूद, दिली इस्तिग़ना व बेनियाज़ी के बमूजिब, खुद को उसके लेने से बाज़ रखे और उसे दूसरे मुहताजों को दे दे। हज़रत हुज़ैफ़ा अदवी रज़ि अल्लाहु अन्हु से हिकायत है वह कहते हैं कि यरमूक की लड़ाई में एक रोज़ मैं अपने चचाज़ाद भाई की तलाश में निकला। मेरे पास कुछ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

थोड़ा सा पानी था और मैं यह सोच रहा था कि अगर इसमें एक आह ı सांस भी हुई तो मैं उसे यह पानी पिला दूंगा। अचानक मैं उन तक पहुंच गया और मैंने कहा कि क्या पानी पिलाऊं। इशारा से कहा कि "हां"। इतने में एक आदमी के कराहने की आवाज़ आई तो मेरे चचाज़ाद भाई ने कहा कि यह पानी वहां ले जाओ। मैं वहां पहुंचा तो वह हिशाम निकले। मैंने कहा कि पानी लाऊं? कि इतने में हिशाम ने एक और शख़्स के कराहने की आवाज़ सुनी तो बोले कि यह पानी उसके पास ले जाओ मैं जब उनके पास पानी लेकर पहुंचा तो उनका इंतिक़ाल हो चुका था। मैं हिशाम की जानिब लौटा तो वह भी दारे फ़ानी से कूच फरमा चुके थे। फिर मैं अपने चचाज़ाद भाई की जानिब लौटा, देखा तो वह भी वफ़ात पा चुके थे।

हज़रत हसन कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि एहसान यह है कि तुम सबको दो बख़्शिश में किसी को ख़ास न करो। जैसे सूरज, हवा और बारिश। हज़रत सुफ़ियान कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि एहसान यह है कि जो तुम्हारे साथ बदी करे तुम उसके साथ भलाई से पेश आओ। हुस्ने सुलूक मुहसिन की तिजारत है जैसे बाज़ार की नक़्दी कि इस हाथ लो इस हाथ दो।

नक़्ल है कि ईसा अलैहिस्सलाम ने इब्लीस को देखा तो फरमाया कि तेरा सबसे ज़्यादा महबूब, लोगों में कौन है? उसने कहा कि कंजूस मुसलमान। इसलिए कि उसकी इबादत और बन्दगी अल्लाह तआला के दरबार में हरगिज़ क़ुबूल नहीं। उसके बाद पूछा कि लोगों में तेरा सबसे बड़ा दुश्मन कौन सा है? उसने कहा कि नाफरमान सख़ी। इसलिए कि सख़ावत की वजह से उसके तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं। नक़्ल है कि एक शख़्स पर बहुत क़र्ज़ था। वह अपने एक मालदार दोस्त के पास गया और उसे अपना हाल बयान किया। उस दोस्त ने उसके क़रज़ा के मुताबिक़ उसे रुपया दे दिया और फिर रोने लगा। उसकी बीवी ने पूछा कि क्यों रोता है उसने कहा कि दोस्तों की जानिब से अपनी ग़फ़्लत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

और उनकी ख़बरगीरी से अपनी सुस्ती पर रोता हूं कि वह ख़ुद मेरे पास आते और अपनी ज़रूरतें मुझ से बयान करते हैं।

दोस्तों की इज़्ज़त और यारों की आबरू अपनी निगाहों में रखो और हक़ के अता फरमूदा साज़ो सामान से उनकी दिल्जोई करो जिनकी निगाहें तुम पर लगी हैं और उससे पहले कि वह लोग आजिज़ आकर अपना हाल तुम से बयान करें। उनकी हालतों का अन्दाज़ा लगाओ और शिकस्ता हालों की तस्कीन का सामान मुहैया करो।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आयते करीमा कि तफ़सीर पूछी गई तो इरशाद फरमाया कि तुम इससे सिला रहमी करो जो तुमसे कटे। उसे दो जो तुम्हें महरूम रखे और उसे मुआफ़ कर दो जो तुम पर ज़ुल्म करे।

सख़ावत किसी की एवज़ की नीयत से करना, नीयत की रियाकारी है तो एक दे और उसके ख़ुदा से उसके बदले में दस का तलबगार हो। कहते हैं कि किसी शख़्स ने इमाम आज़म रज़ि-अल्लाहु अन्हु के एक तमांचा मार दिया। आपने फरमाया कि मैं भी तुझे तमांचा मार सकता हूं लेकिन नहीं मारता। और मैं उस पर भी क़ादिर हूं कि हनीफ़ा के रू-ब-रू तेरी शिकायत करूं मगर मैं नहीं करता। मुझे इस पर भी क़ुदरत है कि सुबह के वक़्त ख़ुदाए क़ुद्दूस के दरबार में फ़रियाद करूं लेकिन मैं फ़रियाद भी न करूंगा। मुझे यह भी आसान है कि क़यामत में मुक़ाबला की कमर बांधूं और तुझ से अपना इंसाफ़ चाहूं। मगर यह भी न करूंगा। बल्कि कल जब मेरी बख़्शिश हुई और मेरी सिफ़ारिश क़ुबूल की गई तो बेग़ैर तेरे जन्नत में क़दम न रखूंगा।

बदी का बदला बदी बहुत आसान है और अगर मर्द हो तो बुराई करने वालों के साथ भी एहसान करो।

तफ़सीर में है कि एक रोज़ अमीरुल-मुमिनीन हुसैन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा चन्द मेहमानों के साथ एक दस्तरख़्वान पर बैठे थे। आपका एक ख़ादिम एक बर्तन में गर्म शोरबा लाया और बहुत ज़्यादा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned with CamScanner

हैबत की वजह से उसका क़दम बिछौने के किनारे फिसल गया। और वह प्याला शहज़ादा के सरे मुबारक पर गिरा और शोरबा आपके रुख़सारे पर बहने लगा। हज़रत अमीरुल-मुमिनीन हुसैन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने बनीयत सज़ा नहीं, बल्कि सिर्फ़ बइराद-ए-तंबीह उसकी तरफ़ देखा। ख़ादिम की ज़बान पर यह कलिमा जारी हुआ। वल-काज़ेमीनल-ग़ैज़ा। (गुस्सा को पी जाने वाले) अमीर ज़ादा ने फरमाया कि मैंने अपना गुस्सा ख़त्म किया। ख़ादिम ने कहा वल-आफीना अनिन्नासे। (और लोगों से दरगुज़र करने वाले) अमीर ज़ादा ने फरमाया कि मैंने दर गुज़र किया। ख़ादिम ने कहा वल्लाहु युहिब्बुल-मुहसेनीन। (अल्लाह नेकोकार बन्दों को अपना दोस्त रखता है) तो अमीरज़ादा ने फरमाया कि मैंने अपने माल से तुझे आज़ाद किया।

बुराई का बदला बुराई अह्ले ज़ाहिर के नज़्दीक अगरचे दानाई में शुमार हो लेकिन अह्ले बातिन से तअल्लुक़ रखने वाले बदी पाकर नेकी करते हैं।

नक़्ल है कि एक रोज़ अमीरुल-मुमिनीन हुसैन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा चार सौ सहाबा के साथ इस शान से बाहर तशरीफ़ लाए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दस्तारे मुबारक सर पर थी और मौला अली ज़ुल-फ़िक़ार कमर में लटक रही थी और इस हुजूम में ऐसे नुमायां थे जैसे तारों में चांद रौशन हो। एक आराबी आया और उसने पूछा कि यह कौन हैं? सहाबा ने कहा अमीरुल-मुमिनीन हुसैन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा फिर उस आराबी ने आपसे अर्ज़ किया कि क्या तुम अबू तालिब के पोते हो फरमाया "हां" कहने लगा कि तुम्हारे बाप बड़े ख़ूंरेज़ और फित्ना अंगेज़ आदमी थे।" यह सुन कर अब्दुल्लाह बिन उमर और अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर वग़ैरहुम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम ने उसे मारने और अदब सिखाने का इरादा किया। हुज़ूर ने तबस्सुम फरमाया और फरमाया कि उसे छोड़ दो। फिर उससे पूछा कि ऐ वजीहे अरब हम तुझे बड़ा तंगदिल और गुस्सावर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

किताब घर

देते हैं। अगर भूखे हो तो तुम्हें रोटी दें। अगर जंगल की ख़ुशकी का कुछ असर तुम पर है तो हम इलाज करा दें। अगर क़र्ज़दार हो तो हम तुम्हारा क़र्ज़ अदा कर दें। और अगर तुम्हारी बीवी तुम से ऐंठी है तो सुलह करा दें और अगर कोई और काम है तो कहो कि हम तुम्हारी मदद और एआनत करें। आराबी ने शर्मिंदा हो कर आपके पाए मुबारक को बोसा दिया। मुआफ़ी मांगी और चला गया। हज़रत अमीर ने सहाबा से फ़रमाया कि हम बहुत बुलन्द और बहुत बड़े पहाड़ हैं मुख़ालिफ़ हवाओं से कब झुक सकते हैं।

बड़ा दरिया एक काले पत्थर से काला नहीं होता। तो जो आरिफ़ कबीदा हो जाता है वह अभी थोड़े पानी की मानिन्द है।

नक़्ल है कि अमीरुल–मुमिनीन हसन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा को पांच मरतबा ज़हर दिया गया मगर कुछ असर न हुआ मगर छठी मरतबा उनका जिगर टुक्ड़े–टुक्ड़े हो गया। जब आपकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो अमीरुल–मुमिनीन हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने दरयाफ़्त किया कि ऐ भाई जिसने आपको ज़हर दिया है उसे जानते भी हैं? फरमाया हां जानता हूं। अर्ज़ किया कि फिर मुझे बतला दीजिए कि अगर आपकी वफ़ात हो जाए तो मैं इससे बदला ले सकूं और इसे क़िसास तक पहुंचाऊं।" फरमाया कि ऐ भाई किसी के ऐब खोलना हमारे ख़ानदान को ज़ेबा नहीं इसलिए कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहले बैत से हैं। खुदावन्दे तआला की क़सम कि अगर वह मुझे बख़्श दे और जन्नत में जाने का हुक्म फरमाए तो मैं जन्नत में न जाऊंगा जब तक उसे अपने साथ न ले लूं।

वह एक पाकीज़ा असल गौहर और आली मक़ाम जौहर हैं। उनकी तबीअत में एहसान व हुस्ने सुलूक इंतिक़ाम की जगह रासिख़ है। उनका हिल्म और अफ़्व की आदत, जफ़ाकारों की जफ़ा पर सबक़त ले जाती है और उनकी अच्छी आदतें दोनों आलम में ख़ास व आम के लिए रहमत है। हज़रत अबू दर्दा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मर्द की करामत उसका दीन, मुरव्वत उसकी अक़्ल और हसब उसका ख़ल्क़ है। हज़रत उसामा बिन शुरैक रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि मैं ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ। इस वक़्त चन्द आराबी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त कर रहे थे कि सबसे अच्छी वह क्या चीज़ है जो बन्दा को अता फ़रमाई गई। फ़रमाया कि हुस्ने ख़ल्क़। इकरमा बिन वहब रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जन्नत में दुरुश्त ख़ू और मुतकब्बिर दाख़िल न होंगे। मख़्दूमे मिल्लत शैख़ मीना क़ुद्दिसा सिर्रुहू फ़रमाते हैं कि अगर उस गरोहे सूफ़िया पर कोई ज़ुल्म करता है या कोइ चोर माल व मताअ़ ले जाता है तो यह बद्दुआ नहीं करते वरना तवक्कुल बातिल हो जाए और आप यह नज़्म पढ़ते।

कि जो शख़्स हमारा दोस्त नहीं अल्लाह तआला उसे अपना दोस्त बनाए। जो हमें तक्लीफ़ पहुंचाता है हमेशा उसकी राहतें बढ़ती रहीं। और जो शख़्स दुश्मनी से हमारे रास्ता में कांटे डालता है उसकी उम्र का जो फूल खिले बेग़ैर कांटे के रहे।

अल्लाह तआला का इरशाद है।

"रहमान के बन्दें वह हैं जो ज़मीन पर नर्मी से चलते हैं और जब जाहिल उन से मुख़ातिब होते हैं तो वह कहते हैं सलाम।" फ़ुसूल में है कि जिस तरह इस्मे रहमान हक़ सुबहानहू के साथ ख़ास है इसी तरह यह बन्दे भी उसकी बारगाहे क़ुर्ब के ख़ास बन्दे हैं। लिहाज़ा आयत का मतलब यह हुआ कि ख़ुदावन्दे रहमान के बन्दे ज़मीन पर इंकिसारी व तवाज़ु से चलते हैं और जब नावाक़िफ़ व नादां, उन से गुस्ताख़ाना कोई बात करते हैं तो इस अन्दाज़ में जवाब दते हैं कि उन अहमक़ों के मुजादिला व मुकालिमा से सलामत रहते हैं और गाली के बदले दुआ व सलाम कहते हैं चुनांचे मुहक़्क़िक़ रूमी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फ़रमाते हैं।

अगर लोग कहें कि तू दरोग़ो और फ़रेबकार है तो तू कह कि हां

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बल्कि उस से भी दो सद ज़्यादा, फिर अपनी राह ले। और अगर वह गुस्सा में तुझे गाली दें तो तू दुआ दे और ख़ुश होता और हंसता हुआ वहां से चल दे।

अल्लाह तआला का इरशाद है :

हमने उनके सीनों से कीना दूर कर दिया। वह एक दूसरे के भाई हैं और तख़्तों पर आमने सामने बैठे हैं। अबू हफ़्स रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि उन दिलों में कीना किस तरह बाक़ी रह सकता है जो ज़ाते इलाही से मालूफ़, उसकी मुहब्बत पर मुत्तफ़िक़ उसकी मुवद्दत पर मुज्तमा और उसके ज़िक्र से मानूस हैं इसलिए कि यह कुलूबे नफ़्सानी वसवसों से और तबई तारीकियों से पाक हो चुके हैं। उनकी आंखों में नूरे तौफ़ीक़ का सुर्मा है और यह सब भाई–भाई हैं।

कहते हैं कि इब्राहीम अदहम क़ुद्दिसा सिर्रुहू एक जंगल में चले जा रहे थे कि एक सवार आपके पास पहुंचा और पूछा कि आबादी कहां है? आपने फ़रमाया "क़ब्रिस्तान में।" सवार को गुस्सा आया और आपके सरे मुबारक पर एक लकड़ी मारी कि वह टूट गई फिर आपको पकड़ कर शहर में लाया। लोगों ने कहा कि ऐ बेवक़ूफ़ यह तो इब्राहीम अदहम हैं। वह सवार घोड़े से उतरा। आपके क़दमों पर गिर पड़ा और अर्ज़ किया कि मुझे मुआफ़ कर दीजिए फ़रमाया मैंने मुआफ़ किया बल्कि तूने जब मेरे सर पर वह लकड़ी मारी थी। मैंने तुझे दुआ दी थी।" आपके अस्हाब ने पूछा कि आपने दुआ क्यों की? फ़रमाया इसलिए कि मुआफ़ करने से उसकी बदौलत मुझे सवाब मिला। लिहाज़ा मैं ने चाहा कि उसकी वजह से मेरा हिस्सा अच्छा हो और मेरी वजह से उसका हिस्सा बुरा। उन्हीं में इस्तिक़ामत है और यह अफ़आल अक़्वाल और अहवाल में ज़ाहिरी और बातिनी तौर पर मुवाफ़िक़त व मसावात का नाम है और राहे तरीक़त में इस्तिक़ामत से बढ़ कर कोई दरजा नहीं। इस्तिक़ामत की हमराही के बग़ैर मंज़िले कमाल तक पहुंचना एक बेहूदा फ़िक्र और मुहाल ख़्याल है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

पांचवां सुंबुला

ख़ौफ़ और उम्मीद में

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है –

(और बेशक तुम्हारा रब तो लोगों के ज़ुल्म पर भी उन्हें एक तरह की मुआफ़ी देता है और बेशक तुम्हारे रब का अज़ाब सख़्त है) मुहक़्क़ेक़ीन का मज़्हब यह है कि यह आयते करीमा ख़ौफ़ व रजा के दस्तूरुल–अमल का दीबाचा है। इरशाद यह हो रहा है कि हम बख़्शने वाले हैं ताकि लोग उसकी रहमत से मायूस न हों और हम अज़ाब भी फरमाते हैं ताकि उसकी हैबत से लोग बेख़ौफ़ न हो जाएं। हदीस शरीफ़ में वारिद है कि अगर ख़ुदाए बरतर की बख़्शिश न होती तो किसी को अपना आराम गवारा न होता। और अगर अल्लाह तआला का एक़ाब न होता तो हर शख़्स बख़्शिश पर तकिया करके अमल छोड़ बैठता। ऐ अज़ीज़! उम्मीद एक लगाम है जो बन्दे को खींचती है और ख़ौफ़ एक कोड़ा है जो उसे आगे बढ़ाता है। शायद तुम कह बैठो कि अहादीस ख़ौफ़ व रजा के फ़ज़ाइल में बकसरत वारिद हैं। तो इन दोनों में अफ़्ज़ल क्या है? तो यूं समझो कि यह दोनों दवाएं हैं और दवाओं को फ़ज़ीलत वाली नहीं कहा जाता हां नफ़ा बख़्श कहते हैं कि उनका नफ़ा अमवाल व अश्ख़ास की जानिब पलटता है। और उसका जवाब हर हाल में, हर शख़्स के हक़ में यक्सां नहीं। आदमी का कमाल यह है कि वह अल्लाह तआला की मुहब्बत में डूब जाए और जितना उसकी मौत का वक़्त क़रीब आता है उस पर उम्मीद ग़ालिब होती जाए। इसलिए कि यह मुहब्बते इलाही को बढ़ाती है। अगर मर्द ग़फ़्लत पसन्द हो तो इस पर ख़ौफ़ को ग़लबा रहना चाहिए इसलिए कि उम्मीद का ग़लबा उसके लिए ज़हरे क़ातिल है। और अगर इबादत पसन्द है तो उस पर उम्मीद ग़ालिब होना चाहिए।

याद रखना चाहिए कि जहां ख़ौफ़ होता है जुरअत नहीं होती और जहां उम्मीद होती वहां फ़रागत नहीं पाई जाती। न दोस्ती में नाराज़गी होती है न मुशाहिदा में ग़फ़्लत पसन्दी। अल्लाह तआला का इरशाद है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तरजमा : (उसने दो समुन्द्र बहाए (शीरीं और शोर) कि देखने में मिले हुए मालूम होते हैं और है उनमें रोक। कि एक दूसरे पर चढ़ नहीं सकता। तो अपने रब की कौन सी नेमत झुठलाओगे। उनमें से मोती और मूंगा निकलता है।

इमाम कुशैरी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि दोनों समुन्द्र ख़ौफ़ व रजा हैं या तंगी, कुशादगी या उन्स व हैबत। बरज़खे कुदरत बेइल्लत है। लू–लू (मोती) साफ़ सुथरी हालतें हैं और मरजान (मूंगा) कामिल इबादते साहबे कश्फ़े असरार शरह में फ़रमाते हैं कि ख़ौफ़ व रजा का समुन्द, आम मुसलमानों के लिए है और इससे जुह्द और परहेज़गारी का गौहर पैदा होता है। और क़ब्ज़ व बसत तंगी व कुशादगी का दरिया ख़ास मुसलमानों के लिए है और उससे फ़क्र व वज्द का जौहर नमूदार होता है और उन्स व हैबत का दरिया अंबिया व सिद्दीक़ीन के लिए है और उससे फना (फ़िल्लाह) का गौहर ज़ाहिर होता है।

बहरे फ़ना की गहराई से, तू बक़ा का गौहर पा सकता है वरना गोते खाता रह, यह गौहर तुझे कहां मयस्सर आ सकता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि "जो शख़्स अल्लाह तआला से डरता है हर चीज़ उस से डरती है।" हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह आपकी उम्मत में कोई शख़्स बिला हिसाब जन्नत में जाएगा? फरमाया वह शख़्स जो अपने गुनाहों को याद करता और रोता रहे।" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फरमाया कि खुदाए तआला के नज़्दीक इस क़तरा आंसू से ज़्यादा महबूब कोई क़तरा नहीं जो ख़ौफ़े खुदा के बाइस आंखों से बहे।" और इस क़तर–ए–ख़ून से प्यारा कोई क़तरा नहीं जो काफ़िरों से जिहाद करने में गिरे।" यहिया मुआज़ राज़ी कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि अगर मिस्कीन आदमी दोज़ख़ से इतना ही डरता जितना नादारी से तो वह जन्नत में पहुंचता।" लोगों ने आपसे अर्ज़ किया कि कल क़यामत में सबसे ज़्यादा ख़ौफ़ है मामून कौन होगा? फरमाया वह जो आज बहुत ज़्यादा डरता है। हज़रत हसन बसरी रज़ि अल्लाहु अन्हु बरसों खुल कर न हंसे और ऐसे रहे गोया किसी क़ैदी को क़त्ल

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

के लिए लाते हैं। लोगों ने अर्ज़ किया कि आप इल्म की इस फरावानी और कसरते इबादात के बावजूद, क्यों फुंके जा रहे हैं? फरमाया कि खुदाई तआला से डरता हूं कि उसने मेरा वह काम देखा हो जो उसे पसन्द न हो और यह फरमा दे कि हम तुम पर रहमत नहीं फरमाते।

याद रखें कि अक्सर बुज़ुर्गाने दीन का यही तरीक़ा रहा है कि जो उन्हें देखता यह ख़्याल करता कि (मआज़ल्लाह) यह लोग रहमते खुदा से नाउम्मीद हो गये हैं। अब मक़ामे ग़ौर है कि वह खुदा से कैसे डरते होंगे। और शायद तो, इसलिए मामून है कि उनके गुनाह ज़्यादा, और अपने कम समझता है। या उसकी वजह तेरी कोताह नज़री है कि उन्हें मारिफ़त ज़्यादा थी और तुझे नहीं।

नक़्ल है कि एक मरतबा दाऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ की कि इलाही मुझे मेरा आमाल नामा दिखा।" जब उन्हें नाम-ए-आमाल दिखाया गया और उन्होंने पढ़ा तो खाने और पानी की जानिब हाथ दराज़ न किया बल्कि मरवी है कि आपने अल्लाह तआला से शर्म के सबब अपना सर आसमान की तरफ़ न उठाया यहां तक कि वफ़ात पाई। जब दाऊद अलैहिस्सलाम से वह लग़्ज़िश सादिर हुई तो आपकी खुश इल्हानी की सआदत आपसे सल्ब फरमा ली गई। सुनो सुनो यहिया बिन कबीर कहते हैं कि जब दाऊद अलैहिस्सलाम चाहते कि अपनी इस लग़्ज़िश पर नौहा करें तो एक हफ़्ता खाना पीना छोड़ देते। फिर आपके हुक्म से एक मिंबर जंगल में बिछाया जाता उसके बाद हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को हुक्म देते कि वह आवाज़ दें ताकि आदमी, परी, वहशी जानवर और दरिन्दे जमा हों। जब यह सब जमा हो जाते तो आप मिंबर पर तशरीफ़ ले जाते और अपनी लग़्ज़िश पर खुद ही नौहा फरमाते। ऐ बेइंसाफ़ एक नबी और रसूल तो अपनी एक लग़्ज़िश पर इस तरह नौहा करें तो कि दिन में हज़ारों गुनाह करता है, तुझे रात में नींद क्यों कर आ जाती है।

ऐ बख़्शी तुझे खुशी से क्या काम कि मुजिरमों का सीना तो ज़ख़्मों से चूर-चूर रहता है। एक सांस भी वह शख़्स खुशी का नहीं लेता जो तुझ जैसा गुनाहगार होता है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मुहम्मद वासे रहमतुल्लाह फरमाते हैं कि अगर गुनाह में बदबू होती तो मेरे बराबर कोई शख़्स बैठ न सकता। ऐ दुर्वेश अस्हाबे कहफ़ को कुत्ते और बिल्ली से तंबीह हो जाती है तो आदमी को देख कर भी होश में नहीं आता। उसे कैसे दुरुस्त कह सकते हैं।

हिकायत : ख़्वाजा जुनैद रज़ि अल्लाहु अन्हु ने एक मरतबा एक मुरीद से फरमाया कि सुबह किसी हालत में पाई? जवाब दिया कि "सलामती और ख़ैरियत से।" ख़्वाजा ने उस पर गज़ब फरमाया कि ऐ बेख़बर जन्नतियों की बात दुनिया वाले कैसे कह सकते हैं। अरे जिस का एक पांव जन्नत में और दूसरा उस से बाहर से उसे भी यह बात कहना हराम है। तुझे जब कि दुनिया के हफीज़ (सबसे नीचे दर्जे) से बहिश्त के औज तक, आख़िरत की हज़ारों दुश्वारियां दर पेश हैं यह बात कहना क्यों रवा हो सकता है। मूसा अलैहिस्सलाम से ख़िताब हुआ कि ऐ मूसा जब तक तुम अपने दोनों पांव की जन्नत में न देख लो मेरी तरफ़ से बेख़ौफ़ न हो जाना।

मख़्दूम शैख़ नूर कुतुबे आलम कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि हो सकता है कि अल्लाह तआला अपने दुश्मनों को अपने दोस्तों और मुक़र्रब बन्दों के लिबास से आरास्ता फरमाए ताकि वह अपने दौर की ख़ुश हाली पर फूल जाएं और इस गुमान में रहें कि वह अह्ले विलायत से हैं। हालांकि यह ख़ुदाए तआला की जानिब से एक ढील है। लिहाज़ा वह उन्हें इस हाल पर न छोड़ेगा बल्कि उन्हें उन हक़ीक़तों की जानिब लौटा देगा जिन्हें वह बख़ूबी जानता है। और यह भी हो सकता है कि वह उन्हें दूसरों के मुकाबला में इज़्ज़त, वजाहत, रियासत और क़द्र व मंज़िलत के लिबास से ज़ैब व ज़ीनत मरहमत फरमाए। ताकि वह लोग दूसरों की मदह व सताइश पर मगरूर हो जाएं और यह समझने लगें कि हम उनमें फ़ज़्ल वाले हैं हालांकि यह भी ख़ुदाए बरतर की जानिब ढील है लिहाज़ा उन्हें इस शान व शौकत में न छोड़ेगा। यहां तक कि वह उन्हें इन हक़ीक़तों की जानिब लौटा दे जिन से वह ख़ूब वाकिफ़ है। और ऐसा भी होता है कि अल्लाह तआला उन्हें मुख़्तलिफ़ उलूम, ज़बान की फ़साहत दिलों की कुशादगी और हिक्मत की बारीक बीनी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

से आरास्ता कर दे पस वह लोग अपने हुस्ने बलागत, कमाले फ़हम और नुक्ता संजी के गुरूर में मुब्तला हो जाएं और यह समझने लगें कि वह इल्म की हर हक़ीक़त के माहिर हैं। जब कि यह भी खुदाए तआला की जानिब से ढील है। वह उन्हें इस हाल पर न छोड़ेगा यहां तक कि उन्हें इन हक़ीक़तों की जानिब लौटा दे जो उसके इल्मे अज़ली में हैं। यह भी होता है कि अल्लाह तआला उन्हें नेमत के लिबास से आरास्ता कर दे। अनवा व अक़्साम की नेमतों में वह मुस्तग़रक़ रहें। अपने हुस्न की जल्वा आराइयों और ऐश व इशरत की फरावानियों की बदौलत किब्र व निखवत में पड़ जाएं और यह समझने लगें कि हम भी कुछ हैं। हालांकि यह उनके लिए ढील है। और वह उन्हें इस हाल में न छोड़ेगा यहां कि उन्हें वापस फरमा दे। इन हक़ीक़तों की जानिब जो उस पर ज़ाहिर हैं।

वह खुद इरशाद फरमाता है। "यानी अंजाम कार हम उन्हें दरजा बदरजा ऐसी जगह से खींचेंगे जिसे वह नहीं जानते।" यह वह इस्तिद्राज है कि उसकी वहशत से मुरीदों का ऐश दुनिया में मुकद्दर हो गया उनके दिलों की कदूरत दाइमी होगी। उनके चेहरे ज़र्द पड़ गये। उनके नफ़्स पिघल गये। दहशत ने उनकी अक़्लों को खा लिया। उनके दिल पारा-पारा और उनके जिगर टुकड़े-टुकड़े हो गये। और वह दूसरों की निगाहों से ओझल हो गये कि अब उन से मिलते जुलते भी नहीं। चुनांचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं। मुसलमान के इज़्तिराब को सुकून नहीं मिलता और उसका दिल बेख़ौफ़ नहीं होता। जब तक वह दोज़ख़ के पुल से न गुज़र जाए।" हज़रत यहिया मुआज़ राज़ी कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि अल्बत्ता अल्लाह तआला ने बाज़ चीज़ों को बाज़ चीज़ों में छुपा दिया है मगर खुद को अपने हिल्म के हिजाब में। अपनी गिरिफ़्त को अपने लुत्फ़ में, अपनी मदद व नुसरत के तर्क को अपनी गूनागूं नेमतों में। अपने ख़श्म को अपने हसीन पर्दों में और इस्द्रिाज को अपने इल्मे यक़ीनी में मस्तूर फरमा दिया है। लिहाज़ा मुरीद को चाहिए कि नेकोकारी में बसर होने वाले अपने औक़ात, और मिनजानेबिल्लाह हुस्ने सुलूक पर नाज़ां न हो। तुम बहुत से वाइज़ों को इरादत पसन्दों के लिबास में पाओगे जब कि हक़ीक़तन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

वह रांदे-ए-दरबारे ख़ुदावन्दी हैं।

यह भी हो सकता है कि वह अपने दुश्मन को अपनी इस्मत से आरास्ता फरमा कर बज़ाहिर उसे मासूम सूरत बना दे हालांकि वह उसके अज़ली इल्म में मल्ऊन हो चुनांचे उसने बलअम को अपनी विलायत के अनवार से आरास्ता किया हालांकि वह उसके नज़्दीक सज़ा पाने वालों में था। और क़ारून को नेमतों के समुन्द्र में डुबो दिया हालांकि वह अह्ले ग़ज़ब में था। हज़रत अब्दुल्लाह ने फरमाया कि ख़ुदाई तआला की जानिब से चार चीज़ें तुझे गुरूर में न डाल दें। अव्वल तुझ पर वह नेक काम ज़ाहिर करना जो तूने नहीं किए। दूसरे तुझ से वह तेरे बुरे करतूत छुपा देना जो तूने किए हैं। तीसरे तुझे वह चीज़ें फरावानी से अता करना जिनका तूने शुक्र अदा नहीं किया। चौथे तुझे वह मरहमत फरमाना जिसकी तूने ने ख़्वाहिश न की। यहिया बिन मुआज़ फरमाते हैं कि नेमतों और इस्मतों के हिजाबात में रहने वालो! मग़रूर न हो जाना, इसलिए कि इस पर्दा के मावरा क़िस्म-क़िस्म की सज़ाएं हैं। अपनी उम्र के लम्हात को इबादत में मारूफ़ पाकर, मुतकब्बिर न बन जाना कि उन पर्दों में बड़ी आफ़तें हैं। और अपनी अबूदियत की सफ़ाई पर घमण्ड मत करना कि उसमें रुबूबियत के हुकूक़ की फरामोशी पिनहां है।

जुन्नून मिस्री कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि अह्ले इल्म का इस्तिद्राज जाह और मंज़िलत का तलब करना है। इरादतमन्दों का इस्तिद्राज, करीयात और करामात का तक्ना है। आरिफ़ों का इस्तिद्राज, मा सिवा अल्लाह की मारिफ़त के बाद, इरफ़ाने इलाही से बेनियाज़ हो जाता है। शायद उन्होंने मारिफ़त की एक हद व इंतिहा मुक़र्रर कर दी है और यह समझ बैठे हैं कि वह मारिफ़त को घेरे हुए हैं। ग़रज़ जिसका दरजा जितना बुलन्द व बाला होता है। उसका इस्तिद्राज उतना ही दक़ीक़ व बारीक तर अब्दुल्लाह मुबारक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि अल्लाह तआला को बहुत से याद करने वाले उसे भुला देने वाले हैं। बहुत से डरने वाले अल्लाह तआला पर जुरअत करने वाले हैं। बहुत से तिलावत करने वाले ख़ुदा की आयतों से मुंह फेरने वाले हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अबू सईद ख़राज़ ने फ़रमाया कि अगर तुमने दुनिया तर्क कर दी और उसके तर्क पर गुरूर करने लगे तो यह खुद सबसे बड़ी दुनियादारी है दुनिया अभी तुम से नहीं छूटी। अगर तुमने नफ़्स के ऐबों को छोड़ दिया और उस पर इतराने लगे तो यह इतराना सबसे बड़ा ऐब है लिहाजा तुमने ऐबों को न छोड़ा। अगर तुमने कोशिश की और इसी में उलझ कर रह गये तो यह खुद सबसे बड़ा इस्तिद्राज है लिहाज़ा तुमने कोई कोशिश न की। अगर तुमने ख़ौफ़ खाया और इस वजह से बेख़ौफ़ हो गये कि मैं डरता हूं तो यह ख़ौफ़ बेख़ौफ़ी से कहीं बढ़ कर बुरा है। अगर तुम तवक्कुल करो और अपने इस तवक्कुल पर भरोसा कर बैठो न कि वकील कल पर तो तुमने तवक्कुल न किया अगर तुमने खुदाई तआला को अपना महबूब बना लिया फिर उस महबूब के अलावा किसी और को पसन्द करने लगे तो तुमने खुदाई तआला को महबूब न बनाया।" फिर फरमाया कुर्ब में कुर्ब पर नज़र रखना, दूरी ही दूरी है। उन्स में उन्स को देखना सबसे बड़ी वहशत है। ज़िक्र में ज़िक्र पर निगाह रखना सबसे बड़ी भूल है और मारिफ़त में मारिफ़त पर नज़र रखना सबसे बड़ी ग़फ़लत है यहिया मुआज़ ने फरमाया वह गुनाह कि जिसके सबब मैं खुदा की जानिब रुजूअ करूं इस इबारत से बढ़ कर है जिस पर मैं नाज़ करूं।

यह भी हो सकता है कि एक शख़्स दूसरे के लिए कोई अच्छी ख़्वाब देखे और वह भी खुदाए तआला की जानिब से इस्तिद्राज हो। चुनांचे हिकायत है कि एक शख़्स शाम से हज़रत अला बिन ज़ियाद रहमतुल्लाह अलैह की खिदमत मे हाज़िर आया और अर्ज़ किया कि मैंने आपको इस हालत में देखा कि गोया आप बहिश्ती हैं।" आप मज्लिस से फौरन उठ बैठे और रोने लगे। फिर फरमाया कि शायद अल्लाह तआला इस ख़्वाब की वजह से किसी (बड़े) काम का इरादा फरमाए।" लिहाज़ा ऐ अज़ीज़ो! तुम अपने औक़ात की आबादी और अहवाल की सफ़ाई पर गुरूर करने से बचो इसलिए कि बरसीसा और बलअम अपने ज़माने के सबसे बड़े इबादत गुज़ार और सबसे ज़्यादा नेक और पसन्दीदा ख़साइल थे लेकिन जब उन्होंने नफ़्सानी ख़्वाहिश और हवस की जानिब निगाह दौड़ाई तो दुनिया और आख़िरत दोनों में रुसवा हो गये। यूंही नेकों और इबादत गुज़ारों की सोहबत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned with CamScanner

भी गुरूर मत करो और न उनकी ख़िदमत व इताअत गुज़ारी पर। ज़ाहिर कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और लूत अलैहिस्सलाम की बीवियों को पैग़म्बरों की सोहबत ने कुछ फ़ाइदा न बख़्शा।

सुब्हानल्लाह! मिस्कीन भोला भाला आदमी आख़िरत के अहवाल से ऐसा बेख़बर व ग़ाफ़िल है कि अगर कभी–कभी अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से उसे मुतनब्बह किया जाता है तो फिर उस पर ग़फ़लत छा जाती है। हन्ज़ला रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िरत रहता। हुज़ूर ने कुछ नसीहतें फ़रमाईं जिनके बाइस दिल पर रिक़्क़त तारी हुई और आंसू बह निकले। उसके बाद मैं घर आया। घर वाले मुझ से बात चीत करने लगे और हम दुनिया की बातों में पड़ गये कि दफ़अतन मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नसीहत याद आई। मैं फ़रियाद करता और रोता पीटता बाहर आया और मैं कहता था कि हाय हन्ज़ला तू मुनाफ़िक़ हो गया। अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु सामने तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि ऐ "हन्ज़ला तुम मुनाफ़िक़ नहीं हुए" हम इसी हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "ऐ हन्ज़ला! अगर तुम हमेशा इसी हाल पर रहो जैसा मेरे रू-ब-रू, तो फ़रिश्ते तुम से मुसाफ़हा करें लेकिन ऐ हन्ज़ला कभी ऐसा होता है कभी वैसा।"

इमाम अहमद ग़ज़ाली कुद्दिसा सिर्रुहू फ़रमाते हैं कि ख़ौफ़ ईमान का क़िला है और उम्मीदवार इरादतमन्दों की सवारी। लिहाज़ा उस शख़्स में बेहतरी नहीं जिसे तंबीह की जाए और वह मुतनब्बह न हो। ज़न्ने ग़ालिब और एतमादे राजेह यही है कि उम्मीद से मुहब्बत बढ़ती और ख़ौफ़ से (नाफ़रमानी पर) नफ़रत पैदा होती है। ऐसे ही मौक़ा के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि "तुम में से कोई न मरे मगर इस हाल में कि वह ख़ुदाए तआला से नेक गुमान रखता हो।" नीज़ इरशाद फ़रमाया कि रब तआला इरशाद फ़रमाता है कि "मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूं जैसा वह मुझ से

https://t.me/AhlesunnatHindiBooks

Scanned with CamScanner

रखे।" यहिया बिन अशशमर रज़ि अल्लाहु अन्हु को लोगों ने ख़्वाब में देखा तो पूछा कि अल्लाह तआला ने आपके साथ क्या किया? फरमाया कि मुझे हिसाब के मक़ाम पर खड़ा किया और इरशाद फरमाया कि ऐ शैख़ तूने यह क्या किया यहां तक कि मेरे दिल में बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ व हरास पैदा हुआ तो मैंने अर्ज़ किया कि ख़ुदाया मुझे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने, उन्हें मुअम्मर ने, उन्हें ज़हरी ने, उन्हें अनस ने, उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने, उन्हें जिब्रील अलैहिस्सलाम ने और उन्हें तूने यह ख़बर दी कि मैं बन्दा से वही मुआमला करता हूं जिसकी वह मुझ से उम्मीद रखता है और मुझे, तुझ से यह उम्मीद थी कि तू मुझ पर रहम फरमाएगा।" अल्लाह जल्ला शानुहू ने फरमाया कि जिब्रील ने, रसूलुल्लाह ने (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अनस ने, ज़हरी ने, मुअम्मर और अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ठीक ख़बर दी। जा हम ने तुम पर रहम फरमाया फिर करामत का जोड़ा पहनाया उस वक़्त मुझे वह ख़ुशी हासिल हुई कि इस जैसी कभी न देखी।

एक आराबी रसूलुल्लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर आया और अर्ज़ किया कि "मख़्लूक़ के हिसाब का कौन मुतकफ़्फ़िल होगा? फरमाया कि "अल्लाह तआला।" अर्ज़ किया कि "क्या बनफ़्से नफ़ीस ख़ुद? फरमाया "हां"। यह सुन कर आराबी हंस पड़ा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि किस वजह से हंसता है ऐ आराबी! अर्ज़ किया कि करीम जब काबू पाता है तो मुआफ़ करता है और जब हिसाब लेता है तो चश्म पोशी फरमाता है।" अल्लाह तआला का इरशाद है। ऐ बन्दे तुझे किस चीज़ ने अपने करम वाले रब पर फ़रेफ़्ता किया।" तफ़्सीर मुआलिमे तन्ज़ील में है कि अहले बातिन फरमाते हैं कि इस मौक़ा पर तमाम अस्माए हुसना में से करीम को लाना, बन्दे की तल्क़ीन के लिए है ताकि वह कहे कि मै तेरी करीमी पर फ़रेफ़्ता हुआ। मुहक़्क़ेक़ीन फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने इन्तिहाई मेहरबानी के बाइस जो उसकी बन्दा की तरफ है, उसे कम्ज़ोरी और नादानी से मौसूफ़ किया और फरमाया कि ख़ुलिक़ल-इन्सानु ज़ईफ़ा और इन्नहू काना ज़लूमन जहूला।" कि अगर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...की किताब पर

...इबादत में कोताही करे। या अपनी ख़्वाहिश और हवस की पैरवी ...के सबब, उसके अहवाल में ख़राबी आए तो वह अपनी इस कम्ज़ोरी और नादानी को उज़्र बना सके जो उसके सफ़ः हाल पर नक़्श कर दी गई है।

मैं वही कोताह अमल और नादान हूं जैसा तूने पहले अज़ल में फ़रमाया तो ऐसे करीम कमज़ोरों और जाहिलों से क्या बन पड़ सकता है (कि तेरी इबादत का हक़ अदा कर सकें) इमाम अबुल्लैस ने अपनी तफ़्सीर में लिखा कि अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहुल-करीम ने फ़रमाया कि सबसे ज़्यादा उम्मीद बन्धाने वाली आयत जो अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल फ़रमाई यह है। इसलिए कि उसने उसमें यह ख़बर दी कि हम बाज़ करतूतों की बिना पर तुम पर मुसीबत लाते हैं और बहुत से गुनाह मुआफ़ कर देते हैं।" और वह उससे ज़्यादा करीम है कि वह एक मरतबा जिस गुनाह को दुनिया में मुआफ़ फ़रमा चुका दोबारा आख़िरत में उसके सबब अज़ाब न दे। हज़रत शिबली कुद्दिसा सिर्रुहू से लोगों ने पूछा कि कुरआन शरीफ़ में सबसे ज़्यादा उम्मीद अफ़्ज़ा कौन सी आयत है। फ़रमाया "कि हर एक अपने जौहरे नफ़्स पर काम करता है।" अर्ज़ किया गया इस आयत में उम्मीद का ज़िक्र कहां से फ़रमाया कि बन्दे से ज़ुल्म और ख़ता होती है और जो कुछ वह अपनी बदबख़्ती से कर ले जब कि अल्लाह तआला की जानिब से सवाब व अता जल्वा फ़रमाती है और जो उसकी करीमी के शायान है।

हम वह हैं कि सिवाए गुनाह के कुछ नहीं करते और तू वह है कि हर दम करम फ़रमाता रहता है।

इमाम मुहम्मद बाक़र रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि ऐ इराक़ वालो तुम कहते हो कि सबसे ज़्यादा उम्मीद बन्धाने वाली आयत यह है कि ला तक़्नतू मिन रहमतिल्लाह। और हम अहले बैत का क़ौल यह है कि रहमत की उम्मीद व लसौफ़ा यूतीका रब्बुका फ़तरज़ा। में ज़्यादा है इसलिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस वक़्त तक राज़ी न होंगे जब तक उनकी उम्मत का एक गुनहगार भी दोज़ख़ में रहेगा।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मदारिक में है कि जब यह आयत उतरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अब मैं राज़ी न हूंगा जब तक मेरी उम्मत के गुनहगारों में से एक भी दोज़ख़ में रहेगा।

कोई शख़्स गुनाहों में क़ैद नहीं रह सकता जब कि वह ऐसा सरदार और क़ाफ़िला सालार रखता है।

इमाम अल्लामा रहमतुल्लाह तआला अलैह से मन्कूल है कि अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह हुक्म दिया कि - यानी आप अपने लिए और तमाम मुसलमान मर्दों, औरतों के लिए अपने रब की मग़्फ़िरत चाहें।" और हुक्मे इलाही का ख़िलाफ़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जानिब से तसव्वुर में भी नहीं आ सकता। लिहाज़ा आपने यक़ीनन अता चाही और अल्लाह तआला उससे ज़्यादा करम वाला है कि अपने हबीब से फरमाए कि हम से कुछ तलब करो और फिर अता न करे। लिहाज़ा मालूम हुआ कि यह उम्मत, उम्मते मरहूमा है। उम्मत गुनहगार है मगर बख़्शने वाला परवरदिगार है।

अह्ले तफ़्सीर व तज़्कीर और अरबाबे तहक़ीक़ व तदक़ीक़ (नुक्ता शनास मुहक़्क़ेक़ीन) ने उन तीनों गरोहों यानी ज़ालिम, मुक़्तसिद और साबिक़ बिल-ख़ैरात की तफ़्सीर में बहुत कुछ कलाम किया हैं हम तबर्रुकन यहां चन्द कलिमे यहां लिखते हैं। सहल तस्तारी रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि ज़ालिम से मुराद जाहिल मुक़्तसिद से मुराद तालिबे इल्म और साबिक़ से मुराद आलम हैं। यह भी कहा गया कि उन से मुराद दुनिया का तालिबे आख़िरत पर माइल और मौला की तरफ़ तवज्जोह करने वाले हैं। पाकीज़ा का इर्तिकाब करने वाले, सग़ीरा के मुर्तकिब और जुर्मों से दूर व नुफ़ूर रहने वाले हैं। या गुनाहों पर इसरार करने वाले, तौबा करने वाले इबादत गुज़ार और अपनी तौबा पर साबित क़दम रहने वाले हैं। या हराम खाने वाले, मुश्तबह चीज़ों से रग़बत करने वाले और हलाल खाने वाले हैं। या जुर्म करने वाले, तौबा करने वाले और परहेज़गार हैं। या ग़फ़लत बरतने वाले, तबल करने वाले और अपना मक़्सूद पा लेने वाले मुराद हैं। लताइफ़ में फ़रमाया कि ज़ालिम नेमत पाकर मुनइम की जानिब नहीं पलटता और मुक़्तसिद (म्यानारू)।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...से नेमत की जानिब, और नेकियों पर सबक़त करने वाला, ...मुनइम की जानिब रुजूअ होता है यानी वह इस मुनइमे हक़ीक़ी के ...मुशाहिदा में मशग़ूल हो जाता है और इससे फिर कर नेमत की जानिब नहीं पलटता। अल्लाह तआला ने इस्तिफ़ा (चुन लेना) का लफ़्ज़ हर ...के सफ़:-ए-अहवाल पर लिखा। (और इस इंतिख़ाब को ज़ालिम, मुक़्तसिद और साबिक़ सबके लिए आम रखा) और ज़ालिम के ज़िक्र से इब्तिदा फ़रमाई ताकि वह शर्मिंदा न हो और उसकी बेइन्तिहा रहमत का उम्मीदवार रहे। सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि ज़ालिम को तक़्दीम फ़ज़्ले ख़ुदावन्दी के बाइस है। उसको मुअख़्ख़र करना अद्ल की बिना पर है और अल्लाह तआला फ़ज़्ल को अद्ल से ज़्यादा दोस्त रखता है।

ऐ करीम जब तेरे करम का दरिया मौजें मारता है तो परहेज़गारों को गुनहगारों पर रश्क आता है।

इमामुल-मुस्लेमीन साहिबे तफ़्सीर उम्मुल-मआनी ने लिखा है कि तमाम मुफ़स्सेरीन इस बारे में ख़ामोश हैं कि फ़औहा इला अब्देही मा औहा। (पस वही की अपने बन्दे की जानिब जो वही की) के तबाक़ में क्या नेमत थी। बाज़ कहते हैं कि हम इस वही के दर परपै नहीं होते और उसे राज़ ही छोड़ते हैं एक गरोह कहता है कि उस वही के मुतअल्लिक़ जो हदीस व रिवायात हम तक पहुंची है इसके ज़िक्र में कोई नुक़्सान नहीं। और चूंकि इस बाब में रिवायात बकसरत हैं लिहाज़ा हम उन में से दो सूरतें जो सियाक़े कलाम के मुनासिब हैं लिखते हैं। पहली वजह। वही का ख़ुलासा यह बयान करते हैं कि अगर 'आप की उम्मत का मुआतबा मन्ज़ूर न होता तो हम बसाते मुहासबा लपेट देते। दूसरी वजह आपकी उम्मत हमारी बन्दगी करती है और वह हमारी रज़ा से है और गुनाह करती है और यह हमारी क़ज़ा से है। तो जो कुछ हमारी रज़ा से होता है हम उसे क़ुबूल फ़रमाते हैं। अगरचे वह कम हो इसलिए कि हम करीम हैं और जो कुछ हमारी क़ज़ा से होता है हम उसे दरगुज़र करते हैं अगरचे ज़्यादा हो इसलिए कि हम रहीम हैं।

अगर इंसाफ़ व अद्ल के तक़ाज़ा के मुताबिक़ तू मेरी गिरिफ़्त फ़रमाएगा तो मैं फ़रियाद करूंगा कि तेरी बख़्शिश का यह वादा न था।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रब से हिकायत फ़रमाते हैं कि अगर जुर्म करने वाले मेरी बख़्शिश की लज़्ज़त को जान लेते तो वह जुर्म का इर्तिकाब लाज़िम जानते।

चूंकि मेरी रहमत की निगाह मुज्रिमों को ढूंढती फिरती है इसलिए हमने गुनाह का मैदान इख़्तियार कर लिया है।

सूरी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि मेरे पड़ोस में एक शराबी का इंतिक़ाल हुआ मैं उसके जनाज़े में न गया। ख़्वाब में देखा कि (कोई कहता है) कि "अगर अपनी भलाई चाहते हो तो उसकी क़ब्र पर जाओ।" मैं गया और लोगों से उस का हाल पूछा। लोगों ने कहा कि नज़अ् के वक़्त उसकी दोनों आंखों में आंसू भरे थे और वह यह कह रहा था कि "ऐ दुनिया व आख़िरत के मालिक! इस पर रहम फ़रमा जिसके पास न दुनिया है और न आख़िरत।

मैं न बदी में मर रहा हूं और न नेकी में। न मैं किसी चीज़ की इब्तिदा या इंतिहा करके दुनिया से जा रहा हूं। या रब! दोनों जहां तेरी बारगाह की ख़ाक हैं मुझ पर नज़र फ़रमा कि मैं दोनों जहां से ख़ाली हाथ रुख़्सत हो रहा हूं।

साहिबे कश्फ़े! असरार फ़रमाते हैं कि उसके इल्मे क़दीम पर पोशीदा नहीं वह वारिदात जो औलिया के दिलों पर नाज़िल होते रहते हैं और न अस्फ़िया के वह इंफ़ास जो सुन्नियों से निकलते और हर वक़्त ऊपर जाते रहते हैं या यह कि उस पर अयां हैं करमे ख़ालिस की वह लताफ़तें जो उसकी बारगाहे क़दीम से दिलों की जानिब मुतवज्जेह होती हैं। और जो कुछ ऊपर जाता है यानी तौबा करने वालों की गिरया व ज़ारी और तही दस्तों की आह व फ़रियाद। कि जब वह अलस्सबाह, सीना के ख़ल्वत ख़ाना से निकल कर बारगाहे रहमत पनाह की जानिब मुंह उठाती हैं तो फ़ौरन ही उन पर कबूलियत की मुहर लगा दी जाती है। हदीसे क़ुदसी है कि गुनाहगारों की आह व ज़ारी मुझे पाक दामनों की तस्बीह की आवाज़ से ज़्यादा महबूब है।

किसी पाक दामन की तस्बीह का गुलगुला अगरचे बड़ी कबूलियत रखता है लेकिन गुनहगारों की दर्द भरी फ़रियाद की मक़बूलियत की

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...कुछ और ही है।

...बी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि अगर "कोई दर्द ...अपने गरोह में (बख़ौफ़े खुदा) रोता है तो अल्लाह तआला उस ...पर उसके रोने के सबब रहम फरमाता है।

...है अपने गुनहगार और मलूल दिल से एक आह निकालता और ...दे आदम व हव्वा के गुनाहों पर आग डालता हूं।

...वह शख़्स जिसने बनी इस्राईल में सालों तक इबादत की उसके ...एक फ़रिश्ता भेजा गया कि अब (इबादात में) तक्लीफ़ न उठाओ ...हमारे लाइक नहीं। उसने जवाब दिया कि मुझे तो बन्दगी से काम ...खुदावन्दी मेरा काम नहीं वह जाने।" फ़रिश्ता ने यह प्याम पहुंचाया ...जलाले अहदीयत से जवाब आया कि जब बन्दा अपनी लईनी ...बिले लोम हरकतों) के बावजूद मुझ से नहीं फिरता तो फिर मैं अपनी ...की के होते कैसे फिर जाऊं। नज्मुद्दीन कुबरा कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते ...कि उस्के अज़ल से जब सुबहे विलादत तूलूअ़ करती है कि उसकी ...ल्ली की आब व ताब से जान लेती है कि (मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ...ले गई) के क्या मानी हैं और अल्लाह तआला ने अपनी रहमत ...ज़ल सो दोज़ख़ को एक कोड़ा बनाया है कि वह अल्लाह के बन्दों ...जन्नत की तरफ़ राह दिखाती है)" का क्या मतलब है। दोज़ख़ कि ...की जा चुकी इंतिहाई मेहरबानी और रहमत से पैदा फरमाई गई ...कर यहां तक कि रहमान व रहीम का जमाल, सिरा पर्द-ए-इज्ज़त ...बाहर आए और बेग़ैर गोश्त और पोस्त की ज़बान के तुझ से कहे कि ...करीब जहन्नम पर वह ज़माना आएगा कि उसकी गहराई में (एक ...की तरकारी) पैदा होगी। इस इरशाद में क्या राज़ है।

...करीम के ग़ज़ब के शोअ़ले अगरचे बुलन्द होने लगे उस नर्मी के ...की तरह है जिसमें सियाही नहीं।"

...अल्लाह तआला का इरशाद है।

...कुहात में उसके मानी यूं ज़िक्र किए कि क्या गुनाहगार यह ...है कि वह अपने गुनाहों के सबब हमारी बख़्शिश और रहमतें ...पर सबक़त ले जाएंगे यह हुक्म नापसन्दीदा है इसलिए कि हमारी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रहमत उनके गुनाहों पर सबक़त ले गई जो ग़ज़ब के मूजिब हैं।

खुदाए तआला की मग़्फ़िरत हमारे जुर्मों से कहीं ज़्यादा है। यह एक सर बस्ता राज़ है तो क्या कह गया, ख़ामोश रह।

अल्लाह तआला का इरशाद है।

(अल्लाह तआला ने मुसलमानों के जान व माल को जन्नत के एवज़ खरीद लिया है)। अज़ीज़ी ने फरमाया कि जो शख़्स किसी गुलाम को ख़रीदे और उसके ऐब से वाक़िफ़ भी हो तो उसे रद का अख़्तियार बाकी नहीं रहता। तो अल्लाह तआला ने हमें ख़रीदा वह हमारे ऐबों से खूब वाक़िफ़ है तो अब उम्मीद यह है कि अपनी बारगाहे करम से वापस न करेगा।

तूने इल्मे अज़ली में मुझे देखा और मैं जैसा हूं तूने उन्हें ऐबों के होते मुझे ख़रीद लिया। तू अपने इसी इल्म पर है और मैं अपने इसी ऐब में। तू जिसे तूने पसन्द फरमा लिया उसे रद न कर।

यह भी कहा जाता है कि अल्लाह तआला ने तुम्हें गुनाहों में इसलिए मुब्तला किया ताकि तुझे इब्लीस की नज़रे बद न लगे। इसलिए कि जब बाग़ सरसब्ज़ होता है तो उसमें एक गधे का सर लटका देते हैं ताकि उसे नज़र न लगे। बाज़ रिवायतों में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी सफर में थे कि आपका गुज़र एक आज़ाद औरत पर हुआ, जिसके साथ एक बच्चा था। औरत से कहा गया कि देख नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लिए जा रहे हैं। वह ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर आई और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह मुझे आप की यह हदीस पहुंची है कि 'अल्लाह तआला अपने बन्दो पर उस से ज़्यादा मेहरबान है जितनी मां इक्लौते बेटे पर।' क्या यह यूंही है? फरमाया हां। उसने अर्ज़ किया कि मां तो अपने बच्चे को इस तन्नूर में नहीं झोंक सकती। उस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गिरया फरमाया और इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला अज़ाबे जहन्नम का मज़ा उसी को चखाएगा जो कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह कहने से गुरेज़ करे।

अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा रसूलुल्लाह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रज़वी किताब घर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रब से हिकायत फरमाते हैं कि "मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल, अपनी वहदानियत। मख़्लूक़ की मेरी जानिब हाजत, मेरे अर्श पर इस्तवा फरमाने और अपनी तजल्लियात की रिफ्अतों की क़सम है कि मैं अपने इस बन्दे और बन्दी से हया फरमाता हूं जो इस्लाम की हालत में बूढ़े होते हैं। कि मैं उन्हें अज़ाब दूं। मख़दूम शैख़ सअद बदहन क़ुद्देसा सिर्रहु ने मजमउस्सलूक में लिखा है कि क़यामत के रोज़ फरमान होगा कि ऐ फ़रिश्तो! तुम्हारे लिए ताअत है और ऐ रसूलो! तुम्हारे लिए रिसालत है और ऐ ज़ाहिदो! तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़ुह्द है और ऐ गुनहगारो तुम्हारे लिए तुम्हारा रब है। मख़्दूम शैख़ क़यामुद्दीन क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया।

मैं अगर मुफ़्सिद हूं तो उसी की क़ज़ा है और अगर मुस्लेह हूं तो यह भी उसी के हुक्म से है वह मेरा सब कुछ है और मैं उसकी मिल्क। तू कह कि तू दर्मियान में कौन है।

ऐ दोस्त महमूद अयाज़ से कहता है कि अगर तू गुनाह न करेगा तो तेरे वजूद की ख़ाक, इज़्ज़त के दामन से ऐसे झाड़ दूंगा कि उसकी बू भी तेरी मशामे रूह तक न पहुंचे।" अब क्या कहते हो इस मौका पर। अगर अयाज़ गुनाह नहीं करता, तो अयाज़ के सर पर दूसरा गुनाह टूटता है तो जब तक महमूद का मक़्सूद पूरा न हो। अयाज़ गुनाह न करना कुफ़्र है और फरमांबरदारी, इबादत। जो लोग कमाले मारिफ़त तक पहुंच चुके हैं वह जानते हैं कि यह गुनाह क्या है और कुफ़्र क्या। ख़ौफ व उम्मीद के संुबुला को हम यहीं पर ख़त्म करते और फहमे रसा के मुताबिक़ हक़ाइक़ और मआनी में ग़ोता लगाते हैं।

ख़ौफ़ व रजा मौजें मारने वाले दो समुन्द्र हैं जो मआनी व हक़ाइक़ के मोतियों से भरे हुए हैं। तू उनके समुन्द्रो में ग़ोता मारने से बहुत से मोती और क़ीमती मरजान हासिल कर सकता है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

छठा सुंबुला

हक़ाइके वहदत और आसारे मुहब्बत व मारिफ़त के ज़ुहूर में

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है–

(वह जिन्होंने कहा कि हमारा रब अल्लाह है और फिर उस पर क़ाइम रहे)। बहरुलहक़ाइक़ में है कि यह वह लोग हैं जिन्होंने इस्तिक़ामत अख़्तियार की। यूं कि आज़ा को शरीअत के अरकान का पाबन्द रखा। नुफ़ूस को तरीक़त के आदाब सिखाए। क़ुलूब को तअल्लुक़ात से साफ़ सुत्थरा रखा। अरवाह को तजल्लियाते अनवारे सिफ़ात से जगमगाया। सिर को महज़ तौहीद से मुनव्वर किया और ख़फ़ी को, ग़ैर हक़ से फ़ना और हक़ से बक़ा पर क़ाइम रखा। साहबे कश्फ़ुल–असरार ने फ़रमाया कि रब्बुनल्लाह तौहीदे इक़रारी का बयान है और सुम्मस्तक़ामू तौहीदे मारिफ़त की जानिब इशारा है। तौहीदे इक़रारी यह है कि तू अल्लाह को यक्ता कहे और तौहीदे मारिफ़त यह है कि तू उसे यक्ता माने। यानी हर जानिब से तू उसकी वहदत का देखने वाला हो जा और यक़ीन रख कि इस आलमे वहदत में कोई जेहत नहीं।

जानना चाहिए कि अल्लाह तआला वाहिदे हक़ीक़ी है न कि वाहिदे अददी। इसलिए कि वाहिदे अददी जुज़्ईयत और बाज़ियत के क़ाबिल है और वाहिद हक़ीक़ी बाज़ियत और जुज़्ईयत से मुनज़्ज़ह और मुबर्रा। फिर वाहिदे अददी को तमाम अददों से एक निस्बत है, जैसे दो का आधा, तीन का तिहाई और चार का चौथाई, गरज़ किसी तअैयुन के बग़ैर हम जो अदद भी फ़र्ज़ करें, वाहिद अददी उसके अफ़राद में से एक फ़र्द होगा। लिहाज़ा उसे तमाम अददों से निस्बत हासिल है। जब कि वाहिदे हक़ीक़ी को अदाद व शुमार से कोई निस्बत नहीं। फिर वाहिदे अददी तमाम अददों में सिरायत किए हुए है मसलन तुम एक का दो मरतबा एतबार करो तो वह दो हो जाता है। तीन या चार मरतबा शुमार

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

क्यों तो तीन या चार होता है। इसी तरह तुम तकरार में जिस मरतबा का एतबार करोगे नया अदद ज़ाहिर होता रहेगा। लिहाज़ा वाहिदे अददी तमाम अददों में सारी है और वाहिदे हक़ीक़ी इन तमाम निस्बतों से मुनज़्ज़ह व मुक़द्दस है। उसे मकान व ज़मान में नहीं उतारा जाता सकता (वह ज़मान व मकान) और जेहत व सिम्त से भी पाक है इसलिए कि मकान व ज़मान और जिहात व अतराफ़ यह सब हादिस हैं और वह क़दीम अज़ली अबदी है। और क़दीम का हादिस के साथ क़याम नहीं हो सकता। हां जो शख़्स वाहिदे हक़ीक़ी को सिफ़त ला यतजज़्ज़ा (नाक़ाबिले तज्ज़ी) से पहचानता है वह ख़ुद भी सिफ़ाते जिस्मानी से आज़ाद हो जाता है। अगर वाहिदे हक़ीक़ी जल्ला जलालुहू इस वस्फ़ के साथ मुवह्हिद पर तजल्ली करे तो उस तजल्ली के असरात से मुवह्हिदे बसीतुज़्ज़ात की तरह हो जाए।

मुरक्कब जब एक बसीत शय के मानिन्द हो जाए, तो उसके अज्ज़ा का फ़ेअ्ल और उनमें इम्तियाज़ बाक़ी नहीं रहता। वह बसीतुज़्ज़ात की तरह हो जाता है और ईं व आं के माबैन एक वास्ता बन जाता है। वह वास्ता नहीं जो तरकीबे अज्ज़ा से वजूद पाए इसलिए कि रूहे जिस्मीयत के वस्फ़ से बरी है।

अगर वाहिदे हक़ीक़ी इस हैसियत से कि ऐ आदाद से कोई निस्बत नहीं, मुवह्हिद पर तजल्ली डाले, तो मुवह्हिद इस तजल्ली के असरात से, मजाज़ी कसरतों के आदाद को वाहिदे हक़ीक़ी में गुम कर देता है और इस हाल में अगर इससे कसरतों के आदाद का सवाल किया जाए तो वह वहदत ही से जवाब देता है।

हमने बहुत मरतबा तमाम आदाद को गिना उन्हें एक ही (में गुम) पाया और जब सब एक हैं तो हम किस गिनती में हैं।

और अगर वाहिदे हक़ीक़ी इस वस्फ़ के साथ कि उसके लिए अददों में सिरायत नहीं, मुवह्हिद पर तजल्ली फ़रमाए तो मुवह्हिद इस तजल्ली के आसार के बाइस, तनासुख़ के तवह्हुम से रिहाई पा जाए और ग़ैर मुकर्रर तजल्लियात को तनासेख़ से साफ़ मुम्ताज़ समझ ले और जान जाए कि –

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

यह मानवी हैसियत से तनासुख़ नहीं बल्कि दर हक़ीक़त ऐनी तजल्ली के, बकसरते ज़ुहूर हैं।

और कि वाहिदे हक़ीक़ी इस जेहत से कि वह मकान से पाक व मुनज़्ज़ह है मुवहिद पर तजल्ली डाले तो मुवह्हिद इस तजल्ली के आसार के बाइस पानी में चला जाए और तर न हो। आग में चला जाए और न जले। दीवार से ऐसे निकल आए जैसे कि दरवाज़े से और उसे हवा में पालती मार कर बैठना आसान हो जाए। ईसा अलैहिस्सलाम चौथे आसमान पर हैं और फ़रिश्ते हर आसमान पर। और तमाम आसमान (जैसा कि कहा जाता है) गर्दिश में हैं और उलटते पलटते हैं। पस क्या ईसा अलैहिस्सलाम और फ़रिश्ते भी कि आसमानों पर हैं उनके साथ गर्दिश करते और ज़ेर व ज़बर हो जाते हैं? नहीं बल्कि वह अपनी जगह हैं और उन्हें आसमानों की गर्दिश से कुछ मस नहीं। नीज़ तमाम अलवी और सिफ़ली मक़ामात उसके सामने एक नुक़्ता हो जाते हैं।

और यह कि वाहिदे हक़ीक़ी ज़मान से मुनज़्ज़ह और पाक साफ़ है अगर वह इस सिफ़त के साथ मुवह्हिद पर तजल्ली डाले तो मुवहिहद इस तजल्ली के आसार के सबब उन वाक़ेआत को जो रोज़े मीसाक़ में गुज़र चुके और वह अहवाल जो ज़माना आइन्दा और क़यामत में ज़ुहूर पज़ीर होंगे वह सब उसके इल्म में समा जाते हैं और उसे अज़ल व अबद पैवस्ता नज़र आते हैं।

और यह कि वाहिदे हक़ीक़ी जेहत व तरफ़ से पाक है अगर इस सिफ़त के साथ मुवह्हिद पर मुतजल्ली हो तो मुवह्हिद इस तजल्ली के आसार बाइस, ऐना (कहा) मता (कब) और कैफ़ा (कैसे) से दूर निकल जाए और दौलत क़द तबैय्यना ज़ाती मिन हैसु ला ऐना। (मेरी ज़ात का ज़ुहूर वहां से होता है जहां ऐना (कहां नहीं) उसे नक़्द हासिल हो जाती है। इसी तरह हक़ तआला के अस्मा और सिफ़ात में से, जो इस्म या सिफ़त जहां कहीं ज़ाहिर होगी उन अस्मा और सिफ़ात के आसार में से एक असर ज़ाहिर होगा। चुनांचे जाफ़र सादिक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु से लोगों ने अर्ज़ किया कि हम आपको बहमा सिफ़त, मौसूफ़ पाते हैं लेकिन तकब्बुर भी आपसे हुवैदा होता है (इसका क्या सबब है)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...फरमाया कि वह तकब्बुर नहीं बल्कि अल्लाह तआला ने अपनी सिफ़ते किब्रियाई के साथ मुझ में तजल्ली फरमाई है यह उसकी किब्रियाई का ...र तो है जिसे तुम अपने वहम में तकब्बुर समझते हो।

हिकायत मन्कूल है कि एक रात चन्द जवान शिकार की ख़ातिर शहर से बाहर निकले जब जंगल में पहुंचे तो देखा कि कुछ लोग वहां मौजूद हैं और गाने बजाने का अखाड़ा जमा हुआ है कोई सारंगी बजा रहा है कोई मंडल। एक शख़्स मशअल लिए खड़ा है। कुछ लोग गा रहे हैं। एक पातर रक़्स कर रहा है और एक बुज़ुर्ग बैठे हुए यह तमाशा देख रहे हैं। वह सब जवान तअज्जुब करने लगे कि यह कौन लोग हैं कि रात के वक़्त सहरा में शहर से दूर, एक अखाड़ा जमाए हुए हैं इतने में से उन नौजवानों में एक जवान से जिसका तीर कभी खता न करता था वह लोग बोले कि उनमें से एक को मार। किसी ने कहा कि उस बुड्ढे को मारना चाहिए। किसी ने कहा कि इस मशअल्ची को ख़त्म करो। किसी ने सारंगी वाले की जानिब इशारा किया। आख़िरकार यह ठहरा किसी आदमी को न मारें बल्कि मन्डल को ख़त्म करें। इस जवान में मन्डल पर तीर चलाया जब तीर मन्डल तक पहुंचा वह तमाम मशग़ला बिल्कुल नीस्त व नाबूद हो गया। वह सब जवान डर गये और लौट कर अपने मकान आए। जब दिन हुआ सब मिल कर उस जंगल में पहुंचे। देखा कि उल्लू के दो बाज़ू इस तीर में पैवस्त हैं। उस उल्लू को उसी तीर के साथ शहर में लाए। हर शख़्स को दिखाते और रात का वाक़या बयान करते। इस शहर में एक दाना सन रसीदा और तजरबाकार था उसने कहा कि वह अखाड़ा जो तुमने देखा वह भी इस उल्लू की ज़ात का करिश्मा था। तुम्हारा तीर जिसको लगता इसी उल्लू के आज़ा में से किसी एक अज़्व को छेदता।

ऐ मुवह्हिद क्या तुम समझ सकते हो कि वह मशअल, सारंगी, मन्डल, वह ख़ुश इल्हान परिन्दा वह पातर और बुड्ढा यह सब उसी परिन्दे के आज़ा और जवारेह थे और सब वजूदे बेनमूद था और उस परिन्दे के आज़ा और जवारेह का उन चीज़ों में होना एक बूद था जिसका नमूद न था। तो जब एक परिन्दे की नुमाइश की माहियत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

इंसानी अ़क़्ल व फ़िक्र से मालूम करना मुहाल है तो वह जल्वे जो वहिदे हक़ीक़ी के हैं और तमाम आलम के चारों तरफ़ पड़ रहे है तू उन्हें कैसे जान सकता है। हां यूं हो सकता है कि तेरी ज़ात मुवहिहदे हक़ीक़ी में फ़ना हो जाए। लेकिन जब तक तू ज़मान मकान और जिहात से न गुज़रेगा वाहिदे हक़ीक़ी की मारिफ़त तुझे हासिल नहीं हो सकती और तू उसके अस्मा और सिफ़ात पर इत्तिला नहीं पा सकता। मसलन हक़ सुबहानहू मुतकल्लिम है। अज़लन और अबदन कि उसमें कहीं इन्क़िता नहीं। जब कि उसका कलाम एक है जो तअ़द्दुद, तबौउज़, तग़य्युर और तकर्रुर को क़ुबूल नहीं करता और उस मक़ाम को समझना अक़्ल की इस्तेदाद से बाहर है।

रही यह बात कि अल्लाह तआला ने एक सौ चौदह किताबें अंबिया अलैहिमुस्सलाम पर क्यों नाज़िल फ़रमाईं एक भी काफ़ी थी। और यह कि अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश और कोहे तूर के वजूद से पहले हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से यह क्यों फ़रमाया कि (अपनी नअ़लैन उतार लो कि तुम एक पाक मैदान तवा में हो।) और आपने यह कलाम इबरानी ज़बान में क्यों सुना (इसी तरह) ईसा अलैहिस्सलाम के वजूद बेग़ैर उन से कैसे सुख़न फ़रमाया और उन्होंने सुरयानी में क्यों कर सुना और मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से पेश्तर उन से कैसे कलाम किया और आपने उसे अरबी में कैसे सुना, हालांकि कलामे क़दीम उन सबसे पाक व मुनज़्ज़ह है। और यह कि अल्लाह तआला एक इल्म से, तमाम मौजूदात ग़ैर मुतनाहिया को जो हो चुकी हैं और होंगी जानता। एक क़ुदरत से तमाम मक़्दूरात ग़ैर मुतनाहिया को वजूद में लाता, एक शनवानी से तमाम मस्मूआते ग़ैर मुतनाहिया को सुनता। एक बीनाई से तमाम मुरब्बियात ग़ैर मुतनाहिया को देखता और एक इदार-ए-क़दीमा से तमाम मुरादाते ग़ैर मुतनाहिया को चाहता है, तो इन सिफ़ात की मारिफ़त उस वक़्त तक हासिल नहीं हो सकती जब तक सालिक ज़मीनों और आसमानों की हुदूद से न गुज़र जाए। चुनांचे अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला का क़ौल है।

और आसमानों और ज़मीनों की कतारों से गुज़रना, सालिक के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सिफ़ते नासूतिया से गुज़र जाने की मिक़्दार पर है। और सिफ़ते नासूतिया से गुज़रना एक इख़्तियारी मौत है जिसकी जानिब मूतू क़ब्ला अन तमूतू। (मौत आने से पहले मुर्दा हो जाओ।) में इशारा है। और सालिक जब सिफ़ते नासूतिया से गुज़र जाता है तो ज़मान व मकान की उस्अतें उसके रू–ब–रू कोताह हो जाती हैं, और कभी उनकी कोताही दराज़ हो जाती है। उसकी मिसाल कि ज़मान की उस्अत कोताह हो जाती है। उज़ैर अलैहिस्सलाम का क़िस्सा है कि "अल्लाह तआला ने उन पर सौ बरस मौत तारी रखी, फिर उन्हें होश में लाया तो फरमाया कि कितना ठहरे? अर्ज़ किया कि एक दिन या कुछ ज़्यादा।" फरमाया बल्कि तुम सौ साल ठहरे।" इसी वजह से कहने वाले ने कहा कि अद्दुनिया यौमुन व लना फ़ीहे सौमुन। दुनिया एक दिन की है और हमें इसमें रोज़ा रखना है नूह अलैहिस्सलाम जिनकी उम्र शरीफ़ एक हज़ार बरस थी आपके इंतिक़ाल के बाद किसी बेदार दिल ने आपको ख़्वाब में देखा तो अर्ज़ किया कि दुनिया में कितनी मुद्दत क़्यमा किया। फरमाया मैंने उसे ख़ान–ए–दौदरी पाया कि मैं एक दरवाज़ा से दाख़िल हुआ और दूसरे से निकल आया। इसी बिना पर किसी ने कहा है कि अद्दुनिया साअतुन फज्अलहा ताअतुन।" दुनिया एक साअत है उसे साअत में गुज़ारो।" नफ़्हात में मज़्कूर है कि अली सहल अस्फ़हानी क़ुद्दिसा सिर्रुहू से लोगों ने दरयाफ़्त किया कि रोज़ बला (यानी रोजे मीसाक़े उलूहियत) याद है? फरमाया क्यों नहीं कल ही की तो बात है।" लोगों ने यह बात हज़रत ख़्वाजा अब्दुल्लाह अन्सारी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तक पहुंचाई। फरमाया "वह अभी गये नहीं। सूफ़ी के लिए आज और कल क्या। अभी तो उस दिन की रात भी नहीं आई। सूफ़ी के लिए अभी वही वक़्त है।

ऐ सूफ़ी के मानिन्द रहने वाले! दिन आज का है गुज़री हुई और आने वाली कल का हाल क्या मालूम। वह शख़्स जो हक़ से एक दिन भी ग़ाफ़िल नहीं उसके लिए माज़ी और इस्तिक़्बाल, हाल के सिवा कुछ नहीं।"

जानना चाहिए कि वह हाल जो माज़ी और इस्तिक्बाल के दर्मियान

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned with CamScanner

है वह तीन ज़मानों में से एक ज़माना है और माज़ी व मुस्तक़्बिल का इस हाल में जमा होना मुहाल और वह हाल जिसमें माज़ी व मुस्तक़्बिल हाज़िर रहते हैं वह इन तीनों ज़मानों के मावरा एक हालत है।

और उसकी मिसाल कि ज़माने की कोताही दराज़ हो जाती है, अबुल-हसन ख़रक़ानी क़ुद्दिसा सिर्रुहू का वाक़या है कि आपने फ़रमाया कि एक रात हमें हम से ले लिया गया। तमाम बड़े-बड़े वारिदात हम पर गुज़र गये और जब हम को आपे में लौटा दिया तो हमारा चेहरा और बाल वुज़ू के पानी से हुनूज़ तर थे। हमारे दोस्तों में एक साहब हैं कि उन्होंने एक लम्हा से कम में सौ मरतबा तमाम क़ुरआन शरीफ़ को हरफ़न-हरफ़न और आयत-आयत करके पढ़ा और यह कैफ़ियत उन पर बारहा गुज़र चुकी है।

मन्क़ूल है कि एक मरतबा मख़्दूम शैख़ शिहाबुद्दीन सुहरवर्दी और उन के साहबज़ादे शैख़ इमादुद्दीन अपने चन्द अहबाब के साथ मक्का मुबारका में मौजूद थे। शैख़ इमादुद्दीन ने फ़रमाया कि एक रोज़ तवाफ़े काबा के दौरान मैंने एक दुर्वेश को देखा कि मख़्लूक़, तवाफ़ ही की हालत में उस से तक़र्रुब चाहती, तबर्रुक हासिल करती और उनकी ज़्यारत करती रही। हमारे साथियों ने हमारे मुतअल्लिक़ उन से यह बयान किया कि यह शैख़ुश्शयूख़ के साहबज़ादे हैं। उन्होंने हमें मरहबा फ़रमाइ और सर पर बोसा दिया कि उसका मज़ा मैं अब भी महसूस कर रहा हूं। और मुझे उम्मीद है कि क़यामत में उसका नतीजा मुबारक होगा।" हमने सातों तवाफ़ और दोगान-ए-नमाज़ अदा किया और फिर शैख़श्शयूख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हमारे साथियों ने कहा कि हम ने साहबज़ादे को शैख़ ईसा मग़रेबी से मिला दिया। उन्होंने बड़ी मसर्रत ज़ाहिर की और उनके सर का बोसा लिया। शैख़ुश्शयूख़ ने यह सुन कर बहुत ज़्यादा बशाशत व मुसर्रत का इज़्हार फ़रमाया। फिर हमारे साथी शैख़ ईसा के ख़साइल बयान करने लगे। उन्हीं में से यह बयान किया कि शैख़ ईसा एक दिन रात में सत्तर हज़ार क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म कर लेते हैं।" शैख़श्शयूख़ के एक बुज़ुर्ग हम्राही ने फ़रमाया कि हमने भी यह बात सुनी थी मगर हमारे दिल को इत्मीनान न होता था यहां तक

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...के एक मरतबा शैख ईसा जब बोस-ए-हजरे अस्वद से फारिग़ हुए और काब-ए-मुअज़्ज़मा के दरवाज़े तक पहुंचे तो दर्मियानी रफ़्तार से पूरा कुरआन शरीफ़ ख़त्म कर चुके थे और मैंने पूरा कुरआन शरीफ एक-एक हर्फ़ सुना। हालांकि हर शख़्स को मालूम है कि हजरे अस्वद से काबा के दरवाज़े तक तीन चार क़दम से ज़्यादा फ़ासिला नहीं। उस वक़्त मुझे यक़ीने कामिल हो गया कि शैख का सत्तर हजार कुरआन शरीफ़ का विर्द कर लेना सही व दुरुस्त है।' उसे सुन कर शैखुश्शुयूख और हमारे तमाम साथियों ने उस नाक़िल की कि बहुत ज़्यादा सच्चे आदमी थे तस्दीक़ की और उसके वक़ूअ का सब को यक़ीन हो गया।

नक़्ल है कि हज़रत जुनैद रज़ि अल्लाहु अन्हु के अस्हाब में से एक साहब दजला के किनारे नहाने गये। कपड़े उतारे और पानी में एक ग़ोता लगाया और जब अपना सर उठाया तो अपने आपको हिन्दुस्तान में पाया (ख़ैर) वहां आपने शादी की, औलाद हुई और आप बरसों वहां रहे। एक मरतबा आप फिर दरिया पहुंचे (ग़ोता लगाया तो) अपने आपको दजला में पाया और देखा कि कपड़े भी वहां रखे हुए हैं। कपड़े पहन कर जब ख़ानक़ाह हाज़िर हुए तो साथियों को देखा कि उसी नमाज़ का वुज़ू कर रहे हैं। जब उसने वह वाक़या हज़रत जुनैद कुद्दिसा सिर्रुहू से अर्ज़ किया तो आपने कुछ लोगों को हिन्दुस्तान भेजा और उसकी अहलो अयाल को बुला कर उसके सुपुर्द कर दिया। इस वाक़या की हक़ीक़त उसको मालूम तक न हुई अगरचे उसी का यह सब वाक़या था।

सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वाक़या मेअ्राज भी इसी हक़ीक़त पर मबनी हो सकता है कि एक लम्हा में, तमाम मम्लिकते आलम की एक-एक चीज़ तफ़्सील के साथ आप को दिखा दी गई और हक़ तआला से नब्बे हज़ार कलिमे आपने सुने और जब वापस तशरीफ़ लाए तो अब तक बिस्तर गर्म था बल्कि इस किस्म के वाक़ेआत तो सैय्यद आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत सादिर हुए लेकिन इंसाफ़ पसन्द के लिए यही काफ़ी है।

ग़रज़ इस मक़ाम पर गुज़रा हुआ और आने वाला ज़माना, ...न-ए-हाल हो जाता है चुनांचे सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

है वह तीन ज़मानों में से एक ज़माना है और माज़ी व मुस्तकिल का इस हाल में जमा होना मुहाल और वह हाल जिसमें माज़ी व मुस्तक़्बिल हाज़िर रहते हैं वह इन तीनों ज़मानों के मावरा एक हालत है।

और उसकी मिसाल कि ज़माने की कोताही दराज हो जाती है। अबुल–हसन खरक़ानी कुद्दिसा सिर्रुहू का वाकया है कि आपने फरमाया कि एक रात हमें हम से ले लिया गया। तमाम बड़े–बड़े वारिदात हम पर गुजर गये और जब हम को आपे में लौटा दिया तो हमारा चेहरा और बाल वुज़ू के पानी से हुनूज़ तर थे। हमारे दोस्तों में एक साहब हैं कि उन्होंने एक लम्हा से कम में सौ मरतबा तमाम कुरआन शरीफ़ को हरफ़न–हरफ़न और आयत–आयत करके पढ़ा और यह कैफ़ियत उन पर बारहा गुज़र चुकी है।

मन्कूल है कि एक मरतबा मख़्दूम शैख़ शिहाबुदीन सुहरवर्दी और उन के साहबज़ादे शैख़ इमादुद्दीन अपने चन्द अहबाब के साथ मक्का मुबारका में मौजूद थे। शैख़ इमादुद्दीन ने फरमाया कि एक रोज़ तवाफ़े काबा के दौरान मैंने एक दुर्वेश को देखा कि मख़्लूक़, तवाफ़ ही की हालत में उस से तक़र्रुब चाहती, तबर्रुक हासिल करती और उनकी ज़्यारत करती रही। हमारे साथियों ने हमारे मुतअल्लिक़ उन से यह बयान किया कि यह शैखुश्शयूख़ के साहबज़ादे हैं। उन्होंने हमें मरहबा फ़रमाइ और सर पर बोसा दिया कि उसका मज़ा मैं अब भी महसूस कर रहा हूं। और मुझे उम्मीद है कि क़्यामत में उसका नतीजा मुबारक होगा।" हमने सातों तवाफ़ और दोगान–ए–नमाज़ अदा किया और फिर शैख़श्शयूख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हमारे साथियों ने कहा कि हम ने साहबज़ादे को शैख़ ईसा मग़रेबी से मिला दिया। उन्होंने बड़ी मसर्रत ज़ाहिर की और उनके सर का बोसा लिया। शैखुश्शयूख़ ने यह सुन कर बहुत ज़्यादा बशाशत व मुसर्रत का इज़्हार फरमाया। फिर हमारे साथी शैख़ ईसा के ख़साइल बयान करने लगे। उन्हीं में से यह बयान किया कि शैख़ ईसा एक दिन रात में सत्तर हज़ार कुरआन शरीफ़ ख़त्म कर लेते हैं।" शैख़श्शयूख़ के एक बुज़ुर्ग हम्राही ने फरमाया कि हमने भी यह बात सुनी थी मगर हमारे दिल को इत्मीनान न होता था यहां तक

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

कि एक मरतबा शैख़ ईसा जब बोस-ए-हजरे अस्वद से फ़ारिग़ हुए और काब-ए-मुअज़्ज़मा के दरवाज़े तक पहुंचे तो दर्मियानी रफ़्तार से पूरा कुरआन शरीफ़ ख़त्म कर चुके थे और मैंने पूरा कुरआन शरीफ़ एक-एक हर्फ़ सुना। हालांकि हर शख़्स को मालूम है कि हजरे अस्वद से काबा के दरवाज़े तक तीन चार क़दम से ज़्यादा फ़ासिला नहीं। उस वक़्त मुझे यक़ीने कामिल हो गया कि शैख़ का सत्तर हज़ार कुरआन शरीफ़ का विर्द कर लेना सही व दुरुस्त है।" उसे सुन कर शैख़शयूख़ और हमारे तमाम साथियों ने उस नाक़िल की कि बहुत ज़्यादा सच्चे आदमी थे तस्दीक़ की और उसके वक़ूअ़ का सब को यक़ीन हो गया।

नक़्ल है कि हज़रत जुनैद रज़ि अल्लाहु अन्हु के अस्हाब में से एक साहब दजला के किनारे नहाने गये। कपड़े उतारे और पानी में एक ग़ोता लगाया और जब अपना सर उठाया तो अपने आपको हिन्दुस्तान में पाया (ख़ैर) वहां आपने शादी की, औलाद हुई और आप बरसों वहां रहे। एक मरतबा आप फिर दरिया पहुंचे (ग़ोता लगाया तो) अपने आपको दजला में पाया और देखा कि कपड़े भी वहां रखे हुए हैं। कपड़े पहन कर आप ख़ानक़ाह हाज़िर हुए तो साथियों को देखा कि उसी नमाज़ का वुज़ू कर रहे हैं। जब उसने वह वाक़या हज़रत जुनैद कुद्दिसा सिर्रुहू से अर्ज़ किया तो आपने कुछ लोगों को हिन्दुस्तान भेजा और उसकी अह्लो अयाल को बुला कर उसके सुपुर्द कर दिया। इस वाक़या की हक़ीक़त उसको मालूम तक न हुई अगरचे उसी का यह सब वाक़या था।

सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वाक़या मेअ़राज भी इसी हक़ीक़त पर मबनी हो सकता है कि एक लम्हा में, तमाम मम्लिकते आलम की एक-एक चीज़ तफ़्सील के साथ आप को दिखा दी गई और हक़ तआला से नब्बे हज़ार कलिमे आपने सुने और जब वापस तशरीफ़ लाए तो अब तक बिस्तर गर्म था बल्कि इस क़िस्म के वाक़ेआत तो सैय्यद आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत सादिर हुए लेकिन इंसाफ़ पसन्द के लिए यही काफ़ी है।

ग़रज़ इस मक़ाम पर गुज़रा हुआ और आने वाला ज़माना, ज़मान-ए-हाल हो जाता है चुनांचे सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सल्लम ने वाक़-ए-मेअ्राज में फरमाया कि मैंने यूनुस (अलैहिस्सलाम) को मछली के पेट में देखा।" सही बुख़ारी और सही मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैंने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ को देखा कि हंसते हुए जन्नत में टहल रहे हैं। मैंने फरमाया कि देर क्यों कर दी। अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह आप तक पहुंच न सका और हुज़ूर के न होने से मुझे जो दुशवारियां पेश आई वह बच्चे को बूढ़ा कर देती हैं। मैं तो यह समझा था कि अब हुज़ूर का दीदार नसीब न होगा।" मालूम हुआ कि यूनुस अलैहिस्सलाम को इस हालत में देखना कि आप मछली के पेट में हैं हालांकि उसे दो तीन हज़ार साल का ज़माना गुज़र चुका और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ को क़्यामत के बाद जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार बरस है, वाली-ए-हालत पर देखना, और उन से कलाम फरमना, सिवाए ज़मान-ए-माज़ी के किसी और ज़माना में नहीं हुआ तो हज़ारों गुज़रे हुए साल और हज़ारों आने वाले साल, आपके लिए ज़माना हाल बन गये और ज़माना गुज़िश्ता व आइन्दा के हालात आप पर उसी वक़्त रौशन हो गये।

तो जब यह जाइज़ है कि सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ से किसी वक़्त में वह कलाम फरमाएं जो पचास हज़ार साल के बाद होगा और वह भी हक़ीक़ी कलाम हो न कि मजाज़ी हालांकि वह हालत, ज़ाहिरन मौजूद नहीं तो यह क्यों कर रवाना होगा कि वह बादशाह हक़ीक़ी अज़ल में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम वह कलाम फरमाए कि वह तूरे तूर पर मौजूद हों और कलाम फरमाया जाए, हालांकि आपका वजूदे ज़ाहिरी उस फ़ल्की ज़माना में न हो। और इसी तरह तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलमा से उसके कलाम फरमाने को समझो कि वह हालत न उसके लिए माज़ी है न मुस्तक़्बिल। अगर उस ज़माना की दराज़ी को देखो तो पलक झपकने से कम मालूम हुआ और अगर उसकी कोताही को ख़्याल में लाओ, तो अज़ल और अबद को उस लम्हा में पाओ। उस ज़माने के लिए गुज़रना और आना" नहीं है और न उसमें तअद्दुद, तजद्दुद और तबौव्वुज़ का कोई दख़ल है।

और उसकी मिसाल कि मकान की फराख़ी तंग हो जाती है उन

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

दुर्वेशों का किस्सा है कि एक नुजूमी ने उन से कहा कि आज नया चांद हो जाएगा। दुर्वेश ने फरमाया कि नहीं होगा। नुजूमी ने कहा कि अगर आज चांद न दिखाई दे तो मैं आपको इतना और इतना तावान दूं। जब रात हुई तो दुर्वेश ने अपना एक हाथ ज़मीन पर रखा और उस पर तकिया लगा कर बैठ गये। लोगों ने बहुत तलाश किया मगर नया चांद नज़र न आया। जब दिन निकला तो लोगों ने उस नुजूमी को तावान के लिए पकड़ लिया। उस वक़्त दुर्वेश ने तबस्सुम किया और फरमाया कि आज की रात चांद रात थी लेकिन मैंने चांद को अपने हाथ के नीचे छुपा लिया था। तो उस दुर्वेश ने अपन वह हाथ जो ज़मीन पर रखा हुआ था आसमान की जानिब कैसे उठा लिया कि चांद को छुपा लिया मगर बात यह थी कि वह दुर्वेश उस मक़ाम पर थे कि मकान की उस्अतें उस मक़ाम पर तंग हैं।

इसी तरह एक दुर्वेश बीमार पड़े। तयम्मुम से नमाज़ अदा करते थे। एक रोज़ बोले कि आसमान से तयम्मुम करना जाइज़ है। हाज़िरीन ने कहा कि ऐ मख़्दूम कहां आदमी और कहां आसमान। दुर्वेश ने तयम्मुम की नीयत से दोनों हाथ दो मरतबा आसमान पर मारे और चेहरा तक लाए। उसके बाद फिर दो मरतबा दोनों हाथ आसमान पर मारे और हाथों को (कुहनियों तक) मिला। आसमान यूंही अपनी जगह था। और उनके हाथ यूंही कोताह और अपने हाल पर। हाज़िरीन ने अगरचे यह हाल देखा मगर उस दुर्वेश के मक़ाम को न पहचाना कि वह उस मक़ाम पर थे जहां कुर्ब व बुअ्दे मकानी नहीं समाती।

हिकायत सुल्तान महमूद सुबकतगीन ने आयाज़ को एक लश्कर के साथ किसी विलायत की इमारत सौंप दी थी। बादशाह जब खाना खाते तो अपने मामूल के मुताबिक़ एक चीनी तबाक़ अपने बचे हुए खाने का सामने से उठाते और अयाज़ को दे देते। अयाज़ बावजूद अपने मरतबा व मक़ाम के इस तबाक़ को ताज़ीम से लेते और सुल्तान का पस ख़ुर्दह खा लेते। उस पर एक मुद्दत गुज़र गई और शाही बावर्ची ख़ाना में तबाक़ कम होते गये। दारोग़ा मत्बख़ को उसकी तलाश हुई कि वह चीनी तब्बाक़ क्या हुए? सुल्तान ने फरमाया कि वह सब तब्बाक़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अयाज़ के पास हैं एक ऊंट रवाना कर दिया जाए ताकि उस पर लाद कर लाए जाएं।

राहे इश्क़ में दूरी व नज़्दीकी के मरहले नहीं होते। मैं तुझे बरमला देखता और दुआएं करता रहता हूं।

ऐ मुवहिहद तू निगाहे इबरत आईना पर नहीं डालता कि अगर आईना को आसमान के सामने रख दिया जाए तो उसमें आसमान और सूरज का अक्स, नज़र आए हालांकि सूरज चौथे आसमान पर है, इस बेकदूरत आईना में साफ़ नज़र आता है। और अगर आसमान हाइल न हो तो तमाम अल्वियात व सिफ़्लियात (आलमे बाला व पस्त) इस सफ़ाई मे मुन्अकिस हो जाएं। तो वह सफ़ाई एक लक़ व दक़ सहरा है कि उसमें इस क़द्र मसाफ़तों की गुंजाइश मौजूद है। ऐ मुवहिहद लोहे (यानी आईना– कि ज़माना क़दीम में आईने लोहे के बनाए जाते थे। यही वजह है कि शोअ़रा आईना में ज़ंग, अपने कलाम में बांधते हैं वरना वह शीशे के आईने, जो हमारे ज़माना में मौजूद हैं, उनमें ज़ंग कहां) में सिक़ालत व सफ़ाई की वजह से ऐसा सहरा पैदा हुआ, तो अगर दिल को मुहब्बत और इश्क़ से सैक़ल व पाकीज़ा कर ले तो ऐसा सहरा उसमें पैदा हो कि अगर अर्श और उस जैसे सौ अर्श, और जो कुछ उसमें है, उस सहरा के किसी गोशा से गुज़र जाएं तो तुझे ख़बर भी न हो।

और उसकी मिसाल कि मकान की तंगी फराख़ हो जाए तो यूं समझ लो कि अह्ले मारिफ़त के लिए सख़्त पत्थर भी, फ़राख़ व कुशादा हो जाते हैं। और वह जो कहा जाता है कि ऊंट का सूई के सूराख़ में आना जाना मुहाल है और कहते हैं कि अल्लाह तआला को उस पर कुदरत है कि ऊंट को बहुत छोटा कर दे कि वह सूराख़ से गुज़र सके या सूइ के सूराख़ को इतना वसीअ़ कर दे जिसमें ऊंट समा जाए तो यह दुरुस्त है। हां ऊंट अपनी जसामत पर रहे और सूई का सूराख़ अपनी हालत पर, तो इस हालत में ऊंट के सूई के सूराख़ से गुज़रने को ज़रूर मुहाल जानते हैं। मगर यह भी उनकी अक़्लों के नज़्दीक मुहाल है। अल्लाह तआला की कुदरत में मुहाल नहीं। ख़्वाजा जहां हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती कुद्दिसा सिर्रुहू ने इस पत्थर के बुत से फरमाया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

था कि मेरा लोटा उठा और हौज़ का पानी भर के ले आ। उस ने ऐसा ही किया (उधर हौज़ खुश्क हो गया) तो आख़िर तमाम हौज़ का पानी लोटे में किस तरह समा गया कि हौज़ में मिट्टी के सिवा पानी का एक क़तरा भी बाक़ी न रहा। हज़रत की यह करामत मशहूर है। बिल-फ़र्ज़ अगर वहां सात दरिया भी होते तो वह भी इस लोटे में समा जाते। यह तसर्रुफ़ है बन्दगाने बारगाहे इलाही में से एक बन्दा मुक़र्रब का।

दुनिया को सरतापा एक आईना जानो कि हर ज़र्रह में सौ चांद रौशन हैं। अगर तुम एक क़तरा का दिल चीर कर देखो तो उससे सौ शफ़्फ़ाफ़ दरिया बहने लगीं। और अगर तुम हर ज़र्रह ख़ाक पर रास्त नज़र डालो तो उसमें हज़ारों बनी आदम नज़र आएं। हर दाने के पेट से सैंकड़ों ख़िरमन निकलें और ज्वार के जिगर से एक जहां हुवैदा हो। मच्छर एक पर में पूरी दुनिया की गुंजाइश है और एक नुक़्ता में सात आसमां समाए हुए हैं।

जानना चाहिए कि मकान की पांच क़िस्में की गई हैं। मकाने कसीफ़, मकाने लतीफ़, मकाने अलतफ़, मकाने रूहानियत और मकाने रूहे इंसानी। मकाने कसीफ़ ज़मीन है जिसकी दुश्वारी और तंगी ज़ाहिर है कि जब तक एक उठ न जाए, दूसरा उसकी जगह बैठ नहीं सकता। उसकी दूरी और नज़्दीकी भी मालूम है। और उस मकान में एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाना मुम्किन ही नहीं जब तक कदम न उठाए जाएं और मसाफ़त तय न हो। और यह ऐसी बात नहीं जिसका समझना दुशवार हो।

मकाने तलीफ़ हुआ है। उस मकान में भी तंगी है इसलिए कि चमड़े का वह थैला जो हवा से ख़ूब भरा हुआ है उसमें मज़ीद हवा उस वक़्त तक नहीं जा सकती जब तक उसको अन्दर की हवा से ख़ाली न किया जाए। हां इतनी बात याद रखने की है कि मकाने कसीफ़ का बुअ्द, उस मकान का क़ुर्ब है इसलिए कि मकाने कसीफ़ में जितनी दूर एक महीने में पहुंचा जा सकता है, इस मकाने तलीफ़ में एक दिन में तय हो सकती है। चुनांचे हज़तर सुलेमान अलैहिस्सलाम का तख़्त, जिसे हवा उड़ाती थी। हर दिन और हर रात में एक महीने की मसाफ़त तय करता

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

था। (खुद कुरआन शरीफ़ में है) उसकी सुबह की मंज़िल एक महीने की राह और शाम की मंजिल एक महीने की राह अल्बत्ता दूरी उस मकान मे भी पाई जाती है इसलिए कि अगर हवा मश्रिक से मग़्रिब को जाना चाहे तो उसमें कुछ मुद्दत ज़रूर लगेगी।

मकाने अलतफ़, अनवारे सूरी का मकान है और जो कुछ मकाने तलीफ़ मे दूर है यहां नज़्दीक। सूरज जब मश्रिक से अपना सर उठाता है तो उसी आन में बेग़ैर ताख़ीर के उसकी रौशनी मग़्रिब तक पहुंचती है। अगर उसकी रविश हवा के मकान की तरह होती तो मग़्रिब तक पहुंचने में ज़रूर कुछ मुद्दत लगती। यही हाल आग और उसकी मानिन्द चीज़ों का है जब तक उनकी रौशनी मुन्कता न हो। उससे यह बात मालूम होती कि रौशनी को मकान हवा में एक इलाहिदा मक़ाम हासिल है। हां उस मकान में दुश्वारी और तंगी नहीं इसलिए कि जब तुम एक मशअ़ल मकान में रौशन करो तो उसकी रौशनी मकान के कोनों में पहुंचती है। अगर तुम सौ मशअ़लें और रौशन कर लो तो भी इन सब मशअ़लों का नूर उसी एक मकान में समा जाएगा। बे उसके कि पहली मशअल का नूर बाहर निकाला जाए। मगर दूरी उस मकान के लिए भी है इसलिए कि सूरज की रौशनी कसीफ़ पर्दों से पार नहीं जा सकती और जब दूरी ज़्यादा बढ़ती है तो रौशनी ख़त्म हो जाती है।

मकाने रूहानियत : इस मकाने अलतफ़ से भी मावरा है और वह फ़रिश्तों का मक़ाम है कि उनकी सैर के लिए बड़ी से बड़ी रोक माने नहीं हो सकती।

नक़्ल है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम सिदरा के मक़ाम से आंख झपकते ज़मीन पर जाते। चुनांचे जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों ने हज़रत यूसुफ़ को कुंए में डाला तो ख़िताब हुआ कि "ऐ जिब्रील! यूसुफ़ तक पहुंचो।" तो जैसे ही आपके भाईयों ने आपको अपने हाथों से छोड़ा।' हज़रत जिब्रील आप तक पहुंच गये और आहिस्तगी से कुंए में उतार दिया कि उन्हें कोई तक्लीफ़ और गज़िन्द न पहुंचे। मगर उनके मकानों में भी बहुत ख़फ़ीफ़ सी दूरी है इसलिए कि उन्हें हरकत की ज़रूरत है। अगरचे पलक झपकने से कि वक़्फ़ा में मक़्सूद तक पहुंच

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

जाते हैं, लेकिन यही हरकत की ज़रूरत रूहानी कमाल के मनाफ़ी है। हां मकाने रूहे इंसानी, कमाले लताफ़त रखता है इसलिए कि वह किसी हरकत का मुहताज जहां उसे तलाश कर लोगे पा लोगे। अर्श से लेकर तहतुस्सरा तक कोई ज़र्रह, उससे और उसके मकान से दूर नहीं है। मगर फिर भी उसमें कुछ दूरी है इसलिए कि नामुतनाही इल्लीयीन उस से दूर है और ला मुतनाही साफ़ेलीन भी। बल्कि जो चीज़ भी ग़ैर मुतनाही है वह उस से दूर है इसलिए कि मुतनाही, ला मुतनाही का एहाता नहीं कर सकता।

यहां इतनी बात भी समझ लो कि वाहिदे हक़ीक़ी तबारक व तआला इन तमाम मकानों से जिन्हें हम ने ज़िक्र किया मुनज़्ज़ह, मुक़द्दस और मुतआली है। न उसका हलूल उन ज़िक्र करदह मकानों में जाइज़, न उनका मस होना उस से मुतसव्विर, और न उन मकानों का उसके महाज़ात में होना रवा। इस बरगुज़ीदा की मंज़िलत, इन तमाम चीज़ों से बालातर है वह मंज़िलत, कुर्ब दर कुर्ब है उसमें किसी एतबार से कोई बोद मुम्किन ही नहीं। इल्लीयीन साफ़ेलीन और तमाम ग़ैर मुतनाही उमूर, उसके लिए एक नुक़्ता हैं। इस बिना पर कहा गया है कि जो कुछ इन अट्ठारह हज़ार आलम में मौजूद है सब कुरआन शरीफ़ में है। और जो कुद कुरआन शरीफ़ में है अल्हम्दु शरीफ़ में है और जो कुछ अल्हम्दु शरीफ़ में है बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम में मौजूद है। और जो कुछ बिस्मिल्लाह में है वह बिस्मिल्लाह की बा में है। और जो कुछ बा में है वह उसके नुक़्ता में है।" और हक़ीक़तन यह नुक़्ता रोशनाई का वह नुक़्ता नहीं जो कागज़ पर लगाते हैं बल्कि उसके लिए न तूल से न अर्ज़। न दूरी है न गहराई। न मसाफ़त है न फ़ासिला। न ऊंचाई न नीचाई और न दाएं बाएं आगे पीछे होना।

यही वह नुक़्ता है जिसके लिए कहा गया है कि इल्म एक नुक़्ता है जिसे जाहिलों ने फैला लिया है।" अगर तुम इस मकान की फ़राख़ी व वुसअत को देखो तो आग की तंगी से कम पाओ कि उसमें आंख के चश्मे ख़ातम की समाई है और अगर उसकी तंगी और दुशवारी पर नज़र डालो तो तमाम ग़ैर मुतनाही अशिया को उसके एहाता में पाओ।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ऐ मुवह्हिद! अल्लाह तआला तुम्हें अपनी मारिफ़त की तौफ़ीक़ बख़्शे। यूं समझो कि वह नुक्ता, जिस से ना मुतनाही इल्लीयीन और ग़ैर मुतनाही साफ़ेलीन के मकानों का एक ज़र्रह भी दूर नहीं है। वह अल्लाह तआला का यह इरशाद है। (इससे ग़ायब नहीं ज़र्रह भर कोई चीज़ आसमानों में और न ज़मीन में। और न उस से छोटी और बड़ी, कम न उस से ज़्यादा) और वह लम्हा जिसमें गुज़िश्ता और आइन्दा अज़ल से लेकर अबद तक का ज़माना मौजूद है वह-(और हमारा काम तो एक बात की बात है जैसे पलक मारना)।

यह नुक्ता और यह लम्हा असरारे वहदानियत का मज़्हर और वाहिदे हक़ीक़ी के अनवारे फरदानियत का मशहद है। और वाहिदे हक़ीक़ी अज़्ज़ा व जल्ला इस नुक्ता और लम्हा से भी पाक और मुनज़्ज़ह है। हां उसे अल्लाह का मकान, या अल्लाह का ज़मान कहना, इख़्तिसास व शर्फ़ अफ़्ज़ाई की बिना पर है जैसा कि बैतुल्लाह, नाक़तुल्लाह और रूहुल्लाह। और इंतिहाई क़ुर्ब के बाइस मक़ामे रब भी कह सकते हैं। व अम्मा मन ख़ाफ़ा मक़ामा रब्बेही। से इसी मक़ाम की जानिब इशारा है कि इस मक़ाम से बढ़ कर कोई और मक़ाम नहीं। और जब मुवह्हिद उस मक़ाम पर पहुंचता है तो यह मक़ामे मुवह्हिद की जानिब मन्सूब हो जाता है। इब्राहीम खलीलुल्लाह, अलैहि सलवातुल-जलील जब उस मक़ाम पर पहुंचे तो इरशाद हुआ। इसमें खुली हुई निशानियां हैं (उन्हीं में) मक़ामे इब्राहीम है तो जो उस में दाख़िल हुआ उसने अमान पाई। और जब मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस मक़ाम पर पहुंचे तो इरशाद हुआ। क़रीब है कि आपका रब आपको मक़ामे महमूद इनायत फरमाए। ऐ मुवह्हिद! इससे पहले कि तू उस मक़ाम को ऐनुल-यक़ीन और हक़्क़ुल-यक़ीन से पाए, इल्मुल-यकीन से पा ले। अगर तू इल्मुल-यक़ीन ही में कोई शक और शुबह रखता है तो क़यामत के वाक़ेआत क़ुरआन शरीफ़ से सुन कहीं तू फरमाया कि क़यामत का दिन पचास हज़ार बरस का होगा।

और दूसरी जगह इरशाद हुआ कि एक लम्हा और क़यामत का मुआमला नहीं मगर एक पलक का मारना बल्कि उससे भी क़रीब)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ऐ मुवहि्हद! पचास हज़ार साल का एक लम्हा में गुज़र जाना मैंने कुरआन पढ़ कर तुझे बताया, ताकि तुझे इस हालत के वकूअ पर कामिल यक़ीन हो और इस वाक़या के सुबूत पर तेरा अक़ीदा रासिख़। और तू इल्मुल-यक़ीन से जान ले कि यह अहवाल सब होने वाले हैं अगरचे अक़्ले फ़िक्र, फ़हम और फ़रासत उन्हें मुहाल जानती है। और वह भी इस बिना पर कि इल्म व अक्ल और फ़हम व फ़िक्र इस मारिफ़त के लिए माने हाजिब और आड़ हैं।

तेरे लिए खुद तेरी अक़्ल सबसे बड़ी रुकावट है। अहवाले अजबिया को उसमें क्या हीला बनाता है।

ऐ काश कि ग़ैब के फ़ैजान से तेरा शक मिट जाए। या इल्म सीमिया के दरवाज़ों में से कोई दरवाज़ा तुझ पर खुल जाए ताकि हम जो कुछ कहते हैं वह तुझे दुरुस्त और बजा मालूम हो। जैसा कि लोग बयान करते हैं कि शाह हुमायूं के ज़माना में शहर शम्स आबाद में एक शख़्स हिन्दू था। जिसका नाम राघू था। इल्मे सीमिया में महारत रखता था और लोग उसे राघू जीतन कहते थे। अजीब-अजीब शोबदे लोगों को दिखाता और अचंभे में डालने वाली बातें ज़ाहिर करता। तमाम लोग उसकी महारत पर तअज्जुब करते थे। यहां तक कि एक रोज़ शैख़ अहमद फरमली और शैख़ अहमद कि अहले इल्म थे और लोग उन्हें आख़ोन्द कहते थे। यह दोनों भी उसका तमाशा देखने पहुंचे और बोले कि हमें भी कोई करतब दिखा। राघू जीतन ने उन दोनों को एक घर में बिठा दिया और घास की चन्द टिट्टियां घर के एक तरफ खड़ी कर दीं और शैख़ अहमद फरम अली से कहा कि आप इस टिट्टी में आएं। शैख़ अहमद जैसे ही उसमें दाख़िल हुए उन्हें दिल में यक़ीन हो गया कि मैं गुजरात के इरादे से मकान से बाहर निकला हूं चुनांचे आप रोज़ाना तय करते और रात को किसी जगह आराम कर लेते। यहां तक कि एक मुद्दत के बाद गुजरात पहुंचे। वहां लेमूं या चकूतरा का एक नया बाग़ देखा। इस बाग़ में से चन्द फल तोड़ लिए कि इतने में बाग़बान आ पहुंचा और उन्हें डांटता कि तुम कौन हो कहां से आए हो कि शाही बाग़ से तुमने बेग़ैर पूछे और बिला इजाज़त फल तोड़ लिए।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कुछ और भी सख़्ती की। आख़िर कार शैख़ अहमद को पकड़ कर बादशाह के सामने हाज़िर किया और बोला कि न मालूम यह कौन शख़्स है कि उसने शाही बाग़ से फल तोड़ लिए हैं। बादशाह ने जब बाग़बान की बद ज़बानी को देखा तो बोला कि ऐ गधे तू लोगों को नहीं पहचानता। यह आदमी शरीफ़ मालूम होता है क्या हुआ अगर उन्होंने नावाक़ेफ़ी की बिना पर कुछ फल तोड़ लिए।

उसके बाद बादशाह ने शैख़ अहमद से पूछा कि तुम कहां से आए हो। कौन हो और किस काम के लिए आए हो? शैख़ अहमद ने जवाब दिया कि बादशाह सलामत मैं एक फरमली हूं मेरा वतन क़न्नौज में है। मैं नौकरी के इरादे से आया था और जब गुजरात पहुंचा तो ख़्याल आया कि यहां मेरा कोई मुलाक़ाती नहीं है मुझे बादशाह के पास कौन ले जाएगा। बिल–आख़िर इस बाग़बान ने मुझे इस तरीक़ा से बादशाह की ख़िदमत में पहुंचा दिया। बादशाह ने कहा कि अच्छी बात है हमने तुम्हें अपनी मुलाज़िमत में क़ुबूल किया। फ़ौरन उन्हें दो घोड़े बख़्शे और ख़र्च के लिए कुछ नक़द दिया और जागीर भी दी जिस से गुज़र औक़ात हो। एक मकान भी उनके रहने के लिए दिया। शैख़ अहमद बरसों उस बादशाह की ख़िदमत में रहे। वहां शादी की। आपके औलाद हुई। बादशाह जब शिकार को जाता तो उन्हें अपने साथ लेता और जब चौगान के मैदान में आता तो उन्हें भी बुलाता। यहां तक कि उसी हालत में पचास बरस गुज़र गये और शैख़ अहमद बहुत बूढ़े और कम्ज़ोर हो गये। अल–ग़रज़ एक रोज़ शैख़ अहमद अचानक एक झोंपड़ी में दाख़िल हुए और चन्द क़दम चल कर बाहर आए देखा कि शैख़ अहमद अख़वन्द बैठे हैं। उन्होंने अस्सलामु अलैकुम कहा और उन से मुलाक़ात की और बग़लगीर हुए और पूछा कि आप गुजरात में कब आए? अख़वन्द ने कहा कि गुजरात यहां कहां? यह तो शम्साबाद है। और हम तो राघू जीतन के घर में हैं। तुम तो अभी इस झोंपड़ी में गये थे और फ़ौरन लौटे। शायद एक घन्टा गुज़रा हो। अब शैख़ अहमद फरमली को याद आया कि हम दोनों उसका करतब देखने के लिए आए थे। ख़ुद को जैसा कि नौ उम्र थे वैसा ही पाया। वह बुढ़ापा। कम्ज़ोरी और बालों की सफ़ेदी.

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...ब दूर हो चुकी थी। गोया कि थी ही नहीं। अब यह हैरान हैं परेशान हैं। वह तमाम वाक़ेआत जो उन पर गुज़रे एक-एक करके शैख़ अख़्वन्द के रू-ब-रू बयान किए उसके बाद उनके दिल से तमाम उम्र यह हैरत न गई कि एक घन्टे में पचास साल कैसे गुज़र गये। और उस घर की चार दीवारी में गुजरात और गुजरात के रास्ते कैसे समा गये। मगर चूंकि यह वाक़्या खुद उन्हीं पर गुज़रा था लिहाज़ा इंकार भी न कर सकते थे अगरचे उनकी अक़्ल और समझ में जमता भी न था। इस क़िस्म के वाक़्या को तूने ख़्वाब में भी नहीं देखा तो तेरी अक़्ल व फ़िक्र में कैसे ठीक हो सकता है। मगर इंकार भी मत कर कि कुरआन शरीफ़ में मज़्कूर है।

जब कि वह लोग जो ज़मान व मकान की दराज़ी की गुंजाइश को, ज़मान और मकान की तंगी व दुश्वारी में मानते और उसकी कैफ़ियत व माहियत को बख़ूबी पहचानते हैं, वह भी वाहिदे हक़ीक़ी की मारिफ़त में हैरान हैं। हज़रत राबेआ बसरीया रज़ि अल्लाहु अन्हा से पूछा कि आपने खुदा को क्योंकर पहचाना? फ़रमाया "बिला कैफ़ उसे पहचाना।" यानी वह कैफ़ व कैफ़ियत नहीं रखता जिसे बयान किया जा सके।

और वह जो अक़ीदा है कि खुदाए तआला अपनी तरह दूसरा खुदा पैदा नहीं कर सकता। यह मुहाल उसके ज़ेरे क़ुदरत नहीं। और यहां वारिद होने वाले एतराज़ कि "अगर वह मुहाल पर क़ादिर न होगा तो क़ुदरत नाकिस हो जाएगी।" यह जवाब देना कि यह उसकी क़ुदरत में नुक़्स का मूजिब नहीं। (नुक़्सान तो उसका मुहाल है कि तअल्लुक़ क़ुदरत की उसमें सलाहियत नहीं) तो अज़ीज़े मन! (यह अक़ीदा अगरचे हक़ है मगर) अक़्ल क खाने में जिस क़द्र पेश रफ़्त और मुक़दमात हैं वह मारिफ़त के बाज़ार में नहीं चलते। इसलिए कि अक़्ल अपनी तमाम वारिदात व मुक़दमात के साथ ऐसे साहिबे अक़्ल की तरफ़ मरदूद व मरदूद कर दी जाती है। वह वाहिदे हक़ीक़ी के अनवारे मारफ़ित में मफ़्क़ूद व मअ़्दूम रहती है। ऐ मुवह्हिद! जिस मक़ाम पर आफ़ताबे मारिफ़त, अपनी तमाम तर शुआओं के बावजूद, महज़ लाशी और नीस्त व नाबूद हो, वहां अपनी वारिदात के साथ चिरागे अक़्ल के लिए, बूद व नमूद का कौन सा मक़ाम मिल सकता है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

जब हक़ की मारिफ़त अक़्ल से नहीं हो सकती तो अक़्ल के वास्ते से इरफ़ान का हुसूल मुहाल है और जहां खुर्शीद गुम हो जाता हो वहां चिरागे अक़्ल की रौशनी क्या काम आ सकती है।

अक़्ल कहती है कि दूसरा ख़ुदा पैदा करना, ज़ेरे क़ुदरते इलाही नहीं। इस बात को दाना आदमी पसन्द करता है कि उसे हक़ व नाहक़ में इम्तियाज़ हासिल है। लेकिन याद रखना चाहिए कि चश्मे मारिफ़त के नज़्दीक, तौहीद में उसकी ज़रा गुंजाइश नहीं कि अक़्ल की बातें उसमें समा जाएं। इसलिए कि न आफ़ताब पर कोई पर्दा डाला जा सकता है और न अक़्ल की गहराइयां, ला मुतनाही को अपने एहाता में ला सकती हैं।

सिद्दीके अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु इस मक़ाम की ख़बर देते हैं कि इद्राक की दरयाफ़्त से आजिज़ रह जाना ही इद्राक है।" इसी वजह से मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि "हम तेरी सना का एहाता नहीं कर सकते तू वैसा ही है जैसा कि तूने अपनी सना फरमाई। ऐ मुवहिहद! फिल–हाल अगर वाहिदे हक़ीक़ी की मारिफ़त की इतनी बातें तू समझ ले और तेरी अक़्ल व फ़हम में समा जाएं फिर तो इल्मे यक़ीन से जान ले कि मैं तौहीदे हक़ीक़ी तक पहुंच चुका और उसकी हक़ीक़ते वहदत को पहचान चुका तब भी वल्लाह बिल्लाह यह बात दुरुस्त और सही नहीं है।

अगर तमाम काइनात की मख़्लूक़ सत्तर हज़ार मरतबा ख़ुदा की वस्फ़े वहदानियत में ग़ौर करे तो आख़िर कार उन्हें मज्बूर हो कर उसका इक़रार करना पड़ेगा कि ख़ुदाया अब हमें यक़ीन हो गया कि हम ने कुछ भी ख़्याल नहीं जाना है।

ऐ हमारे ख़्याल क़्यास गुमान और वह्म से बरतर व बाला बल्कि हर उस चीज़ से जिसे हमने कहा सुना और पढ़ा। मज्लिसें ख़त्म हो गईं। उम्रें इन्तिहा को पहुंच चुकीं लेकिन हम इस तरह तेरे पहले ही वस्फ़ की मारिफ़त में पड़े हुए हैं।

फ़स्ल ना शनासाई में मरज़ व मौत के अक़्साम और शनासाई हक़ में सेहत व ज़िन्दगी की अनवा, और बाज़ दूसरे पोशीदा निकात के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

बयान हैं। कि उन में से अक्सर तफ्सीरे हुसैनी से लिए गये हैं। अल्लाह तआला ने फरमाया। (क्या वह शख़्स जो मुर्दा था फिर हमने उसे ज़िन्दगी बख़्शी) मुहक़्क़ेक़ीन फरमाते हैं कि मौत ख़्वाहिशात की पैरवी है और ज़िन्दगी अल्लाह तआला की मुहब्बत से। या मौत उसकी अदमे मारिफ़त से और ज़िन्दगी मारिफ़त से है कश्फ़ुल-असरार में मज़्कूर है कि हयाते मारिफ़त और शय है और हयाते बशरीयत और दुनिया वाले हयाते बशरीयत से ज़िन्दा हैं और ख़ुदा के दोस्त हयाते मारिफ़त से। एक रोज़ वह आएगा कि हयाते बशरीयत ख़त्म हो जाएगी कि – (हर जान को मौत का ज़ाइक़ा चखना है) और हयाते मारिफ़त हरगिज़ तमाम न होगी। हम उन्हें पाकीज़ा ज़िन्दगी बख़्शेंगे।

वह नहीं मरता जिसकी ज़िन्दगी तो हो। मुबारक है वह जान तू जिसका जानां (प्यारा) हो। नीज़ अल्लाह तआला का क़ौल है। कि जब मैं बीमार पड़ता हूं तो वह मुझे शिफ़ा देता है। सलमा कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि मरज़ ग़ैरों की रूयत है और शिफ़ा, वाहिदे क़ह्हार के अनवार का मुशाहिदा। बहर में है कि बीमारी कौनेन से तअल्लुक़ का नाम है। और शिफ़ा तर्के तअल्लुक़ात का। वह जो मुझे मारता और फिर जिलाता है। कहते हैं कि इमातत (मारना) गुनहगारी से है या तबई नादानी या फिराक़ से, और ज़िन्दा करना बन्दगी से है या अक़्ल से या परहेज़गारी या मुलाक़ात से। साहिबे बहर ने फरमाया कि (आयत के मानी यह हैं कि) वह मुझे औसाफ़े बशरीयत से मारता और अख़्लाक़े रूहानियत से ज़िन्दा करता है और फिर औसाफ़े रूहानियत से मारता और सिफ़ाते रब्बानियत से ज़िन्दा करता है। और हक़ीक़त यह है कि अनानीयत (ख़ुदी) से मारता और हुवैयत (वहदत) से ज़िन्दा करता है कि यही हयाते हक़ीक़ी है।

मैं अपनी उम्रे फानी को नहीं ढूंढता कि तू ही मेरी उम्र अज़ीज़ है और मैं ग़म आलूद ज़िन्दगी को नहीं चाहता कि तू ही मेरी ज़िन्दगी है तेरी ज़ात की क़सम।

शिबली कुद्दिसा सिर्रुहू ने आयते करीमा यम्हुल्लाहु मा यशाओ व युसबितु। (अल्लाह जो चाहे मिटाता और साबित रखता है) की तफ्सीर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

में फरमाया कि वह शुहूदे अबूदियत और उसके लवाज़िम को मिटाता और शुहूदे रुबूबियत और उसकी तजल्लियात को साबित रखता है इमाम कुशैरी कुदिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि वह नफ़्सानी ख़्वाहिशों को महव करता है और हुक़ूक़े रब्बानी को साबित रखता है व मुशाहिद-ए-ख़ल्क़ को ले जाता और मुशाहिद-ए-हक लाता है व आसारे बशरीयत को मिटाता और अनवारे अहदीयत को साबित रखता है। या बन्दे की आन घटाना और अपनी शान बढ़ाता है। ताकि जिस तरह वह अव्वल था इसी तरह आख़िर रहे। हज़रत शैख़ुल-इस्लाम कुदिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि इलाही तेरे जलाल इज़्ज़त ने इशारा की जगह न छोड़ी। तेरे महव व इस्बात ने इज़ाफ़त की राह उठा दी। मैं आन घटा कर तेरी शान बढ़ाई यहां तक कि वही आख़िर रहा जो अव्वल था।

हमारी मिट्टी और पानी की सरिश्त में हर चीज़ की मुहब्बत है। मगर मिट्टी और जान के ख़मीर से पहले जो कुछ था वही हमारा हासिल है। हम ने आलमे ग़ैब में एक घर बना लिया है और उसी घर की तरफ़ चले हैं जो हमारी यादगार है।

पस मुदहिहदे हकीकी जब शुहूदे हक की यादगार पर पहुंचता है तो उसकी नज़रे शुहूद में हर चीज़ फानी नज़र आती है। शरह अवारिफ़ में है कि फरमाया 'युहलिकु' न फरमाया ताकि मालूम हो जाए कि आज अशिया का वजूद अल्लाह तआला के वजूद में फानी है मगर इस हाल के मुशाहिदा की सुपुर्दगी, कल महजूबों के हक में है। वह उसे दूर समझते हैं और हम उसे करीब देखते हैं।) मुहक्केकीन कहते हैं कि जब हक तआला के सिवा कोई और मौजूदे हकीकी नहीं तो हकीकतन उसके सिवा हर चीज़ फानी है। साहिबे कश्फुल-असरार कलिमाते शैख़ुल-इस्लाम से नक़्ल करते हैं कि न कोई तेरे अलावा है न तू किसी से अलावा। यह जो कुछ है पस तू ही तू है बाक़ी तमाम इलाक़े मुन्कता और तुअल्लुक़ात मुरतफ़ा हैं। निशानाते बातिल हैं और अस्बाबे मुज्महल। हुदूदे ला शय हैं और मख़्लूकात फ़ानी। हक यक्ता है और ख़ुद से बाक़ी।

याद रखें कि इसी मकाम को सिराते मुस्तकीम कहते हैं। अल्लाह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तआला का कौल है कि व अन्ना हाज़ा सिराती मुस्तकीमा।" मुहक्केकीन का कौल है कि कोई रास्ता मुतअय्यन नहीं होता जब तक उसकी इब्तिदा व इन्तिहा न हो। मगर आरिफ़ जानता है कि तमाम इब्तिदा किस से है और तमाम इन्तिहा किस से।" हज़रत शैख़ सदरुद्दीन क़न्नौजी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने एजाजुल-बयान में फरमाया कि अल्लाह तआला का तमाम अशिया को मुहीत होना साबित है और वही एहाता हर सिरात का मुन्तहा और हर सालिक की इन्तिहा है। चुनांचे इरशाद हुआ। (उस अल्लाह का रास्ता जिसके लिए वह सब कुछ है जो आसमानों और ज़मीनों में है। सुन लो कि अल्लाह ही की जानिब तमाम उमूर पलटते हैं।

हम जहां कदम रखते हैं तेरे कूचा में पड़ता है और जिस गोशा में जाते हैं तेरी ही आवाज़ से गूंजता है। हमने सोचा कि शायद दूसरे की जानिब भी कोई रास्ता हो। मगर जब हमने देखा तो हर रास्ता तेरी ही जानिब पाया।

यही वह मकाम है जहां पहुंच कर सालिक (आलमे हैरत में डूब कर) बहत्तर फ़िर्कों को उनकी रविश में माज़ूर जानता और यह कहता है।

जब तमाम आलमे इश्क का मज़्हर है तो हम हर चीज़ में कमाल देखते हैं।

काज़ी ऐनुल-कुज़ात कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि इरादत की इब्तिदा यह है कि तू ईमान और कुफ्र से न लड़े और एक मज़्हब को दूसरे पर तरजीह न दे और बहत्तर हल्कों में कुछ फर्क न करे। कि अगर तू न आलिम है न इरादतमन्द, तो तू न फर्क कर सकेगा न राहे तलब में पड़ सकेगा। और यह फर्क न करना नूर के एहाता में है न कि हदे ज़ुहूर में (कि तुझ पर अयां हो जाए) शैख़ हुसैन मुइज़ रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि जब तुझे ज़्यादती, हुस्न का कश्फ़ हो जाएगा तो मुसलमान और काफिर में जमाले महबूब का मुताला कर सकेगा। और आतिश परस्त का जुन्नार खुद अपनी गर्दन में पड़ा पाएगा और यह कहता फिरेगा कि –

ऐ कुफ्र तू क्या चीज़ है कि आतिश परस्त, तुझ पर इतराते हैं। तेरे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

नाम को पूजते हैं और तेरी ज़ात से मुआफ़ी ख़्वाह हैं।

जब उश्शाक़ का रंग सिबग़तुल्लाह का रंग हो जाता है तो वह जिस रंग में हो मन अहसनु मिनल्लाहे सिबग़ता का जल्वा दिखाता है।

वह क़लन्दर इश्क़े हक़ में शराफ़त पा गया जो बहत्तर हल्क़ों को दोस्त रखता है। अज़मत वाले रब की क़सम की मैं अभी यहीं तक लिखने पाया था कि एक भाई का नविश्ता पहुंचा और उसने इस शेअर में महव कर दिया।

मैं काफ़िर हूं अगर हर कुफ़्र को (महज़ अपने गुमान से) बुरा जानूं और मुश्रिक हूं अगर सराहतन ईमान का दावा करूं।"

याद रखो कि हर कुफ़्र में एक ईमान है और हर ईमान में एक कुफ़्र। हर बुत में एक जान पोशीदा है और कुफ़्र के पर्दा से ईमान हुवैदा। वह ईमान जो कुफ़्र में पिन्हां है उन में एक यह है कि वह अल्लाह तआला की तस्बीह करता है।

कुफ़्र हमेशा हक़ की तस्बीह में मसरूफ़ है कि इन मिन शैइन अल-आयह से यही मालूम होता है और उसमें जाए एतराज़ भी नहीं। दूसरे यह कि खिल्क़ते रूहानी, किसी हिक्मत के मातहत ही बरसरे पैकार है। वरना उसकी पैदाइश अबस ठहरे। तीसरे यह कि उसकी पैदाइश हक़ तआला के आसार अफ़आल से है और अल्लाह तआला ने अपने हर फ़ेअ्ल में अपनी हम्द फरमाई कि अल्लाहु अल-महमूद फ़ी कुल्ले अफ़आलेही। और जो शख़्स तरक़्क़ी करके उस मकाम तक पहुंच जाता है तो कबीह कुफ़्र की क़बाहत (बुराई) उसकी नज़र से ओझल हो जाती है और उसे (मुतहैयर हो कर) लाचार कहना पड़ता है कि –

और यह बात जिसने कही कि 'मशह कमे गर आवाम ईमां सरीह' वह इस बिना पर कही कि ईमान अल्लाह तआला का अतीया है। लिहाज़ा ईमान की निस्बत अपने फ़ेअ्ल और इख़्तियार की जानिब करना तरीक़त में शिर्क है। लम्आत में है कि जब मुहब्बत का सूरज ग़ैब के मश्रिक़ से जल्वा दिखाता है तो महबूब हर सहरा के शाही ख़ेमा के साए से ज़ुहूर फरमाता है और चाहने वाले से कहता है। (क्या तू अपने परवरदिगार की तरफ़ नहीं देखता कि उसने साए को किस तरह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

(बनाया) क्या तू उस साया की ज़्यादती में मुझे नहीं देखता।

(घर में हर चीज़, घर के मालिक से रहती है) (हर शख़्स अपनी शान के मुताबिक़ काम करता है) क्या तुम उसका ऐतबार नहीं करते कि अगर किसी शख़्स की हरकत न हो तो साया हरकत न करे। कि अगर हमारी अहदीयत का सूरज, इज़्ज़त के मुतला से चमके तो किसी साया का कोई असर न रहे।

जब तमाम सहरा के चेहरा ने आफताब का अक्स कुबूल कर लिया तो किसी नफ़्स का उस जंगल में साया नहीं पड़ सकता।

मुहक़्क़ेक़ीन फरमाते हैं कि नूरे हक़ीक़ी हक़ तआला की हस्ती है कि तमाम मौजूदात इस से ज़ाहिर हैं और वह सबसे पोशीदा। रिसाला इल्कुल-यक़ीन में है कि अल्लाह तआला की हस्ती तमाम हस्तियों से ज़्यादा ज़ाहिर है इसलिए कि वह किसी का पैदा हुआ नहीं और बाक़ी तमाम हस्तियां उसके दस्ते क़ुदरत की पैदा की हुई हैं। तमाम चीज़ें उसकी हस्ती के बग़ैर महज़ मादूम हैं और हर हस्ती का मबद-ए-इद्राक वही है। मुदरिक की जानिब से भी और मुदरक की जानिब से भी। तुम किसी भी शय का इद्राक करो। पहले उसी की हस्ती मुदरक होगी अगरचे तुम इस इद्राक के इद्राक से ग़ाफ़िल रहो और वह अपने कमाले ज़ुहूर के बाइस मख़्फ़ी रहे।

तमाम आलम उसी नूर से पैदा है तो वह आलम से किस तरह हुवैदा हो सकता है। उस नादान पर अफ़सोस जो बयाबान में चिराग़ की रौशनी से ख़ुर्शीद तावां को तलाश करे।

अल्लाह तआला का क़ौल है कि –

क्या वह जिसका सीना अल्लाह तआला कुशादा फरमा दे पस वह अपने रब से नूर (हिदायत) पर हो।' लताइफ़े कुशैरिया में है कि वह नूर जो अल्लाह तआला की जानिब से है वह नूरे लवाइह है नुजूमे इल्म से है। फिर तवाले का नूर है बयाने फ़हम के लिए। फिर लवामे का नूर है इल्मे यक़ीन से। फिर मुकाशिफ़ा का नूर है तजल्ली सिफ़ात से। फिर मुशाहिदा का नूर है ज़ुहूरे ज़ात से। और फिर समदीयत के अनवार हैं। और यहीं कोई अक़रब है कोई अबद। कोई अफ़्ज़ल है कोई रास्त तर।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कोई ज़्यादा ख़ाइफ़ है और कोई ख़ामोश तर। और है सब जगह रहे वाहिदे कह्हार (और उसकी तजल्लियात)।

इसी मक़ाम से मुतअस्सिर हो कर मख़्दूमे मिल्लत शैख़ सअद क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि हमारा माल व मताअ्, उस्ताद अबुल-क़ासिम कुशैरी के गुबारे क़दम पर क़ुरबान। यह हिजाब किस ख़ूबसूरती से उठा कर, किस प्यारे अन्दाज़ से, उश्शाक़ के लिए जमाले महबूब, सहरा आलम में जल्वा नुमा कर दिया कि मुश्ताक़ाने बारगाह की निगाहों के रू-ब-रू, उरूसे मक़सूद अपनी तमाम तर रानाइयों के साथ जल्वा फरमा है।" नीज़ इरशाद फरमाया कि "तमाम मुहक़्क़ेक़ीने सुलूक की किताबों में यह बात मज़्कूर है कि सालिक के लिए राहे सुलूक में एक ऐसा भी मक़ाम आता है कि उसकी दुनिया, आख़िरत और आख़िरत दुनिया हो जाती है। अव्वल आख़िर से अंजाम पज़ीर होता है और आख़िर, अव्वल से पैवस्ता हो जाता है।" और जब आलम यह है तो कौन सा मुहक़्क़िक़ दुनिया में दीदारे इलाही के लिए इंकार का मुरतकिब हो सकता है। जब अज़ल अबद तक रसीदा, और अबद अज़ल से पैवस्ता है, तो (उन मुहक़्क़ेक़ीन के लिए) सब एक कलिमा बल्कि एक हरफ़ बल्कि एक नुक़्ता बन जाता है।" नीज़ इरशाद फरमाया कि "मुहक़्क़ेक़ीन (दुनिया में) रूयते बारी को कमतरीन हालात में जानते और (इस हालत के इज़हार को) शिर्के जली गरदानते हैं।।" फिर फरमाया कि ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह। मैं किन बातों में उलझ गया।

ऐ फ़क़ीह वजीह अगर तू (सूफ़िया के लिए इसी आलम में) दीदारे इलाही का मुंकिर है और तेरे नज़्दीक यह हराम है तो तुझे हराम ही रहे। मगर तलब का इंकार कौन कर सकता है कि तमाम सआदतें, भलाईयां और बरकतें उसी के दम से हैं। हां ज़रा ग़ौर कर कि वह कौन लोग होते हैं कि इस दुनिया और इस जहान को, सिर्फ़ ख़ुदा के लिए छोड़ देते हैं और उनके दिल में ख़ुदाए तआला के सिवा कुछ और नहीं होता। ऐसे लोगों को मादरे रोज़गार कम जनती है। अगर कोई है तो वह मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, उनके अह्ले बैत हैं और वह हैं जो

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

(साया) क्या तू उस साया की ज़्यादती में मुझे नहीं देखता।

(घर में हर चीज़, घर के मालिक से रहती है) (हर शख़्स अपनी शान के मुताबिक़ काम करता है) क्या तुम उसका ऐतबार नहीं करते कि अगर किसी शख़्स की हरकत न हो तो साया हरकत न करे। कि अगर हमारी अहदीयत का सूरज, इज़्ज़त के मुतला से चमके तो किसी साया का कोई असर न रहे।

जब तमाम सहरा के चेहरा ने आफताब का अक्स कुबूल कर लिया तो किसी नफ़्स का उस जंगल में साया नहीं पड़ सकता।

मुहक़्क़ेक़ीन फरमाते हैं कि नूरे हक़ीक़ी हक़ तआला की हस्ती है कि तमाम मौजूदात इस से ज़ाहिर हैं और वह सबसे पोशीदा। रिसाला हक़्क़ुल–यक़ीन में है कि अल्लाह तआला की हस्ती तमाम हस्तियों से ज़्यादा ज़ाहिर है इसलिए कि वह किसी का पैदा हुआ नहीं और बाक़ी तमाम हस्तियां उसके दस्ते कुदरत की पैदा की हुई हैं। तमाम चीज़ें उसकी हस्ती के बग़ैर महज़ मादूम हैं और हर हस्ती का मबद–ए–इद्राक वही है। मुदरिक की जानिब से भी और मुदरक की जानिब से भी। तुम किसी भी शय का इद्राक करो। पहले उसी की हस्ती मुदरक होगी अगरचे तुम इस इद्राक के इद्राक से ग़ाफ़िल रहो और वह अपने कमाले ज़ुहूर के बाइस मख़्फ़ी रहे।

तमाम आलम उसी नूर से पैदा है तो वह आलम से किस तरह हुवैदा हो सकता है। उस नादान पर अफ़सोस जो बयाबान में चिराग़ की रौशनी से ख़ुर्शीद ताबां को तलाश करे।

अल्लाह तआला का क़ौल है कि –

क्या वह जिसका सीना अल्लाह तआला कुशादा फरमा दे पस वह अपने रब से नूर (हिदायत) पर हो।" लताइफ़े कुशैरिया में है कि वह नूर जो अल्लाह तआला की जानिब से है वह नूरे लवाइह है नुजूमे इल्म से है। फिर तवाले का नूर है बयाने फ़हम के लिए। फिर लवामे का नूर है इल्मे यक़ीन से। फिर मुकाशिफ़ा का नूर है तजल्ली सिफ़ात से। फिर मुशाहिदा का नूर है ज़ुहूरे ज़ात से। और फिर सम्दीयत के अनवार हैं। और यहीं कोई अक़रब है कोई अबद। कोई अफ़ज़ल है कोई रास्त तर।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कोई ज़्यादा खाइफ़ है और कोई खामोश तर। और है सब जगह वही वाहिदे कह्हार (और उसकी तजल्लियात)।

इसी मक़ाम से मुतअस्सिर हो कर मख़्दूमे मिल्लत शैख़ सअद बुद्धन कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि हमारा माल व मताअ्, उस्ताद अबुल–क़ासिम कुशैरी के गुबारे क़दम पर कुरबान। यह हिजाब किस ख़ूबसूरती से उठा कर, किस प्यारे अन्दाज़ से, उश्शाक़ के लिए जमाले महबूब, सहराए आलम में जल्वा नुमा कर दिया कि मुश्ताक़ाने बारगाह की निगाहों के रू–ब–रू, उरूसे मक़्सूद अपनी तमाम तर रानाइयों के साथ जल्वा फरमा है।" नीज़ इरशाद फरमाया कि "तमाम मुहक़्क़ेक़ीने सुलूक की किताबों में यह बात मज़्कूर है कि सालिक के लिए राहे सुलूक में एक ऐसा भी मक़ाम आता है कि उसकी दुनिया, आख़िरत और आख़िरत दुनिया हो जाती है। अव्वल आख़िर से अंजाम पज़ीर होता है और आख़िर, अव्वल से पैवस्ता हो जाता है।" और जब आलम यह है तो कौन सा मुहक़्क़िक़ दुनिया में दीदारे इलाही के लिए इंकार का मुरतकिब हो सकता है। जब अज़ल अबद तक रसीदा, और अबद अज़ल से पैवस्ता है, तो (उन मुहक़्क़ेक़ीन के लिए) सब एक कलिमा बल्कि एक हरफ़ बल्कि एक नुक़्ता बन जाता है।" नीज़ इरशाद फरमाया कि "मुहक़्क़ेक़ीन (दुनिया में) रूयते बारी को कमतरीन हालात में जानते और (इस हालत के इज़्हार को) शिर्के जली गरदानते हैं।।" फिर फरमाया कि ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह। मैं किन बातों में उलझ गया।

ऐ फ़क़ीह वजीह अगर तू (सूफ़िया के लिए इसी आलम में) दीदारे इलाही का मुंकिर है और तेरे नज़्दीक यह हराम है तो तुझे हराम ही रहे। मगर तलब का इंकार कौन कर सकता है कि तमाम सआदतें, भलाईयां और बरकतें उसी के दम से हैं। हां ज़रा ग़ौर कर कि वह कौन लोग होते हैं कि इस दुनिया और इस जहान को, सिर्फ़ खुदा के लिए छोड़ देते हैं और उनके दिल में ख़ुदाए तआला के सिवा कुछ और नहीं होता। ऐसे लोगों को मादरे रोज़गार कम जनती है। अगर कोई है तो वह मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, उनके अह्ले बैत हैं और वह हैं जो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...के साथ इन जैसे हैं।

काफ़िला कूच कर चुका है मगर हम हैं और तेरे कूचा की ख़ाक। हर ... किसी न किसी तरफ़ चल दिया और मिस्कीन आशिक़ तेरी जानिब बढ़ रहा है।

याद रखना चाहिए कि राहे फ़क्र में दो चीज़ें असलुल–उसूल में हैं। अव्वल ख़ुदाए तआला के अलावा दिल को हर चीज़ की मुहब्बत से दूर रखना और सबसे ग़ैर मुतअल्लिक़ रहना दूसरे अपने तमाम हरकात व सकनात और किरदार व गुफ़्तार को मिनजानेबिल्लाह समझना। और यक़ीन रखना कि मेरी हैसियत इस दर्मियान में एक हदफ़ और मज़्हर से ज़्यादा नहीं। हां इन अल्फ़ाज़ का ज़बान से अदा करना ज़िन्दीक़ की निशानी है जब कि सिद्दीक़ वह है जो इस मानी पर यक़ीन रखे। शरीअ़ते मुतहहरा के रास्ता पर चले और अपनी ज़िन्दगी हक़ की बन्दगी में गुज़ार दे। अह्ले मारिफ़त में से किसी ने कहा है कि फ़ना व बक़ा का इल्म, इख़्लासे वहदानियत और सोहबते अबूदियत पर मबनी है। जो कुछ उसके अलावा है वह मुग़ालता और ज़िन्दीक़ी है। पाक है वह बरगुज़ीदा बादशाह जिस से न कोई मुत्तसिल है न मुनफ़सिल। ऐ मुवहिहदे हक़ीक़ी अब समझ कि ज़र्राते कौनिया का हर ज़र्रह और अफ़रादे मुम्किना का हर फ़र्द, अगरचे एक ही नूर से पैदा है लेकिन मक़ामे ज़ुहूर में हर एक का नाम व निशान और रंग व सूरत जुदा–जुदा है जिसकी वजह से वह एक दूसरे से मुम्ताज़ हो जाता है और यूं एक आलमे नौ, वजूद में आता है। शरह गुलशने राज़ में लिखा कि मौजूदाते ख़ार्जीया में से हर मौजूदे ख़ार्जी के दो एतबार हैं। एक मिन हैसुल–हक़ीक़ते। और वह नाम है नूरे हक़ के ज़ुहूर का, मुज़ाहिरे मुम्किनात की सूरतों में। और उसे तजल्ली–ए–शुहूदी कहते हैं। दूसरा बहैसियते तशख़्ख़ुश व तअ़ैयुन। इसी हैसियत के मातहत अशिया को मुम्किन कहते और मख़्लूक़ मानते हैं। और मौजूदात की जानिब तमाम नक़ाइस और उयूब की निस्बत इसी हैसियत से की जाती है।)

जो चीज़ तुम्हें नज़र आती है दर हक़ीक़त उसकी दो हैसियतें हैं। एक बएतबार सूरत। दूसरी बएतबार मानी। बएतबारे सूरत वह जहान है और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बएतबार मानी उसकी हक़ीक़त व रूह। जब कि हस्त व वजूद से यक्सां हैं।

दो ही चीजें हैं, एक वजूदे हक़ीक़ी दूसरी उसका मज़हर। वजूदे हक़ीक़ी, हक़ तआला है और सारी काइनात उसका मज़हर। वहदत व शौक़ और कसरत से सारा ज़ौक़ (चाशनी) है तो कसरत, सिर्फ़ मज़ाहिर की है और वहदत, बारी तआला के लिए साबित।

मख़दूम शैख़ सअद बुद्धन कुदिसा सिर्रुहू ने फ़रमाया कि पीर दस्तगीर शैख़ मीना कुदिसा सिर्रुहू जो उस रास्ता को देखे हुए और हक़ीक़ी तक पहुंचे हुए थे फ़रमाया करते थे कि मुशाहिदा, मुकाशिफ़ा और तजल्ली के दर्मियान बहुत ख़फ़ीफ़ फ़र्क़ है। हर शख़्स उनमें तमीज़ नहीं कर सकता। और वह जो मिरसादुल–एबाद में कहा गया है कि मुशाहिदा बेतजल्ली और बा तजल्ली, और तजल्ली बे मुशाहिदा होती है वह दुरुस्त सही लेकिन मेरे नज़्दीक मुशाहिदे बेतजल्ली, मुश्किल अम्र मालूम होता है इसलिए कि तजल्ली नाम है ज़ात व सिफ़ाते उलूहियत के ज़ुहूर का। तो मानना पड़ेगा कि मुशाहिदा बेतजल्ली नहीं हो सकता। हां यह हो सकता है कि मेरी नज़र उस मक़ाम तक न पहुंची हो।" नीज़ आप का इरशाद है कि पीर दस्तगीर शैख़ मीना कुदिसा सिर्रुहू इस शेअ्र को बहुत पढ़ा करते।

तेरे चेहरा पर हुस्न के अलावा भी कोई चीज़ है जिसे कोई नहीं जानता कि उसका क्या नाम है।

यहां पर दिल उसके मज़ीद इज़्हार का फ़तवा नहीं देता और यही माना हैं अल्लाह तआला के इस क़ौल के कि (भलाई वालों के लिए भलाई है और उससे ज़ाइद)। ऐ मुवह्हिद! जो निस्बत हक़ तआला की उसके साथ है वह बशरी अक़्ल व फ़िक्र से मालूम नहीं हो सकती। तुम यह कैसे जानोगे कि हक़ तआला न दाख़िल है न ख़ारिज। न मुत्तसिल है न मुंफ़सिल। न क़रीब है न बईद। और न साकिन है न मुतहर्रिक।

अक़्ल फ़िक्र और क़्यास का यहां कोई दख़ल नहीं। तौफ़ीक़े ख़ुदावन्दी के बेग़ैर कोई शख़्स इरफ़ाने इलाही हासिल नहीं कर सकता।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

शैख़ अबू सईद ख़राज़ कुद्दिसा सिर्रुहू से लोगों ने पूछा कि आपने को क्योंकर पहचाना? फ़रमाया उस से कि मज्मा इज़्दाद है। और फिर फ़रमाया कि इज़्दाद का जमा होना सिर्फ़ अव्वल पढ़ी। और फिर फ़रमाया कि इज़्दाद का जमा होना सिर्फ़ वाहिदा ही से मुतसव्विर है कि उस वाहिद में मुवह्हिद का किया जाए। बहरुल-हक़ाइक़ में है कि वह अव्वल है ऐने ...रीयत में। और आख़िर है ऐने अव्वलीयत में। ज़ाहिर है ऐने ...नीयत में और बातिन है ऐने ज़ाहिरीयत में।

तू अव्वल भी है और अव्वलीयत में आख़िर भी। और बातिनी भी और इसी आन ज़ाहिर भी। तू तमाम सिफ़ात को मुहीत है मगर सबसे ... और बएतबार ज़ात, सबसे मुस्तग़ना व बेनियाज़।

...जानना चाहिए कि बनी आदम की हक़ीक़त, जिसे आलमे रब्बानी का ...गीना मुदरिका आलिमा कहते हैं और वह तमाम आलमे मलकूत का ...ख़ुलासा है। आलमे रूहानी और आलमे जिस्मानी दोनों से मुरक्कब है और ...तमाम मौजूदात से कामिल तर। और अह्ले बसीरत के नज़्दीक उसके और ...अल्लाह तआला के माबैन कोई और वास्ता नहीं। यहीं से यह मालूम हुआ कि ...बनी आदम के तमाम रूहानी और जिस्मानी फ़ितरात सब अल्लाह तआला ...के अफ़आल हैं। कि वल्लाहु ख़लक़कुम वमा तआमलून। (यानी अल्लाह ने ...तुम्हें पैदा किया और उसे जो तुम करते हो") तो उसकी ज़ात और ज़ात ...के अवारिज़ को, अल्लाह तआला की क़ुदरत व इरादत बनफ़्से नफ़ीस ...वुजूद में लाती है।

...बैत तो फ़ेअ्ल का एक आला है उसके सिवा कुछ नहीं। जब तू ग़ौर ...से नज़र करेगा तो तुझे मालूम होगा कि इस दर्मियान में तू कुछ हैसियत ...नहीं रखता।

अबू बकर वास्ती क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ...तुम्हें हर काम में आजिज़ बनाया और फ़रमाया है कि यानी तुम कुछ न ...चाहोगे मगर उसकी मशीयत से। कुछ न कर सकोगे मगर उसकी कुव्वत ...से। ताअत न कर सकोगे मगर उसके फ़ज़्ल से। अगर गुनाह न करोगे ...मगर उसके ज़लील करने से। तो तुम्हारे पास है क्या? और तुम किसी ...चीज़ पर इतराते हो हालांकि तुम किसी चीज़ के मालिक नहीं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

[illegible]
है।

याद रखना चाहिए कि रूह की हकीकत [illegible] की जा सकती इसलिए कि तमाम अजसाम तकसीम को कुबूल [illegible] क्योंकि वह तकसीम को कुबूल नहीं करती। [illegible] नहीं करती वह तकसीम कुबूल करने वाली चीज़ में कैसे [illegible] वरना वह भी किस्मत पज़ीर हो जाए। और उसके [illegible] जन्म की तरफ इज़ाफत को कबूल नहीं करती, उसके [illegible] अज्म खाली नहीं। जिस तरह तमाम आलमे खुदा वन्दे आलम के [illegible] में है और वह मुनज्ज़ह। इस बात की तफ्सील इस बात से [illegible] है [illegible] हदीस शरीफ में वारिद है कि अल्लाह तआला ने आदम को [illegible] पसन्दीदा सूरत पर पैदा फरमाया।

और जब तक तुम यह नहीं जानोगे कि अपनी मम्लिकत [illegible] वगैरह) में तुम कैसे हुक्मरानी करते हो? यह कैसे जान सकते हो [illegible] सुल्ताने आलम (तमाम काइनात में कैसे बादशाही करता है। पहले [illegible] को पहचानो। अपने हालात की तफ़्तीश करो और अपने किसी [illegible] पर नज़र डालो मसलन तुम बिस्मिल्लाह लिखना चाहते हो तो [illegible] पहले तुम्हारे दिल में उसकी रगबत पैदा होती है फिर दिल में [illegible] हरकत पैदा होती है और तुम्हारे दिल से एक लतीफ जिस्म हरकत करता और दिमाग में पहुंचता है। फिर दिमाग के ख्याल में बिस्मिल्लाह की सूरत आती है। दिमाग से एक असर आसाब तक पहुंचता है वह आसाब उंगलियों को जुंबिश में लाते हैं और उंगलियां कलम को। और कलम आंखों और दूसरे हवास की मदद से बिस्मिल्लाह का नक्श इसी ख्याल के मुताबिक, कागज़ पर लाता है पस जैसे कि पहले तुम में रगबत पैदा हुई। खुदाए तआला की सिफते इरादत जल्वा फरमाती है। और जिस तरह उस रगबत का असर पहले तुम्हारे दिल तक पहुंचा। यूं समझ लो कि इराद-ए-खुदावन्दी का असर अर्श से कुर्सी तक पहुंचता है। और जैसे कि बिस्मिल्लाह का नक्श तुम्हारे ख्याल दिमाग में उभरा, हर इराद-ए-इलाही का नक्श पहले लौहे महफूज़ पर नमूदार होता है और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

... तरह वह तलीफ़ कुव्वत जो दिमाग में है, आसाब को हरकत देती ... ताकि आसाब उंगलियों को जुंबिश में लाएं और उंगलियां कलम को। ... तरह जवाहरे तलीफ़ा जो अर्श और कुर्सी पर मुतमक्किन हैं वह ... और सितारों को हरकत देते हैं। और सितारों के दम्ने और ... के राबते से, उसूले फ़ितरत जुंबिश में आते हैं। और ... शुआओं के राबते से, उसूले फ़ितरत जुंबिश में आते हैं। और ... तरह कलम रोशनाई से भरा जाता है ताकि बिस्मिल्लाह की सूरत ... जा सके, उसूले फ़ितरत, अरकाने अरबा में मुन्तशिर हो जाते हैं ... मवालीदे सरगाना यानी हैवानात, नबातात और जमादात की ... जाहिर हो तो जिस तरह तुम दिल पर ग़ालिब आते हो कर, ... जिस्म का बन्दोबस्त करते हो। बिला तशबीह यूं ही हक ... व तआला इस्तवा अलल-अर्श फरमा कर, तमाम मम्लिकत की ... तदबीर फरमाता है कि इस्तवा अलल-अर्श युदब्बिरुल-अम्र।) (वह अर्श ... मुस्तवी है और हर अम्र की तदबीर फरमाता है)।

याद रखें कि यह वह हक़ीक़त है जो अहले बसीरत को मुकाशिफा ... मालूम हुई है और उसी की बदौलत उन हज़रात ने इन्नल्लाहा खलका ... आदमा अला सूरतेही। की हक़ीक़त को जाना है। उसी मकाम पर वह ... नुक्ता हल हो जाता है जो मुहक़्क़ेक़ीन ने फरमाया कि काइनात के तमाम उमूर की, तमाम औक़ात में बाज़गश्त हक़ तआला की जानिब है। वसाइल ... हिजाबात उठ जाएं। तो यह हक़ीक़त आशकार हो जाती है।

कसरत की सूरत वहदत का हिजाब है और हमारा गायब रहना नूर ... जुहूर से माने। अपने दिल की आंखें खोल और देख कि इलल्लाह ... तसीरुल-उमूर का राज़ क्या है।"

ज़हन नशीं रहे कि खुदाए तआला की ज़ात महज़ वहदत है और आलमे जबरूत में तमाम मौजूदात बयक दम मौजूद हैं लेकिन नाम और निशान नहीं रखते और शक्ल व सूरत कुबूल नहीं करते। इस तरह आलमे जबरूत में सब कुछ है और कुछ नहीं। और आलमे मलकूत आलमे मरातिब है कि आलमे जबरूरत का नाम व निशान यहां वजूद ... पाता है लेकिन आलमे मुल्क आलमे इज्दाद है कि इसमें शक्ल और सूरत आशकारा होती है लेकिन आलमे मुल्क की लताफ़त को आलमे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

फ़लकूत की लताफ़त से कोई निस्बत नहीं और आलमे मलकूत की लताफ़त आलमे जबरूत की तलाफ़त से कोई निस्बत नहीं रखती है। वह आलम हद दरजा लतीफ़ है। और आलमे जबरूत की लताफ़त को खुदावन्द तआला की लताफ़त से कोई निस्बत नहीं रखती इसलिए कि वह बेइंतिहा लुत्फ़ है। फिर आलमे मुल्क का कोई ज़र्रह ऐसा नहीं है आलमे मलकूत की ज़ात में उसमें जल्वागर और उसको मुहीत न हो और आलमे मलकूत के ज़र्रात में कोई ज़र्रह ऐसा नहीं कि जबरूत की ज़ात इसमें कार फरमा न हो। और आलमे मुल्क व आलमे मलकूत और आलमे जबरूत का कोई ज़र्रह ऐसा नहीं कि खुदा वन्दे तआला की ज़ात की तजल्ली उसमें न हो वह उसका एहाता न किए हो और उससे वाक़िफ़ न हो।

इरशादे ख़ुदावन्दी है।

(सुनो कि उन्हें ज़रूर अपने रब से मिलने में शक है। सुनो वह हर चीज़ को मुहीत है) नीज़ इरशादे कुरआनी है। (उसे तुम्हारा छुपा और ज़ाहिर सब मालूम है और तुम्हारे काम जानता है) इन आयात के हक़ीक़ी माना यूं बयान किए गये हैं कि आदमी सूरतन जिस्मानी है और मानन रूहानी। वह सूरतन आलमे ख़ल्क़ से है और मानन आलमे अम्र से। उसका सिर्र आलमे अम्र से है और उसका जेहर मरतब-ए-ख़ल्क़ है। बहरुल हक़ायक़ में मन्कूल है कि सिर्र से सिर्रे ख़िलाफ़त है जिसको इंसान में अमानतन रखा गया है और जेहर हैवानी सिफ़ात और इंसानी अहवाल हैं। लिहाज़ा हक़ तआला असरारे ख़साइस को कि मरतब-ए-ग़ैब में हैं, पहचानता है और आसारे नक़ाइस को कि आलमे शहादत में हैं जानता है। वह हमारे उन आमाल से वाक़िफ़ है जो मरातिबे इंसानिया में तरक़्क़ी के मूजिब हैं। या हैवानी दर्जों पर तनज़्ज़ुल के बाइस। इसलिए कि वह लतीफ़ अलल-इत्लाक़ है और तलीफ़े मुतलक़, मुहीते मुतलक़ और ख़ैबर मुतलक़ होता है।

तमाम अज्साम, अरवाह के ज़िल्ल हैं। तमाम अरवाहे आयान के परतौ हैं। फिर आयाने अस्माए इलाहिया के अक्स हैं और अस्मा ज़ाते मुतलक़ के ज़िल्ल हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...किताब पर

ऐ मुवह्हिद! तेरा शर्फ़ और तेरी बुज़ुर्गी यह है कि जब तक महबूब न बन जाए मुहिब नहीं हो सकता। यानी जब तक ख़ुदावन्दे तआला तुमको अपना महबूब न बना ले और अपनी दोस्ती में क़ुबूल न फरमाए तुम उसकी दोस्ती का दम न भरो तो अल्लाह तआला से तुम्हारी मुहब्बत करना, यह हक़ तआला की तुमसे मुहब्बत का अक्स है। सम्नूने मुहिब्ब से लोगों ने पूछा कि मुहब्बत क्या है फरमाया कि अल्लाह तआला की बन्दा से मुहब्बत का सवाल करते हो या बन्दे की अल्लाह तआला से मुहब्बत का? मैं उस वक़्त ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के साथ था और अल्लाह तआला की बन्दा से मुहब्बत का वह नुक्ता बयान कर रहा था कि मलाइका मलकूत में उसके सुनने की ताब न थी। और अरबाबे हक़ीक़त कहते हैं कि अल्लाह तआला की मुहब्बत क़दीम है और बन्दा की मुहब्बत हादिस। और हादिस जब क़दीम से वासिल हो जाता है तो उसका कोई निशान बाक़ी नहीं रहता।

जब औसाफ़े क़दीम तजल्ली फरमाते हैं तो कलीमुल्लाह भी अपने वस्फ़े हादिस को सोख़्त कर देते हैं।

पस जैसे कि तुम्हारा उसे चाहना यह अक्स है उसकी मुहब्बत का तुमसे। उसी तरह तुम्हारी ज़ात और सिफ़ात उसकी ज़ात व सिफ़ात का परतौ हैं।

तुझ में माबूदे मलाइक का परतौ था इसलिए तुझे मस्जूदे मलाइक बनाया गया।

ऐ मुवह्हिद! आईना में दीद-ए-इबरत से नज़र डाल कि आईना में नज़र आने वाला अक्स, बेऐनेही, आईना देखने वाले शख़्स का अक्स है। लेकिन यह एक सिर्फ़ नुमूद है जिसका बिल-इस्तिक़्लाल कोई वजूद नहीं। यहीं से अपनी माहियत को पहचान। और ज़ाहिर है कि वह अक्स न आईना में दाख़िल है न उस से ख़ारिज। न उससे मुत्तसिल है न मुंफ़सिल। उससे तुम अपनी जान व जिस्म का तअल्लुक़ मालूम कर सकते हो। एक बात और भी है कि वह अक्स, उलट कर आने वाली शुआअ़ है। सूरत का पलट नहीं। यही वजह है कि आईने को देखने वाला, अपना दायां हाथ हिलाता है तो अक्स में बायां हाथ, जो दाएं

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हाथ के मुक़ाबिल है हरकत करता है। अगर वह अक्स मुन्कलिब हो
तो उस शख़्स के दाएं हाथ की हरकत से, अक्स का दायां हाथ हरकत
करता और बाएं हाथ की हरकत से बायां हाथ हरकत में आता। यहीं से
मूलम हुआ कि दिल जो बाएं जानिब रखा हुआ है वह दरहक़ीक़त में
जानिब है। नीज़ अगर वह अक्स मुन्कलिब होता तो वह उस शख़्स के
रू-ब-रू न पड़ता बल्कि अक्स की पुश्त उस शख़्स के चेहरा के मुक़ाबिल
में आती। नीज़ यह कि लोहे को सैक़ल किया तो उसमें यह सफ़ाई हासिल
हुई कि अक्स की नुमाइश सिर्फ़ उसकी सफ़ाई से हो गई। फिर आईना
अगर क़रीब होता है तो वह अक्स क़रीब नज़र आता है और अगर दूर
होता है तो दूर। और वह जितना दूर होता जाएगा दूर ही नज़र आता
जाएगा।

और अगर आईना को आसमान के मुक़ाबिल रखो तो आसमान और आफ़ताब का अक्स अगरचे वह चौथे आसमान पर है इस सफ़ाई में नमूदार हो जाएगा। और अगर आसमान हाइल न हो तो तमाम अल्वियात और सफ़्लियात उसकी सफ़ाई में ज़ाहिर हो जाएं। इसी तरह तेरे दिल का आईना अगर मुसक़्क़ल और मुसफ़्फ़ा हो जाए तो तमाम आलमे बाला व आलमे पस्त की उसमें जल्वा नुमाई हो और बईं तौर, तो हर मकान में मौजूद व हाज़िर रहे।

हिकायत, मख़्दूम शैख़ अबुल-फ़तह जौनपुरी क़ुद्दिसा सिर्रुहू के पास माह रबीउल-अव्वल में बतक़रीब मीलाद मुबारक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दस जगह से इस्तिदआ आई कि बाद नमाज़े ज़ुहर तशरीफ़ लाएं। आपने हर जगह का बुलावा क़बूल कर लिया। हाज़िरीन ने अर्ज़ किया कि ऐ मख़्दूम आपने दसों जगह का बुलावा क़बूल कर लिया और दसों जगह ज़ुहर के बाद चलना है यह कैसे होगा? फ़रमाया कि कृष्ण चन्द तो काफ़िर था बयक दम (बतौर इस्तिद्राज) सैंकड़ों जगह पहुंचना। अगर अबुल-फ़तह दस जगह मौजूद हो जाए तो हैरत की क्या बात है। चुनांचे नमाज़े ज़ुहर के बाद जब एक जगह से डोली पहुंची, मख़्दूम हुजरा से बाहर तशरीफ़ लाए। पालकी पर सवार हो गये और तशरीफ़ ले गये। यूंही जब दूसरी जगह से सवारी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अल-गरज़ दसों जगह से सवारी आई, मख़्दूम हर मरतबा हुजरा से बाहर तशरीफ़ लाते, पालकी पर सवार होते और तशरीफ़ ले जाते। (यह कि) हुजरा में भी तशरीफ़ फ़रमा रहते। ऐ अक़्लमन्द! इसे तम्सील मत समझ लेना यानी यह ख़्याल न करना कि शैख़ का ज़ाती वजूद इतने मक़ामात पर तशरीफ़ ले गया। नहीं ख़ुदा की क़सम ख़ुद शैख़ की ज़ात हर जगह तशरीफ़ ले गई। बल्कि यह तो एक शहर और एक मक़ाम का वाक़या है जब कि बहरे तौहीद में ग़र्क़ रहने वाले तो तमाम आलम में ख़्वाह अल्वियात हों या सिफ़लियात मौजूद रहते हैं।

मन्क़ूल है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी सौ सत्तर सूरतें देखीं कि उनमें से हर एक रब्बे अरेनी कहती थी। अर्ज़ किया कि ख़ुदाया यह कौन हैं? इरशाद हुआ कि ऐ मूसा यह सब तुम्हारी ही नमूद है। जब तुम ख़ुद को नहीं देख सकते तो हमारा जल्वा कैसे देखोगे। जो बात तुम्हारी समझ के मुताबिक़ सही न हो तो यह समझो कि तुम न जान सके। यह न कह बैठो कि ग़लत है।

अब हम मुहब्बत और लवाज़िमे मुहब्बत से मुतअल्लिक़ चन्द नुक्ते लिखते हैं। साहबे लवामेअ़ कुद्दिसा सिर्रुहू ने फ़रमाया कि मुहब्बत, जमीले हक़ीक़ी का ख़ुद अपने जमाल की जानिब, कुल्ली तवज्जोह और तफ़्सील से मैलान का नाम है। और वह चार क़िस्म पर है। कुल से कुल की जानिब मैलान। और वह जमाले ज़ात का, मुशाहिदा है आईना ज़ात में, बेला वास्ता काइनात।

वह माशूक़ कि किसी ने उसके जमाल के राज़ को न पहचाना उसने मुल्के अज़ल में जमाल का अलम बुलन्द किया। न वहां आसमान का तख़्त था और न चांद का मुहरा। बल्कि वह ख़ुद बख़ुद मुहब्बत की शतरंज का खेल मुलाहिज़ा फ़रमा रहा था।

दूसरे कुल से तफ़्सील की जानिब तवज्जोह। जैसा कि ज़ाते यक्ता का अपने बेशुमार व लातादाद लम्आते जमाल के मज़ाहिर का मुशाहिदा और अपनी सिफ़ाते कमाल का मुताला।

वह माशूक़ जो हर शख़्स से मुहब्बत का दम भरता है उसके दामन तक

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

किसी की हवस का हाथ नहीं पहुंचता। उसके शुहूद के आईने हैं। कायनात के सारे ज़र्रात, इसलिए वह खुद अपने ही जमाल से इश्क़ करता है उसके सिवा कुछ और नहीं।

तीसरे तफ़्सील से तफ़्सील की जानिब इल्तिफ़ात जैसा कि अक्सर इंसानी अफ़राद जमाले मुतलक़ का अक्स, आसारे क़ुदरत की तफ़्सील के आईना में मुशाहिदा करते हैं और इसी जमाले मुक़ैय्यद को जो रूबा ज़वाल है अपना मक़्सूदे कुल्ली बना लेते है। इसी के दस्त से लज़्ज़तों से खुश होते और उसके फ़िराक़ में, मेहनत व रियाज से दर्द मन्द फिरते हैं।

तेरे ही हुस्न ने पर्दे पर्दे में, जल्वा नुमाई की। और हज़ारों आशिक़ व माशूक़ पैदा फरमा दिए। तेरे ही हुस्न की बदौलत, लैला ने मज्नूं का दिल लिया और तेरे ही शौक़ से वामिक़ को उम्र का ग़म खाना पड़ा।

चौथे तफ़्सील से कल की जानिब रुजूअ्। चुनांचे बन्दगाने ख़ास अक्ल के सरमाया को अफ़्आल और आसार के कारख़ानों से बाहर ले आते हैं और हालात व सिफ़ात के हिजाबात को, कि अफ़्आल और आसार के मबदा हैं, फाड़ कर अपनी मुरादात से लिपटे हुए हैं और उनके दिल की तवज्जोह का क़िब्लागाह, सिवाए उस जाते बरगुज़ीदा सिफ़ात के कोई और नहीं।

मेरा दिल काइनात की हदों से बाहर, और मेरा दिल जिहात के एहाता से बरतर है। बल्कि मेरा दिल तो सिफ़ात की आब व ताब से फ़ारिग़, और तजल्लियाते ज़ात का आईना है।

हज़रत क़ुतबुल-आरेफ़ीन नासिरुल-हक़ वदीन उबैदुल्लाह क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि अगर ग़ौर से नज़र करो तो तुम्हें मालूम होगा कि अल्लाह तआला ने मरातिबे वजूद में किसी मरतबा को दोस्त नहीं बनाया इसलिए कि किसी साहिबे जमाल का, आईना से मुहब्बत रखना, आईना की ज़ात की वजह से नहीं बल्कि इसलिए है कि वह उसमे अपने हुस्न व जमाल का मुशाहिदा करता है। इसलिए हक़ीक़तन यह मुहब्बत, अपनी ज़ात से मुहब्बत है।

युहिब्बुहुम व युहिब्बूनहू। (वह उनको दोस्त रखता है और वह उसे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

दोस्त रखते हैं) यह बज़ाहिर दोस्ती का इक़रार है मगर पर्दे पर्दा में वह खुद अपना ख़रीदार है।

अब पहला मरतबा कि कुल से कुल की जानिब। इस मरतबा में यह हदीस शरीफ़ कि अल्लाहु जमीलुन व युहिब्बुल-जमाला। अल्लाह जमील है और जमाल को महबूब रखता है।" दाखिल है इसलिए कि ख़ुदाए तआला साहिबे जमाल है, जमाल उसकी सिफ़त है और वह जमाल को दोस्त रखता है तो मुहब्बत भी उसी की सिफ़त है। और यह दोनों सिफ़त और अल्लाह तआला की तमाम सिफ़ात, क़दीम हैं कि काइनात का वास्ता नहीं। लेकिन इस मक़ाम से ज़ात का मैलान सिफ़त की जानिब, या सिफ़त का मैलान सिफ़त की जानिब तो समझ में आता है ज़ात का मैलान ज़ात की जानिब, समझ में नहीं आता। अल्लाह तआला बेहतर जानने वाला है।

वह बेमिसाल ख़ुद अपने हुस्न का तालिब है और अपने हुस्न का नज़ारा ख़ुद फरमाता है।

और दूसरा मरतबा जो कुल से तफ़्सील की जानिब है और चौथा तफ़्सील से कुल की जानिब है यह दोनों मरतबे युहिब्बुहुम व युहिब्बूनहू। से मफ़हूम होते हैं। अगरचे चारों ही मरतबे इस आयत से सराहतन हासिल हैं। और तीसरा मरतबा जो तफ़्सील से तफ़्सील की जानिब है। इस मरतबा में बहुत बुल-अजबियां और हैरते सामानियां वाक़े हैं। दो तीन वाक़ेआत हम भी लिखते हैं।

हिकायते मुअल्लिफ़ के दोस्तों में से एक शख़्स शैख़ निज़ाम नामी था जो एक मुग़ल की लड़की को तालीम देता था। वह लड़की बेइंतिहा ख़ूबसूरत थी। एक जवान की नज़र उसके जमाल पर पड़ी और उस पर आशिक़ और गिरफ़्तारे बला हो गया। अपनी नामुरादी और बेक़रारी का हाल शैख़ निज़ाम से बयान किया। शैख़ निज़ाम ने कहा कि तुम हर रोज़ मेरे साथ चला करो। मैं उसे पढ़ाता हूं तुम वहां बैठे उसे देख लिया करो। चुनांचे इस तरह एक मुद्दत गुज़र गई। एक रोज़ इस दर्द के मारे जवान ने, शैख़ निज़ाम से आहिस्ता से कहा कि उस लड़की से कहिए कि एक प्याला पानी का मुझे दे। शैख़ निज़ाम ने उस लड़की से कहा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कि एक प्याला पानी का पीने के लिए ला। वह प्याला भर कर लाई तो कहा कि उस जवान को दे दे। वह लड़की पानी का प्याला उस जवान के रू–ब–रू ले गई। जवान ने प्याला उसके हाथ से लिया और जान पैदा फरमाने वाले को अपनी जान सौंप दी।

इश्क़ के वाक़ेआत से जिगर ख़ू नाख़ून है। मैं नहीं जानता कि इस ज़ख़्मी का क्या हाल हुआ। (यह जानता हूं कि) उसके जमाले ख़ुर्शीद की रौशनी की कुर्ब मिला तो जिस्म से, शमअ़् रूह का नूर मिल गया।

हिकायत एक हिन्दू औरत को अपने शौहर से बहुत मुहब्बत थी। वह भी अपनी बीवी को बहुत ज़्यादा चाहता और मुहब्बत करता था। बक़ज़ाए इलाही, शौहर का इंतिक़ाल हो गया। औरत उसके मातम और मुसीबत में खुद को घुलाती रही। अपने यार के दीदार बेग़ैर, उसे जीना दूभर हो गया। दिन रात इसी ग़म में रहती और आंखों के चशमे से आंसू बहाती। नाचार इस औरत के मां बाप ने उसे दूसरे शौहर के साथ ब्याह दिया ताकि उसे कुछ सुकून मिले। दूसरा शौहर उसे अपने घर की तरफ़ ले कर चल दिया। उसका घर दूसरे गांव में था। वह ग़म व अन्दोह की तस्वीर बनी उस शौहर के पीछे चली जा रही थी। कि अचानक उस तरफ़ से एक मर्द गाता हुआ आ निकला जो यह सोरठ पढ़ रहा था।

तूने एक नौ उम्र और नौजवान से अह्दो पैमान बांध लिया और हम से जो पक्का अहद था उसे तोड़ डाला। तो उस अह्दे शिक्नी के बाइस शायद कि हमेशा ज़िन्दा रह सके मगर मेरे ज़ख़्मी दिल को तूने इस ज़ुल्म से और ज़ख़्मी कर दिया।

औरत ने यह सुन कर उस गाने वाले से कहा कि खुदा के लिए ज़रा देर रुक जा। वह ठहर गया फिर औरत ने चलने वालों को जो इधर उधर से आ जा रहे थे उन्हें भी खड़ा कर लिया। और उस गाने वाले से कहा कि एक मरतबा उस सोरठ को फिर पढ़। उसने उस सूरत को फिर उसी लेहजे में कहा। उस औरत ने एक चीख़ मारी और ज़मीन पर आ रही और जाने आफ़रीं को अपनी जान दे दी।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रज़वी किताब घर

अगर फ़िराक़ वाले दिन में अपनी जान ग़म के मारे न दे दूं तो ऐ लोगो! तुम मुझे मुहब्बत में इंसाफ़ करने वाला मत समझना।

उसके कमाले हुस्न के साथ रूह, ने मुहब्बत का अहद किया और इस अहद के सबब वह उसकी ख़ूबी और जमाल से मिल गई। एक हबीब का दूसरे हबीब से वस्ल का पुल मौत है। उस पुल से वही पार होता है जो महबूब के विसाल के सन्जाब (एक जानवर) पर सवार हो कर सोता गुज़र जाता है।

हिकायत एक ख़ूब सूरत को जो बहुत ज़्यादा मुनासिब हुस्न रखती थी। अपने अज़ीज़ों से मुलाक़ात का शौक़ हुआ। उसके रिश्तेदार और मकाम पर रहते थे। उसने बुरक़ा ओढ़ा, घोड़े पर बैठी और चल दी। हवा गर्म थी। वह एक दरख़्त के साया की तरफ़ गई। कुछ देर खड़ी हुई और अपने चेहरा से बुरक़ा हटा दिया। उस जगह एक मुसाफ़िर बैठा हुआ था। उसकी नज़र उस औरत पर पड़ी और उस पर आशिक़ हो गया और उसकी बेक़रारी बढ़ती गई। औरत ने देखा कि यहां एक अजनबी आदमी मौजूद है। उसने फ़ौरन चेहरे पर बुरक़ा डाला और चल दी अल्बत्ता उस मुसाफ़िर की बेताबी और बेक़रारी को समझ चुकी थी। जब तीसरे रोज़ वापस आई तो फिर उस दरख़्त के नीचे पहुंची देखा कि जहां वह मुसाफ़िर बैठा हुआ था वहां एक नई क़ब्र बनी हुई है। लोगों से पूछा कि यह किसकी क़ब्र बनाई गई है। लोगों ने कहा कि वह ग़रीब मुसाफिर जो इस दरख़्त के नीचे बैठा हुआ था उसकी नज़र तुम्हारे जमाल पर पड़ी और बेक़रार हो गया और जब तुम रुख़्सत हुई तो उसकी रूह भी तुम्हारे साथ रुख़्सत हो गई और बेजान जिस्म यहां पड़ा रह गया। हमने उसे यहीं दफ़न कर दिया। जब औरत ने यह माजरा सुना तो वह रिश्ता जो हुस्न व इश्क़ के माबैन है उसमें हरकत हुई। वह घोड़े से उतर पड़ी। बुरक़ा चेहरा से फेंक दिया और उस क़ब्र को अपनी आग़ोश में लिया और क़ब्र में ग़ायब हो गई। मगर क़ब्र में कोई सूराख़ और शिगाफ़ पैदा न हुआ। वह ग़ुलाम और लौंडियां जो इस औरत के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned with CamScanner

हम्राह थीं चिल्लाई, रोई पीटीं और उस क़ब्र को खोदा मगर उस औरत को क़ब्र में न पाया और यह देखा कि उस औरत का तमाम ज़ेवर जो उसके हाथ पैर कान और गर्दन में था वह मर्द के हाथ पैर कान और गर्दन में पड़ा हुआ है। सुर्मा की सियाही जो उसकी आंख में थी मर्द की आंख में है और पान की जो सुर्ख़ी उसके होंठों मे थी मर्द के होंठों में है। लेकिन क़ब्र में मौजूद मर्द है और औरत ग़ायब। अब लोग तो और ज़्यादा शोर व गुल करने लगे और जब कोई चारा न देखा तो नाचार उस मर्द के हाथ पांव, कान और नाक से वह ज़ेवर उतार लिया उसे दफ़न कर दिया और रवाना हो गये।

यहां यह भी जान लेना चाहिए कि इन पहली दो हिकायतों में मज़्हरे हुस्न ने मज़्हरे इश्क़ को खींचा और इस हिकायत में आख़िर में मज़्हरे इश्क़ ने मज़्हरे हुस्न को अपनी जानिब खींच लिया। महरिमे राज़ को चाहिए कि उस राज़ की तहक़ीक़ करे।

ऐ बुल–अजब! इन दोनों के रू–ब–रू एक दरवाज़ा खुल गया और वह दोनों जिस्म गोया कि एक क़ालिब और एक रूह हो गये। कभी इश्क़ हुस्न की तरफ़ झुकता और कभी हुस्न इश्क़ की जानिब खींचता है। और पाक जान इस बात पर जान दे देती है कि उसका एक आशिक़ ज़ख़्मी हो गया।

हज़रत समनून कुद्दिसा सिर्रुहू से मन्कूल है कि आप मुहब्बत में कुछ बात कर रहे थे और आपका ताइरे रूह, आलमे लाहूत की फ़िज़ा में परवाज़ कर रहा था एक परिन्दा फ़िज़ा से नीचे आया और ज़मीन पर अपनी चोंच रगड़ने लगा यहां तक कि उसकी चोंच से ख़ून बहने लगा और आतिशे मुहब्बत की तपिश ने (ख़ुदा की वह आग जो जली हुई है और चेहरों पर लपटें मारती है) उसके बाल व पर को फूंक दिया और उसने जान दे दी।

(बसा औक़ात ऐसा भी होता है कि मुर्ग़े सहरी, गुल्ज़ार के फ़िराक़ में अपनी जान सोख़्त कर लेता है लेकिन साथ ही, जिगर लाला भी, इस

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रज़वी किताब घर

अन्दोहगीन दिल के लिए जल उठता है।)

फ़ुतूहात में है कि अल्लाह तआला ने उस परिन्दे को शैख़ समनून की बात समझने की ताक़त अता फ़रमाई यहां तक कि वह सुल्ताने मुहब्बत का महकूम हो गया। और हाज़िरीन को नसीहत और दावेदारों की तंबीह के लिए यह हालते वक़ूअ़ में आई।

पाकीज़ा जान, इश्क़ पर क़ुरबान हो जाती है। ऐ बन्द-ए-ख़ुदा तू उसके इश्क़ की, बिला एवज़, तलब न कर)

कश्फ़ुल-असरार में है कि जो आग दिल में लगती है वह उजब की आग होती है हुसैन मन्सूर क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने फ़रमाया कि सत्तर साल तक (अल्लाह तआला की भड़कती हुई आग) हमारे बातिन में जलाई गई यहां तक कि वह सब सोख़्ता हो गया। फिर एक शोअ़्ला सा व इरादाते अनल-हक़ का भड़का और सोख़्ता तन में जा पड़ा। अब किसी ऐसे सोख़्ता दिल की ज़रूरत है जो हमें हमारी सोज़िश की ख़बर दे।

ऐ शमअ़ आ कि हम और तू कुछ राज़ की बात करें। इसलिए कि सोख़्त-ए-दिल को सोख़्त-ए-दिल ही पहचानता है।

अह्ले तरीक़त कहते हैं कि अल्लाह तआला की मुहब्बत बन्दा से यह है कि वह अपनी हज़रत क़ुर्ब का उसे मुक़र्रब बना ले। और बन्दा की मुहब्बत अल्लाह से यह है कि उसका दिल सिवाए ख़ुदा के हर चीज़ से फ़ारिग़ रहे। लवामे में है कि इश्क़ के वह अजाइबात जो आलमे बशरीयत में हैं मम्लिकते मुलकूतियत (आलमे फ़रिश्तगान) में नहीं। इसलिए कि फ़रिश्ते, लुत्फ़ व इस्मत के नाज़ परवरदा हैं और नाज़ो नेमत में परवरिश पाने वालों और बेग़ैर दर्द व अन्दोह के चाहने वालों की क़द्र व मंज़िलत नहीं होती। इश्क़ उन्हीं को सज़ावार व लाइक़ है जिनका सरमाया बाज़ार है। (क्या तू उसमें ऐसों को पैदा फ़रमाएगा जो उसमें फ़साद बरपा करें) और इन्नहू काना ज़लूमन जहूला। का दाग़, जिनके औक़ात के ज़ैबाइश है।

आशिक़ी के लिए दर्द और बदनामी आशिक़ों के लिए सोज़िश व

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

नामुरादी अच्छी चीज़ें हैं।

ऐ मुवह्हिद! अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को खिलाफ़त बख़्शी तो उनमें पहले (उनके लाइक़) मासियत और लग़्ज़िश पैदा फ़रमाई। अगर यह लग़्ज़िश उनमें न होती तो अस्मा और सिफ़ात का इल्म उन पर मुंकशिफ़ न होता। और अगर वह लग़्ज़िश की वादी से न गुज़रते तो युहिब्बुहुम की तजल्ली यूहिब्बूनहू की सूरत में उन पर न डाली जाती। और उन में तख़ुमे जुर्म की अहलियत न होती तो अमानत का बोझ किस तरह उठा लेते। हज़रत आदम की लग़्ज़िश फ़रिश्तों की मासूमियत पर बाज़ी ले गई कि उन्हें मस्जूदे मलाइका बनाया गया। और चूंकि फ़रिश्तों को गुनाह से कोई सरोकार न था इसलिए वह इस सवाल की जुरअत कर बैठे और बोले की अतज्अलो फ़ीहा मन युफ़्सिदु फ़ीहा। और यह जवाब पाया कि इन्नी आलमु माला तालूम। (जो हम जानते हैं तुम क्या जानो) यानी जो असरार हम इंसान की मासियत कारी में जानते हैं तुम नहीं जानते।

तू कमाले सिद्के मुहब्बत को देख। गुनाह के नुक़्स पर नज़र न डाल, इसलिए कि जो बेहुनर होता है उसी की नज़र दूसरे के ऐबों पर पड़ती है।

जब कि यह मासियत, राफ़्त रहमत और मग़्फ़िरत के ख़ज़ानों की कुंजी, और हसरत, नदामत और माज़रत का वसीला है। इससे ज़्यादा लिखने की हमें इजाज़त नहीं इसलिए कि अल–क़दरु सिर्रुल्लाहे फ़ला तग़शौहु। क़द्र (अल्लाह तआला का राज़ है उसके क़रीब न जाओ।)'

ऐ हाफ़िज़ जब उसकी ज़ुल्फ़ का नाफ़ा तुम्हारे हाथ है तो फिर ख़ामोश हो जाओ वरना बादे सबा को ख़बर हो जाएगी।

अब कुछ बातें अमानते ख़ुदावन्दी के बारे में लिखता हूं कि अमानत का आफ़ताब अरस्त–ए–उलूहियत के बुर्ज से चमका और इरशाद हुआ।

बेशक हमने अमानत पेश फ़रमाई आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...वी किताब घर

पर, तो उन्होंने उसके उठाने से इंकार किया और उस से डर गये और आदमी ने उठा ली। बेशक वह अपनी जान को मशक़्क़त में डालने वाला, बड़ा नादान है यानी आसमान ने कहा कि मुझ में वस्फ़े रिफ़अत मौजूद है। ज़मीन ने फ़रियाद की कि मुझ में कुशादगी व उस्अत है। पहाड़ से आवाज़ आई कि मेरा क़दम रासिख़ है। हम इस बोझ के उठाने की कुव्वत नहीं रखते। ऐसा न हो कि हमें कोई मुसीबत पहुंचे और हमारी यह ख़ूबियां भी छिन जाएं। मगर इंसान ख़ाकी ने सोचा कि मेरे पास क्या है जो वापस ले लिया जाएगा। इसलिए कि अल-मुफ़्लिसु फ़ी अमानिल्लाह। (मुफ़्लिस अल्लाह की अमान में होता है) वह जुरअत से बढ़ा और जिस बोझ को अज़्मत व शिकोह वाले आसमान न उठा सके उसे अपने नियाज़मन्द कांधे पर उठा लिया। फिर हल मिम मज़ीद। (क्या कुछ और है) का नारा लगाया। इरशाद हुआ कि ऐ जुरअत मन्द ख़ाकी यह हौसला, तूने कहां से पाया? अर्ज़ किया कि हर बारे गिरां, यारे मेहरबां की मदद से उठाया जा सकता है।

मुख़्तसर यह कि हमल अमानत की ख़िल्अत, इंसान के क़ामते बा इस्तिक़ामत के सिवा किसी पर रास्त न आई और इस बोझ के उठाने की पोशाक, मुतीअ् व फ़रमां बरदार, बशरी अज्साम के अलावा, किसी और जिस्म पर चुस्त न हुई। जब ऐसा बा अज़्मत काम और ऐसी पुरशौकत मुहिम, उसके नाम हुई तो हासिद शयातीन की नज़रे बद के ज़ख़्म से बचाने की ख़ातिर, कि यह इंसान के पुराने दुशमन हैं, उनकी जानिब, आतिशे ग़ैरत पर, इन्नहू काना ज़लूमन जहूला का दाना सियाह फेंका गया ताकि वह अन्धे हो जाएं।

सअ्दी फूल की मानिन्द है मगर दुशमनों की नज़र में कांटा।

फ़ुतूहात में है कि अमानत अस्माए हुसना से मुत्तसिफ़ होने का नाम है चुनांचे इरशाद है। वलिल्लाहिल-अस्माउल-हुसना फ़द्ऊहू। (और अल्लाह ही के लिए हैं बहुत अच्छे नाम। तो उसे उन से पुकारो) यानी तुम उसके औसाफ़ से मुत्तसिफ़ और उसके अख़्लाक़ से मुतख़ल्लिक़ हो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

जाओ। हज़रत क़ासिम अनवार कुद्दिसा सिर्रुहू ने बाज़ रसाइल में अमानत से मुराद ख़िलाफ़त ली है। और हज़रत शैख़ मख़्दूम शैख़ हुसैन कुद्दिसा रूहहू से फरमाया करते कि अमानत के मुतअल्लिक़ बेहतरीन बात यह है कि हम तुम्हें अख़्तियार और तसर्रुफ़ से मुत्तहिम करें तो तुम उसका एतराफ़ करो। और गुनाह और गुमराही से तुम्हें मुख़ातब फरमाएं तो तुम उसका इक़रार करो और यह न कहो कि इख़्तियार व तसर्रुफ़ तो तेरा है और मासियत व गुमराही तो तेरे इरादा व क़ज़ा से है। बल्कि अपने ऊपर इल्ज़ाम लो और यहां कहो। ऐ रब हमारे! हमने अपना आप बुरा किया। तू अगर हमें न बख़्शे और हम पर तू रहम न करे तो हम ज़रूर नुक़्सान वालों में हुए।

गुनाह गरचे न था अख़्तियार में हाफ़िज़। मगर अदब से कहो हां गुनाह मेरा है।

इमाम तस्तरी कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि अमानत का बार उन पर अर्ज़ (पेश करना) था और इंसान पर फ़र्ज़ फरमाया। शैख़ जुनैद कुद्दिसा सिर्रुहूने फरमाया कि आदम अलैहिस्सलाम की नज़र तो अर्ज़ पर थी (उनकी नज़र पेश करने वाले) अमानत के सिक़्ल पर नहीं। अर्ज़ की कि लज़्ज़त ने उनके दिल से अमानत के सिक़्ल मह्व कर दिया। लिहाज़ा लुत्फ़े रब्बानी ने ज़ुबाने करम से फरमाया कि अच्छा अमानत तुम्हारे सुपुर्द और हिफ़ाज़त हमारे ज़िम्मा करम।

उसका रास्ता उसी की मदद से चला जा सकता है और उसका बार उसी के सहारे उठाया जा सकता है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सातवां सुंबुला

फ़वाइदे मुतफ़र्रिक़ा में

फ़ाइदा जानना चाहिए कि दिल के अन्दर एक सूराख़ है जो मलकूत आलमान की जानिब खुला हुआ है जैसे कि दिल के बाहर पांच दरवाज़े खुले हुए हैं जिनका रुख़ आलमे महसूसात की जानिब है। दिल एक आईना की तरह। और लौहे महफ़ूज़ एक और आईना के मिस्ल है जिसमें तमाम मौजूदात की सूरतें मौजूद हैं। और जिस तरह तुम एक आईना को दूसरे आईने के मुक़ाबिल रखो तो उसकी सूरत उसमें नज़र आ जाती है, इसी तरह लौहे महफ़ूज़ से तमाम सूरतें दिल में साफ़ नज़र आती हैं जब कि वह साफ़ और महसूसात से फ़ारिग़ हो और उस से मुनासिबत पैदा कर ले। कि जब तक वह महसूसात में घिरा रहता है आलमे मलकूत से निस्बत पर्द-ए-ख़फ़ा में रहती है। अगर कोई रियाज़त करे और दिल को ग़ज़ब, शहवत और बुरी आदतों के चुंगल से छुड़ा ले। जो उसको बेकार सा कर दे और दिल को आलमे मलकूत से मन्सूब कर दे, तो दिल का रोज़न बढ़ जाता है और दूसरे लोग जो चीज़ ख़्वाब में देखते हैं वह जागते में देख लेता है। अरवाहे मलाइका अच्छी सूरतों में ज़ाहिर होती है। वह अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को देखता, उन से फ़ाइदे और मदद हासिल करता है और आसमान और ज़मीन की मम्लिकत उसे दिखा दी जाती है (अल–ग़रज़) जिसके लिए यह रास्ता खुल जाता है उसके बहुत से काम बन जाते हैं जो बयान में नहीं आ सकते। तमाम अंबियाए किराम और औलियाए इज़ाम के उलूम की यही राहें हैं न कि हवास।

अगर तू पांचों हवास को (उनके काम से) बेबहरा कर दे तो तेरे दिल का रास्ता खुल जाएगा। फिर तू जिस सूरत पर नज़र डालेगा तुझे माना का राज़ हासिल हो जाएगा।

फ़ाइदा इब्राहीम अदहम क़ुद्दिसः सिर्रुहू ने फ़रमाया कि मैंने अल्लाह तआला को सत्तरह मरतबा देखा और उस से एक सौ बीस मस्अले सीखे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

उनमें से चार मस्अले मख़्लूक़ पर पेश किए। सब इंकार कर बैठे। मैं
को मैंने महफ़ूज़ रखा (फिर) फरमाया कि जो शख़्स उस मकाम तक
नहीं पहुंचा वह इस कलाम को नहीं समझ सकता। इसलिए कि
औलिया अल्लाह को दुनिया व आख़िरत में रूयत का कश्फ़ बहुत
ज़्यादा हासिल होता है।

याद रखो कि दिल एक चमकदार आईने की तरह है और बुरी आदतें धुएं और तारीकी की तरह जो दिल को अन्धा कर देती है और वह हज़रत उलूहियत तक पहुंचाने वाले रास्ते को नहीं देख पाता जबकि अच्छी ख़स्लतें नूर की मानिन्द हैं जो गुनाहों की तारीकियां दिल से मिटा देती हैं।

याद रहे कि हर हरकत और सुकून जो तुम करते हो उससे दिल में एक सिफ़त पैदा होती और बाक़ी रहती और तेरे साथ वह इस आलम में जाती है जहां सूरत, बिरंगे मानी होगी। इसी वजह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया। (हर बदी के बाद नेकी कर लो कि वह उस बदी को मिटा देगी।)

आदमी जब मरता है तो या तो एक नूरानी और चमकदार जौहर होता है जो अल्लाह तआला की मारिफ़त से आरास्ता और मल–ए–आला का रफ़ीक़ होता है जैसा कि कुरआन में इरशाद फरमाया (सच की मज्लिस में अज़ीम कुदरत वाले बादशाह के हुज़ूर) या तारीक, ज़ुल्मत में डूबा हुआ शर्म से सर डाले होता है। इसलिए कि उसके दिल का चेहरा, उस्त दुनिया की तरफ़ होता है। और यह दुनिया। इस आलमे बाला के नीचे है। लिहाज़ा उसका सर नीचा रहता है और वह शर्मसार। (खुद कुरआन शरीफ़ में है) (और कहीं तुम देखो कि मुज्रिम अपने रब के पास अपना सर नीचे डाले हुए हैं) और उसका राज़ कि शरीअ़त ने नेकोकारी का हुक्म दिया है, यह है कि दिल को बीमारी और हलाकत से बचा कर, सेहत और सलामती में ले जाया जाए। इसलिए कि इरशादे बारी है। फ़ी कुलूबेहिम मरज़ुन। (उनके दिलों में रोग है) और जिस तरह कि बीमार बदन को उस जहान में हलाकत का ख़तरा रहता है इसी तरह रोगी दिल को उस जहान में बरबादी का अन्देशा है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

तू अब दवा तलब करे कि तेरा मसीहा ज़मीन पर है लेकिन जब वह आसमान पर चला जाएगा तो फिर दवा मयस्सर न होगी।

फ़ाइदा : अवामुन्नास का एक गरोह इल्म को अमल पर फ़ज़ीलत देता है और यह दुरुस्त नहीं और दूसरा गरोह अमल को इल्म से अफ़ज़ल जानता है और यह भी (अलल-इत्लाक़) ठीक नहीं है। वह जाहिल सूफ़ी जो बेहूदी बातें बकते और अमल को इल्म पर तरजीह देते हैं बल्कि इल्म को हिजाबुल्लाह कहते हैं। यह उनकी इंतिहाई तन आसानी है इसलिए कि चन्द रकअत नमाज़ पढ़ लेना बड़ा आसान काम है।

फ़ाइदा : हल्क़ा दुर्वेशान में बाज़ दुर्वेश ऐसे भी होते हैं कि नवाफ़िल और वज़ाइफ़ में बड़े मसरूफ़, और ज़िक्र व फ़िक्र व मुराक़बा में मशग़ूल रहते हैं, लेकिन अल्लाह तआला के फ़राइज़ में से कोई फ़र्ज़, उनकी कोताही से छूट जाए तो उसका ग़म भी नहीं करते। मख़्दूमी मख़्दूम शैख़ हुसैन कुद्दिसल्लाहु अल-अज़ीज़ सिर्रुहू फरमाते थे कि पीर दस्तगीर हज़रत शैख़ अब्दुस्समद अल-मारूफ़ बेही शैख़ सफ़ी कुद्दिसल्लाहु रूहहू की ख़ानक़ाह में एक दुर्वेश आया कि दिन रात ताअत व इबादत में मशग़ूल रहता। कभी ज़िक्र व फ़िक्र करता, कभी औराद व क़ुरआन पढ़ता। एक लहज़ा खुद को फ़ुर्सत न देता और एक दम के लिए भी अपना पहलू ज़मीन पर न लगाता। मेरी नज़रों में वह बड़ा पसन्दीदा ठेहरा। और एक मरतबा मैंने उसके हाल की तारीफ़ पीर व दस्तगीर के सामने कर ही दी। फरमाया लैसा बेशैइन (कुछ नहीं)। जब मैंने काफ़ी अरसा तक उसे भी इसी हाल पर देखा तो दिल में ख़्याल गुज़रा कि अब वह किसी मक़ाम पर ज़रूर पहुंच चुका होगा। मैंने फिर उसकी तारीफ़ पीर व दस्तगीर के सामने की। आपने फिर फरमाया। "कुछ नहीं।" अब मुझे उसकी जुस्तजू की फ़िक्र हुई। एक रोज़ वह रमज़ान के महीने में नमाज़े अस्र अदा करने के बाद एक गोशा में गया। मैं छुपा हुआ उसे ताड़ता रहा। क्या देखता हूं कि उसने एज़ार बन्द की गिरह से अफ़ियून ली, मुंह में डाल कर निकल गया और फिर मज्लिस में हाज़िर हो गया। उस वक़्त मुझे यक़ीन आ गया कि वाक़ई यह कुछ भी नहीं मालूम होता है कि उस बदबख़्त ने तमाम महीना रोज़ों का ज़ाए कर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

दिया। बल्कि हर माहे रमज़ान के रोज़े इसी तरह ख़राब करता रहता है। कि अफ़ियूनी था और अफ़ियूनी और ख़शख़ाशी अक्सर ज़िन्दीक होते है। जिन्हें अपनी ज़िन्दीकियत की ख़बर भी नहीं होती इल्ला माशा अल्लाह। अल–तैमिया में है शराब नशा लाती, भंग ख़बीस बनाती और अफ़ियून हलाक करती है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि "जिसने भंग, शराब, या अफ़ियून का कोई लुक़्मा खाया पिया, वह अपनी क़ब्र में सुव्वर और कुत्ते की सूरत में दाख़िल होगा दुनिया से अपना ईमान सलामत ले कर न जाएगा और क़यामत के रोज़ जन्नत में दाख़िल न होगा बल्कि वह दोज़ख़ में मुनाफ़िक़ों और मुश्रिकों के साथ जाएगा मगर यह कि तौबा कर ले। तो तुम न ऐसों से मुसाफ़हा करना न मुआनक़ा। वह मुझसे बरी हैं और मैं उन से बेज़ार।, निसाबे सूफ़िया में है कि अफ़ियून हराम है इसलिए कि वह एक क़िस्म का ज़हर है ऐसे ही पोस्त ख़शख़ाश।

फ़ाइदा : बाज़ सूफ़िया के मशाग़िल में सिमाअ् व रक़्स भी दाख़िल है। इस मस्अला में सिमा में अगरचे उलमाए किराम को सख़्त इख़्तिलाफ़ है मगर गरोहे सूफ़िया का इस अम्र पर इत्तिफ़ाक़ है कि अह्ले सिमा के लिए, सिमाअ् बिज़्ज़ात और उनकी सूरत बनाने वालों के लिए उनके तुफ़ैल में मुबाह है। हज़रत जुनैद बग़दादी क़ुद्दिसा सिर्रुहू के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया तो फरमाया कि बन्दा जो चीज़ ख़ुदा की हुज़ूरी के लिए करे वह उसके लिए मुबाह है। अल्लाह तआला का इरशाद है।

(ऐ महबूब मेरे उन बन्दों को बशारत दीजिए जो बात सुनते फिर अच्छी -से अच्छी बात की पैरवी करते हैं)

जानना चाहिए कि अह्ले सिमा के हालते सिमा में मुख़्तलिफ़ दरजात हैं। बाज़ वह लोग जिनमें बहालते सिमा, अन्दोह या ख़ौफ़ या शौक़ पैदा होता है वह रोते, चिल्लाते, नारे लगाते और महवियत के आलम में अपने कपड़े फाड़ देते हैं। जब बाज़ हज़रात में रजाए फ़रहत और दिली मुसर्रत पैदा होती है और वह आलमे वज्द में रक़्स करते और तालियां बजाने लगते हैं चुनांचे मरवी है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम बहालते रक़्स, ताबूते सकीना की तरफ़ मुतवज्जेह हुए तो आपकी ज़ौजा

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks
Scanned with CamScanner

न अर्ज़ किया कि आप रक्स करते हैं हालांकि आप नबी हैं।" इरशाद फ़रमाया क्या तू मेरे दिल (की महवियत और आलमे बेख़ुदी) पर यह हुक्म लगाती है। जा मैंने तुझे तलाक़ दी।"

जानना चाहिए कि जिस तरह सिमा में मनफ़अ़तें और फ़ाइदे बकसरत हैं इसी तरह लग़्ज़िशें और गुमराहियां भी बेशुमार हैं। चुनांचे जब नसीराबादी से यह कहा गया कि आप सिमा के बहुत हरीस हैं।" तो फ़रमाया कि हां वह उससे अच्छा है कि हम गोशा नशीन हो कर लोगों की ग़ीबतें करें।" यह सुन कर अबू उमर नजीद ने फ़रमाया "अफ़्सोस ऐ अबुल-क़ासिम (तुम यह नहीं जानते) कि सिमा की एक लग़्ज़िश बरसहा बरस लोगों की ग़ीबत से बदतर है।" और अगर सिमा का मुंकिरे सिमा के फ़ाइदों का, उसकी आफ़तों से मुक़ाबला करे तो हम जवाब देंगे कि उन आफ़तों का दफ़ा करना वाजिब है मगर उनके सिर्फ़ वाक़े होने के इम्कान से, सिमा का तर्क लाज़िम नहीं आता इसलिए कि नमाज़ जो बेहतरीन अमल और अहम अल-इबादात है वह बाज़ के हक़ में मूजिबे फ़लाह है चुनांचे इरशाद है।

जबकि बाज़ के हक़ में तबाही की मूजिब है। चुनांचे इरशाद है। लेकिन नमाज़ में सह्व और ग़फ़्लत के एहतमाल के बावजूद, जो बाइसे तबाही है। नमाज़ का तर्क जाइज़ न होगा। यही हाल सिमा का है।

और अगर मुंकिर यह कहे कि "क़व्वालों का बुलाना और लोगों को सिमा की ख़ातिर जमा करना बिदअ़त है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा व ताबईन रिज़वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन के ज़माना में न था" तो हम जवाब देंगे कि अगरचे यह नौपैद व बिदअ़त है मगर किसी सुन्नत से मज़ाहिम नहीं लिहाज़ा सैय्यआ न हुई। ख़ुसूसन जब कि वह फ़वाइद पर मुश्तमिल है। और मशाइख़े मुतअख़्ख़ेरीन ने उसे मुस्तहसन जाना है।

सिमा के मिंजुमला फ़वाइद में से एक फ़ाइदा यह है कि वह तकान व मलाल जो तालिबाने हक़ की राह में आज़ुर्दगिए दिल की मूजिब होती है और वह एक क़िस्म की बन्दिश व ना उम्मीदी जो उन लोगों के लिए। उनके आमाल के फ़ुतूर, और अहवाल के क़ुसूर की बाइस बनती है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मशाइख़े मुतअख़्ख़ेरीन ने इस आरज़ा के दफ़ा के लिए इस तरकीब को मुकर्रर किया है जिसमें अच्छी आवाज़ों मुनासिब लहनों के शौक़ अंगेज़, शेरों का जो ख़िलाफ़े शरअ् न हों ज़िक्र है। और ग़ालिब की हाजत के वक़्त उसमें मस्रूफ़ होने की इजाज़त दी है ताकि तकान व मलाल दूर हो और फिर नए शौक़ से अपने मुआमलात के तरफ़ मुतवज्जेह हों और उसमें तो शक नहीं कि उम्दा आवाज़ें अल्लाह तआला की नेमतों में से हैं। चुनांचे इरशाद है। यज़ीदु फ़िल-ख़ल्क़े मा यशाओ। (वह ज़्यादा फरमाए मख़्लूक़ में जो चाहे) तो वह ज़्यादती अच्छी आवाज़ भी है।

हज़रत जुनैद क़ुद्दिसा सिर्रुहू से पूछा गया कि उसका क्या सबब है कि एक अच्छा ख़ासा, बावक़ार आदमी जब अचानक किसी उम्दा आवाज़ को सुन लेता है तो उसके दिल में एक बेचैनी और बेक़रारी सी पैदा हो जाती है और उसके मामूल के ख़िलाफ़, उससे हरकात ज़ाहिर होती हैं?" फरमाया कि जब अल्लाह तआला ने अज़ल में आदम अलैहिस्सलाम की ज़ुर्रियात से अलस्तु बेरब्बेकुम फरमाया तो इस ख़िताब की हलावत उनके रूहानी कानों में बाक़ी है। ला मुहाला जब वह कोई अच्छी आवाज़ सुनते हैं तो उन्हें इस ख़िताब की लज़्ज़त याद आ जाती है और उसी के ज़ौक़ में वह ऐसी हरकत करने लगते हैं।" ज़ुन्नून मिसरी क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया कि अच्छी आवाज़ें, अल्लाह तआला के ख़िताबात व इशारात हैं जिनको हर मर्द व औरत की पाकीज़ा जान में वदीअ़तन रखा गया है। शैख़ अब्दुल-क़ादिर जीलानी क़ुद्दिसा सिर्रुहू अल-अज़ीज़ ने अपने रिसाल-ए-ग़ौसिया में लिखा कि मैंने तमाम अरवाह को देखा कि वह अपने-अपने क़ालिबों में अलस्तु बेरब्बेकुम सुन कर वज्द कर रही हैं।

मन्क़ूल है कि जब मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यज़्दानी हिकायात का ज़मज़मा और रब्बानी कलिमात का नग़मा सुना तो उन्हें उसके बाद कोई बात और आवाज़ भली मालूम न होती और न वह उसे पूरी तवज्जोह से सुनते। बल्कि अल्लाह तआला के कलाम की शीरीनी और हलावत से बेताब हो जाते। जिब्रील अलैहिस्सलाम सिदरतुल-मुन्तहा में ऐसी उम्दा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रज़वी किताब घर

और दिल्कश आवाज़ सुनते जो कलामे इलाही पर दलालत करती। दिल में जिब्रील अलैहिस्सलाम की हालत को याद करो। वही आवाज़ कलामे हक़ पर दलालत करती है।

ऐ बिरादर! अह्ले दिल को जो कलाम, कैफ़ियत व तर्ब में डाल देता है ला मुहाला उसके मानी ज़रूर होते हैं जो उनके अहवाल और मक़ामात के मुवाफ़िक़ हैं। और उनके अहवाल और मक़ामात, यक़ीनन क़ुरआन अहादीस और इज्माए सलफ़ के आज़्मूदा हैं लिहाज़ा हर वह कलाम जो अह्ले तहक़ीक़ को हिजान में लाता है, किसी तफ़ावुत के बग़ैर वह क़ुरआन व हदीस के हम मानी है। अगरचे किसी ज़बान में हो।

बात इश्क़ की होनी चाहिए ख़्वाह यूनानी में हो या सुरयानी में।

और जब नज़्म क़ुरआन को अच्छी आवाज़ और ख़ुश इल्हानी से उसे ज़ीनत देना और उसे शाइस्ता लेहजा में पढ़ना मुस्तहब है तो मआनी क़ुरआन का अच्छी आवाज़ से मुज़ैयन करना बदरजा ऊला मुस्तहब व मुस्तहसन है। फिर उस अहसनुल–हदीस (सबसे अच्छी बात) का सुनना, जो रिक़्क़ते क़ल्बी और गुदाज़िए दिल की मूजिब है। अहसुनल–हसनात (बेहतरीन नेकी) हुआ। अल्लाह तआला का इरशाद है।

अल्लाह ने उतारी सबसे अच्छी किताब कि अव्वल से आख़िर तक एक सी है। दोहरे बयान वाली। उससे बाल खड़े होते हैं उनके बदन पर जो अल्लाह से डरते हैं। फिर उनकी खालें और दिल नर्म पड़ते हैं, यादे ख़ुदा की रग़बत में।"

ऐ भाई क़ुरआन के मआनी जो इज़्ज़त व जलालत के नक़ाब में पोशीदा हैं, इस जहां में उन्हें हुरूफ़ और अस्वात के पर्दा में भेजा अगर हज़रत क़ुरआन के मआनी का जमाल, उन कलिमात के हिजाब के बग़ैर तजल्ली फ़रमाए तो क़सम है कि तमाम पहाड़ रेज़ह–रेज़ह हो जाएं।

अगर हम यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर उतारते तो ज़रूर तू उसे देखता झुका हुआ। पाश–पाश) बल्कि तमाम आलम, उसके अनवार की ताबिश से जल जाए कि (अगर वह एक पर्दा हटा दे तो उसके रुख़ की तजल्लियां वहां तक जला दें जहां तक नज़र उठे) लिहाज़ा अगर उन मआनी का परतौ या उसका कोई शम्मा, मुहिब्बाने हक़ आगाह और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मुश्ताक़ाने बारगाह के दिलों पर नुज़ूल फरमाए तो उन्हें या तो महव व बेखुद बना दे या कलक़ व इज़्तिराब में डाल दे। तो कि फ़हम कुसूरान में माज़ूर रहे तुझे उनके अहवाल पर एतराज़ की ज़बान न खोलना चाहिए।

बिरादरे अज़ीज़! इल्म व दानिश वही नहीं जिसे तुमने पढ़ा और जाना। बल्कि एक इल्म और भी है कि उसे जितना पढ़ो और जानो, नादान तर होते जाओ और जितना उस पर अमल करो इतना ही कोताह अमल क़रार पाओ और इस्तिग़फ़ार में डूबे रहो। यह इल्म मौजें मारता हुआ एक दरिया है जिसकी कोई अथाह नहीं बल्कि तुम जिस क़द्र उस से आशना होगे, उसी क़द्र उसकी गहराई बढ़ती रहेगी और जितना तुम उसकी गहराई में जाओगे उतने ही डूबते जाओगे। फिर जितने ही डूबते जाओ पानी से तर न होगे।

(ग़मे इश्क़ के आशना उस गहरे समुन्द्र में डूबते चले गये मगर पानी से आलूदह न हुए) इद्राक के दर्क से आजिज़ रह जाना ही इद्राक है। लिहाज़ा इस बहरे अमीक़ में डूब जाने वाला, ख़िरक़–ए–नामूस को सर से उतार दे और अपने हाथ पैर मारे तो उसको ऐब न लगाओ इसलिए कि अल–ग़रीकु यतअल्लकु बेकुल्ले हशीशिन। (डूबने वाला तिनके का सहारा ढूंढता है।)

नक़्ल है कि इमाम शम्सुल–अइम्मा गरगानी ने शैख़ुल–मशाइख़ मौदूद चिश्ती कुद्दिसा सिर्रुहू से फरमाया कि ऐ शैख़ हम फ़िक़्ह की रिवायत नहीं करते और न मस्अला शरई से बहस करते हैं हम आपसे आप ही के उसूल के मुताबिक़ सवाल करते हैं कि आपकी क्या राय है सिमा बेहतर है या नफ़्ल नमाज़? शैख़ ने फरमाया "क्या इस्तेलाहे सुलूक के मुवाफ़िक़ सवाल करते हैं?" अर्ज़ किया "हां" शैख़ ने फरमाया कि "आप उलमाए दीन से हैं ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं कि अगर कोई शख़्स दोगाना नमाज़, ख़ुलूसे क़ल्ब से। उन शराइत व अरकान के साथ अदा करे जो वारिद हैं, तो सिर्फ़ क़बूलियत की उम्मीद होती है। वह चाहे तो क़ुबूल फरमाए और चाहे तो रद्द फरमा दे।" शैख़ुल–अइम्मा ने फरमाया कि "बेशक" शैख़ ने फरमाया कि उसमें मक़्बूलियत का एहतमाल है जबकि अस्समाओ जज़्बतुन। मिन जज़्बातिल–हक़्क़े सिमाउन,

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हक़ की कश्तियों में से एक कश्ती है और वह यक़ीनन मक़्बूल।" तुम खुद अक़्लमन्द और बात की तह तक पहुंचने वाले हो तो खुद इंसाफ़ कर लो। नज़र में तो यह बात सही और दुरुस्त है इसलिए कि नमाज़ दूसरे आमाले जवारेह की मानिन्द है (और रद्दो क़बूल के माबैन) जब सिमा व वज्द, अतीया ख़ुदावन्दी है और बख़्शिश। अगरचे बाज़ बख़्शिशें अमल का नतीजा हैं और बाज़ एहसान महज़। लेकिन सिमा ऐसे इनायते रब्बानी और मक़्बूलियते सम्दानी है तो इसमें अदमे क़बूल का शाइबा भी नहीं।

आदाबुल-मुरीदीन में यह भी मज़्कूर है कि कभी सिमा में मशग़ूलियत का बाइस, फ़रहत व सुरूर, निशाते क़ल्ब की तहसील, और बहालते सिमा, तफ़रीह ख़ातिर, भी होता है। मगर मम्नूअ़ यह भी नहीं। अल्बत्ता मुहक़्क़ेक़ीन सूफ़िया के मामूलात में दाख़िल नहीं। इसी आदाबुल-मुरीदीन में यह भी लिखा है कि जब मज्लिसे सिमा का इन्एक़ाद हो तो क़िरअत कुरआने करीम से आग़ाज़ और इसी पर इख़्तिताम होना चाहिए। ख़्वाजा मुम्शाद दैनूरी से हिकायत है कि उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत हुई तो सिमा के लिए इज्तिमा से मुतअल्लिक़ सवाल किया तो आपने फ़रमाया कि उसमें कोई हरज नहीं। "अल्बत्ता कुरआन से शुरू और कुरआन पर ख़त्म करो।" हज़रत पीर दस्तगीर मख़्दूम शैख़ सफ़ी कुद्दिसल्लाहु रूहहू ऐसी मज्लिसे सिमा में खुद को सिमा व वज्द से दूर ही रखते जिसमें कोई शख़्स, महज़ अह्ले सिमा के सिमा व वज्द का तमाशा देखने आता। हत्ता कि इस में मुतलक़न हरकत न करते। नीज़ आप महज़ सिमा की ख़ातिर, क़व्वालों को तलब न फ़रमाते बल्कि अपने मशाइख़े किराम के एरास में भी। अगरचे सूफ़िया व अह्ले वज्द ख़ानक़ाह में हाज़िर और क़व्वाल भी मौजूद होते, आप महज़ सिमा की ख़ातिर कोई महफ़िल न जमाते। हां जब क़व्वाल किसी जगह से हाज़िर होते बैअत की नीयत से, ख़्वाह क़दमबोसी के इरादे से, और वह सिमा शुरू करते और उस वक़्त अगर किसी सूफ़ी को सिमा में कैफ़ियत हो जाती या खुद हज़रत ही पर रिक़्क़त व नशात तारी हो जाती, उस वक़्त सिमा की बाक़ायदा मज्लिस

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

होती। बई हमा उन तल्बीस से इंकार भी न करने ... मारिफ़त का नसीब व फराज और सही दावा कहने ... पहचानते है। और जो इल्म व अमल उन्हें मयस्सर है ... जानते हैं।

वह लोग जो बेखुदी में मुस्तग़रक रहते हैं अहले-... बेखुदी सिद्क़ और इख़्लास पर मबनी होती है वह न खुद ... न दिखाते हैं वही लोग मक़ामे मारिफ़त के ख़ास बन्दे हैं

फ़ाइदा : सिमा के हलाल और मुबाह होने की जो ... इमाम आज़म, अबू हनीफ़ा कूफ़ी, इमाम अबू यूसुफ़ और इन ... से है कि शैख़ इमाम अल्लामा कमालुद्दीन अबुल-फ़ज़ल ... सालब अल-औफ़वीयु ने अपनी किताब इम्तिनाउस्सेमा में ... "इमाम अबू हनीफ़ा कूफ़ी के मुतअल्लिक साहिबुत्तज्किरा अल-... रिवाते करते हैं कि आप से और हज़रत सुफ़ियान सूरी से ... मुतअल्लिक पूछा गया। तो दोनों ने फ़रमाया कि न वह गुनाहे ... है और न बदतरीन गुनाहे सग़ीरा।" और हाफ़िज़ ने अपने ... फ़रमाया कि इमाम आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु से हमारे अस्हाब ... करते हैं उनमें से बाज़ हफ़्स बिन ग़यास से रिवायत करते हैं, और ... इमामे मुहम्मद से और वह इमाम अबू यूसुफ़ से रिवायत करते हैं ... इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह के रू-ब-रू सिमा ... ज़िक्र आया तो फ़रमाया कि मुझे तो यह पसन्द है कि मेरा कोई क़र्ज़ ख़्वाह होता और वह मेरा पीछा करता, मुझ पर क़सम खा लेता (... वसूल करके मानूंगा) और मुझे ऐसी जगह पहुंचा देता जब सिमा हो ... मैं सिमा में मशग़ूल हो जाता और क़र्ज़ ख़्वाह को भूल जाता।)

इब्ने कुतैबा ने यह ज़िक्र किया है कि उन्होंने इमाम अबू यूसुफ़ के सामने सिमा का ज़िक्र छेड़ दिया तो आपने इमाम आज़म रहमतुल्लाह अलैह के एक पड़ोसी का क़िस्सा बयान किया और वह वह है जिसे इब्ने कुतैबा वग़ैरह ने ज़िक्र किया है कि आपका एक पड़ोसी था जो हर रात यह शेअ्र गाता रहता।

लोगों ने मुझे ज़ाए कर दिया और न सोचा कि कैसे जवान को ज़ाए

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मक्की किताब घर

कर दिया। जो सख़्ती और रख़्ना डालने वाली मुसीबत के रोज़ उनके ध्यान आता)। इमाम आज़म उसे ग़ौर से हंसते। एक रोज़ आपने उसकी आवाज़ न सुनी तो उसके मुतअल्लिक़ लोगों से दरयाफ़्त किया। मालूम हुआ कि वह आज रात पकड़ा गया। और ईसा अमीर के क़ैदख़ाना में डाल दिया गया है। आपने अमामा बांधा और अमीर की तरफ़ चल दिए। उस से उस सिलसिला में बात चीत की। अमीर ने कहा कि मैं उसका नाम नहीं जानता। इमामे आज़म रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि जिस जिस का नाम अमर हो उसे छोड़ दो। अमीर ने हुक्म दिया कि छोड़ दिया जाए। जब वही शख़्स ज़िन्दां से निकला तो आपने फरमाया कि ऐ जवान क्या हमने तुझे ज़ाए कर दिया? उसने कहा नहीं बल्कि आपने हिफ़ाज़त की।" इख़्तिताम उस क़िस्सा का यह है कि आपने उस से फरमाया कि जाओ अपने गाने में मस्त रहो और हमें ख़ुश रखो। इस हिकायत से ज़िम्नन यह मालूम होता है कि आप उसका गाना ग़ौर से सुनते और उसे गाने से न रोकते थे। और आपका ग़िना से न रोकना, ग़िना की इबाहत पर दलालत करता है इसलिए कि ज़ुहद और कमाले तक़्वा के बावजूद आपका रोज़ाना गाना सुनना, किसी और अम्र पर महमूल नहीं किया जा सकता सिवाए उसके कि वह आपके नज़्दीक मुबाह था। हां वह रिवायत जो उसके ख़िलाफ़ आप से है वह उस गाने पर महमूल की जाएगी जो लायानी और लहव वग़ैरह उमूर पर मुश्तमिल हो ताकि क़ौल और फ़ेअ़्ल में मुताबिक़त रहे। अलावा बरीं, ग़िना की हुर्मत आपके इक़्तिज़ाए क़ौल से लिया गया है उस पर कोई तस्रीह नहीं जैसा कि तुम उनकी किताबों में जान चुके और पढ़ चुके। और उनके क़ौल से जो चीज़ अख़्ज़ की गई है उसमें (हराम होने पर) कोई दलालत नहीं कि उसमें और वजूह का भी एहतमाल है। हाफ़िज़ ने अपने रिसाला में इमाम अबू यूसुफ़ से हिकायत की है कि आप कभी–कभी हारून रशीद के यहां तशरीफ़ ले जाते। वहां सिमा होता तो कभी–कभी आप पर रिक़्क़त तारी हो जाती।

फ़ाइदा : याद रखो कि जो इल्म, उमूरे आख़िरत का मुआविन न हो उससे जुहल बेहतर है। मशहूर है कि –

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

वह इल्म जो हक़ का रास्ता न दिखाए जिहालत है।

बाज़ मशाइख़े किबार ने फ़रमाया है कि शैतान जब उस जाहिल से मिलता है जो इल्मे दीन नहीं रखता और उस पर ग़ैब की कोई चीज़ मुंकशिफ़ हो गई है तो वह उस पर हंसता और उसे ख़ूब-ख़ूब ज़लील करता है। उसे अजीब-अजीब हरकतें दिखाता है। कभी गुलाब का भरा हुआ पैमाना दिखाता है जो हक़ीक़तन शैतान का पेशाब होता है जो उस पर क़तरा-क़तरा गिराता, और उस ग़रीब को बकसरते मख़लूक़ के बहकने का वसीला बना देता है। फिर उस शैतान का उस जाहिल के साथ सबसे बड़ा मुआमला यह होता है कि सबसे पहले उसे गुमराह करता है यानी उसे अच्छी-अच्छी सूरतें अल्लाह तआला की तजल्लियां हैं। और वह उस पर यक़ीन कर लेता है कि वाक़ई वह सूरतें हक़ की तजल्लियां ही हैं। और यूं वह गरोहे मुजस्समा और मुशब्बह में दाख़िल हो कर गुमराही की वादी में बरबाद हो जाता है। उसके बाद उसे उलमाए मुहक़्क़िक़ और मशाइख़े मुदक़्क़िक़ की हम नशीनी से बाज़ रखता है जो उसे खरा खोटा बताते। और उस से कहता है कि तुझ जैसा दुनिया में कौन है जिसकी तरफ़ तू रुजूअ् करे और उसकी इक़्तिदा करे। इसलिए कि अल्लाह तआला बेग़ैर तेरी ख़्वाहिश के तुझ पर तजल्ली डालता है हालांकि मूसा अलैहिस्सलाम ने ख़्वाहिशें कीं मगर अल्लाह तआला ने उन्हें जल्वा न दिखाया और तजल्ली न की तो तू क्यों किसी आलिम और बुज़ुर्ग की जानिब रुजूअ् करता है। क्या तू यह ख़्याल करता है कि वह तेरे मुआमलात को तुझ से ज़्यादा देखता और जानता और तुझ से ज़्यादा क़ुदरत रखता है कि तुझे शैतान के मकर से बचा सके।"

और जब यह जाहिल इबादत गुज़ार, इन शैतानी वसवसों को कबूल कर लेता है तो शैतान उसका पीर बन जाता है। और अगर कोई कामिल दुर्वेश बनज़र ख़ैर ख़्वाही उसे इस गुमराही से आगाह करता है तो यह उस पर शाक़ गुज़रता और मुख़ालिफ़त की ठान लेता है। फ़रमाने इलाही है। (उसके बड़े बनने ने उसे गुनाह पर आमादा किया पस काफ़ी है उसे दोज़ख़) और अगर कोई उसके मुरीदों और मोतक़िदों

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रज़वी किताब घर

जो उसकी तरफ़ रुजूअ् होने से रोके और उसकी बैअ़त व इरादत से मना करे तो वह दुश्मनी पर उतर आते हैं। और कहते हैं कि हमारे पीर की इज़्ज़त व मक़्बूलियत ने उसकी दुकान की रौनक़ ख़त्म कर दी है। इसी वजह से हसद और इनाद में ऐसी बातें कहता है।" अल-गरज़ उसके ज़रीए से कसीर मख़्लूक़ को गुमराह करता है।

कभी लोगों की नीयतों और इरादों से आगाही उसके दिल में डाल देता है" कि यह इबादत गुज़ार जाहिल उन लोगों से अपनी वाक़फ़ीयत के मुताबिक़ मुआमला करे। वह लोग उसे रौशन ज़मीर कहें। उसकी तरफ़ हमातन मुतवज्जेह रहें और उसे सच्चा जानें। बाज़ मरतबा गैब की बातें उस पर इल्क़ा कर देता है ताकि यह पीराने उमूर को लोगों के सामने पेश करे और इत्तिफ़ाक़ से वह वाक़े हो भी जाए तो लोग उसे साहिबे कश्फ़ कहें। उसकी तरफ़ तक़र्रुब और तवज्जोह ज़्यादा करें और वह भी ख़ुद को साहिबे कश्फ़ जाने। और करिशमा शैतानी और कश्फ़े रहमानी में फ़र्क़ न कर सके। कभी-कभी तो अपने कश्फ़ की तारीफ़ में शेअ्र भी कह दे इसी वजह से कहा गया है कि –

जो शख़्स अपने कश्फ़ की बातें बताने लगे तो उसके कश्फ़ को कफ़्श (जूता) बनाकर उसके सर पर मार दो।

ऐसा भी होता है कि शैतान अपना तख़्त आसमान और ज़मीन के दर्मियान मुअल्लक़ करता, उस पर बैठता और उस जाहिल को दिखाता है कि ख़ुदा तआला अर्श पर जल्वा फरमा है और तुझ पर तजल्ली डाल रहा है।

नक़्ल है कि यह वाक़या एक ऐसे ही उम्मीदवार पर गुज़रा कि वह मिस्र जा रहा था। शैतान को देखा कि अर्श पर बैठा है। ख़्याल किया कि ख़ुदा है और उसे सज्दा कर लिया उसके बाद उस वाक़या को बग़दाद में बुज़ुर्गाने दीन की एक जमाअत के रू-ब-रू अर्ज़ किया। उन सबने फरमाया कि वह शैतान है और उस पर दलील नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह क़ौल है कि (शैतान का एक तख़्त आसमान और ज़मीन के दर्मियान मुअल्लक़ है और वह उस पर बैठता है अल-हदीस।) वह शख़्स उठा। नमाज़ पढ़ी फिर ईमान की तज्दीद की

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

और उसी जगह जहां शैतान का तख़्त देखा गया था और उस पर लानतें भेजें और इंकार किया। फिर यह तो वह चीज़ है जिसका मशाइख़े किराम ने बारहा तजरबा किया।

यह भी ज़ेहन नशीन रखना चाहिए कि शैतान अक्सर जाहिलों को इबाहत, तजसीम और हलूल (के चक्कर) में डाल देता है। इबाहत की आराइश में तो यूं फांसता है कि मक़्सूदे असली अल्लाह तआला तक पहुंचना है और वह तुझे हासिल हो चुका और तुझ से तक्लीफ़े शरई ऐसे ही उठ गई जैसे मौत से। और कभी उनके दिलों में यह इल्क़ा करता है कि अल्लाह तआला तुम्हारी बन्दगी और इबादत से बेनियाज़ है और तुझ पर तक्लीफ़े शरई और इबादत गुज़ारी तेरे नफ़्स की पाकी और बातिन की सफ़ाई के लिए फ़र्ज़ की थी सो वह तुझे हासिल हो चुकी इसलिए कि तू अपने नूरे बातिन से रूहानियत और बज़्मे बाला का मुशाहिदा करता है और कभी उन्हें गुनाहों में मुब्तला कर देता है और उन गुनाहों को छोटी रोशनियों के लिबास और आरास्ता सूरतों में पेश करता है और कहता है कि (जब अल्लाह तआला किसी को महबूब बना लेता है तो फिर उसे गुनाहे ज़रर नहीं देता)।

और तजसीम और तशबीह का बयान ऊपर गुज़र चुका यानी वही नुमाइशें जिनकी बिना पर वह गरोहे मुजस्समा और मुशब्बह में हो जाता है। रहा हुलूल तो वह इस्लाम में जाहिल सूफ़ियों के वाक़ेआत से पैदा हुआ है कि शैतान ने उसके दिलों में ग़लत बातें डाल दी हैं। मसलन रूहानियत और अल्वियात की जो चीज़ें नज़र आती हैं, वह उन्हें अपनी बातिनी निगाहों का तमाशा जानते और यह ख़्याल करते हैं कि यह सब कुछ बातिन में है और हक़ की तजल्ली है इसलिए कि ख़ारिज में कुछ नहीं और बातिन में उसका नफ़्स है लिहाज़ा नफ़्स को रब जानते हैं। और अल्लाह तआला उससे बहुत बरतर व बाला है और कभी उनसे आदत के ख़िलाफ़ उमूर ज़ाहिर कराता है और इल्क़ा करता है कि यह रब का तसर्रुफ़ है जो तेरे बातिन में है।

और उन ग़लतियों के भंवर से नजात का तरीक़ा यह है कि आदमी यह याद रखे कि सूफ़ियों को गरोह, अंबिया व रुसुल अलैहिमुस्सलाम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...फरमांबरदार है। और अंबियाए किराम, हकाइक के मुशाहिदा में सबसे ज़्यादा कवी और करीब तर थे मगर उसके बावजूद इबादत और बन्दगी का एक ज़र्रह भी उन से न छूटा। और उन्होंने गुनाहों और मासियतों पर ज़र्रह बराबर जुरअत न की। फिर कुरआन शरीफ़ और अहादीस में एक हरफ़ भी ऐसा नही जो (अलावा हालते इज्तिरार) किसी के लिए किसी हालत में मम्नूआत को मुबाह करार दे बल्कि कुरआन और अहादीस और उलमा, उन तीनों बातों से रोकते है। अकाइद और सही मज़ाहिब भी बाइसे तज्सीम और हुलूल से बिल्कुल्लीया मना करते हैं।

फ़ाइदा : दीन का कमाल दयानतदारी में है और ईमान का कमाल अमानत गुजारी हैं।

दयानतदार बन और दयानतदारी इख़्तियार कर (और याद रखो कि) दयानत करने वाला दीनदार होता है और तक़्वा का लिबास, ईमान की पोशाक है और जिसे दीन का कमाल मयस्सर होता है वह रास्तबाज़ और दयानतदार होता है।

फाइदा मारिफ़त का समरा कम आज़ारी है और मुहब्बत का नतीजा बहुत ज़्यादा गिरया व ज़ारी मगर यह भी नहीं कि जो शख़्स ज़ार–ज़ार रोता हो उसका रोना रास्ती पर मबनी हो, चुनांचे याकूब अलैहिस्सलाम के फ़रज़न्द रोते हुए आपकी ख़िदमत में हाज़िर आए और सरीह झूठ बोला कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भेड़िए ने खा लिया।

बेगुनाह मर्दे मुसलमान पर, हसद करने वाला कब तक ज़ुल्म व सितम तोड़ेगा। कितना ही ज़ुल्म व सितम तोड़ ले। उसे अपना दीन यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरह अज़ीज़ होता है जब कि यह हासिद, उसे खोटे सिक्कों के एवज़ फरोख़्त कर रहा है।

हिकायत : एक रोज सरवरे दोआलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फरमा थे। आपने फरमाया कि अभी एक जन्नती आता होगा। इतने में एक अन्सारी जवान आया। दूसरे रोज़ भी मस्जिद में तशरीफ़ फरमा थे कि आपने फरमाया कि अभी कुछ देर में एक जन्नती आने वाला है।" और फिर वही अन्सारी जवान हाज़िर हुआ। हज़रत अब्दुल्लाह

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु को उसकी जुस्तजू हुई। देखा कि वह शख़्स पांच वक़्त की नमाज़ अदा करता है और हलाल रोज़ी कमाता है। न रात में क़्याम करता है और न दिन में रोज़ा रखता है। आपने फ़रमाया कि दो रोज़ मुतवातिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बराबर यह इरशाद फ़रमाया कि एक जन्नती आता होगा और दोनों रोज़ तो आया। (आख़िर उसका राज़ क्या है) अन्सारी ने कहा कि मैं इबादत तो ज़्यादा नहीं करता मगर मेरे दिल में हसद बिल्कुल नहीं है। हज़रत अब्दुल्लाह रो पड़े और फ़रमाया कि यह तेरे सिवा और किसे मयस्सर है।

हसद दर हक़ीक़त दोज़ख़ की आग है तो ऐ दिल उस से परहेज़ कर। तू लोगों की नेमतों का ख़त्म होना क्या चाहता है। अरे अपने बेचारे जिस्म पर जहन्नम की आग को तेज़ मत कर।

वह शख़्स जिसके दिल में किसी की जानिब से हसद नहीं उस पर जन्नत के दरवाज़ों में से कोई भी दरवाज़ा बन्द नहीं। ऐ दिल तू ख़ैर ख़्वाही के रास्ता पर चलता रह। इसलिए कि तेरी गर्दन में मूंझ की रस्सी नहीं है।

फ़ाइदा : मैंने अपने मख़्दूम को फ़रमाते सुना कि एक शख़्स हज से वापस हो रहा था उसके साथ एक दाना गुलाम भी था। एक मंज़िल पर पहुंचा। खाने पीने की बहुत तदबीर की मगर रूखी रोटी ही मयस्सर हो सकी। गुलाम से कहा कि जा और किसी दुकानदार से थोड़ा सा नमक ले आ। गुलाम ने कहा कि नमक के लिए एक कौड़ी भी नहीं। ख़्वाजा ने कहा कि नमक बहुत मामूली चीज़ है। थोड़ा सा बेगैर क़ीमत के भी दे देंगे। यह कह देना कि हम हाजी हैं। हज से वापस आ रहे हैं। हमारे पास रूखी रोटी है। थोड़ा सा नमक दे दो।' गुलाम ने ऐसा ही किया और थोड़ा सा नमक बक़्क़ाल से मांग लाया। दूसरे रोज़ जब दूसरी मंज़िल पर पहुंचे तो फिर कुछ रोटियां मिल गईं। ख़्वाजा ने गुलाम को फ़िर बक़्क़ाल के पास भेज दिया और वह नमक ले आया। तीसरे रोज़ जब अगली मंज़िल पर पहुंचे तो फिर भी रूखी रोटियां मिलीं। उसने फिर गुलाम से कहा कि बक़्क़ाल के पास जा और कुछ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रज़वी किताब घर

नमक ले आ। गुलाम ने कहा कि हुज़ूर मैंने पहले रोज़ तो अपने हज को बेचा और यह कहा कि मैं हाजी हूं मेरे पास रूखी रोटी है थोड़ा सा नमक दे दो। दूसरे रोज़ आपका हज बेच दिया और कहा कि मेरा आक़ा हाजी है उसके पास रूखी रोटी है थोड़ा सा नमक दे दो। आज क्या है जो फरोख़्त करूं और बेग़ैर क़ीमत के नमक ले आऊं।

हज बचने वाले हाजी की गुदड़ी के नीचे लालच के बहुत से बुत होते हैं। और वह ख़ुद अगरचे बैतुल्लाह का तवाफ़ करता है मगर उसका क़िबला मख़्लूक़ का तवाफ़ होता है।

फ़ाइदा : मख़्दूम शैख़ मुबारक हुसैन सन्देलवी एक कामिल दुर्वेश थे। फ़ाक़ा कशी और मुफ़्लिसी से हमेशा साबेक़ा रहा और फ़ुक्र व फ़ाक़ा की फरावानी में गुज़र बसर करते। एक मरतबा तीन रोज़ गुज़र गये और कुछ भी खाना पीना मयस्सर न हुआ। अह्लो अयाल समेत दरगाह रब्बुल–इज़्ज़त में सब्र शुक्र से गुज़ार दिए। एक दूसरे दुर्वेश जिनका नाम शैख़ मरजान था वह मुलाक़ात को आए। उनकी फ़ाक़ा मस्ती और परेशान हाली को देखा। फौरन वापस हुए और घर में जो कुछ मौजूद था लेकर शैख़ मुबारक की ख़िदमत में हाज़िर आए कि उस खाने को क़बूल कर लीजिए। मगर आपने क़बूल न किया और फरमाया कि तुम हमारे फ़ुक्र व फ़ाक़ा को देख कर गये और फिर यह खाना लाए। हम फ़ुक्र और फ़ाक़ा की दौलत को खाने के बदले में फरोख़्त नहीं करेंगे।" इसी बिना पर कहा गया है कि –

हम अपने यूसुफ़ को नहीं बेचते हैं तुम अपने खोटे सोने को अपने पास रखो।

फ़ाइदा : मैंने अपने मख़्दूम को ज़बाने मुबारक से फरमाते सुना कि एक आरिफ़े कामिल किसी शहर में मुक़ीम थे। बादशाह को उन से मुलाक़ात का शौक़ पैदा हुआ और अपने वज़ीर से कहा कि कोई तदबीर ऐसी करो कि वह दुर्वेश यहां तशरीफ़ ले आएं। इत्तिफ़ाक़ से उस दुर्वेश के दो पीर ज़ादे उस बादशाह के यहां मुलाज़िम थे। वज़ीर ने फरमान लिखा कि अतीउल्लाहा व अतीउर्रसूला व ऊलिल–अमरे मिन्कुम। (फरमांबरदारी करो अल्लाह की। और इताअत गुज़ारी करो रसूलुल्लाह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

की और अपने फरमां रवाओं की) और उस दुर्वेश के पीरज़ादों को मारिफ़त रवाना कर दिया। जब वह फ़क़ीर के आस्ताना पर पहुंचे तो दुर्वेश ने उनकी बड़ी ताज़ीम व तक्रीम की और शराइत आदाब बजा लाए। उस वक़्त उन दोनों फरमाने शाही का ज़िक्र किया और कहा कि आपको दाबदशाह से मुलाक़ात के लिए चलना चाहिए। इसलिए कि अल्लाह तआला ने ऊलिल–अम्र की इताअत का हुक्म दिया है। दुर्वेश ने कहा कि ऊलिल–अम्र की इताअत का हुक्म दिया है। दुर्वेश ने कहा कि ऊलिल–अम्र कौन हैं? उन्होंने कहा कि शाहाने दुनिया। दुर्वेश ने कहा नहीं बल्कि उल्माए दीन हैं कि वह नबियों की मानिन्द है। इसी लिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरामाया है कि – (मेरी उम्मत के उलमा किरदार व गुफ़्तार में अंबियाए बनी इस्राईल की मानिन्द हैं) पीरज़ादों ने कहा कि उलमा ने दोनों मआनी बयान किए हैं। दुर्वेश ने कहा कि एक मानी पर अल्लाह तआलाने तुम्हें तौफ़ीक़ दी है तुम उस पर कारबन्द हो। दूसरे मानी मेरे लिए छोड़ दो कि मैं उस पर अमल करूं।" नतीजा यह हुआ कि वह दुर्वेश बादशाह की मुलाक़ात को न गये और दोनों पीरज़ादों को रुख़सत कर दिया। जब वह दोनों चले गये तो दुर्वेश ने अपने ख़ादिम से कहा कि "जिस जगह वह दोनों बैठे थे वहां की मिट्टी मेरी नज़र में खटकती है सब खोद कर बाहर फेंक दे। और वहां दूसरी मिट्टी डाल दे।

अह्ले फ़ुक्र के हक़ में, अह्ले सरवत की सोहबत व हम नशीनी, ज़हर क़ातिल से बदतर जानो इसलिए कि ज़हर में तो सिर्फ़ जान व तन की हलाकत व नुक़्सान का ख़तरा है। मगर उसमें हलाकते ईमान का सही अन्देशा पोशीदा है।

फ़ाइदा : मैंने अपने मख़्दूम की ज़बान से सुना है कि विलायत नीमरोज़ (सीस्ता) में एक बादशाह था बड़ी शान व शौक़त का मालिक। जिसका नाम संजर था उसका चित्र सियाह था। उसी शहर में जो बादशाह का दारुस्सल–तनत था एक कामिल, साहिबे सरवत दुर्वेश भी रहता था। बादशाह के लश्करी, उमूमन उसकी तरफ़ रुजूअ होते बल्कि तमाम उमरा और दरबारी रुउसा उस दुर्वेश के आस्ताना पर मौजूद

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रहते। हत्ता कि उनमें से जब बादशाह किसी को बुलाता तो वह उन्हें उसी दुर्वेश की हवेली में पाते और लोग वहीं से बुला कर लाते। एक रोज़ बादशाह को यह ख़्याल आया कि तमाम उमरा और दरबारी ख़ासा और लश्करी, वज़ीफ़ा व गज़रान यहां से पाते हैं और रहते दुर्वेश के यहां हैं। और उनकी अक़ीदत उस दुर्वेश के साथ इतनी है कि अगर हुक्म से बादशाहत भी ले ली जाए तो यह उस पर राज़ी रहें चुनांचे इस ख़्याल के मातहत उस दुर्वेश को अपनी मम्लिकत से निकाल दिया। दुर्वेश उठा। अपनी जूतियां पैर में पहनी। असा हाथ में लिया। मुसल्ला कांधे पर डाला और चल दिया। इधर बादशाह के पेट में दर्द शुरू हुआ कि उसकी शिद्दत के बाइस वह बेताब और बेक़रार हो गया। हकीमों ने अपना सा बहुत इलाज किया मगर फ़ाइदा न हुआ। बाज़ ओहदेदारों ने कहा कि बादशाह सलामत आपने बिला क़ुसूर उस दुर्वेश को यहां से निकाल दिया है हालांकि ऐसा बुलन्द हौसला फ़क़ीर से कि उसकी निगाहों में शाही शान व शौकत की कोई क़द्र व क़ीमत नहीं। उसे वापस बुला लीजिए ताकि उसकी दुआ की बरकत से आपको फ़ाइदा हो।

गरज़ लोग उस दुर्वेश को वापस ले आए। बादशाह ने कहा कि दुआ कीजिए कि मेरे पेट का दर्द जाता रहे। दुर्वेश ने कहा कि अगर आप अपनी बादशाहत मुझे दे दें तो मैं उस वक़्त दुआ करूं। बादशाह ने दिल में सोचा कि मैं तो इस दर्द से मर ही जाऊंगा। बादशाहत दूसरों के हाथ चली जाएगी। बेहतर यही है कि बादशाही दुर्वेश को दे दूं। ताकि इस दर्द से भी छुटकारा पाऊं और ज़िन्दा भी रहूं चुनांचे फ़ौरन कहा कि मैंने बादशाही आपको सौंपी। दुर्वेश ने कहा कि लिख कर दीजिए। फ़ौरन हिबा नामा लिखा गया। तमाम सरदारों ने उस पर मुहर लगाई और दुर्वेश को सौंप दिया। दुर्वेश ने पानी पर कोई दुआ पढ़ कर दम की और कहा कि उस पानी को पी लीजिए। बादशाह ने जैसे ही उस पानी को पिया पेट में एक रीह घूमी और ख़ारिज हो गई। बादशाह को आराम हो गया। दुर्वेश ने पूछा कि आपको बिल्कुल आराम हो गया। बादशाह ने कहा कि हां आपकी दुआ की बरकत से कामिल शिफ़ा हासिल हो गई। फ़रमाया कि तुमने अपनी बादशाहत की क़द्र व

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

क़ीमत देखी कि एक गोज़ में उसे फ़रोख़्त कर डाला। इसी बादशाही के मुतअल्लिक़ तुम्हें यह अन्देशा था कि फ़क़ीर कहीं ले न ले। फिर शाह तहरीर को फाड़ दिया और यह क़तअ् पढ़ा।

संजरी चित्र की तरह मेरा नसीबे का चेहरा काला हो जाए अगर फ़क़ीरी के साथ मुझे मुल्के संजर की हवस हो। मुझे जब तक मुल्के नीम शब की ख़बर मिलती रहेगी नीमरोज़ जैसे सौ मुल्क भी एक जौ में न ख़रीदूंगा।" यह कहा और बादशाह के सामने से उठ कर अपने मक़ाम पर वापस आकर बैठा और ज़ुबाने हाल से यह शेअ्र बार-बार पढ़ता रहा।

करमे इलाही से इश्क़ का मुल्क मेरी मम्लिकत में आ गया। अब मेरी पीठ है और फ़ुक्र का कम्बल। और यही मेरी बादशाहत का लिबास है।

फ़ाइदा : सुल्तान महमूद ग़ज़नवी जब ख़्वाजा अबुल–हसन ख़रक़ानी से मुलाक़ात के लिए चला तो एक शख़्स को आगे रवाना किया कि ख़्वाजा से जा कर कहो कि अगर मेरे इस्तिक़्बाल की नीयत से, आप दो तीन क़दम अपने गोशा से बाहर तशरीफ़ लाएं तो ऊलुल–अम्र की भी इताअत हो जाए। ख़्वाजा ने फरमाया कि मैं अतीउल्लाह में ऐसा मुस्तग़रक़ व मुतहैय्यर हूं कि कभी–कभी तामील अतीउर्रसूल से भी शर्मिंदा हो जाता हूं तो फिर ऊलुल–अम्र की इताअत तक कैसे पहुंच सकता हूं।" सुबहानल्लाह एक यह भी इस्तिग़राक़ था।

फ़ाइदा : जब ख़्वाजा अबुल–हसन ख़रक़ानी क़ुद्दिसा सिर्रुहू की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आपने दुआ की कि इलाही इज़्राईल को मेरी रूह क़ब्ज़ करने के लिए मत भेजना कि मैं उन्हें अपनी रूह न दूंगा। तूने जैसे पहले मुझ में यह डाली थी यूंही क़ब्ज़ भी फरमाता।" इसी बिना पर कहा गया।

(तेरे कूचे में उश्शाक़ इस तरह जान दे देते हैं कि वहां मलकुल–मौत का भी गुज़र नहीं होता।)

कहते हैं कि उन हज़रात के जो मुआमलात ख़ुदाए तआला से बराहे रास्त होते हैं उन में से बाज़ मुआमलात की ख़बर किरामन कातेबीन को भी नहीं होती।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

(मअ्शूक़ के साथ हमारा वह अजीब राज़ भी है जिसकी ख़बर किरामन कातेबीन को नहीं)

एक बुजुर्ग को सकराते मौत में हंसते हुए देखा तो लोगों ने कहा कि तअज्जुब है मरना और हंसना बयक्दम। फरमाया कि –

जब मअ्शूक़ नक़ाब उठा देते हैं तो उनके सामने आशिक़ यूं ही मरते हैं।

फ़ाइदा : याद रखो कि रूहे इंसानी का तअल्लुक़, ख़्वाह सालेह की रूह हो या फ़ासिक़ की, मौत के बाद उसके जिस्म से ख़त्म नहीं होता और उसका इलाक़ा अपने जिस्म के साथ बाक़ी रहता है। अगरचे जिस्म ख़ाक हो गया हो और उसके अज्ज़ा मिट्टी में मिल गये हों। उसकी वाज़ेह मिसाल यह है कि पान के पता को उसकी शाख़ से जुदा कर लेते हैं, तब भी एक मानवी तअल्लुक़। उस पान और शाख़ के माबैन बाक़ी रहता है। इसी वजह से पान शाख़ से कटने के मुद्दतों बाद तक तरोताज़ा रहता है और अगर इत्तिफ़ाक़ से सख़्त सर्दी पड़े और वह पान के दरख़्त को जला दे और खुश्क कर देगा तो यह पान भी जो घर में हिफ़ाज़त से रखा जाता है खुश्क हो जाता है। यह बात मुजर्रबात में है।

हिकायत : फ़क़ीर के दोस्तों में से एक साहब जिनका का नाम वजीहुद्दीन था अपने एक दोस्त का वाक़या बयान करते थे कि मैंने उसके बाएं कांधे पर जलने का दाग़ देखा। मैंने कहा कि ऐ दोस्त यह तुम्हारा कांधा कहां से जल गया? कहा कि दोज़ख़ की आग से।" मैंने कहा कि "कहां तुम्हारा शाना और कहां दोज़ख़ की आग। यह क्या बात कह रहे हो।" उन्होंने अपना क़िस्सा बयान किया कि मुझे एक सदमा पहुंचा जिसकी वजह से मुझ पर सक्ता तारी हो गया गोया जान बदन से निकल गई। तमाम लोगों ने मुझे नहलाया कफ़न पहनाया क़ब्र खोदी और मेरा जनाज़ा क़ब्र तक ले गये। मगर चूंकि मेरी एक छुंगली मुसलसल हरकत में थी इसलिए मुझे क़ब्र में न उतारा और न दफ़न किया। कारकुनाने क़ज़ा क़द्र मेरी रूह लेकर उस मक़ाम पर पहुंचे जहां से हुक्म मिला कि उस शख़्स को दोज़ख़ में डाल दो। वह हज़रात बड़ी सख़्ती से पेश आए और मुझे पकड़ कर ले चले। मैंने पूछा कि आख़िर

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

मुझे कहां लिए जाते हो। जवाब दिया कि दोज़ख़ में।

ख़ैर जब हम वहां पहुंचे तो एक हैबतनाक आग भड़क रही थी और उसके जलने से बुलन्द आवाज़ें पैदा होती थीं। मैंने कहा कि यह क्या है। उन्होंने कहा कि दोज़ख़ है और मुझे पकड़ कर दोज़ख़ की तरफ़ फेंका। कि मैं बाएं जानिब से दोज़ख़ में जा पड़ा। इत्तिफ़ाक़ से मेरे पड़ोस में एक बेवह औरत थी। उसकी एक लड़की थी। मैंने उसके निकाह में अमानत की नीयत से एक टुकड़ा कपड़े का और एक गाय दी थी। बेऐनेही वही कपड़े का टुक्ड़ा आया और मेरे और आग के दर्मियान हाइल हो गया और मेरी पूरी हिफ़ाज़त की। फिर बेऐनेही वही गाय आई। मैंने उसकी दुम पकड़ ली ताकि मुझे दोज़ख़ की आग से बाहर ले चले। मगर जैसे ही वहां मेरी रूह का बायां शाना जला यहां मेरे बदन का बायां शाना कफ़न के साथ जल गया। फिर कुछ लोगों ने मुझे ज़ोर से पकड़ लिया और कहा कि हमारी ख़ूराक दो। उधर तोशा की वह रोटियां जो मुर्दे के दाएं बाएं रखते और फ़क़ीरों पर तक़्सीम कर देते हैं, वहां पर मौजूद लोगों ने एक मिस्कीन को दे दीं। उनका सवाब इधर मुजरा हो गया कि वह उनकी ख़ूराक बना और मैं ज़िन्दा हो कर बैठ गया और मैंने कहा कि मेरे घर ले चलो।

इस हिकायत के नक़्ल करने से मक़्सूद यह है कि देखो उसकी रूह आलमे आख़िरत में थी और बदन दुनिया में। तो वह तअल्लुक़ जो रूह और बदन में पैवस्ता है अगर वह ख़त्म हो गया होता तो रूह के शाना जलने से क़ालिब का शाना न जलता। मगर उन असरार तक रसाई अक्ल का काम नहीं और जिन्हें उन तक रसाई हुई उन्हें दुनिया ही में न छोड़ा गया कि वह उन असरार को फ़ाश कर सकें।

हिकायत : कुछ तालिबे इल्म बैठे हुए आपस में यह ज़िक्र कर रहे थे कि यह मालूम नहीं होता कि लोग आख़िर मरने के बाद जाते कहां हैं और क्या देखते हैं। इतनी मख़्लूक़ गुज़र गई मगर किसी ने वहां की ख़बर न दी। उनमें से एक तालिबे इल्म ने कहा कि अगर मैं मर गया तो इन्शाअल्लाह तआला उस आलम की ख़बर दूंगा। क़ज़ा रा कुछ मुद्दत बाद उसका इंतिक़ाल हो गया। तीसरे रोज़ उसके अहबाब जमा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हुए कि आओ उस दोस्त की क़ब्र तक चलें और उसे उस आलम की ख़बर पूछें जिसका उसने वादा किया था। ग़रज़ वह सब गये। फ़ातिहा पढ़ी और कहा कि ऐ दोस्त तूने वादा किया था। हो सके तो उस आलम की कोई ख़बर दे। वह सामने आ गया और बोला कि एक तमाचा मेरे दाएं जानिब उठा हुआ है और एक बाएं जानिब। अगर मैं। उस आलम की कोई ख़बर देता हूं तो यह दोनों तमाचे मेरे इस ज़ोर से पड़ेंगे कि मेरी गर्दन टूट जाएगी। हमें कहने नहीं दिया जाता। तुम लोग भी मुझे माज़ूर जानो। यह कहा और ग़ायब हो गया। बिरादरम! बाज़ वह चीजें जो इस दुनिया में महसूस व मुशाहिदा हो जाती हैं। अक़्ल और फ़िक्र में नहीं आतीं तो आलमे आख़िरत के असरार कैसे समझ में आएंगे।

हिकायत : एक नेक किरदार आदमी कुरआन शरीफ़ की तिलावत में मशगूल था कि एक सूरत आई और कुरआन शरीफ़ के सफ़्हों पर ऐसे बैठ गई कि कुरआन शरीफ़ के अल्फ़ाज़ और कलिमे छुप गये। उसने अपना हाथ बढ़ाया ताकि इस सूरत को पकड़े मगर वह सूरत पकड़ने में न आई। मज्बूरन तिलावत से बाज़ रहा। दूसरे रोज़ जब तिलावत शुरू की तो फिर वह सूरत आई और कुरआन शरीफ़ के सफ़्हों पर बैठ गई। वह शख़्स फिर तिलावत न कर सका। तीसरे रोज़ यह शख़्स एक साहिबे मारिफ़त के पास गया और उसे तमाम हाल सुनाया। उस मर्दे आरिफ़ ने जवाब दिया कि अब वह सूरत आए तो तुम्हें चाहिए कि उसके कान पकड़ लो। उसने कहा कि मैं कान कैसे पकड़ूंगा कि मेरे हाथ में तो कुछ नहीं आता। फ़रमाया कि कान तुम्हारे हाथ में आ जाएगा। जब तिलावत शुरू की तो वह सूरत फिर नमूदार हुई और जैसे ही उसने सूरत का कान पकड़ा वह ग़ायब हो गई। उधर उसने देखा तो अपना हाथ अपने कान पर पाया, यानी उसके हाथ में उसी का कान था। अक़्ल बेमाया की रसाई इस बात तक कैसे हो सकती है कि वह सूरत क्या थी जो हाथ न आती थी। उसका कान कैसे हाथ में आ गया। कान के पकड़ते ही वह सूरत कहां ग़ायब हो गई और उसका हाथ उसके कान तक कैसे पहुंचा। उस फ़क़ीर को उसकी हक़ीक़त मालूम हो गई। वाक़ई उस मर्दे आरिफ़ की फ़िरासत क़ाबिले तहसीन व सताइश है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हिकायत : शैख़ अब्दुल–अज़ीज़ कहते थे कि मैं एक मक़ाम पर रहा था जब कि मेरा दोस्त दूसरे मक़ाम पर रहता था। दोनों मक़ामों के दर्मियान पानी का दरिया था। मैं ख़्वाब में देखता कि महबूब की मुलाक़ात को जा रहा हूं। जब उस दरिया के किनारे पहुंचता और पार उतरना चाहता तो मेरी दोनों टांगें ज़ानों तक और कुछ कपड़ा भीग जाता। जब सोते से उठता तो अपनी टांगों और कपड़े को तर पाता।

हिकायत : हाजी एमाद व फ़क़ीर के रू–ब–रू कहते थे कि मुझे एक शख़्स से रिश्त–ए–अक़ीदत था जो सिलसिला मदारिया से मुन्सलिक था मुझ पर बड़ी शफ़क़त करता। लोगों ने मुझ पर एक तोहमत लगा दी। मेरे पीर ने एक नव उम्र गुलाम को मेरे पास भेजा कि मस्लेहत यह है कि कुछ अरसा के लिए यहां क़याम से गुरेज़ करो। मैंने अर्ज़ किया मुझ से कोई गुनाह सादिर नहीं हुआ है। अगर मैं जाता हूं तो यह इल्ज़ाम ज़रूर मुझ पर थोप दिया जाएगा। अगरचे नौजवान ने बहुत कोशिश की मैं न गया बल्कि उस नौजवान के मुंह पर एक थप्पड़ जड़ दिया कि उसके मुंह से ख़ून निकलने लगा। वह नौजवान उसी ख़ून से लुथड़े हुए मुंह को लेकर पीर के पास हाज़िर हुआ। पीर को गुस्सा आया और चन्द लोगों को मेरे बांधने का हुक्म दिया। उन लोगों ने मेरे दोनों हाथ मेरी पीठ पर बांध दिए और चार चोब ज़न चौकीदारों ने मुझे लकड़ियों से इतना मारा कि मैं ज़ख़्मी हो गया। आख़िर कार मुझे एक खुश्क कुंए में डाल दिया और उसे मिट्टी कूड़े से भर दिया। अपनी दानिस्त में हर शख़्स ने समझ लिया था कि एमाद उस कुएं में मर जाएगा मगर मैंने इस कुएं के नीचे कुछ आराम की जगह पाली और वहीं बैठा रहा। आधी रात गुज़री थी कि मैंने अपने आपको कुएं के ऊपर पाया मगर इस हाल में कि मेरे कपडे कुएं में रह गये थे और मैं बिल्कुल मादरज़ाद बरहना कुएं के ऊपर था।

मेरे पीर की एक दुर्वेश से दोस्ती थी जिनका क़याम, उस मक़ाम तक तीन कोस के फ़ासिला पर था। मैं उस दुर्वेश के पास उसी तरफ़ चल पड़ा। रास्ता में एक नहर थी जो भरी चल रही थी। मैं नहर से गुज़र रहा था कि एक कपड़ा मेरे पैर के नीचे आ गया। मैंने उसे अपने पांव के नीचे से घसीटा। देखा कि लंगूटा है। मैंने उसे कमर पर बांधा और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सुन्नी किताब घर

ल पड़ा। सुबह के वक़्त मैं वहां पहुंचा। उस दुर्वेश से मुलाक़ात की और अपना माजरा सुनाया। जब कुछ दिन गुज़र गये तो मेरे पीर ने मेरी रूह के (ईसाले सवाब के) लिए कुछ खाना पकवाया और उसी गुलाम को सवार करके उस दुर्वेश के पास भेजा कि आइए। एमाद की रूह को ईसाले सवाब के लिए कुछ खाना पकवाया है। आपके रू-ब-रू खिला पिला दें और फातिहा पढ़ लें। जब गुलाम वहां पहुंचा और मुझे बैठा हुआ पाया तो हक्का बक्का रह गया और उस दुर्वेश से कहा कि उस शख़्स की फातिहा के लिए तो खाना तैयार किया गया है। आपको बुलाया गया है और खुद भी तशरीफ़ फरमा हैं। अब आप क्या फरमाते हैं। दुर्वेश ने कहा कि हाजी एमाद और दूसरे अहबाब के साथ तेरे पीछे-पीछे आ रहे हैं। तो जल्द अपने घोड़े को दौड़ा, और हाजी एमाद की ज़िन्दगी की ख़बर उन्हें सुना। वह जल्द गया और हाजी एमाद की ज़िन्दगी की ख़बर उन्हें सुनाई। हर.शख़्स मुतअज्जब और हैरान रह गया। फिर जब वह दुर्वेश हाजी एमाद को ले कर पहुंचे तो मख़्लूक़ को हैरत पर हैरत और तअज्जुब पर तअज्जुब हुआ। जब खाने पर बैठे तो मख़्लूक़ में एक चीख़ पुकार मच गई।" उस फ़क़ीर मुअल्लिफ ने हाजी एमाद से कहा कि मैं इस क़िस्म के बहुत से तजरेबात से गुज़रा हूं। और ऐसे हैरतनाक वाक़ेआत इस दुनिया में बहुत देखने सुनने में आते हैं। लेकिन अगर तुम दूसरों से कहोगे कि मैं खुद ही कुएं से बाहर आ गया तो कोई कुबूल करे या न करे।

हिकायत : उन दो शैख़ज़ादों की इस माजरे के ऐन मुनासिब है जिन्हें लोगों ने इत्तिहाम में पकड़ लिया और एक खुश्क कुएं में क़ैद कर दिया और निगहबान को मुक़र्रर कर दिया। शैख़ज़ादों ने निगहबान से कहा कि हमें कुएं के हर तरफ रास्ता नज़र आ रहा है। हम जिस तरफ चाहें जा सकते हैं। लेकिन तुम्हें ख़बर किए देते हैं ताकि हमारी वजह से तुम्हारी गिरिफ़्त न हो। निगहबानों ने शैख़ज़ादों की इस बात का यक़ीन न किया कि उनकी अक़्ल के नज़्दीक यह चीज़ मुम्किन ही न थी। मगर वह दोनों साहब उस कुएं की तह में एक जानिब चल दिए और चन्द फरसंग तय करके ज़मीन के नीचे से ज़मीन के ऊपर आ गये।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अल–ग़रज़ रूहे इंसानी के तसर्रुफ़ात कि उसकी इंतिहाई लातादाद के आसार हैं इस दुनिया में इस कसरत से वाक़े हैं कि शुमार में नहीं आते और जो वाक़ेआत कि लिखे गये हैं। यह अवामुन्नास की रूहों के आसार हैं। तो फिर ख़्वास और अख़स्सुल–ख़्वास जो अपनी अरवाह को हमेशा रियाज़त व मुजाहिदा से जिला देते रहते हैं उनका क्या हाल होगा। मक़्सूद यह बताना है कि मौत के बाद भी, रूह का क़ालिब से एक तअल्लुक़ व रिश्ता बाक़ी रहता है। अगरचे क़ालिबे ख़ाक हो कर रेज़ह–रेज़ह हो चुका हो। अगरचे यह बात किसी की अक़्ल व फ़हम में न आए जैसे कि आसारे रूह के इतने ज़ुहूर जो लिखे गये अक़्ल और फ़िक्र में नहीं आते।

फ़ाइदा ख़्वाजा अबू अली दक़्क़ाक़ क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू ने अपने मुरीदों को तीन चीज़ों की वसीयत की जब कि आप दुनिया से तशरीफ़ ले जाने लगे। अव्वल दोपहर को नहाना। दोम हर रात तहारत पर सोना। सोम हर अच्छी और बुरी हालत में ख़ुदाए तआला को याद रखना।

हिकायत : हज़रत ज़ुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने फ़रमाया कि एक रोज़ मैंने शहर के अन्दर जाने का इरादा किया। रास्ते में एक बड़ी नहर पानी से भरी देखी और उसके किनारे एक बुलन्द मकान। मैं वहीं क़द्रे आराम की ख़ातिर रुक गया और ग़ुस्ल वग़ैरह किया। जब फ़ारिग़ हुआ तो मेरी नज़र उसके बालाख़ाना पर पड़ी देखा कि एक लौंडी कंगरे पर खड़ी है और निहायत ख़ूबसूरत है। मैंने कहा कि ऐ कनीज़ तू कौन है? उसने कहा कि ऐ ज़ुन्नून जब तुम दूर से नज़र आए तो मैंने समझा कि तुम कोई दीवाने हो। जब तुमने तहारत की तो मैं समझी की कि तुम आलिम हो। और जब तहारत से फ़ारिग़ हो कर तुम मेरे सामने आए तो मैंने जाना कि तुम आरिफ़ हो। अब जो मैंने हक़ीक़त पर नज़र डाली तो तुम न मज्नून हो, न आलिम हो और न आरिफ़। कि अगर तुम दीवाने होते तो तहारत न करते। अगर आलिम होते तो ना महरिम पर नज़र न डालते। अगर आरिफ़ होते तो ज़ाते हक़ के सिवा किसी की तरफ़ रग़बत न करते। यह कहा और ग़ायब हो गई।

फ़ाइदा : हज़रत अमीरुल–मुमिनीन अली बिन अबी तालिब कर्रमल्लाहु

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कादरी किताब घर

रसूल करीम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो आपके बदन में सख़्त लरज़ा पैदा हो जाता और फरमाते कि उस अमानत के अदा करने का वक़्त आ गया जिसे आसमान और ज़मीन न उठा सके।

हिकायत एक रोज़ अयाज़ सुल्तान महमूद नूरल्लाह मज़्जअहू (अल्लाह तआला उसके मक़्बरे को मुनव्वर फरमाए) कि सामने खड़ा था कि अपने पापोश का अगला हिस्सा क़द्रे उठा कर पांव को हरकत में लाया। हालांकि उस से ऐसी हरकत कभी ज़ाहिर न हुई थी। बादशाह को तअज्जुब हुआ और हुक्म दिया कि गोदाम में जा और फ़लां चीज़ ले कर आ। जब अयाज़ चला गया तो बादशाह ने एक और गुलाम को उसके पीछे रवाना किया कि छुप कर देख, यह क्या करता है। अयाज़ ने अपने पैर से जूता उतारा तो एक काला बिच्छू उससे बाहर निकला। अयाज़ ने उस बिच्छू को उसी जूते से मारना शुरू किया और कहा कि आज तूने बादशाह के सामने मेरी उक़्अत कम कर दी कि मुझे जूते का अगला हिस्सा ज़मीन से उठाना पड़ा आदाबे गुलामाना बजा न ला सका। उस गुलाम ने यह बात बादशाह से जा कर बयान की। जब अयाज़ वापस आया तो बादशाह ने कहा कि एक अयाज़ आज तुमने पापोश का अगला हिस्सा हमारे सामने उठा लिया। उसने उज़्र किया कि गुलाम कुसूर करते और आक़ा मआफ़ फरमाया करते हैं। बादशाह ने कहा कि बिच्छू वाली बात हमें मालूम हो गई है अर्ज़ किया कि उसने मुझे सात बार काटा। जब आठवीं मरतबा ताक़ते ज़ब्त न रही तो मैंने जूते को हरकत दी।

फ़ाइदा : अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैंने रब्बुल-इज़्ज़त सुबहानहू व तआला का इरशाद सुना कि फरमाता है जिसे हदस हुआ उसने वुज़ू न किया। उसने मुझ पर जफ़ा की (मेरा हक़ अदा न किया) और जिसे हदस हुआ और उसने वुज़ू कर लिया मगर दो रकअत नमाज़ न पढ़ी, उसने मुझ पर जफ़ा की। और जिसे हदस हुआ उसने वुज़ू किया। दोगाना अदा किया और फिर अपने दीन व नमाज़ के लिए जो चाहा तलब किया (उस पर भी) मैंने उसे न चाहा तो मैंने उस पर ज़्यादती की मगर मैं जफ़ा कार परवरदिगार नहीं हूं।"

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned with CamScanner

फ़ाइदा : हदीस शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सफर व इक़ामत में अय्यामे बीज़ (13, 14, 15) के रोज़े तर्क न फरमाते। और फरमाते कि यह रोज़े मेरे हैं जो कोई यह रोज़े रखे दस हज़ार साल की इबादत और बन्दगी का सवाब पाए। यह रोज़े दिलों को मुनव्वर और चेहरों को नूरानी करते हैं। ऐसा रोज़ेदार कल बरोज़े हश्र बहिश्ती ऊंटों पर सवार होगा और उसका चेहरा चौदहवीं के चांद से ज़्यादा ताबदार होगा।

रिवायत है कि किसी ने इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से पूछा कि मैं नफ़्ली रोज़े किसी तरह रखूं? फरमाया कि अगर दाऊद अलैहिस्सलाम का रोज़ा रखना चाहो, तो एक रोज़ रोज़ा रखो, दूसरे रोज तर्क करो। और अगर उनके साहबज़ादे सुलेमान अलैहिस्सलाम का रोज़ा रखना चाहो तो हर महीने के पहले तीन रोज़े रखो और अगर ख़ातूने जन्नत हज़रत मरयम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा का रोज़ा रखना चाहो तो दो रोज़ रोज़ा रखो और एक रोज़ छोड़ दो। और अगर उनके साहबज़ादे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का रोज़ा रखना चाहो तो हमेशा रोज़ादार रहो। और अगर हमारे पैग़म्बर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रोज़ा रखना चाहो तो हर महीने की 13, 14 और 15 का रोज़ा रखो। इसलिए कि हदीस शरीफ़ में वारिद है कि जो शख़्स अय्यामे बीज़ का पहला रोज़ा रखता है उसके तिहाई गुनाह बख़्श दिए जाते हैं। और जो दो रोज़े रखता है उसके दो तिहाई गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं। और जब वह तीसरे रोज़ का रोज़ा रखता है तो वह तमाम गुनाहों से ऐसे पाक हो जाता है जैसा उस रोज़ कि शिकमे मादर से पैदा हुआ था।

शैतान मलऊन का क़ौल है कि लोगों के आमाल में सबसे ज़्यादा मबग़ूज़ मेरे लिए दो चीज़ें हैं। एक अय्यामे बीज़ के रोज़े दूसरी नमाज़े चाश्त' हां अगर अय्यामे तशरीक़ की वजह से कोई शख़्स अय्यामे बीज़ के रोज़े रख सके तो चाहिए कि सोलहवें रोज़े से रोज़ा रखना शुरू करे। और इमाम शाफ़ई रज़ि अल्लाहु अन्हु ने रोज़े 14, 15 और 16 को पैवस्ता रखे हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

फ़ायदा : फतावा सूफ़िया में कुव्वतुल–कुलूब के हवाला से ज़िक्र किया गया है कि ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने इब्राहीम तैमी को मुसब्बआते अश्र हदिया किए और वसीयत की कि उन्हें सुबह व शाम कहें। और ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि यह मुझे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हदिया किए हैं। जैसा कि सईद अन अबी तीबा मन अन कर्ज़ बिन वबरह रज़ि अल्लाहु अन्हुम से मरवी है। वह कहते हैं कि कर्ज़ बिन वबरह अब्दाल से थे। उन्होंने कहा कि मेरा एक भाई शाम से आया। मेरे लिए एक तोहफ़ा लाया। और कहा कि ऐ कर्ज़! मेरी जानिब से यह तोहफ़ा कुबूल कर लो कि यह बेहतरीन तोहफ़ा है।" मैंने कहा कि ऐ भाई, तुम्हें यह तोहफ़ा किसने दिया। उसने कहा कि यह मुझे इब्राहीम तैमी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने दिया है। मैंने कहा कि क्या तुमने इब्राहीम से यह न पूछा कि उन्हें किस ने दिया। उसने कहा कि मैंने उन से पूछा था। उन्होंने कहा कि मैं सेहने काबा में बैठा हुआ तस्बीह व तहलील और तम्जीद में मस्रूफ़ था कि मेरे पास एक शख़्स आया। मुझे सलाम किया और मेरी दाईं जानिब बैठ गया। मैंने अपनी ज़िन्दगी में उससे सूरत व वजाहत और लिबास में अच्छा और उस से ज़्यादा गोरा और अच्छी ख़ुशबू वाला कोई न देखा था। मैंने कहा कि ऐ बन्दए ख़ुदा आप कौन हैं। किधर से आए हैं?" उन्होंने कहा कि मैं ख़िज़्र हूं। मैंने कहा कि कैसे तशरीफ़ अरज़ानी फरमाई। फरमाया कि तुम्हें सलाम करने और महज़ लेवज्हिल्लाह आया हूं। अल्बत्ता हमारे पास एक तोहफ़ा है जो तुम्हें हदिया करना चाहते हैं। मैंने कहा कि वह क्या तोहफ़ा है? फरमाया कि तुम तुलूअ् व गुरूबे आफताब से पहले मुसब्बआते अश्र पढ़ा करो और फिर उन्हें बयान फरमाया और ताकीद की कि उन्हें तर्क न करना।" मैंने कहा कि मुझे उसका सवाब बतलाइए फरमाया कि जब मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़्यारत नसीब हो तो दरयाफ़्त कर लेता वह ख़ुद ही इरशाद फरमाएंगे।

इब्राहीम तैमी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि उन्होंने एक रात ख़्वाब में देखा कि गोया कि फ़रिश्ते आए उन्हें उठा कर ले गये और जन्नत में दाख़िल कर दिया। आपने जन्नत का मुआइना किया और जो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कुछ वहां देखा था, यानी जन्नत की नेमतें, उन्हें तफ़सील से बयान किया। फिर कहा कि मैंने फ़रिश्तों से पूछा कि यह सब कुछ किस लिए है? फ़रिश्तों ने कहा जो भी तुम जैसा अमल करे।" आपने यह भी बयान किया कि उन फ़रिश्तों ने आपको जन्नत के फल खिलाए और वहां की शराब पिलाई कि इतने में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए। (और इस शान से कि) आपके हमराह सत्तर अंबियाए किराम सत्तर सफ़ें फ़रिश्तों की थीं। और हर सफ़ मश्रिक से मग़्रिब तक फैली हुई। आपने बकमाले मरहमत मुझे सलाम फ़रमाया। फिर मेरा हाथ पकड़ लिया। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) ने बयान किया कि उन्होंने आपसे एक हदीस सुनी है। आपने तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया कि ख़िज़्र ने सच कहा और ख़िज़्र जो बात भी कहीं वह सच्ची हैं। वह तमाम रूए ज़मीन के बड़े आलिम, तमाम अब्दाल के रईस, और अल्लाह के लश्करों में से ज़मीन पर एक लश्कर हैं।" मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! कि जो शख़्स यह अमल कर ले उसे क्या कुछ अता फ़रमाया जाएगा? आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला उसके तमाम कबीरा गुनाह जो उसने किए मुआफ़ फ़रमा देगा। उस से अपना ग़ज़ब और अज़ाब उठा लेगा। और बाएं जानिब वाले फ़रिश्ते को हुक्म देगा कि एक साल तक उसका कोई गुनाह न लिखे। और उसे वही करेगा जिसे अल्लाह तआला ने नेक बख़्त पैदा फ़रमाया है। और उसे तर्क न करेगा, मगर वह जिसे अल्लाह तआला ने बदबख़्त पैदा फ़रमाया है। फिर उसके बाक़ी फ़ज़ाइल बयान किये।

फ़ाइदा : रिवायत है कि हज़रत अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू ने यह वसीयत फ़रमाई कि उनके जनाज़ा के सरहाने यह दो शेअ्र लिख दिए जाएं।

यानी मैं बेग़ैर तोशा के रब्बे करीम का मेहमान बन कर जा रहा हूं। आमाले सालेहा से तही दामन और क़ल्बे सलीम के बेग़ैर। सिर्फ़ इस एतमाद पर कि जब करम वाले की तरफ़ जाना हो तो ज़ादेराह के साथ जाना, बदतरीन ऐब है।

ऐ दोस्त इस राह में यह कमाल बेअदबी है कि ज़बान पर ज़िक्रे हक़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हो और दिल कहीं और। मेरी ज़बान पर जब दोस्त का नाम आता है तो मेरी अक़्ल और जान, हैरत से मतवाली हो जाती है। मैंने सुना है कि मूसा अलैहिस्सलाम अपनी मुनाजात में अल्लाह तआला से अर्ज़े हाजात कर रहे थे। कि ऐ मेरे रब! मैं बस इतना चाहता हूं कि अपनी खुदाई के फ़ज़्ल से, मुझे अपने ख़ासों में बना ले। निदा आई कि ऐ मूसा सफ़र करो और फलां पहाड़ पर जाकर देखो। वहां हमारा एक ख़ास बन्दा है जिस में सोज़े इश्क़ अभी ना मुकम्मल है। जब मूसा अलैहिस्सलाम ने उस मुख़्तारे कुल के हुक्म को सुना तो उस तरफ़ रवाना हुए जहां के लिए हक़ तआला का फरमान था। पहाड़ पर एक शख़्स को इस हालते बरहंगी में देखा कि हमारी अक़्ल की वहां तक रसाई नहीं। क़ुदरते इलाही से अपने पैराहन को सिए हुए (अपनी बेपैराहन) और सर के बालों से अपने बदन को ढांपे हुए ऐसे देखता था जैसे वहशी हिरन और उसके मुंह से आवाज़ या हवा निकल रही थी। आप उसके पास तशरीफ़ ले गये और जाकर सलाम किया मगर उससे सिवाए या हुवा के कोई आवाज़ न आई। आपने उस से फरमाया कि ऐ हक़ के मतवाले! बार-बार या हुवा की तकरार से आख़िर तू चाहता क्या है। अगर दीदारे इलाही मन्ज़ूर है तो बयान कर और दूसरा कोई काम हो तो बता दे (ताकि सिफ़ारिश की जाए) उस मस्त हैरतज़दह ने जब नामे हक़ सुना तो एक आह खींची और नामे हक़ पर जान दे दी। निदा आई कि ऐ मूसा! तुमने क्या देखा और क्या तुम उसकी मस्ती व हैरतज़दगी तक पहुंचे? हमारे चाहने वाले उसी के मानिन्द, बहुत ज़्यादा हैं कि वह हमारा नाम सुनते और जान देते हैं। अगर तुम भी आशिक़ हो तो ऐसी ही इश्क़बाज़ी करो (और याद रखो कि) जो शख़्स आशिक़े सादिक़ होता है वह जांबाज़ भी होता है। ऐ शम्सुद्दीन कैसे-कैसे असरार, इस रात में आते हैं कि उनका दिल में पोशीदा रखना, जान व माल का काम तमाम कर देता है।

जब अव्वल से आख़िर तक पस्ती ही पस्ती है तो बिला शुबह हमारा हासिल भी ला हासिल है। ऐ गफ़लत से हवस के दरिया में डूबने वाले! तू यह भी नहीं जानता कि तुझ से क्या, छूटा, और किस से महरूम हो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

गया। दोनों आलमे ताज़ियत का लिबास पहने हुए आंसू बहा रहे हैं और तू गुनाहों में गर्क़ है। दुनिया की मुहब्बत दीन की रौनक, और ई व की आरज़ू तेरी जान ले जाती है। दुनिया तमअ् और लालच का आशियाना है जो फिरऔन और नमरूद के बाद भी बाक़ी है। अल्लाह तआला ने उसका नाम ला शय यानी नाचीज़ रखा है और तू उसके दाम में इस तरह उल्झा हुआ है। जो शख़्स कि उस नाचीज़ ज़र्रह में गुम हो जाए उसे मर्दे हक़ आगाह कहना मुम्किन ही नहीं। दुनिया का सारा कारोबार, एक बेगार है और बेगारी क़ैद व बन्द का दूसरा नाम है। दुनिया एक भड़कती हुई आग है। जो हर दौर की मख़्लूक़ को जलाती रहती है। शेरों की तरह अपनी आंखें उस आग से बन्द करे वरना परवाना की मानिन्द उस आग में जल जा (मगर याद रखो कि) जो शख़्स परवाना की तरह आग का परिस्तार हो जाता है तो ऐसा मग़रूर व मतवाला, इसी क़ाबिल है कि वह आग में सोख़्ता कर दिया जाए। यह दुनिया जिसकी राह में हाइल हो जाती है वह गुम्राह हो जाता है और बंधे पांव कुएं में पड़ा रहता है। अगर तुझे दीन की ज़रूरत है तो दुनिया पर मत इतरा कि दोनों चीज़ें तुझे रास्त न आएंगी। टेढ़ा-टेढ़ा मत चल। अरे यह सराए और यह तेरा बाग़, तेरा क़ैदख़ाना है और यह तेरा माल व मताअ्, तेरे लिए वबाले जान है। उस ख़ाकदाने फ़रेब यानी दुनिया का पीछा छोड़, ताकि तू अज़ाबे आख़िरत और मख़्लूक़ की नफ़रत में गिरफ़्तार न हो। अपनी आंखें खोल। पूरी तवज्जोह से रास्ता पर नज़र डाल। फिर आगे क़दम बढ़ा वह बारगाहे ख़ुदावन्दी रू-ब-रू है। जब तू इस बारगाहे रूह में पहुंच जाएगा तो इज़्ज़त अफ़्ज़ाई के बाइस ख़ुद दुनिया में न समा सकेगा। मगर जब तक तू माल व मुल्क से अपना चेहरा न फेरेगा। यह हाल तुझे एक घड़ी के लिए भी अपना मुंह न दिखाएगा।

फ़ाइदा : अल्लाह तआला ने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कलाम को जवामेउल-कलिम फ़रमाया है यानी बिला वास्ता आपके दिल में अव्वलीन व आख़िरीन के तमाम उलूम मुनक़्क़श फ़रमाए। और उन उलूम ज़ाहिर व बातिन के अलावा हज़ारहा उलूम, जो बज़ाहिर आपकी जानिब मन्सूब व मुज़ाफ़ न थे, जब आपसे उनके मुतअल्लिक़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सवाल किया जाता तो आप उन उलूम के दकीक़ मसाइल को निहायत मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में यूं बयान फरमा देते कि उन उलूम के माहिरीन भी आपके सामने माथा टेक देते। और आपकी नुबुव्वत व रिसालत की तस्दीक़ करके आप पर ईमान ले आते। मसलन उलूमे अनवाए ख़्वाब और उलूमे ताबीरे ख़्वाब को चन्द हदीसों में बयान फरमाए हैं। यूं ही इल्मे तिब के दकाइक़, कि आपने बहुत मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में बयान फरमा दिए हैं और बावजूद इस बात के कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उम्मी (बे पढ़े) थे लिखना और पढ़ना (बज़ाहिर) न जानते थे मगर अपने उन उलूमे कसीरा के बाइस जो आपके बातिन में जगमगाते रहते थे। आपने एक कातिब से फरमाया कि दवात में उम्दा रौशनाई डाल क़लम को क़द्दे तिरछा रखो। बिस्मिल्लाह की ब को नुमायां लिख। सीन के शोशे ज़ाहिर कर। इस्म अल्लाह को ज़ेबाई से लिख। मीम को जोफ़दार रख और उसे अन्धा मत लिख" हालांकि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने न ईरान देखा न हबशा। मगर ईरानी और हबशी ज़बान के मुतअद्दद अल्फ़ाज़ आपसे मन्क़ूल हैं सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

चुनांचे फ़ार्सी के सात अल्फ़ाज़ मरवी हैं। पहला एक मरतबा अंगूर का तबाक़ लाया गया। इत्तिफ़ाक़न सहाबा की एक बड़ी जमाअत मौजूद थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया। अल–इनबु दूदू। यानी दो–दो तक़्सीम किए जाएं) दूसरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया गया कि फ़रिश्तों ने लूत अलैहिस्सलाम को क़ौम को किस चीज़ से रजम किया था? फरमाया बसंग व कलूख़ (यानी पत्थरों और ढेलों से) तीसरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के जुब्बा पर जूं देखी तो फरमाया मुआविया हाज़ा सुपुश (ऐ मुआविया यह जूं है) चौथे जंगे उहद में आप लोगों में ख़लत मलत हो गये। यहां तक कि सहाबा हाज़िर आए और चन्द ऊंट साथ लाए ताकि आप एक पर सवार हो जाएं। फरमाया हाज़ा शुत्र (यह ऊंट है) पांचवें हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा के हाथ में एक ताज़ा सेब था मज़ाक़ में कहने लगीं। "कि मैं यह सेब किसे दूं।" आपने फरमाया कि

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मराबिदा (यानी मुझे दो) छठे एक रोज़ अलस्सुबाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु
अलैहि व सल्लम हज़रत फ़ातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा के मकान पर
तशरीफ़ ले गये हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने
आवाज़ दी कि मन अलल–बाबे। (दरवाज़ा पर कौन है) फरमाया कि
मनम मुहम्मद (मैं हूं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) काफ़िर
मुश्रेकीन ने दरयाफ़्त किया कि "अल्लाह एक है या दो।" इरशाद
फरमाया कि "अवेकी अस्त" (वह एक है)।

फ़ाइदा : सलसाइल एक फ़रिश्ता है जिसके तीन बाज़ू हैं। एक
मश्रिक़ में। एक मग़्रिब में और एक रौज़–ए–अनवर पर। वह इसलिए कि
कोई बन्दा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है तो वह फ़रिश्ता उसका और उसके बाप
का नाम लेकर अर्ज़ करता है। कि या रसूलुल्लाह फ़लां बिन फ़लां ने आप
पर दुरूद शरीफ़ भेजा है। आप फरमाते हैं कि "उस दुरूद को नूर की
रौशनाई से, नूर के काग़ज़ पर लिखो और हमें पेश करो। क़यामत में हम
उस काग़ज़ को मीज़ान में रखेंगे ताकि वह बहिश्ती हो जाए।

फ़ाइदा : हज़रत ख़्वाजा जुनैद क़ुद्दिसा सिर्रुहू एक रात मस्जिद
तशरीफ़ ले जा रहे थे। एक शख़्स को देखा तो दरयाफ़्त किया कि तू
कौन है? उसने कहा मैं इब्लीस हूं। फरमाया कि क्या तेरा क़ाबू दुर्वेशाने
हक़ पर भी चल जाता है? उसने कहा कि नहीं। मैं जब चाहता हूं कि
उन्हें दुनिया में फंसा दूं तो वह आख़िरत की जानिब दौड़ते हैं और जब
चाहता हूं कि आख़िरत (की तमअ़) में लगा दूं तो वह दरगाहे हक़ की
जानिब पनाह लेते हैं और वहां मेरा कोई दख़ल नहीं।" फरमाया कि तुझे
उनके असरार की ख़बर हो जाती है? उसने कहा कि नहीं। मगर हां
जब उन्हें सिमा में रिक़्क़त और कैफ़ियत होती है तो मैं जान लेता हूं कि
अब उनका क्या हाल होगा। यह कहा और ग़ायब हो गया। ख़्वाजा
जुनैद इसी फ़िक्र में ग़ल्तां मस्जिद में दाख़िल हुए, तो मस्जिद के एक
गोशा से आवाज़ आई कि ऐ जुनैद! उस दुश्मन के कहने पर धोखा मत
खाना। सच्चे दुर्वेश तो हमें उससे भी ज़्यादा अज़ीज़ हैं कि उन्हें जिब्रील
और मीकाईल को दिखाया जाए फिर उस दुश्मन को कब दिखा सकते
हैं। ख़्वाजा को वह वक़्त बहुत सुहाना मालूम हुआ कि –· (मेरे दोस्त मेरी

https://t.me/AhleSunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

किताब पर इस के नीचे में जिन्हें मेरे सिवा कोई नहीं पहचानता।)

फ़ाइदा : ऐ भाई अह्ले मारिफ़त के आमाल उसूले शरअ् और रिवायाते फ़िक़्ह के मुवाफ़िक़ तो होते ही हैं लेकिन उन्होंने तमाम आमाल अल्लाह तआला की दरगाह से लिए हैं और दरबारे रिसालत अलैहिस्सलातु वत्तहीया से उनकी तहक़ीक़ की है बल्कि उन में से अक्सर तो इस अमल से फ़रागत के बाद ही क़ुबूलियत का मुज़्दह पा लेते हैं। लिहाज़ा इब्तिदाई इरादतमन्दों को चाहिए कि हर अमल की इजाज़त ख़्वाह वह फ़र्ज़ हो या नफ़्ल हक़ के उन्हें मक़्बूल बन्दों से लें ताकि उनके आमाल भी मक़्बूल हों। और अगर तुम्हें उनका कोई अमल। उसूले शरअ् और रिवायाते फ़िक़्ह के मुवाफ़िक़ नज़र न आए तो उसे बिदअत से मज़्मूमा कहने में जल्दी न करो।

नक़्ल है कि मख़्दूम जहानियां क़ुद्दिसल्लाहु सिर्रुहू मख़्दूम शैख़ नूरे क़ुतबे आलम पन्दावी की नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत के लिए पिन्डोह में तशरीफ़ लाए। जब आपको मरक़दे पाक में उतार दिया गया और तमाम लोगों को वापसी की इजाज़त मिल गई और बादशाहे वक़्त कि वहां हाज़िर था वह भी रुख़्सत होने लगा तो हज़रत मख़्दूम जहानियां क़ुद्दिसा सिर्रुहू से उसने अर्ज़ किया कि गुलाम की आरज़ू यह है कि ग़रीब ख़ाना भी आपके मुबारक क़दमों के शर्फ़ से मुशर्रफ़ हो जाए। हज़रत मख़्दूम ने क़बूल कर लिया। फिर एक रोज़ उसके महल में तशरीफ़ लाए। बादशाह ने अपने तमाम उमरा और रुउसा समेत आपका बहुत एज़ाज़ और इकराम किया। बादशाह की मज्लिस में एक दानिशवर भी मौजूद था। उसने कहा कि ऐ बादशाह उसका क्या सबब है कि आपने एक बिदअती की इतनी ताज़ीम व तक्रीम की? बादशाह को बहुत बुरा मालूम हुआ और पूछा कि उन्होंने कौन सी बिदअत की है। उसने कहा कि आप शरअ् का एक क़ौल करते हैं कि अत्तारीफ़ु लैसा बेशैइन। (तारीफ़ कोई चीज़ नहीं।" तशरीह आइन्दा फ़ाइदा में आती है) आप उस वक़्त नमाज़े मग़रिब में मशग़ूल थे इसलिए बादशाह चुप हो रहा। जब आपने फ़रागत पाई तो उस दानिशवर ने हज़रत मख़्दूम से कहा कि आप ख़ामोश क्यों हैं जवाब देना चाहिए। हज़रत मख़्दूम ने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बारगाहे रिसालत मआब अलैहिस्सलातु वत्तस्लीमात की जानिब तवज्जोह की। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने इल्तिफ़ात फ़रमाया। आपने वहां से जवाब हासिल किया और फ़रमाया कि देखो यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहे मुबारक तशरीफ़ फ़रमा है। आप इरशाद फ़रमाते हैं कि यह मेरी सुन्नत है।" उस आलिम ने जवाब दिया कि ऐ लोगो देखो यह शख़्स पहले तो सिर्फ़ बिदअती था अब काफ़िर हो गया। कि जो शख़्स यूं कहे कि फलां की रूह मेरे पास है वह गैब की खबर देता और काफ़िर हो जाता है।" मख़्दूम जहानियां ने फ़रमाया कि तअज्जुब है कि तेरी ज़बान, तालू में बरक़रार है (फ़ौरन ही) उसकी ज़बान एक हाथ–हाथ बाहर निकल आई। वह ख़ाक पर गिर पड़ा। जान आफ़रीन को जान सौंप दी। बादशाह ने हाज़िरीन से कहा कि उस गुस्ताख़ बेबाक को उठाओ और उसके घर पहुंचा दो।

फ़ाइदा : मेअ्दनुल–हक़ाइक़ शरह कन्जुद्दक़ाइक़ में है कि तारीफ़ यह है कि लोग अरफ़ा के रोज़, अरफ़ात के अलावा किसी और मकाम में हुज्जाज की मानिन्द जमा हों। वहां वकूफ़ करें, दुआ मांगें, और अगर गिरया व ज़ारी में रहें। ताकि हाजियों से तशब्बुह हो जाए। निहाया शरह हिदाया में है कि यानी तारीफ़ वाजिब या सुन्नते मुअक्कदा नहीं। बल्कि मुस्तहब है।" ऐसा ही ज़ख़ीरा में है। और इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद रहमुहल्लाहु तआला से रिवायाते उसूल के अलावा और रिवायत में है कि वह मक्रूह नहीं कि इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है। कि उन्होंने बसरा में यह फ़ेअ्ल किया।

फ़ाइदा : ऐ दोस्त नमाज़े मुहिब्बाना और आशिक़ाना, कुछ और चीज़ है। ऐ मर्दे मैदान! अपने दिल की रज़ा को एतक़ाद की झाड़ी में रख। उसके बाद नदामत के सांस से सई व कोशिश कर। फिर उसका सिक्का अपने टूटे हुए दिल पर मार। ताकि यह नक़्श उस पर अच्छी तरह उभर आए। (यह हैं वह जिनके दिलों में ईमान सब्त कर दिया है।)

ऐ जाने जानां! नमाज़ की हालत में तेरे क़ामते ज़ेबा पर नज़र रखता हूं मगर (बात तो जब है कि) तेरे क़ामते ज़ैबा की तरह मेरी नमाज़ क़बूल हो जाए।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रज़वी किताब घर

फ़ाइदा : कहते हैं कि सुलेमानी दारानी ने जो बुजुर्गाने दीन से थे एक हूर को ख़्वाब में देखा। उसने कहा कि हज़रते वाला! आप चैन से सो रहे हैं और मुझे बरसों से आपके लिए संवारा जा रहा है। अगर दिल चाहे तो सोना छोड़िये और अपनी आधी उम्र नींद में बरबाद न कीजिए। अगर सोने वाले यह जान लें कि उन से क्या नेमत जा रही है, तो मर्गे मुफ़ाजात (अचानक मौत) में मर जाएं। शब बेदारी व इबादत से बड़े काम बनते हैं।

शब बेदारी से, अपनी रात को रोज़े रौशन की तरह बना ले तो तेरी खुश नसीब शाम, बड़ी दिल फ़रोज़ होगी। इस दुनिया में सबसे अच्छा वह है जिसकी रातें, दिन से ज़्यादा खुश उसलूब गुज़रीं।

फ़ाइदा : मख़्दूमी मख़्दूम शैख़ हुसैन कुद्दिसल्लाहु रूहहू फरमाते थे कि दिल में छुप जाने वाली बात, जैसी कि बाज़ औक़ात नामुराद फ़क़ीरों और बिला ज़ादे राह नौरदों के क़ौल व फ़ेअ्ल में मिल जाती है, आली जाह दुर्वेशों और ख़ानक़ाह के बुजुर्गों में नहीं मिलती चुनांचे एक रोज़ कुछ सूफ़ी बैठे हुए थे। मख़्दूम शैख़ हुसैन और यह फ़क़ीर भी मौजूद थे। ज़िक्र यह छिड़ा कि दोज़ख़ को अपनी वईदों के मुताबिक़ काफ़िरों से भर दिया जाएगा। मगर वह फिर भी हल मिम मज़ीद। (क्या कुछ और है) का नारा लगाएगी और बमूजिब हदीस फ़वज़अल–जब्बारु क़दमैहि।" उस वक़्त ख़ुदाए तआला अपने क़दमाने कुदरत दोज़ख़ में रखेगा।" इतना सुनते ही एक नार सा फ़क़ीर (क़लन्दर आपे से बाहर हो गया और एक नारा लगाया। जब होश में आया तो लोगों ने दरयाफ़्त किया कि क्या बात थी? उसने कहा कि दोज़ख़ भी क़ुदूमे मौला तआला की मुश्ताक़ है। नुज़ूले क़दम के बग़ैर उसे सुकून नहीं मिलता।)

फ़ाइदा : मैं सिकन्दराबाद की जामा मस्जिद में था। एक क़लन्दर वहां नमाज़ पढ़ रहा था। उसके पास दो बग़ैर सिले तहबन्द थे। जिसमें से एक को नीचे बांध कर, सतर पोशी कर रखा था और दूसरे को चार तह करके क़िबला की तरफ़ डाल रखा था और उस पर नमाज़ अदा कर रहा था। सर पर टोपी और दस्तार थी मगर बाक़ी बदन बरहना था।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

एक तालिबे इल्म उससे सख़्ती से उलझ पड़ा कि इस मुल्हिद, गुमराह बेख़बर, बेइल्म और जाहिल व सख़्त दिल को देखो कि अपना बदन तो बरहना किए हुए है मगर कपड़ा पैरों के नीचे डाले नमाज़ पढ़ रहा है कितनी बे अदबी की बात है।" यह और इसी किस्म की बद ज़बानी और तोहमत तराशी की। उस कलन्दर ने वह तहबन्द अपने पैरों के नीचे से निकाला। अपने गले में डाल कर गिरह लगा ली और अपने बदन को छुपा कर फिर नमाज़ में मसरूफ़ हो गया। मगर उसमें कोई तब्दीली और फ़र्क़ ज़ाहिर न हुआ। तालिबे इल्म को अपने कहे हुए पर बड़ी शर्मिन्दगी हुई और जब वह कलन्दर नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो उसने उज्र ख़्वाही की और कहा कि मैंने बहुत बुरा किया कि आपसे ग़ैर मुनासिब बातें कह दीं। मुझे मुआफ़ फ़रमा दीजिए और दिल बुरा न कीजिए। कलन्दर ने कहा कि ऐ वली-ए-नेमत इन बातों से वह दिल बिगाड़े जो किसी पीर व मुर्शिद का परवरिश किया हुआ न हो। तुमने मुझे नसीहत की और शरई मस्अला बताया। अल्लाह तुम्हें बेहतर जज़ा दे।

अगर कोई जौहर क़ाबिल किसी मर्दे ख़ुदा की तर्बियत पा जाता है तो कम ज़र्फ़ों की, कम ज़र्फ़ी को बरबादी से मुआफ़ कर देता है। वह मुहब्बत की नज़र से ग़ाफ़िलों को देखता और बुज़ुर्गों की तरह लह्व और लग़्व बातों से दर गुज़र करता है।

फ़ाइदा : मख़्दूमी मख़्दूम शैख़ हुसैन क़ुद्दिसल्लाहु सिर्रुहू को जब हिदायते इलाही का जज़्ब और इनायते ख़ुदावन्दी की कशिश, बे इंतिहा हुई और आपका दिल उसकी निकम्मी दुनिया की लज़्ज़तों और आरज़ुओं से सर्द हो गया। तो दुनियावी शौकत व जमीअत को ठोकर लगाई और हज़रत इब्राहीम अदहम की तरह फ़ुक्र व फ़ाक़ा से मुवाफ़िक़त कर ली। और उस फ़क़ीरी पर जो उस अमीरी के बाद हासिल हुई ऐसे राज़ी व शुक्र गुज़ार थे जैसे दूसरे फ़क़ीरी के बाद अमीरी पर रज़ामन्द व शुक्रगुज़ार रहते हैं। जिन लोगों ने आपको तवांगरी की हालत में देखा था जब वह आपकी इस हालते फ़ुक्र व बेनवाई पर, शादमानी को देखते, तो तअज्जुब करते और कहते कि इस तवांगरी, दौलत, शान व शौकत, दिलावरी व शेर मर्दी, सनअते तीर अन्दाज़ी व महारत गोई

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हमारी किताब घर

बाज़ी और अपनी इनाम व इकराम की आदत सबको फेंक कर, उस शख़्स की बेनवाई पर शादमानी भी ख़ूब है। आप किसी को यह जवाब देते कि अगर अल्लाह तआला ग़रीब नवाज़ न होता तो उस फ़क़ीर को उस मुरदार से कब नजात देता और सब्र व क़नाअत के मरतबा को कब पहुंचाता और बाज़ से यह फरमा देते कि ऐ दोस्तो! अल्लाह तआला की नेमत का शुक्र बजा लाना मुझ पर इस हालत में और ज़्यादा है कि उसने मेरा नाम तवंगरों के दफ़्तर से काट कर फ़क़ीरों और मिस्कीनों के रजिस्टर में लिखा और पीराने तरीक़त के सिलसिला में मुझे पैवस्त किया। कि (दुनिया और जो कुछ उसमें है मल्ऊन है सिवाए ज़िक्रे इलाही के) अल–हासिल मर्द को चाहिए कि फ़ुक्र की राह में मुस्तहकम क़दम रखे और फ़ाक़ा मस्ती व बे नवाई की सख़्ती से गुरेज़ां न हो।

दुनिया क्या है? एक कूड़े का मल्बा पुराना और वीराना। ग़म व अन्दोह की जगह, मशक़्क़त का मक़ाम और मलामत का ठिकाना। हर बदबख़्त और बदनसीब दुनिया कब छोड़ सकता है। कि सरफराज़ी तक दरिया दिल मरदानगी से पहुंच सकता है।

हज़रत मख़्दूम की उम्र जब ख़त्म होने पर आई तो आख़िर अय्याम में आप कभी–कभी फरमाते कि मेरी आरज़ू यह है कि मौत के वक़्त कोई ख़ुश इल्हान इस आयत को, 'पर्दा कोरी जीत' (राग की एक क़िस्म) में पढ़े। आयत यह है।

तरजमा : ऐ मेरे रब! बेशक तूने मुझे एक सलतनत दी और मुझे कुछ बातों का अंजाम निकालना सिखाया। ऐ आसमानों और ज़मीनों के बनाने वाले! तू मेरा काम बनाने वाला है। दुनिया व आख़िरत में, मुझे मुसलमान उठा और उन से मिला जो तेरे क़ुर्बे ख़ास के लाइक़ हैं।

फ़ाइदा : हज़रत पीर दस्तगीर मख़्दूम शैख़ सफ़ी क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू फ़रमाया करते कि दुर्वेशी का रास्ता, मौत का रास्ता है यानी मूतू क़ब्ला अन तमूतू। और मख़्लूक़े ख़ुदावन्द ज़िन्दगानी की फ़िक्रों में ग़र्क़, इस राह में क़दम रखती है (तो मंज़िल तक रसाई क्योंकर होगी) जब कि अक्सर लोग ख़ुद दुर्वेशी के सिक्के को हुसूले रिज़्क़ का वसीला जानते और अपनी जानिब मख़्लूक़ के रुजूअ़ और क़ुबूल पर फ़िदा हो जाते हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हिकायत : एक राजा था कि अपने औक़ात अपने धर्म के मुवाफ़िक़ ताअत व बन्दगी में गुज़ारता। बाज़ीगरों के एक गरोह का उधर गुज़र हुआ। लोगों ने उस राजा को यह ख़बर पहुंचाई कि बड़े नामी बाज़ीगर आए हैं उनकी बाज़ीगरी का तमाशा देखना चाहिए। राजा ने कहा कि क़ीमती वक़्त शोबदा बाज़ों के तमाशा देखने में गंवाना अक़्लमन्दों का काम नहीं। उन्हें कुछ दे दिला कर रुख़्सत करो।" लोगों ने फिर कहा कि वह जो नक़ल करते हैं बिल्कुल मुताबिक़ बअसल करते हैं जो देखने से तअल्लुक़ रखती है। राजा ने हंसते हुए कहा कि अच्छा उन से कहो कि वह जोगियों की नक़्ल करें चुनांचे उन में से एक जोगी बन कर आया। एक गुदड़ी ज़मीन पर डाली। उस पर जोगियों की तरह बैठ गया और ऐसे शुग़ल व फ़िक्र में मसरूफ़ हुआ कि इस दुनिया से बिल्कुल फ़ारिग़ व ग़ाफ़िल हो गया और इस दुनिया की जानिब ज़र्रह बराबर इल्तिफ़ात न रहा। तमाम हाज़िरीन ने बहुत तहसीन व आफ़रीं की और राजा ने भी बहुत पसन्द किया और उस वक़्त राजा की बग़ल में, जवाहरात और मरवारेद से मुनक़्क़श जो चादर थी वह किसी को दी और उस जोगी के पास भेजी। जोगी ने उस चादर को टुकड़े-टुकड़े कर डाला और अपने पास से दूर फेंक दिया। राजा को उसकी यह हरकत बहुत बुरी मालूम हुई कि और कहा कि उस जोगी को देखो उसने न हमारी चादर का ख़्याल किया और न हमारी इज़्ज़त का लिहाज़ रखा। जब वह जोगी नक़्ल से फ़ारिग़ हुआ तो राजा ने पूछा कि "तूने हमारी चादर की इज़्ज़त व हुर्मत का ख़्याल क्यों न रखा।" जोगी ने कहा ऐ राजा अगर मैं जोगी की नक़्ल सही न होती। राजा को यह बात बहुत अच्छी मालूम हुई। उस से राजा बहुत ख़ुश हुआ और कहा कि तू ठीक कहता है।

ऐ तालिबे सादिक़ इंसाफ़ कर कि बेदीनों की नक़्ल, दुनियावी सामान के लालच के साथ सही नहीं होती, तो फिर दीनदारों से तशब्बुह इख़्तियार करना, और दुनिया की हिर्स में मुब्तला रहना, किस तरह दुरुस्त क़रार पा सकता है।

ज़ुह्द तर्के दुनिया इख़्तियार करने वालों का ख़िरक़ा कफ़न है। उनके

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

नज़दीक माल व मता का समेटना कोई फन नहीं वह ख़िरका पोश जो उसकी उजरत के दरपे है वह कफन पोश नहीं बल्कि कफन चोर है।"

फ़ाइदा : मख़्दूम शैख़ हुसैन कुद्दिसल्लाहु रूहहू ने जब फ़क़ीर को ख़िरक़-ए-ख़िलाफ़त पहनाया तो मैं अरस-ए-दराज़ तक इस हैरत व फ़िक्र में रहा कि अकाबेरीन का लिबास, उस नाकार-ए-द ना सिपास को किसे मस्लेहत के मातहत अता फरमाया है। मुझ में यह सकत थी ही नहीं कि उसे न पहनूं और दुर्वेशों के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी में कोशां रहूं कि मैं तो उनके हुक्म का फरमांबरदार था। अल-ग़रज़ मैं मुद्दतों इसी फ़िक्र में ग़ल्तां रहा। आख़िरकार मेरे दिल में यह बात बैठ गई कि शायद ख़िरक़ा अह्ले मारिफ़त के आसार मुझ में पैदा हों, तमाम उम्र गुज़र गई मगर कोई असर पैदा न हुआ।

फिर उससे ज़्यादा तअज्जुब खेज़ यह बात है कि एक रोज़ मख़्दूम ने मुझ से दरयाफ़्त किया कि किसी ने तुम्हारी बैअत की? मैंने अर्ज़ किया "नहीं।" फरमाया कि किसी ने खुद तुम्हारी तरफ़ तवज्जोह न दी या तुमने क़बूल न किया? मैंने अर्ज़ किया कि बाज़ लोगों ने रुजूअ् किया था मगर मैंने अपनी कम लियाक़ती के बाइस उन्हें क़बूल न किया। मख़्दूम ने मुझे डांट पिलाई कि मैंने मशाइख़ के मामूल के मुताबिक़ तुम्हें एक काम सुपुर्द किया था। तुम अपनी लियाक़त और अद्ने लियाक़त को देखते रहे। तुम्हें इस दख़ल अन्दाज़ी और या वह गोई की क्या ज़रूरत है। और मुर्शिदों के हुक्म व तसर्रुफ़ में तुम्हें क्या इख़्तियार? आइन्दा हरगिज़-हरगिज़, अगर कोई इरादतमन्द रुजूअ् कर ले तो (उसे रद्द न करना बल्कि) बर ख़िलाफ़े गुज़िश्ता उसे बैअत करना।" उसके बाद नर्मी से फरमाया कि ऐ नेक बख़्त तलबे सादिक़ रखने वालों को, पीरों का अपनी बैअत में लेना इसलिए नहीं कि उनकी नजात अपने ऊपर लाज़िम कर लेते हैं बल्कि अक्सर दीनदार इस नीयत से बैअत लेते हैं। कि इस गरोह में बहुत से वह भी तो हैं जो अह्ले नजात से हैं उनके तुफ़ैल में हम भी नजात के अह्ल हो जाएंगे। लिहाज़ा इस कारे ख़ैर में देर न करनी चाहिए।

हिकायत एक तालिबे सादिक़ एक रात एक बुज़ुर्ग पीर की ख़िदमत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

में बैअत के लिए हाज़िर हुआ। उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि कल तुम्हें कुलाह दूंगा और बैअत करूंगा। क़ज़ारा और मौत आ गई और वह शख़्स उसी रात में मर गया। उन बुज़ुर्ग ने बहुत अफ़्सोस किया। यही वजह है कि अगर कोई शख़्स बैअत के लिए हाज़िर होता है तो अहले मारिफ़त ताख़ीर गवारा नहीं करते।

बिरादरम नमाज़ जो अफ़ज़लुल-इबादात है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि सात बरस के बच्चों को नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो और जब दस बरस के हो जाएं तो उन्हें मारकर नमाज़ पढ़वाओ ताकि कोई नमाज़ न छोड़ें।" लेकिन मुरीद करना दूध पीते बच्चों का भी मुस्तहसन है। मां-बाप को चाहिए कि अपने बच्चों को किसी पीर और बुज़ुर्ग की बैअत में दे दें।

हिकायत : सैय्यद फ़त्तन ज़ैद पुर के रहने वाले, एक मर्द सालेह व पारसा थे। उनके घर में एक लड़का पैदा हुआ। आप हज़रत पीर दस्तगीर मख़्दूम शैख़ सफ़ी कुदिसल्लाहु रूहहू की ख़िदमत में हाज़िर हुए। नज़राना पेश किया और अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला ने मुझे एक बच्चा इनायत फ़रमाया है उसे कुलाह व शजरा बैअत इनायत कीजिए। हज़रत मख़्दूम ने जब अपने नूरे बातिन से जाना कि सैय्यद फ़त्तन के घर में पांच लड़के पैदा होंगे और आपको अपनी ज़िन्दगी के मुतअल्लिक़ भी यक़ीन था। कि उस वक़्त तक हयात न रहूंगा। लिहाज़ा आपने पांच टोपियां और पांच शजरे इनायत फ़रमाए और फ़रमाया कि हमने तुम्हारे पांचों बेटों को बैअत में ले लिया। कुछ अरसा के के बाद हज़रत मख़्दूम का विसाल हो गया और सैय्यद फ़त्तन के घर में पांच लड़के यके बाद दीगरे पैदा हुए।

इससे मालूम हुआ कि बच्चों के पैदा होने और उनके इस दुनिया में आने से पहले भी बैअत करना और मुरीद बनाना जाइज़ है। इसी तरह जब आदमी मर जाए तो इससे पहले कि दफ़न न किया गया हो उसे मुरीद करना जाइज़ है। जैसा कि दूसरे सुंबुला में उस मुर्दे की हिकायत जिसका सर हिलता था लिखी गई। कि मख़्दूम शैख़ मीना ने उसे कुलाह और शजरा इनायत फरमाया यहां तक कि उस का सर हिलने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

से रुक गया। रिसाला सैर मशाइख़ में लिखा है कि ख़्वाजा कुदवतुद्दीन अबू अहमद, ख़्वाजा नासिरुद्दीन मुहम्मद की वालिदा के पास आते और कहते (ऐ अल्लाह के वली तुम पर सलाम। तुम मेरे ख़लीफ़ा हो।) शैख़ मुहम्मद की वालिदा दरयाफ़्त करतीं कि ऐ शैख़ आपने किसे सलाम किया और किसे ख़िलाफ़त दी? शैख़ अबू अहमद चिश्ती कहते कि तुम्हारे पेट में एक बच्चा है मैंने उसे सलाम किया और उसे अपना ख़लीफ़ा बनाया। शैख़ मुहम्मद की वालिदा फरमातीं कि हज़रत वह अभी पेट में है और मालूम नहीं लड़का है या लड़की? वह अभी आपका मुरीद भी नहीं हुआ है आपने उसे ख़िलाफ़त कैसे दे दी? शैख़ अबू अहमद कहते कि ऐ पाक दामन मैंने तुम्हारे बेटे को एक बुज़ुर्गवार और पीरे नामदार, लौहे महफ़ूज़ में लिखा देखा है। उसका नाम मुहम्मद है। वह मेरा मुरीद और ख़लीफ़ा है। मैं तुम्हें बशारत देने आता हूं।"

फसल : हज़रत मख़्दूम शैख़ बहा बिन महमूद, नबीर–ए–हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागोरी कुदिसल्लाहु रूहहुमा ने ख़्वाजगाने चिश्त कुद्दसल्लाहु अरवाहहुम के हालात में एक रिसाला लिखा है जिन्हें अपने पीर बुज़ुर्गवार शैख़ एमादुद्दीन से नक़्ल किया है और उसका नाम सैरे मशाइख़ रखा है। फ़कीर ने हर पीर के वाक़ेआत में से थोड़ा–थोड़ा बतौर तबर्रुक अख़ज़ किया है।

सैरे अव्वल : हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहू के हवाल में तालिबाने सादिक़ को मालूम हो कि अली मुर्तज़ा और मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान बचपन ही से क़ल्बी राबता था। (उसी का असर था कि) अली मुर्तज़ा ने बचपन में भी बुत परस्ती से कोई सरोकार न रखा। जब आपके रिश्तेदार आपको संवारते, बुतख़ाना में ले जाते और खुद परस्ती में मसरूफ़ रहते तो अली मुर्तज़ा उसे कहते कि तुम अपने बाप दादा के उन खुदाओं को क्यों सज्दा नहीं करते, क्यों उन पर एतमादे जाज़िम नहीं रखते? तो आप जवाब देते कि मैं जब किसी बुत को सज्दा करना चाहता हूं तो सर में दर्द शुरू हो जाता है और मेरे दिल में बार–बार यह ख़्याल आता है कि यह बेजान जमादात हैं उन से कोई फाइदा उन्हें नहीं पहुंच सकता और ऐसे बेजान,

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अज्साम को सज्दा करना बातिल महज़ है। आपके वालिद ने जब यह बात सुनी तो बहुत ख़फ़ा हुए कि तुम अभी नादान बच्चे हो। अपने आबा व अज्दाद के दीन को बातिल बतलाते हो। और जब सैय्यदुश्शोहदा अमीर हम्ज़ा ने यह बातें सुनीं तो आप बहुत ख़ुश हुए और मौला अली को अपनी आग़ोश में लेकर फरमाया कि "ऐ अली! अपनी बात पर मुस्तहकम रहना, बुत परस्ती हमारे आबा व अज्दाद का दीन नहीं था बल्कि हमारे जद्दे आला इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ने बुतों को तोड़ कर दीने इब्राहीमी की बुनियाद डाली थी।" अली ने अर्ज़ किया "चचा जान मुझे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बड़ी मुहब्बत व क़ल्बी यगांगत है और वह हमेशा ख़ुदा परस्ती करते हैं" अमीरुल-मुमिनीन हज़रत हम्ज़ा ने फरमाया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) में पैग़म्बरों के ख़साइल व अख़्लाक़ मौजूद हैं मुझे उम्मीद है कि यह पैग़म्बर होंगे और हम उन पर ईमान लाएंगे।")

एक रोज़ अली मुर्तज़ा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर आए तो आपको बहुत मसरूर व शादमां पाया। अर्ज़ किया कि ऐ मुहम्मद मोहतरम! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मैं जब भी आपकी ख़िदमत में आता तो आपका चेहरा ज़र्द और आंखें पुरनम व सुर्ख़ पाता। आज मैं आपको बहुत ख़ुश व ख़ुर्रम पाता हूं उसमें क्या राज़ है? पैग़म्बर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि ऐ अली तुम दुनिया व आख़िरत में मेरे बिरादर दीनी व यक़ीनी हो। मैं यह राज़ तुम पर खोलता हूं कि आज मुझ पर वही का नुज़ूल हुआ है और जिब्रील सूरः इक़रा बिस्मे रब्बिकल्लज़ी ख़लक़ लेकर नाज़िल हुए हैं और मैं ख़ातमुन्नबीईन पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़मां हूं। मौला अली बहुत ख़ुश हुए और अर्ज़ किया कि अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि अल्लाहु अन्हु) ने आपसे वादा किया था कि जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर वही नाज़िल होगी तो हम उन पर ईमान लाएंगे और उनकी रिसालत व नुबुव्वत की तस्दीक़ करेंगे। मैं अबू बकर को भी उसकी इत्तिला दे दूं। चुनांचे मौला अली गये और अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु को आपकी इस हक़ीक़ते हाल से मुत्तला किया। अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने दरयाफ़्त किया कि ऐ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अली तुम उन पर ईमान लाए या नहीं। जवाब दिया कि मैंने इस मुआमला की तहक़ीक़ की ख़ातिर ज़रा तवक़्क़ुफ़ किया है।" अबू बकर सिद्दीक़ ने कहा कि 'जल्दी चलो ताकि हम तुम उन पर ईमान लाएं। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अमीन हैं, अपनी तमाम उम्र में कभी झूठ नहीं बोला। अब भी झूठ नहीं कह सकते। ऐ अली तुमने यह क्या किया कि आप पर फ़ौरन ईमान न लाए। अगर मौत आ जाए तो तुम्हारा क्या हाल होगा।

ग़रज़ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और मौला अली दोनों हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर आए और फ़ौरन कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहा और ईमान लाए। चुनांचे सबसे पहले पुख़्ता उमरों में जो शख़्स ईमान लाया। वह अमीरुल–मुमिनीन अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु हैं और नौ उम्रों में सबसे पहले मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहू। मौला अली को मुजाहिदा व रियाज़त का इस क़द्र शौक़ था कि बयान नहीं हो सकता। आपके घर में तीन–तीन चार–चार बल्कि नौ–नौ रोज़ का फ़ाक़ा हो जाता मगर किसी पर अपनी फ़ाक़ा कशी को बयान न करते। हत्ता कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर भी ज़ाहिर न करते और साबिर व सादिक़ रहते।

दूसरी सैर ख़्वाजा हसन बसरी क़ुद्दिसा सिर्रुहू के बयान में। आपको अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहू से बैअ़त व ख़िलाफ़त हासिल थी। तक़्वा में आला मक़ाम रखते थे। सत्तर साल तक आपका वुज़ू सिवाए हाजते इंसानिया के बातिल न हुआ। ख़्वाजा हसन बसरी ने जब मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का ख़िरक़ा पहना और यह ख़िरक़ा, वही कम्बल था जो हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अली मुर्तज़ा को पहनाया और नसीहत फ़रमाई थी कि ऐ अली यह फ़ुक़्र व दुर्वेशी का ख़िरक़ा है उसे पहनो और फ़ुक़्र व फ़ाक़ा को इख़्तियार करो।" जब मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने ख़्वाजा हसन बसरी को यह ख़िरक़ा पहनाया और आपके फ़ुक़्र व फ़ाक़ा और सब्र व शुक्र की नसीहत की तो ख़्वाजा हसन बसरी ने इस पन्द व नसीहत को क़ुबूल किया और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मौला अली से ख़िरक़ा ख़िलाफ़त पहन कर मकान में तशरीफ़ लाए और जो कुछ था वह फ़क़ीरों को दे दिया यहां तक कि घर में एक दिन की ख़ूराक भी बाक़ी न रखी। आप तीन रोज़ मुसलसल रोज़ा रखते। और कभी-कभी पांच-पांच, छेः-छेः रोज़ भी गुज़र जाते। लोगों ने पूछा ऐ ख़्वाजा इतना कम खाने से आदमी बीमार व नातवां हो जाता है खुदा की इबादत भी नहीं कर सकता आप पर पांच-पांच छेः-छेः रोज़ गुज़र जाते हैं और रोज़ा नहीं छोड़ते। अगर नातवानी व बीमारी पकड़ जाए तो क्या करेंगे? फरमाया कि मैं मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अली मुर्तज़ा की पैरवी करता हूं। कि आप तीन-तीन चार-चार और कभी पांच बल्कि छेः दिन फ़ाक़ा कशी में गुज़ार देते मैंने उनका ख़िरक़ा पहना है अगर उनकी पैरवी न करूंगा तू मुझे उनमें शुमार न किया जाएगा और दुर्वेश, दुर्वेशी में क़बूल न करेंगे और कहेंगे कि यह खुद नुमाई है। दूसरे ख़िरक़ा पोश दुर्वेश तो कम खाते हैं और यह पुर शिकम रहता है। उन्होंने फ़ाक़े किए हैं और यह हर रोज़ खाता पीता है।" हमने खुद को उनके घोड़े के शिकार बन्द में बांध लिया है। वह जिस राह चले हैं हम भी उसी राह चलेंगे ख़्वाह कमज़ोर पड़ें या बीमार रहें।

ख़्वाजा हसन बसरी पर ख़ौफ़े इलाही ग़ालिब था। इतने रोते कि आंखों में गढ़े पड़ गये और कसरते गिरया दराज़ी की वजह से बीनाई कमज़ोर हो गई। आप दुआ करते कि "इलाही हसन गुनाहगार है उस पर रहमत फरमा और जब उसे दुर्वेशों का ख़िरक़ा दिया है तो उसे उनके सामने शर्मिंदा न कर।"

तीसरी सैर ख़्वाजा अब्दुल-वाहिद ज़ैद कुद्दिसल्लाहु रूहहू के बयान में। आप ख़्वाजा हसन बसरी के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं। आपने बैअत से पहले भी चालीस साल मुजाहिदा व रियाज़त में गुज़ारे। आपको इल्म में कमाल हासिल था। और हसन बसरी की तरह ज़बरदस्त मुजाहिद थे। आप अमीरुल-मुमिनीन हसन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हा के शागिर्द हैं बड़े और बेहद मुंकसिरुल-मिज़ाज थे। बहुत कम किसी ने आपको पहले सलाम किया होगा। आप जिस से मिलते ख़्वाह छोटा हो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned with CamScanner

किताब घर

बड़ा उसे खुद सलाम करते। लोगों के सामने अदब से रहते और ...ाते कि तुम लोग उस बादशाह के गुलाम हो जिसकी ताज़ीम हम ...ताज़िम है और जिसे बादशाह से मुहब्बत होती है वह उसके ...दमत गुज़ारों का भी लिहाज़ रखता है। हमें अल्लाह तआला से ...ब्बत है और तुम सब उसके बन्दे हो। लिहाज़ा हम पर वाजिब है कि ...म्हारी ताज़ीम करें कि तुम्हारी ताज़ीम (गोया) खुदा की ताज़ीम है।

एक रोज़ आप एक रास्ता पर गुज़र रहे थे। देखा कि एक कमज़ोर ...ढ़ा, लागर, बीमार और पुर नुक्स रास्ता में पड़ा है। धूप तेज़ है वह ...क गया है और साया ढूंढता है। हज़रत अब्दुल-वाहिद ज़ैद ने आसमान की तरफ़ नज़र उठाई और फरमाया कि ऐ बादल उस पर साया कर। फौरन बादल नमूदार हुआ और उसने बीमार पर साया कर लिया। उस बूढ़े ने कहा कि ऐ शफ़ीक़ बुज़ुर्ग! दुआ फरमाइए कि अल्लाह तआला मुझे शिफ़ा बख़्शे शैख़ ने दुआ की उसने सेहत पाई और फौरन खड़े हो कर अपने पैरों से चल दिया।

एक रोज़ आप एक राह से गुज़र रहे थे। फ़क़ीरों की एक भूखी जमाअत बैठी हुई थी। उन सबने बहुत रो पीटकर कहा कि ऐ शैख़ आप खुदा वाले हैं। आपकी दुआ मक़बूल है। हम सब फ़क़ीर भूखे प्यासे हैं। हमारे हां बच्चे भूख से मरे जाते हैं। खुदा से दुआ कीजिए कि हमें वक़्त पर खाना नसीब हो जाया करे। हम दुनिया की कोई और चीज़ नहीं चाहते।" आपने फरमाया जाओ। आज से बेग़म हो जाओगे। मगर शर्त यह है कि शरीअ़त के रास्ता पर चलते रहना। फ़क़ीर अपने-अपने घर आए तो देखा कि उनकी बीवियों ने उम्दा और लज़ीज़ खाने तैयार किए हैं और हर शख़्स के हाथ में सोने के दीनार हैं। पूछा कि यह खाना कहां से आया और यह माल किस ने दिया। उन्होंने कहा कि एक शख़्स आया। दरवाज़े की कुन्डी खटखटाई। हम गये उसने सोने के दीनारों का एक तबाक़ भरा हुआ हमें दिया और कहा कि तुम सब आपस में बांट लो। और जब तुम्हारे शौहर तुम से पूछें तो कह देना कि शैख़ अब्दुल-वाहिद का एक दोस्त आया था वही हमें यह दीनार दे गया है। शौहरों ने कहा कि हां शैख़ अब्दुल-वाहिद ज़ैद से हमारी मुलाक़ात हुई

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

थी और हमने अपनी बेकरी का हाल उन से अर्ज़ किया था और अपने अयाल की तंगी का हाल उन्हें सुनाया था। उन्होंने फरमाया था कि आज से तुम बेगम हो जाओगे।" औरतों ने अपने शौहरों से कहा कि जब तुम्हारी शैख़ अब्दुल-वाहिद से मुलाकात हो गई थी तो तुमने सिर्फ़ दुनिया क्यों मांगी। अगर दीन भी मांगते तो अल्लाह तआला शैख़ अब्दुल-वाहिद की बरकत से तुम्हें दीने कामिल भी अता फरमाता।

नकल है कि शैख़ अब्दुल-वाहिद ज़ैद हमेशा खुदाए तआला से डरते रहते और हमेशा रोज़ा रखते। दो तीन फ़ाके करते और इफ्तार के वक़्त दो तीन निवाले खा लेते। लोगों ने अर्ज़ किया कि आप इतना कम क्यों खाते हैं। फरमाया कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, मौला अली और अपने मुर्शिद की पैरवी करता हूं कि उन हज़रात को फ़ाकाकशी महबूब थी और दुर्वेश वही है जो कौल व फ़ेअ्ल में, मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अली मुर्तज़ा और अपने मुर्शिद की पैरवी करे। वरना उसे दुर्वेश नहीं समझा जाता। लोग उसे ज़लील जानते हैं। और उसकी ज़िल्लत, उसके मुर्शिद की ज़िल्लत, मुर्शिद की तज़्लील, मौला अली की तहक़ीर, और आपकी तहक़ीर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तौहीन है। और आप की तौहीन खुदाए तआला की तन्क़ीस है। लिहाज़ा दुर्वेश को चाहिए कि अपने मुर्शिदे बरहक़ की पैरवी न छोड़े कि पीर की पैरवी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी है।

नक़्ल है कि शैख़ अब्दुल-वाहिद ज़ैद जब ख़्वाजा हसन बसरी से बैअ़त हुए तो आपके पास सात ग़ुलाम थे। सबको आपने आज़ाद कर दिया और फरमाया कि जिस तरह आज मैं गुनाहों से आज़ाद हुआ हूं अपने उन ग़ुलामों को भी अपनी ग़ुलामी से आज़ाद करता हूं। और उसके अलावा घर में जो कुछ माल व मता था वह सब दुर्वेशों को दे दिया और एक पुरानी गुदड़ी लेकर ख़्वाजा हसन बसरी की ख़िदमत में मस्रूफ़ हो गये।

चौथी सैर हज़रत फ़ुज़ैल अयाज़ कुदिसल्लाहु रूहहू के बयान में। आप ख़्वाजा अब्दुल-वाहिद ज़ैद के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं। कहते हैं कि

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

आप रहज़नी किया करते थे और डाकुओं के एक गरोह के सरदार थे। अपने साथियों समेत जंगल में रहते। आपके साथी रहज़नी करते और आप बयाबान में बैठ कर क़ुरआन पढ़ते रहते। क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत आपको बहुत महबूब थी। कहते हैं कि आपकी तौबा का सबब यह है कि एक रात एक क़ाफ़िला गुज़र रहा था जिसने एक हाफ़िज़ को नज़राना दे कर बुला लिया था ताकि वह तमाम रात क़ुरआन पढ़ता रहे। इस ख़्याल से कि फ़ुज़ैल अयाज़ क़ुरआन ख़्वानी को बहुत पसन्द रखते हैं। फ़ुज़ैल जब क़ाफ़िला के पास पहुंचे तो हाफ़िज़ यह आयत पढ़ रहा था। (क्या ईमान वालों के लिए अभी वह वक़्त न आया कि उनके दिल ज़िक्रे इलाही के लिए झुक जाएं।) यह आयत आपके दिल पर तीर की तरह लगी। बेख़ुद व बेक़रार हो गये और वीराने की तरफ़ चल दिए। (क़ाफ़िला वालों को क्या पता) उन्होंने कूच करना चाहा तो एक शख़्स ने कहा कि कहां जाते हो? फ़ुज़ैल अपने कसीर साथियों समेत रास्ते में आ मारेगा। आपने यह बात सुनी तो फ़रमाया ऐ क़ाफ़िले वालो! तुम्हें बशारत हो कि फ़ुज़ैल ने तौबा कर ली। अब वह तुम से भाग रहा है जैसा कि तुम उस से भागते थे।

हज़रत फ़ुज़ैल राह चलते रोते जाते और कहते जाते थे। इलाही फ़ुज़ैल गुनहगार व गुनाह शिआर तौबा करके तेरी बारगाह की जानिब मुंह किए आता है उसे क़बूल फ़रमा। फ़ुज़ैल को बख़्श दे और उसके मुख़ालिफ़ों को राज़ी कर दे।" जहां-जहां आपके मुख़ालिफ़ थे आप वहां जाते और उसे राज़ी करते। मगर एक यहूदी रज़ामन्द न हुआ और उसने क़सम खाई कि जब तक मेरा सोना न दोगे मैं राज़ी न हूंगा। उस का सोना सौ दीनार था। आपने बहुत गिरिया व ज़ारी की तो उस यहूदी ने सौ ठेकरियां, दीनार के नमूना की तराशें, और थैली में अपने तकिए के नीचे रख कर, हज़रत फ़ुज़ैल से कहा कि जाओ वह सौ दीनार की थैली जो मेरे तकिए के नीचे है, मैंने तुम्हें बख़्शी। वह मुझे गिन कर दे दो (कि मेरी क़सम पूरी हो जाए) आप ठेकरियों वह थैली उठा कर लाए। तो आपके दस्ते मुबारक के मस की बरकत से वह ठेकरियां सोने के दीनार हो गईं। और आपने वह दीनार गिन कर यहूदी को दे दिए।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

यहूदी ने कहा कि मैं अपने कुफ़्र व गुनाह से बाज़ आया। आपके हाथ पर मुसलमान होता हूं। मुझे कलिमा तैय्यबा पढ़ाइए। हज़रत फुज़ैल ने फरमाया कि तूने मुझ में कौन सी बात देखी? उसने कहा कि मैंने तौरेत में पढ़ा है कि "मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की उम्मत में ऐसे लोग होंगे कि जब वह सच्चे दिल से तौबा कर लेंगे और मिट्टी पर हाथ डालेंगे तो वह सोना हो जाएगी।" यह भी मिट्टी की टेकरियां थीं जो आपके हाथ में सोना हो गई। अब मुझे यक़ीन है कि आपकी तौबा मक़्बूल है। इसी वजह से आपके हाथ पर तौबा करता हूं कि जो शख़्स किसी मक़्बूले खुदा के हाथ पर तौबा करता है खुद ही मक़्बूल हो जाता है।

जब हज़रत फुज़ैल ने तमाम मुख़ालिफ़ों को राज़ी कर लिया तो हज़रत हसन बसरी की मुलाक़ात के लिए बसरा में आए और लोगों से पूछा कि ख़्वाजा हसन कहां हैं? अर्ज़ किया गया कि ख़्वाजा हसन वासिल बहक़ हुए और दोस्त–दोस्त से मिल गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। हज़रत फुज़ैल रोने लगे और फरमाया कि आह अब किस के पास जाऊं और किसी की ख़िदमत में रहूं कि दुर्वेशी की राह में (दुर्वेशों की) सोहबत असल है।" अर्ज़ किया गया कि ख़्वाजा अब्दुल–वाहिद ज़ैद आपके मुरीद ख़लीफ़ा और जानशीन हैं और मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मौला अली का ख़िरक़ा पहने हुए हैं। हबीब अज्मी उनके दोस्त हैं जो हर हफ़्ता उन से मुलाक़ात के हाज़िर आते हैं। आज दुर्वेशी में उनकी मिसाल नहीं। वह लोगों को बैअत करते, उन्हें दीन का रास्ता बताते, और बीमारों को तन्दुरुस्त करते हैं। उनकी ख़िदमत की वजह से हज़ारों मत्लूब तक पहुंच चुके और तजल्लियाते महबूबे हक़ीक़ी का मुशाहिदा कर चुके हैं।

ख़्वाजा फुज़ैल ख़्वाजा अब्दुल–वाहिद ज़ैद की ख़ानक़ाह में हाज़िर हुए। और क़दमबोसी की। ख़्वाजा अब्दुल–वाहिद ने फरमाया कि युहिब्बुत्तौवाबीन। (अल्लाह तआला तौबा करने वालों को महबूब रखता है) तुम्हें बशारत हो कि जब तुमने सच्ची तौबा की है तो तुम खुदा के महबूब हो गये। आओ कि तुम्हें अपनी आग़ोश में लूं और खुदाए तआला

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

की दोस्ती की वजह से तुम्हें दोस्त रखूं। और दुर्वेशी का रास्ता दिखाऊं। हज़रत फ़ुज़ैल अयाज़ ने बैअत की और शैख़ अब्दुल–वाहिद ज़ैद के मुरीद हो गये।

इसी बिना पर बुज़ुर्गाने दीन ने फरमाया है कि ताबिले सादिक़ सिद्क़ इरादत के साथ उस मैदान में क़दम रखे तो उसे चाहिए कि सबसे पहले अपने मुख़ालिफ़ों को राज़ी करे। लोगों के हुक़ूक़ जो उस पर हैं, उन्हें अदा करे फिर किसी पीर व मुर्शिद की तलाश में रहे। हज़रत अब्दुल–वाहिद ज़ैद ने हज़रत फ़ुज़ैल को सबसे पहले यही शुग़ल बताया कि गोशा नशीनी इख़्तियार करो और ला इलाहा इल्लल्लाह का ज़िक्र बेहद व ला महदूद करते रहो फिर तो हज़रत फ़ुज़ैल ने उसी वक़्त कि शैख़ अब्दुल–वाहिद ज़ैद के मुरीद हुए थे उन से ख़िलाफ़त पा ली। आपने दुनियादारों का न मुंह देखा और न दुनिया की कोई चीज़ अपने हाथ में ली। सिवाए उसके जिस से आप इफ़्तार करते।

नक़्ल है कि एक रोज़ हारून रशीद ने एक शख़्स से कहा कि मुझे किसी दुर्वेश के पास ले चलो। वह शख़्स हारून रशीद को सुफ़ियान बिन उयैना के पास ले गया और आवाज़ दी कि तुम्हारे पास हारून रशीद आया है। आपने अन्दर से फरमाया कि मुझे क्यों ख़बर न की कि मैं ख़ुद उसके पास आ जाता। हारून रशीद ने यह बात सुनी तो कहा कि यह वह शख़्स नहीं जो मेरा मतलूब व मक़्सूद है। सुफ़ियान ने फरमाया कि ऐसा शख़्स जिसकी तुम्हें तलाश है फ़ुज़ैल अयाज़ है। वह शख़्स हारून रशीद को हज़रत फ़ुज़ैल के दरवाज़ा पर लाया। आप तिलावते क़ुरआन में मुन्हमिक थे और यह आयत ज़ेरे तिलावत थी।

(क्या जिन्होंने बुरे कामों का इर्तिकाब किया, यह समझते हैं कि हम उन्हें उन जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे काम किए कि उनकी ज़िन्दगी और मौत बराबर हो जाए। क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं।)

हारून रशीद ने कहा कि अगर मैं कोई नसीहत क़ुबूल करना चाहूं तो यही आयत काफी है। फिर फौरन अन्दर दाख़िल हुआ। हज़रत फ़ुज़ैल ने चिराग़ बुझा दिया कि हारून का चेहरा न देखें और नमाज़ के लिए खड़े हो गये। हारून रशीद रोता रहा। फिर कहा कि मुझे कोई

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

नसीहत कीजिए। हज़रत फ़ुज़ैल ने फरमाया कि ख़ुदा से डर और उसे जवाबदेही के लिए तैयार रह। कि क़यामत के दिन ख़ुदाए तआला एक-एक के मुतअल्लिक़ तुझ से दरयाफ़्त फरमाएगा और हर एक से इंसाफ़ का मुआमला करेगा।" हारून रशीद ने कहा कि एक हज़ार दीनार आपको नज़्र किए जाएं। आपने फरमाया कि जो नसीहतें मैंने की उन से तुझे कुछ फाइदा न पहुंचा। और तूने यहीं से ज़ुल्म शुरू कर दिया। मैं तो तेरे लिए यह कोशिश करता हूं कि तू ख़ुदा तक पहुंच जाए और तू मेरे लिए इस बात के दरपे है कि मैं उसकी मुहब्बत, इश्क़ और क़ुर्ब से दूर जा पड़ूं।"

पांचवें सैर ख़्वाजा इब्राहीम अदहम बल्ख़ी क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू के ज़िक्र में। आप ख़्वाजा फ़ुज़ैल अयाज़ क़ुद्दिसा सिर्रुहू के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं। हज़रत सुलतान इब्राहीम आदिल, फ़ैयाज़ और फ़ुक़रा नवाज़ सुल्तान थे। सलाह व फलाह में कामिल। उलमा व मशाइख़ के रू-ब-रू, ख़ुद को एक बन्दा बेदाम तसव्वुर करते। और उलमा व मशाइख़ के पापोश दुरुस्त रखते। अगरचे ख़ुद ऊलुल-अम्र से थे। आपका दिल अचानक ही दुनिया की मुहब्बत से सर्द हो गया और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की मुहब्बत दिल में बैठ गई। मुम्लिकते बल्ख़ को लुटाया। फ़ुक़्र व फ़ाक़ा को अपनाया और तने तन्हा वीराने की तरफ़ निकल गये। आपके तर्के दुनिया का वाक़या तीसरे सुंबुला में गुज़र चुका है। बल्ख़ छोड़ कर आप मक्के पहुंचे और वहीं सुकूनत इख़्तियार की और ख़ाना काबा के मुजावर बन कर रह गये। अपनी कमाई का खाना पकवाते और फ़क़ीरों को खिला देते एक रोज़ इब्राहीम अदहम ने दरयाफ़्त किया कि मक्का में दीनदार और साहबे मुजाहिदा व मुशाहिदा कौन सा दुर्वेश है? लोगों ने जवाब दिया कि फ़ुज़ैल अयाज के सिवा कोई नहीं। वह ख़्वाजा अब्दुल-वाहिद ज़ैद के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं और आपको अली मुर्तज़ा की ख़िलाफ़त का ख़िरक़ा भी पहुंचा है। ख़्वाजा अब्दुल-वाहिद ज़ैद के सज्जादा पर बैठे लोगों को अपनी बैअत में लेते हैं। इब्राहीम अदहम आपकी ख़ानक़ाह में पहुंचे और आपकी क़दमबोसी की। हज़रत ख़्वाजा ने बहुत शफ़क़त फरमाई और फरमाया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रज़वी किताब घर

कि ऐ इब्राहीम अदहम तुम दुनिया के बादशाह थे अब दीन के बादशाह बन गये। अब हमारे सज्जादा पर बैठोगे। हमारे मशाइख़ का ख़िरक़ा पहनोगे। और नामवर दुर्वेशों से हो जाओगे। सुल्तान इब्राहीम जब ख़्वाजा फ़ुज़ैल की नज़र में भर गये तो आपकी मुहब्बत व इश्क़ दस गुना बढ़ गया। आपने हज़रत ख़्वाजा फ़ुज़ैल से बैअत की और उनकी ख़िदमत में मसरूफ़ हो गये। जब कुछ ज़माना गुज़रा ख़्वाजा फ़ुज़ैल ने ख़िलाफ़ते दुर्वेशी का ख़िरक़ा उन्हें पहना दिया और अपना ख़लीफ़ा कर दिया। फिर फरमाया कि ऐ इब्राहीम! तुम्हें चाहिए कि फ़ुक्र को इख़्तियार किए रहो कि तमाम दुर्वेशों के सरताज मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। आपने फ़ुक्र को इख़्तियार फरमाया। आपके ख़लीफ़ा अली मुर्तज़ा हैं उन्होंने फ़ुक्र पसन्द किया। उनके ख़लीफ़ा ख़्वाजा हसन बसरी हैं। उन्होंने फ़ुक्र को अच्छा जाना। उनके ख़लीफ़ा ख़्वाजा अब्दुल–वाहिद ज़ैद हैं उन्हें फ़ुक्र महबूब था। और उनका ख़लीफ़ा मैं हूं कि फ़ुक्र से निबाह कर रहा हूं और दुनिया छोड़ बैठा हूं। तुम्हें चाहिए कि तुम हमारी और हमारे मुर्शिदों की पैरवी इख़्तियार करो। चुनांचे हज़रत इब्राहीम अदहम ने हज़रत फ़ुज़ैल अयाज़ की पन्द और नसीहत को क़बूल कर लिया और हमेशा उस पर कारबन्द रहे।

नक़्ल है कि एक शख़्स हज़ार दीनार हज़रत सुलतान इब्राहीम की ख़िदमत में हाज़िर लाया। आपने क़बूल न किए और फरमाया कि ऐ अज़ीज़ तुम यह चाहते हो कि मेरा नाम दुर्वेशों के दफ़्तर से काट दो और उस (ज़लील) मिक़्दार और मुरदार सोने के एवज़ मुझे कल क़्यामत में मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दूसरे बुज़ुर्गों के सामने शर्मिंदा करो।" आपका मकूला है कि जिस शख़्स का दिल तीन जगह हाज़िर न हो उस पर नेमते राज़ व नियाज़, और रहमत का दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता है। एक तिलावते कुरआन शरीफ़, दूसरे बवक़्ते ज़िक्र। तीसरे नमाज़ के औक़ात में।

छठी सैर ख़्वाजा हुज़ैफ़ा मुरअशी कुद्दिसल्लाहु रूहहू के बयान में। आप हज़रत इब्राहीम अदहम के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं। आपको इल्म में कमाल हासिल था। इल्मे सुलूक में आपकी बकसरत तसानीफ़ हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

आपने बड़ी रियाज़तें और मुजाहिदे किए। फ़ाक़ा कशी और मुफ़्लिसी के रंगा रंग मनाज़िर देखे। आप मशाइखे किबार के सरताज थे। उस ज़माना के तमाम अह्ले मारिफ़त की तवज्जोह हज़रत हुज़ैफ़ा मुरअशी की जानिब थी। तीस साल तक आपका वुज़ू सिवाए मवाज़े ज़रूरते शरईया के न टूटा। आपने फ़रमाया है कि दुर्वेश को ख़ाली हाथ, ख़ाली पेट और (दुनिया से) ख़ाली दिल होना चाहिए। और अगर तुम किसी दुर्वेश के हाथ पर दर्म देखो तो उसके क़रीब न फटको।" ख़्वाजा हुज़ैफ़ा अह्ले दौलत व साहबे सरवत से परहेज़ फ़रमाते और फ़रमाते कि अगर तुम्हारी सोहबत ने मुझ पर असर किया तो मैं राहे (फ़क़्र) से डगमगा जाऊंगा और मुझे दुर्वेशों के रू-ब-रू शर्मिंदा होना पड़ेगा। और ऐ अह्ले दुनिया! अगर तुम मेरी सोहबत मे आना और मेरे पास बैटना चाहते हो तो दुनिया को छोड़ दो और दुर्वेशी अख़्तियार करो। तुम्हें उस वक़्त में अपनी मज्लिस में जगह न दूंगा।

नक़्ल है कि जब कोई दुनियादार तौबा करता और दुनिया से दामन समेट लेता, तो शैख़ हुज़ैफ़ा मुरअशी चालीस रोज़ तक उसका मुंह न देखते और फ़रमाते कि अभी (उससे) मालदारी की बदबू आती है। चालीस रोज़ गुज़रने के बाद, तौबा करने वाले को बुलाते, आग़ोश में लेते और फ़रमाते कि ऐ अल्लाह के दोस्त आ।

सातवें सैर ख़्वाजा हुबैर कुद्दिसल्लाहु रूहहू के बयान में। आप ख़्वाजा हुज़ैफ़ा मुरअशी के ख़लीफ़ा और मुरीद हैं। आप सत्तरह साल की उम्र में दानिशमन्दे आलम और कलामे रब्बानी के हाफ़िज़ हो चुके थे। हर दिन में दो बार और हर रात में दो मरतबा क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म करते। सत्तरह बरस की उम्र से आख़िर उम्र तक आपका वुज़ू क़ज़ाए इंसानी के सिवा न टूटा। आपकी उम्र भी बहुत ज़्यादा थी। बाज़ कहते हैं कि एक सौ तीस बरस की उम्र थी और बाज़ कहते हैं एक सौ बीस साल की। सारी उम्र तीन-तीन, चार-चार रोज़ के बाद इफ़्तार करते रहे और जब रोज़ा इफ़्तार करने का इरादा करते तो चन्द वर्क़ लिखते और जो कुछ मिलता उससे सामने इफ़्तार करते।

नक़्ल है कि एक अमीर आदमी ख़्वाजा हुबैरा के पास एक हज़ार

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

दृहम लाया। आपने एक नारा लगाया और बेहोश हो गये। यहां तक कि आपके मुंह में कफ़ आ गया। बकसरत मख़्लूक़ जमा हो गई। आपके मुंह पर पानी छिड़का तो आपको होश आया मगर आपकी नज़र फिर उन दृहमों पर पड़ी। फिर आपने नारा बुलन्द किया और बेहोश हो गये। और आलम यह था कि लोगों को गुमान हुआ कि रूह परवाज़ कर जाएगी। सब इसी ग़म में मुब्तला हो गये और फिर आपके मुंह पर पानी छिड़का कि आप होश में आ गये। लेकिन (यूं कि) बदन में लरज़ा था, आंखों में आंसू थे और चेहरे का रंग ज़र्द पड़ गया था। लोगों ने अर्ज़ किया कि ऐ शैख़ क्या बात थी कि आपने नारा लगाया और बेहोश हो गये। और जब आप दोबारा होश में आए तो रो रहे हैं? फरमाया कि आह क़ाबिले रहम है वह शख़्स जो महबूब का ख़्वाहां, मतलूब का जोयां हो और जब उसका तालिब को मतलूब के सिवा कुछ और मिले और महबूब के अलावा उसे कुछ और दिया जाए तो उसके लिए ज़िन्दगी से मौत बेहतर है। बेमाया दुर्वेश ने जब फ़ुक़्र व फ़ाक़ा को इख़्तियार कर लिया और गोशा नशीन हो गया तो उसे दुनिया से क्या काम? वह दौलतमन्द मेरे पास हज़ार दीनार लाया मेरा दिल ज़ख़्मी और जिगर पानी-पानी हो गया। वह दुर्वेश जो फ़ुक़्र के क़ाबिल नहीं उसे दृहम देते हैं और दुनिया वालों से उसकी शनासाई करा देते हैं। मैं दुनिया, अहले दुनिया और शैताने रजीम से अल्लाह की पनाह चाहता हूं।" इसी बिना पर कहते हैं कि अल्लाह तआला ने दुनिया से ख़िताब फरमाया" ऐ दुनिया मेरे दोस्तों से गुज़र जा कि कहीं तू उन्हें फ़ित्ना में न डाले।

आठवीं सैर ख़्वाजा उलू दैनूरी कुदिसल्लाहु रूहहू के बयान में। आप ख़्वाजा हुबैरा बसरी के ख़लीफ़ा और मुरीद हैं। शैख़ नामदार और महरिमे असरार आरिफ़े बिल्लाह थे। इल्म में कामिल और हाफ़िज़े कुरआन शरीफ़ थे। शैख़ मारूफ़ करख़ी आपकी मज्लिस में ज़्यादा तर आते रहते थे। शैख़ उलू दैनूरी ने बकसरत दुर्वेशों को देखा है, मशाइख़ की ख़िदमत की है और बहुतों से नेमतें बकसरत पाई हैं। बैअत से तीस साल पहले मुजाहिदा किया। सात रोज़ के बाद एक छोहारा खाते और एक घूंट पानी पीते। आप पहले साहबे सरवत और बकसरत माल व

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

मताअ् के मालिक थे। मगर तमाम माल व असबाब फ़क़ीरों को दे दिया और फ़क़्र व फ़ाक़ा इख़्तियार किया। जिस रोज़ आपने दुनिया से मुंह मोड़ा, दस हज़ार दीनार फ़क़ीरों पर लुटाया और बाक़ी तमाम सामान लोगों में तक़्सीम कर दिया हत्ता कि इफ़्तार के लिए भी कुछ न छोड़ा।

जब इफ़्तार का वक़्त आया तो ख़ुदाए तआला की जानिब तवज्जोह की और अर्ज़ किया कि ख़ुदाया! अपने अह्लो अयाल तुझे सौंपे। तू ही उन्हें रिज़्क़ देगा।" आवाज़ सुनी कि ऐ उलू दैनूरी तुम हमारे हुज़ूर में रहो। तुम्हारे अह्लो अयाल को हम जानें।" शैख़ क़िबला रुख़ बैठे थे कि आपका बेटा आया और आपका दोशे मुबारक पकड़ कर कहा कि ऐ वालिद बुज़ुर्गवार! कोई शख़्स खाने का तबाक़ सर पर रखे दरवाज़े पर खड़ा है। शैख़ ने फरमाया जाओ उसे बुला लाओ। लड़का गया और उसे बुला लाया। आने वाले ने वह तबाक़ आपके सामने रखा और अर्ज़ किया कि फरमान हुआ है कि तुम्हारे अह्लो अयाल सब हमारे गुलाम और कनीज़ हैं। तुम उनका ग़म मत करो। मैं उन्हें अपने ख़ज़ाने से बाफ़रागत रिज़्क़ दूंगा। तुम हमारे काम में मसरूफ़ रहो। शैख़ ने जब यह बशारत सुनी तो बइत्मीनाने क़ल्ब ख़ुदाए तआला की इबादत में मशग़ूल हो गये। रोज़ाना कई-कई बार ख़ौफ़े इलाही से रोते और बेहोश हो जाते। जब होश में आते अर्ज़ करते ख़ुदाया बेचारा उलू दैनूरी गुनहगार है अगर जला देगा तो कोई ताक़त (सरताबी की) नहीं रखता, ख़्वाजा ख़िज़्र अलैहिस्सलाम कभी-कभी ख़्वाजा उलू दैनूरी की मुलाक़ात को आते। एक रोज़ आपने ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से पूछा कि ऐ ख़्वाजा! मैं मुजाहिदा और रियाज़त करके ख़ुद को इश्क़ में जिलाता हूं मगर यह नहीं जानता कि अंजाम कार क्या होगा? ख़्वाजा ख़िज़्र ने कहा कि ख़ातिर जमा रखिए आपमें सारे नेक बख़्ती के आसार हैं। अल्लाह तआला जिसे अपनी महबूबी के लिए चुनता है उसके दिल में ख़ुदा का ख़ौफ़ बैठ जाता है लेकिन आप किसी दुर्वेश की सोहबत में रहें, ताकि उसकी सोहबत की बरकत से आपके दीनी काम संवर जाएं, अन्जाम बख़ैर हो और शैतान मरदूद के मकर से महफ़ूज़ हैं।" दरयाफ़्त किया कि उस वक़्त शैख़े कामिल कौन है? ख़्वाजा ने फरमाया कि उस वक़्त हुबैरा बसरी दुर्वेशे कामिल हैं कि अपने कमालात का दुनिया में जवाब नहीं रखते।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

उलू दैनूरी इस बशारत के मुवाफ़िक़ ख़्वाजा हुबैरा बसरी के आस्ताने पर हाज़िर हुए और सर ज़मीन पर रखा। शैख़ हुबैरह बसरी ने ख़्वाजा उलू दैनूरी पर नज़र डाली और फ़रमाया कि आओ ऐ उलू दैनूरी! तुम्हारा काम हमेशा बुलन्द व रौशन रहेगा। मैंने ख़ुदाए तआला से दुआ की है कि तुम मेरी जगह बैठो और मख़्लूक़ को बैअत करो।" चुनांचे शैख़ उलू दैनूरी, ख़्वाजा हुबैरा बसरी के मुरीद हो गये। शैख़ ने फ़रमाया ऐ उलू दैनूरी ख़िदमत में बैठो और ला इलाहा इल्लल्लाह का जिस क़द्र हो सके, ज़िक्र करो। आप गोशा नशीन हो कर ज़िक्रे ला इलाहा इल्लल्लाह में मशग़ूल हो गये। यहां तक कि आपके सामने कोई हिजाब न रहा और आसमान से लेकर तहतुस्सरा तक हर चीज़ आप पर मुंकशिफ़ हो गई। आपने यह कैफ़ियत ख़्वाजा हुबैरा बसरी के सामने अर्ज़ की। ख़्वाजा ने फ़रमाया कि अभी तुम्हारा मक़ाम और बुलन्दी पर है यह तो मुब्तदियों का मक़ाम है। अर्श से तहतस्सुरा तक देख लेना तो आसान काम है जब कि दुर्वेश का मतलूब व मक़्सूद अर्श व फ़र्श का ख़ालिक़ है। नीज़ फ़रमाया कि जब मेरी नज़र अर्श पर पड़ती है तो मेरा दिल चूर–चूर हो जाता है कि ख़ुदाया! मैं तो तुझे चाहता हूं और तू मुझे अर्श व कुर्सी दिखाता है। दुर्वेशी नबियों और वलियों का काम है।

उसके बाद फ़रमाया ऐ उलू दैनूरी! ताज़ा वुज़ू कर लो। जब आपने वुज़ू कर लिया तो शैख़ हुबैरा बसरी ने शैख़ उलू दैनूरी का हाथ पकड़ा और कहा कि ख़ुदाया! उलू दैनूरी का कमाल दुर्वेशी के मक़ाम पर पहुंचा।" शैख़ उलू दैनूरी बेहोशी हो गये। कुछ साअत बाद होश आया। फिर बेहोश हो गये। फिर होश आया और इसी तरह चालीस मरतबा बेहोश हुए और होश में आए। ख़्वाजा हुबैरा ने अपना लुआबे दहने मुबारक उलू दैनूरी के मुंह में डाला। फ़ौरन होश में आ गये। उस वक़्त ख़्वाजा ने पूछा कि ऐ उलू दैनूरी अपने मतलूब व मक़्सूदे दिल व जान का मुलाहिज़ा किया और मक़ामे दुर्वेशी को देखा। उलू ने सर ज़मीन पर रखा और अर्ज़ किया। "ख़ुदा की क़सम मैंने तीस साल मुजाहिदा और रियाज़त में गुज़ारे मगर उस ख़ज़ान–ए–सआदत की ख़ुशबू भी न पाई। सिर्फ़ आपकी सोहबते पाक की बरकत से मैं उस ख़ज़ान–ए–सआदत तक पहुंचा हूं।" हज़रत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

ख़्वाजा ने गलीम दुर्वेशी का ख़िरक़ा, उलू दैनूरी को ख़िलाफ़त के पहनाया और फरमाया ऐ उलू दैनूरी अब दुर्वेशी का सिक्का तुम्हारे नाम से जारी, तुम्हारा नाम दुर्वेशों के दफ़्तर में लिखा जा चुका है। मख़्लूक़ की हिदायत करो। शरीअत, तरीक़त और मारिफ़त का रास्ता उन्हें दिखलाओ। और तालिबों को उनके मतलूब तक पहुंचाओ।

शैख़ उलू दैनूरी अह्ले सिमा थे। अपने मुर्शिदाने बरहक़ का उर्स करते और उर्स के रोज़ सिमा सुनते। लोगों ने पूछा कि हज़रत शैख़ उर्स के रोज़ सिमा सुनते हैं उसमें क्या राज़ है? शैख़ ने फरमाया कि हमारे पैग़म्बरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अली मुर्तज़ा नीज़ हमारे मशाइख़ ने सिमा सुना है। आज उर्स का रोज़ है। आज हमारे मशाइख़ को विसाले हबीब, नसीब हुआ है। कि "मौत एक पुल है जो हबीब को हबीब तक पहुंचाता है।" हम अपने मशाइख़ के उस विसाल की ख़ुशी में सिमा सुनते हैं। कि जिस तरह विसाले दोस्त ने उनकी दस्तगीरी की। हो सकता है कि उनके सदक़ा में हमारी भी दस्तगीरी करे।"

नवीं सैर ख़्वाजा अबू इस्हाक़ शामी क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू के बयान में। आप ख़्वाजा उलू दैनूरी के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं। सिमा के अह्ले थे। सिमा बहुत सुनते और कोई शख़्स आप पर एतराज़ न कर सकता था। उस दौर में मुज्तहेदीन बकसरत थे। लेकिन उन में से जो शख़्स शैख़ अबू इसहाक़ का सिमा देखता यही कहता कि ऐसा सिमा मुबाह है। आपके कैफ़ का आलम यह था कि जब मज्लिसे सिमा में तशरीफ़ लाते तो तमाम हाज़िरीने मज्लिस पर वज्द तारी हो जाता और तमाम दरो दीवार में हरकत व जुंबिश सी महसूस होने लगती। लुत्फ़ यह है कि जो शख़्स आपकी मज्लिसे सिमा में हाज़िर होता फिर वह हरगिज़ किसी गुनाह के क़रीब न फटकता। हज़रत ख़्वाजा किसी अमरद (नौ उम्र व नौख़ेज) और दुनियादार को मज्लिस में न आने देते। अगर कोई दौलतमन्द, ख़्वाजा की इजाज़त के बेग़ैर इत्तिफ़ाक़न मज्लिसे सिमा में आ जाता तो फौरन तौबा कर लेता। दुनियावी साज़ो सामान फ़क़ीरों पर लुटा देता और साहबे मारिफ़त दुर्वेश और अह्ले नेमत हो जाता। ख़्वाजा अबू इस्हाक़ जब सिमा सुनना चाहते तो तीन रोज़ पहले

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

क़व्वालों को ख़बर कर देते और अहबाब से फरमाते तैयार हो जाओ हम सिमा सुनेंगे। आपके बाज़ अहबाब दो रोज़ मुतवातिर। और बाज़ तीन रोज़ पै दर पै रोज़े रखते। और तमाम क़व्वाल खुद को बुरी बातों से बचाए रहते। उसके बाद ख़्वाजा सिमा सुनते।

नक़्ल है कि एक मरतबा बारिश न हुई। ख़लीफ़ा ने आपकी जानिब तवज्जोह की और अर्ज़ किया कि खुदा से दुआ कीजिए ताकि बारिश हो। ख़्वाजा ने फरमाया कि क़व्वालों को हाज़िर करो। जब हम पर सिमा का कैफ़ ग़ालिब और हमारी आंखों से पानी जारी होगा उसी वक़्त बारिश भी होगी। ख़लीफ़ा ने फौरन क़व्वालों को बुलाया। ख़्वाजा ने फरमाया ऐ ख़लीफ़ा! तुम वापस जाओ। ख़लीफ़ा लौट गया। फरमाया कि सिमा शुरू हो। जब सिमा शुरू हुआ तो आप पर कैफ़ियत तारी हुई और आंसू रवां हुए और वज्द में आए, उसी वक़्त बारिश शुरू हो गई।

ख़्वाजा अबू इस्हाक़ हमेशा रियाज़त में मशग़ूल रहते। सात रोज़ के बाद रोज़ा इफ्तार करते और तीन छोहारे खाते नादिर तौर पर कभी तीन लुक़्मे खाना खा लेते तो फरमाते कि हमें जो लज़्ज़त भूक में आती है किसी चीज़ में नहीं आती। भूख प्यास को बरदाश्त करना और (बेज़रूरत लिबास से) उरियां रहना, अंबिया व औलिया का मामूल है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशादे गिरामी है कि अपने पेटों को भूखा, जिगरों को प्यासा, और बदनों को बेलिबास रखो। गुमाने ग़ालिब है कि दीदारे इलाही (की दौलत) पा सकोगे।" ख़्वाजा अबू इस्हाक़ ने जब उलू दैनूरी का मूरीद होना चाहा तो चालीस रोज़ तक इस्तिख़ारा किया और अर्ज़ किया खुदाया अबू इस्हाक़, शैख़ उलू दैनूरी का मुरीद होना चाहता है। आवाज़ आई कि ऐ अबू इस्हाक़! उलू दैनूरी हमारा दोस्त है मुरीद हो जाओ और उनकी खिदमत में रहो। ख़्वाजा इस्हाक़, ख़्वाजा उलू दैनूरी के आस्ताना पर आए और क़दमबोसी की। शैख़ ने फरमाया ऐ अबू इस्हाक़! दुर्वेशी कारे अज़ीम है इसलिए कि दुर्वेश अल्लाह और उसके रसूल का दोस्त होता है। ख़्वाजा ने अर्ज़ किया कि बन्दा मख़्दूम की खिदमत में हाज़िर आया और उनकी नज़र

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

में समाया है उम्मीद है दुर्वेश भी हो जाएगा। शैख़ ने ख़्वाजा को अपनी आग़ोश में लिया और फरमाया कि ऐ अबू इस्हाक़ खुदाए तआला से दुआ है कि तुम और तुम्हारी औलादे कामिल दुर्वेश बन जाएं और जो शख़्स तुम्हारा और तुम्हारे फ़रज़न्दों का मुरीद हो वह अह्ले नेमत हो जाए। चुनांचे ख़्वाजा अबू इस्हाक़ बैअ़त हो कर आपके मुरीद हो गये।

जब मुरीद हो चुके तो शैख़ उलू दैनूरी ने फरमाया कि अबू इस्हाक़! तुम्हें चाहिए कि फ़ुक्र व फ़ाक़ा को दोस्त रखो और दुनिया को कबूल न करो। कि हमारे मशाइखे़ दुनिया और दुनियादारों से हमेशा ला तअल्लुक़ रहे। ख़्वाजा ने मुर्शिद की नसीहत क़बूल की। फिर शैख़ ने फरमाया ऐ अबू इस्हाक़! गोशा नशीन हो कर ज़िक्र ला इलाहा इल्लल्लाह में मसरूफ़ हो जाओ। कि हमारे मुर्शिदों ने इस ज़िक्र को महबूब और अपना हमेशा का मामूल बनाया है।" अल–क़िस्सा सात साल तक आप ख़ल्वत में यह ज़िक्र करते रहे तो हातिफ़ ने आवाज़ दी कि ऐ उलू दैनूरी! अबू इस्हाक़ ने अपना काम बहुस्ने तदबीर अंजाम दिया। और हमारी बारगाह के लिए खुद को संवार लिया। हमनें उन्हें पसन्द किया और मक़्बूल बनाया। अबू इस्हाक़ को दुर्वेशी का ख़िरक़ा पहनाओ और अपना जानशीन बनाओ और तुम हमारे क़ुर्ब में आ जाओ।" ख़्वाजा उलू दैनूरी ने ख़िरक़ा ख़िलाफ़त, अबू इस्हाक़ को पहनाया और फरमाया कि "तुम मेरे फरज़न्द हो। मैं तुम्हें बहुत चाहता हूं। तुम्हें भी चाहिए कि हमारे मक़ाम का एहतराम करो और हमारे मशाइख़ का चिराग़ रौशन रखो।"

दसवीं सैर ख़्वाजा क़ुदवतुद्दीन अबू अहमद फरशाना क़दिसल्लाहु रूहहू के बयान में। आप हज़रत ख़्वाजा अबू इस्हाक़ शामी के मुरीद व ख़लीफ़ा हैं। आप कामिल बुज़ुर्ग थे और रियाज़त और मुजाहिदा बहुत करते थे जिस पर नज़रे करम डालते वह साहबे करामत और दुर्वेश हो जाता। नक़्ल है कि ख़्वाजा अबू अहमद एक रोज़ ऐसे जंगल में पहुंचे जहां काफिर रहते थे। वह मुसलमान को रास्ते में देख पाते तो कहते कि मुसलमान कहते हैं। "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहने वालों को हरगिज़ दोज़ख़ की आग न छूएगी।" हम तुझे दुनिया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सच्ची किताब घर

को आग में डालते हैं। अगर उस आग ने तुझे न जलाया तो हम जानेंगे कि यह बात सच्ची है वरना यक़ीन करेंगे कि मुसलमान, झूठ कहते हैं। कहते हैं कि वह इम्तिहान के बहाने रोज़ाना कई मुसलमानों को जला देते। जब ख़्वाजा कुदवतुदीन अबू अहमद चिश्ती उस मक़ाम पर पहुंचे तो काफ़िरों ने उन्हें पकड़ लिया और कहा कि "ला व उज्जा की क़सम हम तुम्हें आग में डालेंगे। अगर तुम्हें दुनिया की आग न जलाएगी तो हमें यक़ीन आ जाएगा कि तुम्हें दोज़ख़ की आग भी न जलाएगी इसलिए कि तुम ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदर्रसूलुल्लाह कहते हो। ख़्वाजा ने फरमाया कि खुदा की क़सम दोज़ख़ की आग कलिमा तैय्यबा पढ़ने वाले पर हरगिज़ क़ाबू न पाएगी। यह ख़ास कर ढीट गुनहगारों, मुश्रिकों और बुत परस्तों के लिए पैदा की गई है।" उन काफिरों ने कहा तो फिर उस आतिश कदह में चलो। ख़्वाजा फौरन उस आतिश कदह में दाख़िल हुए और मुसल्ला बिछा कर नमाज़ में मशग़ूल हो गये। वह भड़कती हुई आग बिल्कुल ठन्डी पड़ गई और काफिर उसमें जितना तेल डालते थे मगर वह बुझती ही चली जाती थी। काफिरों ने जब यह यक़ीनी दलील देखी तो उस क़बीला के तमाम आदमी, मर्द और औरत जो लातादाद थे मुसलमान हो गये। उनमें से बाईस नफर, हज़रत ख़्वाजा की ख़िदमत व मुलाज़िमत में रहे और उनमें से हर एक वली अल्लाह हुआ और उन पर अर्श से लेकर तहतुस्सुरा तक तमाम चीज़ें मुंकशिफ़ हो गईं।

एक रोज़ ख़्वाजा अबू अहमद दजला के किनारे पहुंचे। आपके हमराह उन्नासी आदमी थे। कश्ती मौजूद न थी। ख़्वाजा के हुक्म से तमाम अश्ख़ास हल्क़-ए-ज़िक्र, बांध कर पानी पर चल दिए और उनके पांव के तल्वे भी तरना न हुए। चौबीस काफिरों ने देखा कि ख़्वाजा अपने साथियों समेत पानी पर चल रहे हैं उनमें से हर एक ने आवाज़ दी कि ऐ शैख़ हमें रास्ता दिखलाइए और अपनी बाबरकत सोहबत में जगह दीजिए। ख़्वाजा दरिया के उस किनारा पर थे और काफिर दूसरे किनारे पर। ख़्वाजा ने फरमाया कि सिद्क़ और ख़ुलूस के साथ, ख़्वाजा अबू अहमद चिश्ती का नाम लो और चले आओ। उन लोगों ने

https://t.me/AhleSunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

यही किया। सलामती से उस पर पहुंचे और मुसलमान हो गये। ख़्वाजा ने फरमाया कि "ऐ दरगाहे ख़ुदावन्दी के मक़्बूल बन्दो! मैंने ख़ुदाए तआला से यह दुआ मांगी है कि तुममें से हर एक, अह्ले नेमत दुर्वेश हो जाए।" चुनांचे उनमें से हर एक, नामवर, साहबे विलायत और अह्ले कश्फ़ व मुकाशिफ़ा दुर्वेश हुआ।

हज़रत ख़्वाजा हमेशा ख़शीयते इलाही से रोते रहते। लोगों ने अर्ज़ किया कि ऐ ख़्वाजा जिस शख़्स पर आपकी नज़र शरीफ़ पड़ जाती है वह वली अल्लाह हो जाता है आप इस क़द्र क्यों रोते हैं। ख़्वाजा ज़ार व क़तार रोने लगे और फरमाया बरसीसा बड़ा नामी गिरामी बुज़ुर्ग था। जिस पर नज़र डालता ख़ुदा तक पहुंचा देता। नागाह ख़ुदाए क़ह्हार का तीरे क़ज़ा उसे लगा और वह दुनिया से बेईमान रुख़्सत हुआ। बल्अम वली अल्लाह और मुस्तजाबुद्दावात था। उसकी दुआ की बरकत से हज़ारों ने दोज़ख़ की आग से नजात पाई मगर उस पर क़हरे ख़ुदावन्दी का कोड़ा पड़ा और उसका ईमान सल्ब हो गया। दोनों नामवरों का वाक़या मशहूर है। पस ऐ भाई! दोस्तों का रोना उसकी क़ह्हारी और ख़्यारी के ख़ौफ़ से है कि किसी को उसकी बारगाहे बेनियाज़ में मजाले चूं व चरा नहीं।

ख़्वाजा अबू अहमद कलामे रब्बानी के हाफ़िज़ थे। आपको इल्म में कमाल हासिल था। ख़्वाजा सिर्री सक़्ती उन से मुलाक़ात के लिए अक्सर आते जाते रहते। ख़्वाजा अबू अहमद की मज्लिसे सिमा में ख़्वाजा सिर्री सक़्ती आ जाते तो फरमाते कि "ख़्वाजा अबू अहमद इस मक़ाम पर फाइज़ुल–मराम हो कर सिमा सुनते हैं कि अगर जगह से कोई आवाज़ पैदा हो तो सिर्री सक़्ती के अहवाल की दस्तगीरी करे और दौलते अज़ीम से उसे हासिल हो।

उस ज़माना में मुज्तहेदीन में से कोई मुज्तहिद ख़्वाजा अबू अहमद के सिमा पर इंकार न करता मगर एक मुज्तहिद फ़ुज़ैल मक्की कहते कि सिमा मुतलक़न न सुनना चाहिए। किसी ने यह बात शैख़ अबू अहमद चिश्ती तक पहुंचाई। शैख़ ने फरमाया कि ख़ुदाया तू ढकी छुपी बातों का जानने वाला है अगर अबू अहमद, कोई बिदअत करता है तो उसे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सज़ा दे। वरना फ़ुज़ैल मक्की को अदब (की तौफ़ीक़) दे।" उसी वक़्त दुर्ब हवा का तेज़ झोंका फ़ुज़ैल मक्की पर गुज़रा कि उनकी नाक बैठ गई और फुँसी हो गई। अतिब्बा जितना इलाज करते, फ़ुज़ैल मक्की का मरज़ उतना ही बढ़ता। मक्की ने ख़ुदाए अज़्ज़ा व जल्ल की जानिब तवज्जोह की। एक रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा तो अर्ज़ किया कि आक़ा दुआ फ़रमाइए कि मुझे यह फुंसी की तक्लीफ़ जाती रहे।" आपने इरशाद फ़रमाया तुम शैख़ अबू अहमद के सिमा का इंकार करते हो। और उसके सिमा का इंकार, उसके मशाइख़ के सिमा का इंकार है। और उनके मशाइख़ के सिमा का इंकार, हमारे सिमा का इंकार है। और जो शख़्स मशाइख़े दीन व मिल्लत और हमारा इंकार करता है यही देखता है जो तुमने देखा। अगर इस मुसीबत से ख़ुलासी चाहते हो तो अबू अहमद की मज्लिसे सिमा में, सिद्क़े दिल से हाज़िर हो जाओ।" मक्की अबू अहमद की मज्लिसे सिमा में हाज़िर हुए और सिमा का इंकार दिल से दूर किया। फ़ौरन ही जैसे थे वैसे ही तन्दुरुस्त हो गये। जब शैख़ सिमा से फ़ारिग़ हुए और उनकी नज़र फ़ुज़ैल मक्की पर पड़ी तो फ़रमाया कि उसे फ़ुज़ैल! सिमा और अह्ले सिमा के मक़ामात को देखा? कहा कि हां देखा और रू–ब–रू देखा। जो सिमा हज़रत का मामूल है। वह ख़ालिक़े काइनात तबारक व तआला के असरार में है। (हम जैसे) अवामुन्नास को उस पर इत्तिला नहीं।"

ख़्वाजा अबू अहमद सात साल की उम्र में मज्ज़ूब हो गये थे। एक रोज़ अबू इस्हाक़ शामी की मज्लिसे सिमा में हाज़िर थे कि ख़्वाजा अबू इस्हाक़ ने फ़रमाया आओ ऐ अबू अहमद चिश्ती आशिक़ों के सिमा में शरीक हो जाओ कि तुम अह्ले सिमा हो।" (यह अल्फ़ाज़ कान में पड़ते ही) हिजाब दूर हो गया। अर्श से लेकर तहतुस्सुरा तक नज़र में आ गया और इल्मे लदुन्नी हासिल हो गया। ख़्वाजा अबू अहमद चिश्ती सात साल की उम्र में जो बातें बयान करते, उसे सुन कर उस ज़माना के उलमा को हैरत होती। आप तेरह साल की उम्र में ख़्वाजा अबू इस्हाक़ शामी के मुरीद हुए और गोशा नशीन हो कर ज़िक्रे ला इलाहा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

इल्लल्लाह में मसरूफ़ हो गये। इसी हालत पर जब दस साल गुज़र गये तो ख़्वाजा अबू इस्हाक़ शामी ने ख़्वाजा अबू अहमद चिश्ती को खिलाफ़त अता की अपना जानशीन बनाया और फ़रमाया कि ऐ अबू अहमद! तुम मेरे फ़रज़न्द की जगह हो। मुझे जो नेमते मशाइख़ से मिली थी वह सब मैंने तुमको दी।" फिर अबू अहमद का हाथ पकड़कर किबला रू खड़े हुए और अर्ज़ किया कि खुदाया अबू इस्हाक़ चिश्ती जो नेमत रखता था वह अबू अहमद चिश्ती को दी और उसे तेरे हवाला किया। रोज़ बरोज़ उनके दरजों में तरक़्क़ी अता फ़रमा।" आवाज़ सुनी कि हमने अबू अहमद को अपना दोस्त बनाया और ख़ज़ीन-ए-इरफ़ान और असरारे मारेफ़त उनके दिल में रखे। जो शख़्स अबू अहमद चिश्ती की सोहबत में रहेगा वह भी हमारा दोस्ता होगा।

असरारे मुहब्बत का हर दिल क़ाबिल नहीं होता कि न हर दरिया में मोती होता है और न हर कान में सोना।

ग्यारहवीं सैर ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू मुहम्मद चिश्ती कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू के बयान में। आप ख़्वाजा कुदवतुद्दीन अबू अहमद चिश्ती के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं।

नक़्ल है कि ख़्वाजा अबू मुहम्मद अभी मां के पेट ही में थे कि अह्ले नेमत हो गये। उनकी वालिदा फ़रमाती हैं कि अबू मुहम्मद चार महीने के मेरे पेट में थे कि तहज्जुद के वक़्त मेरे पेट में हरकत करते और मेरे पेट से मेरे कान में ज़िक्र ला इलाहा इल्लल्लाह की आवाज़ आती।" शैख़ अबू अहमद चिश्ती ने फ़रमाया कि जिस रात अबू मुहम्मद पैदा हुए मैंने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा कि आप फ़रमा रहे हैं कि ऐ अबू अहमद! तुम्हें बशारत हो। आज तुम्हारे मुरीदों में से एक मुरीद दुनिया में पैदा होगा उसका नाम मुहम्मद चिश्ती है। वह पैदाइश के वक़्त सात मरतबा ज़ोर से ला इलाहा इल्लल्लाह कहेगा जिसे तमाम हाज़िरीने मज्लिस सुनेंगे। तुम उन्हें रोज़ाना देखने जाना और कहना कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुम्हें सलाम फ़रमाया है नीज़ यह कि तुम हमारे हमनाम हो।" ख़्वाजा अहमद बेदार हो गये कि इतने में शैख़ मुहम्मद चिश्ती की वालिदा की तरफ़ से एक

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

आदमी आया और ख़बर दी कि इसी साअत और उसी वक़्त एक लड़का पैदा हुआ है जिसने पैदा होते ही, तमाम हाज़िरीन के रू-ब-रू, ज़ोर से सात मरतबा ला इलाहा इल्लल्लाह कहा।" शैख़ अबू अहमद चिश्ती ने फ़ौरन वुज़ू किया और शैख़ मुहम्मद चिश्ती के मकान पर तशरीफ़ लाए। शैख़ मुहम्मद की वालिदा ने आपको शैख़ अहमद के पास भेजा। अबू अहमद चिश्ती ने कहा "अस्सलामु अलैका या मुहम्मद वली अल्लाह।" शैख़ मुहम्मद चिश्ती ने कहा "व अलैकस्सलामु या शैख़ अबू अहमद चिश्ती।" आज रात का ख़्वाब बयान कीजिए।" शैख़ अबू अहमद ने शैख़ मुहम्मद को मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सलाम पहुंचाया। शैख़ मुहम्मद चिश्ती ने जूं ही पैग़म्बर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का नाम सुना तो कहा।

शैख़ मुहम्मद चिश्ती रोज़ाना चन्द मरतबा हंसते। आपकी वालिदा ने हंसने का वाक़या ख़्वाजा अबू अहमद से अर्ज़ किया। ख़्वाजा ने फरमाया कि शैतान मल्ऊन की यह आदत है कि चन्द मरतबा छोटे बच्चों का कान मसल देता है। और वह रो पड़ते हैं? मगर जब शैतान तुम्हारे बच्चे के क़रीब आता है तो फ़रिश्ता तमांचा मार कर निकाल देता है। तुम्हारा बच्चा को मादरज़ाद सईद है उसे देखता और हंसता है।

नक़्ल है कि शैख़ मुहम्मद चिश्ती दस मुहर्रम की सुबह को पैदा हुए। आपने दूध न पिया अगरचे औरतों ने मुंह में बहुत मरतबा दूध डाला मगर आपने न लिया। लोगों ने यह वाक़या ख़्वाजा अबू अहमद से अर्ज़ किया। आपने फरमाया कि उसने आज आशूरा का रोज़ा रखा है। और दोस्ताने ख़ुदा की मुवाफ़िक़त की है।"

जब आप सत्तरह बरस के हुए तो शैख़ अबू अहमद ने आपको मुरीद कर लिया और फरमाया कि तुम्हें चाहिए कि फ़ुक़्र व फ़ाक़ा इख़्तियार करो। ग़रीबों, मिस्कीनों से मुहब्बत रखो और दुनियादारों की सोहबत को बलाए अज़ीम जानो। हमारे तमाम मशाइख़ फ़क़ीर (दुनिया से ला तअल्लुक़) गुज़रे हैं और वह फ़क़ीरों से मुहब्बत करते थे।"

बैअत के बाद बारह साल तक आप हुजरा में मस्रूफ़े इबादत रहे। सात दिन के बाद एक तर खुजूर से इफ़्तार करते। शैख़ मुहम्मद चिश्ती

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

के ज़माना में चिश्त में कोई काफ़िर न था। बल्कि बाहर से जो काफ़िर चिश्त में आता वह भी मुसलमान हो जाता। शैख़ अबू अहमद ने बारह साल के बाद शैख़ मुहम्मद को ख़िलाफ़त का ख़िरक़ा पहनाया। शैख़ मुहम्मद का हाथ पकड़ कर क़िबला रू खड़े हुए और अर्ज़ किया कि इलाही शैख़ मुहम्मद को मैंने ख़िरक़ा दुर्वेशी पहना दिया है। उसे दीन के काम में इस्तिक़ामत बख़्श और कल क़्यामत में मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हमारे तमाम मशाइख़ के सामने सुर ख़ुरू फ़रमा।" एक आवाज़ सुनी कि ख़ातिर जमा रखो। हमने तुम्हारी दुआ क़बूल की। कल क़्यामत में मुहम्मद चिश्ती को मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हमराह बहिश्त में दाख़िल फ़रमाएंगे। और चूंकि मुहम्मद चिश्ती हमारे दोस्तों में से हैं लिहाज़ा कोई मुहम्मद चिश्ती को दोस्त रखेगा उसे भी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे।" और चूंकि मुहम्मद चिश्ती हमारे दोस्तों में से हैं लिहाज़ा कोई मुहम्मद चिश्ती को दोस्त रखेगा उसे भी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे।" जब शैख़ अहमद ने यह बशारत पाई तो बहुत खुश हुए और शैख़ मुहम्मद से कहा कि दुर्वेशी अंबिया व औलिया अल्लाह के शायाने शान है। इस मक़ाम पर सिवाए मर्दे सिदीक़ के कोई और नहीं बैठ सकता।

बारहवीं सैर ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू यूसुफ़ चिश्ती क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू के बयान में। आप ख़्वाजा मुहम्मद चिश्ती के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं। ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू यूसुफ़ चिश्ती की सोहबते बाबरकत में जो शख़्स तीन रोज़ रह जाता वह साहबे कश्फ़ व करामात दुर्वेश और मरज्जा ख़लाइक़ हो जाता। और अर्श से लेकर तहतुस्सरा तक उसकी नज़र पहुंच जाती। आपके मुरीदों और मोतक़िदों में से कोई भी दुनिया के गिर्द न फटकता। शैख़ शिबली, शैख़ जुनैद बग़दादी क़ुद्दिसा सिर्रुहुमा के मुरीद, ख़्वाजा नासिरुद्दीन की मुलाक़ात को आते और जब आप ख़्वाजा नासिरुद्दीन का चेहरा देखते तो वज्द की सी कैफ़ियत में आ जाते। लोगों ने पूछा क्या वजह है कि जब आप ख़्वाजा नासिरुद्दीन का चेहरा देखते हैं वज्द में आ जाते हैं।" फ़रमाया कि जो चीज़ में ख़्वाजा नासिरुद्दीन की पेशानी में देखता हूं अगर तुम उसे देख पाओ

https://t.me/AhlesunnatHindiBooks
Scanned with CamScanner

रज़वी किताब घर

तो बेताब व बेक़रार हो जाओ। ख़्वाजा इल्म में कामिल थे। आप शैख़ चिश्ती के पास गये तो शैख़ मुहम्मद ने फ़रमाया कि ऐ शैख़ नासिरुद्दीन! ख़ुदा की मारिफ़त वह इल्म है कि अल्लाह अ़ज़्ज़ा व जल्ला की तालीम व तौफ़ीक़ के बेग़ैर, अक़्ले इंसानी उसे नहीं पा सकती। ख़्वाजा नासिरुद्दीन को इल्म में बड़ा उबूर था। आपने कोई बात पूछी तो शैख़ मुहम्मद चिश्ती ने उसके सात सौ जवाबात दिए। अब ख़्वाजा ने अपने आपको शैख़ मुहम्मद के मुक़ाबिल उस बच्चा की तरह पाया जो हुरूफ़े तहज्जी की पहली तख़्ती पढ़ता हो बल्कि उस से भी कम। और अर्ज़ किया कि बन्द–ए–नाचीज़ नासिरुद्दीन की यह ख़्वाहिश है कि वह हज़रत मख़्दूम के मुरीदों की लड़ी में मुंसलिक हो जाए।" मख़्दूम ने क़ुबूल फ़रमाया और मुरीद कर लिया। फिर फ़रमाया कि ऐ नासिरुद्दीन! सात बार मेरा नाम लो और ज़मीन की तरफ़ देखो। फिर सात मरतबा मेरा नाम लो और आसमान की तरफ़ नज़र उठाओ।" आपने ऐसा ही किया तो आपकी नज़र तहतुस्सरा और बालाए अर्श तक पहुंची।

उसके बाद शैख़ मुहम्मद ने इस्मे आज़म जो हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से पाया था। शैख़ नासिरुद्दीन को सिखाया। आपने जैसे ही उसे याद किया इल्मे लदुनी हासिल हो गया और तौरेत व इंजील व ज़बूर व फ़ुरक़ान और अंबियाए किराम के सहीफ़े याद हो गये। शैख़ मुहम्मद ने फ़रमाया कि तुम्हें चाहिए कि फ़ुक़्र व फ़ाक़ा इख़्तियार करो कि यह अंबिया और औलिया अल्लाह का तरीक़ा है। और तमाम दुर्वेशों के सरताज मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। आपके घर में जो फ़ुक़्र था किसी पैग़म्बर के घर में न था और हमारे तमाम मुर्शिदाने किराम फ़ुक़रा थे और फ़ुक़रा से मुहब्बत करते थे।" ख़्वाजा नासिरुद्दीन ने शैख़ की नसीहत क़बूल की और गोशा नशीन हो कर ज़िक्र ला इलाहा इल्लल्लाह में मशग़ूल हो गये। चौदह साल तक आपका शुग़ल ज़िक्रे ला इलाहा इल्लल्लाह रहा। तीन चार रोज़ों के बाद आप तीन लुक़्मे खाने से इफ़्तार करते। किसी दुनियादार को देखते तो आपका चेहरा मुतग़ैयर हो जाता और फ़रमाते कि मेरे दिमाग़ तक मुरदार दुनिया की बू पहुंच चुकी है। इबादत में हुज़ूरी नहीं पाता। उस दुर्वेश पर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अफसोस कि दुर्वेशी इख्तियार करे और दुनिया वालों के साथ उठे बैठे। मुश्क और हींग बाहम जमा नहीं होते और अगर यकजा होते हैं तो मुश्क की खासियत जाती रहती है।" लोगों ने अर्ज़ किया कि रसूल अलैहिस्सलातु वस्सलाम तो दुनियादारों से इस क़द्र परहेज़ न फ़रमाते थे आप क्यों इतना गुरेज करते हैं? फरमाया कि रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मासूम हैं। आपको दुनियादारों की सोहबत से कोई नुक्सान न था और हम मासूम नहीं बल्कि गुनाहगार हैं और लाचार। हमें उनकी सोहबत से नुक्सान का सही अन्देशा है।

शैख मुहम्मद ने चौदह साल गोशा नशीनी के बाद आपको खिरकए खिलाफत पहनाया और अपना जानशीन बनाया।

तेरहवीं सैर ख़्वाजा कुतबुद्दीन मौदूद चिश्ती कुद्दिसल्लाहु रूहहू के बयान में। आप ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू यूसुफ़ चिश्ती के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं। ख़्वाजा कुतबुद्दीन मौदूद, नामवर बुज़ुर्ग, आरिफ़े कामिल, मुहर्रमे असरारे मारिफ़त, सरगरोह मुहक़्क़ेक़ीन और सरताजे औलियाए मुक़र्रेबीन व सालेहीन थे। आपकी ख़ानक़ाह में जो शख़्स तीन रोज़ रहता उसकी बिगड़ी बात बन जाती। खुदा के वलियों में का एक वली हो कर खुदाए तआला का कुर्ब हासिल कर लेता।

नक़्ल है कि जो शख़्स आपका मुरीद होता पहले ही रोज़ उसके दिल से मासिवा अल्लाह का हिजाब उठ जाता और अर्श से फ़र्श तक तजल्लियात के अनवार, उसकी नज़र में आ जाते। ख़्वाजा के मुरीदों में से हर एक साहबे नेमत होता। इल्म में आपको मलिका था। कोई हरकत व सुकून और क़ौल व फ़ेअ्ल बिला इजाज़त शरअ् न होता। इल्म में आपको मलिका था। कोई हरकत व सुकून और क़ौल व फ़ेअ्ल बिला इजाज़त शरअ् न होता। कोई काम करना चाहते तो पहले बारगाहे रब्बुल-इज़्ज़त की जानिब तवज्जोह करते। जो कुछ हातिफ़े ग़ैबी निदा करता उस पर कारबन्द होते। ख़्वाजा कुतबुद्दीन मौदूद के ज़माने में आपका मुमासिल कोई न था। सिमा बहुत सुनते और अक्सर सिमा के दौरान ग़ायब हो जाते। फिर आ मौजूद होते। किसी मर्द सूफ़ी ने पूछा कि उसमें क्या राज़ है कि कभी-कभी सिमा में हज़रत मख़्दूम गुम हो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...ते हैं। और फिर तशरीफ़ ले आते हैं।" फ़रमाया अभी तक तुम्हारी ...ज़र ज़ाहिर पर है चश्मे बातिन रौशन नहीं। अहले सिमा नूरे अस्वद के ...क़ाम तक पहुंच जाते हैं कि उस से बरतर कोई मक़ाम नहीं। और उस ...क़ाम पर ज़ाहिर बीनों की नज़रों से वह पोशीदा हो जाते हैं मगर ...क़ामे कुर्ब में हाज़िर रहते हैं। उन्हें सिवाए महबूब और महबूबाने महबूब के, कोई दूसरा नहीं देख सकता।"

कभी-कभी आप दौराने सिमा इतना रोते कि सीन-ए-मुबारक तर हो जाता और कभी-कभी (इतना) मुस्कुराते कि चेहरा सुर्ख़ हो जाता। एक दुर्वेश ने उन दोनों हालतों का राज़ दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया कि "यह मुशाहिदा जलाल व जमाल के आसार हैं और फ़िराक़ व विसाल का समरा।" फिर सिमा के इतने असरार हैं कि तक़रीर और बयान मे नहीं आ सकते। ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन जब शैख़ नासिरुद्दीन चिश्ती के मुरीद हुए तो फ़रमाया कि तुम्हें फ़ुक्र व फ़ाक़ा इख़्तियार करना चाहिए कि शाने दुर्वेशी की कुशादगी फ़ुक्र से है। फ़ुक्र जितना ज़्यादा होगा कारे दुर्वेशी की कुशादगी इसी क़द्र बढ़ कर होगी।

नक़्ल है कि ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन मौदूद बैअ़त के बाद बीस साल तक मुजाहिदा में रहे। पांच छः रोज़ के बाद इफ़्तार करते। उस वक़्त शैख़ नासिरुद्दीन चिश्ती ने आपको जाम-ए-ख़िलाफ़त इनायत किया और फ़रमाया कि ऐ शैख़ मौदूद! दुर्वेशी का ख़िरक़ा वही पहनता है जिसके नज़्दीक (मख़्लूक़ की) भलाई बुराई और क़बूलियत व अदमे क़बूलियत बराबर हो।" उसके बाद शैख़ नासिरुद्दीन ने जो इस्मे आज़म अपने मुर्शिदे शैख़ मुहम्मद चिश्ती से पाया था, शैख़ मौदूद को अता किया। आपने जैसे ही उस इस्म को याद किया इल्मे लदुनी मुंकशिफ़ हो गया और ख़ुदाए तआला के जितने उलूम इस दुनिया में औरों को हैं आपको हासिल हो गये। और तौरेत, इंजील, ज़बूर और फ़ुरक़ान के मज़मीन की आपने तशरीह फ़रमाई।

चौदहवीं सैर ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू के बयान में।

आप हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन मौदूद चिश्ती के मुरीद और ख़लीफ़ा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हैं। ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी हमेशा तन्हाई में रहते। तीन रोज़ के बाद बेग़ैर नमक सब्ज़ी के तीन लुक़्मों से इफ़्तार करते। आप का झूठा जो शख़्स खा लेता मज्ज़ूब हो जाता। आपकी नज़रे अक्सीरे नेमत थी जिस पर पड़ती वह साहबे नेमत हो जाता और अर्श से लेकर तहतुस्सरा तक सब उस पर मुंकशिफ़ हो जाता। आपकी उम्र शरीफ़ एक सौ बीस साल थी। चौदह बरस की उम्र से, आखिर उम्र तक सिवाए हाजते इंसानी के आपका वुज़ू न टूटा। आप हमेशा रोते रहते। अक्सर नारा लगाते और आह–आह करते। फिर बेहोश व नातवां हो जाते। चेहर–ए–मुबारका पर पानी छिड़का जाता तो होश आता। लोगों ने पूछा। "इतना रोना और आहें भरना किस लिए है? फ़रमाया कि जब मुझे आयते करीमा वमा ख़लक़्तुल–जिन्ना वल–इन्सा इल्ला लेयअ़बुदून याद आती है। मैं मदहोश और बेताक़त हो जाता हूं कि अल्लाह तआला ने तो हमें इबादत के लिए पैदा फ़रमाया है कि रात दिन उसकी परस्तिश करें और हम फुलां–फुलां में मुब्तला रहते है। मैं डरता हूं कि कल क़यामत में मुझे दुर्वेशों के सामने शर्मिंदा न किया जावे। और यह न कहा जाए कि हाजी शरीफ़ खुदाए तआला से दोस्ती का दम भरता था और मख़्लूक़ की तरफ़ भी माइल रहता था। इस क़िस्म की दोस्ती आशिक़ाने सादिक़ को ज़ैबा नहीं है। उन्हें बज़्मे उश्शाक़ में नहीं बैठने देते और ऐसा आदमी खिरक़ा के लाइक़ भी नहीं होता। खिरक़ा वह पहनता है कि उसके दिल में सिवाए अल्लाह और उसके महबूब के किसी और की मुहब्बत नहीं होती।

नक़्ल है कि जब हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी शैख़ मौदूद चिश्ती के मुरीद हो गये तो शैख़ मौदूद ने फ़रमाया ऐ हाजी! तुम मर्दे सआदतमन्द हो मैंने खुदाए तआला से दुआ की है कि तुम मेरी जगह बैठो, मख़्लूक़ को दस्ते बैअ़त में लो और तुम्हारे मुरीदों में से हर मुरीद, दुर्वेशों का पेशरू हो। जाओ और ख़ल्वत गुज़ी हो जाओ। ख़्वाजा ने अर्ज़ किया कि "पीर दस्तगीर"! ख़ल्वत में तो वह बैठता है जिसका क़ल्ब मुत्मइन हो। बन्दा में ख़ल्वत नशीनी की लियाक़त कहां। "शैख़ क़ुतबुद्दीन मौदूद ने वह इस्मे आज़म जो अपने शैख़ से पाया था ख़्वाजा शरीफ़ ज़िन्दनी को याद कराया। जैसे ही आपने उसे याद किया इल्मे लदुन्नी का दरवाज़ा आप पर कुशादा हो गया। उसके बाद शैख़ मौदूद ने फ़रमाया "ऐ हाजी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रज़वी किताब घर

शरीफ जो शख़्स मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हमारे मशाइख़ की जगह बैठता है हरगिज़ जाहिल नहीं हो सकता। अल्लाह तआला उस पर इल्मे लदुन्नी खोल देता और हिदायत का रास्ता दिखाता है कि वह उसी के मुताबिक़ काम करता है।" उसके कमली का ख़िरक़ा, ख़्वाजा शरीफ़ ज़िन्दनी को पहनाया। ख़िलाफ़त इनायत की। अपना जानशनीन बनाया और फ़ुक़्र व फ़ाक़ा के इख़्तियार करने, ग़रीबों और मिस्कीनों से मुहब्बत रखने और जो कुछ मशाइख़ की राह दुर्वेश है उसके इत्तिबा की तल्क़ीन फ़रमाई।

नक़्ल है कि जब हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी ने ख़िलाफ़त का ख़िरक़ा पहनाया हातिफ़े ग़ैबी ने आवाज़ दी कि ऐ हाजी शरीफ़ ख़िरक़-ए-गलीम का पहनना मुबारक हो। हमने तुम्हारी मग़्फ़िरत की। अपनी बारगाह का मक़्बूल बनाया और जो तुमसे मुहब्बत रखे उसे भी हमने अपना मक़्बूल किया।

पन्द्रहवीं सैर ख़्वाजा उस्मान हारूनी क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू के बयान में। आप ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं।

नक़्ल है कि ख़्वाजा उस्मान हारूनी आधी रात के वक़्त घर में तशरीफ़ फ़रमा थे कि उन्नासी काफ़िरों ने मश्वरा किया कि आधी रात को ख़्वाजा उस्मान हारूनी के पास चलें और कहें कि हम भूखे हैं। हर एक को नए तबाक़ में एलाहिदा-एलाहिदा खाना दीजिए और हर एक को जुदागाना नौअ् का। इस बाहमी मशवरा के बाद जब वह आपकी ख़िदमत में आए तो ख़्वाजा ने फ़रमाया ऐ आदम व हव्वा के बेटो! बैठ जाओ और हाथ धो लो। और ख़ुद बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम पढ़ कर आसमान की जानिब हाथ उठाए। और हर जिन्स के मुख़्तलिफ़ खानों के भरे हुए तबाक़ जैसा कि वह लोग सोच कर आए थे ग़ैब से लेते और उनके सामने रख देते। वह काफ़िर भी मुसलसल नज़रें जमाए देखते रहे कि तबाक़ ग़ैब से आ रहे हैं। ख़ैर जब वह खाने से फ़ारिग़ हुए तो आपने फ़रमाया कि ख़ुदाए तआला की नेमत खाओ और उस पर ईमान लाओ। उन्होंने कहा कि अगर हम तुम्हारे ख़ुदा व रसूल पर ईमान ले आएं और मुसलमान हो जाएं तो क्या ख़ुदाए तआला हमें भी तुम जैसा कर देगा। फ़रमाया कि "मैं ग़रीब किस गिनती में हूं। ख़ुदाए तआला तो उस पर क़ादिर है कि मुझ से हज़ार दरजा तुम्हें बुलन्द

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

फ़रमाए।" वह सब ईमान ले आए। मुसलमान हो गये और ख़्वाजा उस्मान हारूनी की मुबारक सेहत में रहे। उन में से हर एक अल्लाह का वली हो गया कि उनकी नज़रों में अर्श से लेकर तहतुस्सरा तक सब मुंकशिफ़ हो गया।

ख़्वाजा उस्मान हारूनी साहब रियाज़त व मुजाहिदा करते थे। सत्तर साल की मुद्दत तक किसी वक़्त नफ़्स को पेट भर कर पानी और खाना न दिया। रात को न सोए, तीन चार रोज़ के बाद रोज़ा व इफ़्तार करते। कभी तीन कभी चार और कभी पांच लुक़्मे खाने के तीन उंगलियों से खाते और फ़रमाते कि उस दुर्वेश पर अफ़्सोस जो रात भर सोए, दिन भर खाए और फिर खुद को दुर्वेश जाने और दुर्वेशों का खिरक़ा पहने।

नक़्ल है कि ख़्वाजा उस्मान हारूनी ने दस साल तक खुद को खाना न दिया और सात रोज़ के बाद मुंह भर एक घूंट पानी लेते और अर्ज़ करते कि खुदाया हमें नफ़ीस के ज़ुल्म से बचा। नफ़्स मुझ पर ग़ालिब आना चाहता है। मुझ से पानी मांगता है तो उसे एक घूंट मुंह भर पानी दे देता हूं।" ख़्वाजा उस्मान हारूनी सिमा में बहुत रोते और कभी-कभी ज़र्द पड़ जाते आंखों का पानी खुश्क हो जाता और जिस्मे मुबारक में ख़ून न रहता। एक नारा ज़ोर से लगाते और आप पर वज्द तारी हो जाता।

नक़्ल है कि उस वक़्त का ख़लीफ़ा ख़ानवाद-ए-सुहरवर्द में मुरीद था और सिमा से रोकता था। एक दरबान ख़्वाजा की ख़िदमत में भेजा और अर्ज़ किया कि ख़्वाजा जुनैद ने सिमा से तौबा कर ली है। अगर सिमा रवा होता तो आप सिमा से तौबा न करते जबकि ख़्वाजा जुनैद सात साल की उम्र में मक़ामे इज्तिहाद तक पहुंच चुके थे। जब आपने सिमा से तौबा की है तो हमें भी चाहिए कि सिमा से तौबा करें और सिमा के क़रीब भी न जाएं बल्कि जो शख़्स सिमा से बाज़ न आए उसे फांसी पर चढ़ाएं और क़व्वालों को क़त्ल कर दें।" ख़्वाजा उस्मान हारूनी ने कहा कि सिमा एक सिर है उन असरार में से जो बन्दे और मौला के दर्मियान हैं। अगर हम सिमा से तौबा करेंगे गुनहगार नेक को बद कहने वाले। और अपने मशाइख़ की पैरवी से बाज़ रहने वाले होंगे। लिहाज़ा हम सिमा से तौबा न करेंगे। हम उलमा की मज्लिस में हाज़िर

https://www.AhleSunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

ख़्वाजा उस्मान हारूनी ग़ज़लों की आवाज़ में सिमा सुनते, नारा लगाते और वज्द में आते। मुरीदों ने अर्ज़ किया कि हज़रत सिमा की अज सरे नौ बुनियाद क्यों नहीं डालते।" ख़्वाजा ने फ़रमाया कि मेरे एक दोस्त हैं जिनका नाम मुहम्मद और लक़ब क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागोरी है। इल्मे तरीक़त व मारिफ़त में कमाल रखते हैं। सिमा की बुनियादे नौ, वह रखेंगे। वह सुहरवरदी हैं। सिमा की मुमानेअत भी सुहरवर्दियों की जानिब से हुई है लिहाज़ा इब्तिदा भी अब उन्हीं की जानिब से होगी ताकि उन्हें चिश्तियों की क़द्र व मंज़िलत मालूम हो।

क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागोरी के सिमा का ज़िक्र ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी के ज़िक्र में आएगा। इन्शाअल्लाह तआला।

ख़्वाजा उस्मान हारूनी की उम्र काफी थी। आपने सफ़र भी बहुत किए। जब हज़रत ख़्वाजा शरीफ़ ज़िन्दनी की ख़िदमत में पहुंचे तो अर्ज़ किया कि "बन्द-ए-उस्मान की तमन्ना है कि हुज़ूरे वाला के मुरीदों में शुमार किया जाए।" ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी ने क़बूल किया। ख़िलाफ़त की कुलाह चार तरकी इनायत की। कैंची (बालों पर) चलाई और फ़रमाया कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुलाहे चार तुर्की इस्तेमाल फ़रमाई है। तमाम काइनात को ख़ुदा की मुहब्बत में छोड़ कर फ़क्र व फ़ाक़ा को इख़्तियार फ़रमाया है। फ़कीरों और ग़रीबों से मुहब्बत रखी है। लिहाज़ा जो शख़्स कुलाहे चार तर्की सर पर रखी। उसे चाहिए कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी करे और हर शख़्स को अपने आपसे बरतर जाने। जो शख़्स तकब्बुर इख़्तियार करे और अपनी फ़ौक़ियत चाहे वह दुर्वेश नहीं नफ़्स परस्त है। राहनुमा नहीं, रहज़न है। मशाइख़ के ख़िरक़ा के लाइक़ नहीं, चोर है। अह्ले नेमत नहीं, बेनसीब है। मशाइख़ उस से बेज़ार हैं। दुर्वेशी का लिबास उस पर हराम है। उसे ख़िरक़ा पहनना जाइज़ नहीं और न कुलाहे चार तर्की सर पर रखना और मुरीद करना।" ख़्वाजा उस्मान हारूनी ने शैख़ की नसीहत क़बूल की और गोशा नशीन हो कर ज़िक्र ला इलाहा इल्लल्लाह में मशग़ूल हो गये। तीन साल के बाद ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दानी ने ख़िलाफ़त की कमली पहनाई और फ़रमाया कि ऐ उस्मान तुम्हें हमने पैदा करने वाले की बारगाह में पेश किया। तुम्हें पसन्द फ़रमाया गया है।" फिर ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दानी ने इस्मे आज़म जो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अपने मुर्शिद से हासिल किया था ख़्वाजा उस्मान को सिखा दिया। कि इल्मे मारिफ़्त के असरार और शरीअ़त व तरीक़त व हक़ीक़त के रोज़ आप पर मुंकशिफ़ हो गये।

नक़्ल है कि जब ख़्वाजा उस्मान हारूनी नमाज़ अदा कर लेते तो ग़ैब से आवाज़ आती कि हमने तुम्हारी नमाज़ पसन्द की। मांगो क्या मांगते हो।" ख़्वाजा अर्ज़ करते कि "ख़ुदाया तुझे चाहता हूं।" आवाज़ आती कि ऐ उस्मान! मैंने जमाले ला ज़वाल तुम्हारे नसीब क्या कुछ और मांगो क्या मांगते हो।" अर्ज़ करते कि "इलाही मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के गुनहगारों को बख़्श दे। आवाज़ आती कि "उम्मत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तीस हज़ार गुनहगार तुम्हारी वजह से बख़्शे। आपको पांचों वक़्त यह बशारत मिलती।

सोलहवीं सैर ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू के बयान में। आप ख़्वाजा उस्मान हारूनी के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं।

नक़्ल है कि ख़्वाजा मुईनुल–हक़ वद्दीन हसन संजरी इल्मे कामिल रखते थे। आपकी तसानीफ़ ख़ुरासान के अतराफ़ व नवाह में बहुत मिलती हैं। सत्तर साल तक रात को आराम न किया और न पुश्त ज़मीन से लगाई। सत्तर साल तक आपका वुज़ू सिवाए हाजते इंसानी के न टूटा। आंखें उमूमन बन्द रखते। नमाज़ के वक़्त खोलते और शैख़ की नज़र जिस पर पड़ जाती वली अल्लाह हो जाता।

नक़्ल है कि ख़्वाजा फ़रमाया करते कि "जो शख़्स मेरा या मेरे फ़रज़न्दों का मुरीद होगा मुईनुद्दीन जन्नत में उस वक़्त तक दाख़िल न होगा। जब तक वह जन्नत में न चला जाए।" लोगों ने अर्ज़ किया कि फ़रज़न्दों से मुराद आपके ख़ुलफ़ा हैं या औलाद? फ़रमाया कि फ़रज़न्दों से मुराद क़यामत तक होने वाले (फ़रज़न्दाने मानवी) यानी ख़ुलफ़ा हैं।

नक़्ल है कि ख़्वाजा मुईनुद्दीन ने फ़रमाया कि मैं हरमे काबा में मशग़ूले (ज़िक्र) था। हातिफ़ ने आवाज़ दी कि मुईनुद्दीन "हम तुम से राज़ी हैं। हमने तुम्हें और तुम्हारे अह्ले बैत को बख़्शा।" मेरे लिए मुबारक वक़्त था। मैंने अर्ज़ किया "इलाही मेरी एक आरज़ू और भी है।" निदा आई तलब करो कि हम बख़्शें।" मैंने अर्ज़ किया कि ख़ुदाया जो शख़्स मुईनुद्दीन और उसके मुरीदों के मुरीद हों उन्हे भी बख़्श दे।" हातिफ़ ने आवाज़ दी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

कि मुईनुद्दीन जो तुम्हारा और तुम्हारे मुरीदों का मुरीद है। क़यामत तक हम ने सबको बख़्शा।" ख़्वाजा मुईनुद्दीन को सिमा का ज़ौक़ था। आप बहुत सिमा सुनते बल्कि जो शख़्स आपकी पाक सोहबत में होता वह भी सिमा सुनने लगता और उसका अह्ल हो जाता।

नक़्ल है कि ख़्वाजा ने बहुत सफ़र किए थे और बकसरत मशाइख़ से मिले थे। जब आप बग़दाद पहुंचे तो पूछा कि इस शहर में बा अज़मत और अह्ले करामात, बुज़ुर्ग कौन है।" लोगों ने बिल-इत्तिफ़ाक़ कहा कि उस ज़माना में, उस शहर में, ख़्वाजा उस्मान हारूनी के मिस्ल कोई नहीं। ख़्वाजा मुईनुद्दीन, ख़्वाजा उस्मान हारूनी की ख़ानक़ाह में हाज़िर आए। ख़ादिम ने अर्ज़ किया कि हज़रत शैख़ उस्मान हारूनी नमाज़ पढ़ने ख़्वाजा जुनैद बग़दादी की मस्जिद में तशरीफ़ ले गये हैं।" ख़्वाजा मुईनुद्दीन, ख़्वाजा जुनैद बग़दादी की मस्जिद में तशरीफ़ लाए और क़दमबोसी की दौलत हासिल की। मस्जिद के अन्दर ख़्वाजा उस्मान हारूनी की मज्लिस में बड़े-बड़े मशाइख़े किराम मौजूद थे। ख़्वाजा उस्मान ने फ़रमाया ऐ मुईनुद्दीन दो रकअत नमाज़ पढ़ो और क़िबला रू बैठ जाओ। आपने ऐसा ही किया। फिर ख़्वाजा उस्मान ने फ़रमाया कि "चेहरा आसमान की तरफ़ करो।" आपने आसमान की जानिब चेहरा किया। उसके बाद ख़्वाजा उस्मान ने हाथ पकड़ कर कहा कि हमने तुम्हें ख़ुदा तक पहुंचा दिया। उसके बाद कुलाहे बैअत ख़्वाजा मुईनुद्दीन के सर पर रखी। गलीमे ख़ास अता की और फ़रमाया ऐ मुईनुद्दीन! सूरः इख़्लास एक हज़ार मरतबा पढ़ो।" आपने एक हज़ार मरतबा सूरः इख़्लास पढ़ी। उसके बाद ख़्वाजा उस्मान ने फ़रमाया हमारे ख़ानवादा में एक दिन रात का ख़ास मुजाहिदा है। तुम एक दिन रात उसमें मसरूफ़ रहो।" आप एक दिन रात उसमें मसरूफ़ रहे कि हिजाब नज़र से उठा दिया गया और आप मक़ामे मुशाहिदा तक पहुंच गये। उसके बाद ख़्वाजा उस्मान ने आपको ख़िलाफ़त बख़्शी, अपना जानशीन बनाया और मशाइख़ के मामूलात आपको तल्क़ीन किए। उसके बाद हाथ पकड़ कर अर्ज़ किया कि इलाही मुईनुद्दीन को क़बूल कर और अपनी बारगाह का मुक़र्रब बना! आवाज़ आई कि ऐ मुईनुद्दीन तुम हमारे मक़बूले बारगाह हो। हमने तुम्हारा नाम महबूबों के दफ़्तर में लिखा और तुम्हें मशाइख़ का सरदार किया।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

आप बीस साल तक ख़्वाजा उस्मान की ख़िदमत में हाज़िर रहे। कलामे रब्बानी के हाफ़िज़ थे। हर दिन और हर रात में क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म करते। हर मरतबा जब क़ुरआन ख़त्म होता हातिफ़ आवाज़ देता कि हमने तुम्हारा ख़त्म क़ुबूल किया।" ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू लिखते हैं कि ख़्वाजा मुईनुद्दीन की मज्लिस में शैख़ुश्शुयूख़ शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी, शैख़ अहमद किरमानी, शैख़ मुहम्मद अस्फ़हानी, मौलाना बहाउद्दीन बुख़ारी, मौलाना अहमद बग़दादी, ख़्वाजा आजल संजरी, शैख़ सैफ़ुद्दीन बाख़रेज़ी, शैख़ अहमद मुहम्मद चिश्ती, शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी, शैख़ बुरहानुद्दीन चिश्ती, शैख़ मुहम्मद अहमद अस्फ़हानी, शैख़ औहद किरमानी, शैख़ अहमद वाजिद, शैख़ बुरहानुद्दीन ग़ज़नवी, ख़्वाजा सुलेमान अब्दुर्रहमान वग़ैरहुम मशाइख़ बग़दाद और गर्द व नवाह के और मशाइख़े किबार, ख़्वाजा मुईनुद्दीन की क़दमबोसी को हाज़िर होते और आपके फ़ुयूज़ व बरकात से मुस्तफ़ीज़ होते।"

सत्तरहवीं सैर ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी क़ुद्दिसल्लाहु रूहहू के बयान में। आप ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं।

नक़्ल है कि ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन के मुरीदों की नज़र अक्सीरे नेमत थी। जो शख़्स ख़्वाजा के मुरीदों का मन्ज़ूरे नज़र हो जाता उसी दौरान वली अल्लाह बन जाता। ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार मां के पेट से बहरावर, बा नसीब पैदा हुए। आपकी वालिदा फ़रमाती हैं कि ख़्वाजा मेरे पेट में थे। हर आधी रात को मेरे पेट में हरकत करते और या अल्लाह या अल्लाह या अल्लाह की आवाज़ निकालते। और मैं आधी रात से एक पहर तक यह आवाज़ सुनती आधी रात के वक़्त ख़्वाजा पैदा हुए तमाम घर नूर से भर गया और आपकी वालिदा पर हैबत छा गई। ख़्वाजा ने सर उठाया तो वह रौशनी आहिस्ता–आहिस्ता कम हो गई। हातिफ़ ने आवाज़ दी कि ऐ ख़्वाजा की वालिदा! यह हमारे असरार की रौशनी है जो तुम्हारे फ़रज़न्द के दिल में हमने रखे हैं ताकि हमारे नूर के असरार से मुनव्वर हो जाए।

जब हज़रत ख़्वाजा चार साल चार महीने चार दिन के हुए तो आपकी वालिदा ने ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की ख़िदमत में भेजा। ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी क़ुद्दिसल्लाहु

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रूहहू की तख़्ती ली कि कुछ लिख दीं। हातिफ़ ने आवाज़ दी कि ऐ मुईनुद्दीन हमारे क़ुतुब की तख़्ती लिखते हैं ज़रा तवक़्क़ुफ़ करो कि हमीदुद्दीन नागौरी आते हैं। हमारे क़ुतुब की तख़्ती वही लिखेंगे और वही तालीम देंगे।" उस रोज़ ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन ओश (बर वज़ने मोश। एक क़स्बा है जो समरकन्द और चीन के दर्मियान विलायते फ़रग़ाना में है) में थे और क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौर में। हातिफ़ ने आवाज़ दी कि ऐ हमीदुद्दीन ओश जाओ। हमारे क़ुतुब की तख़्ती लिखो और उन्हें तालीम दो।" क़ाज़ी हमीदुद्दीन को देखा तो उनकी ताज़ीम की, खड़े हुए और तख़्ती आपके हाथ में दी। क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने फ़रमाया कि सुबहानल्लज़ी तो पन्द्रहवां पारा है तुमने क़ुरआन किस से पढ़ा? जवाब दिया कि मेरी वालिदा को पन्द्रह पारे याद हैं। पेट में मेरी नज़र वालिदा के दिल पर पड़ी मैंने वहां से बतौफ़ीक़ेही तआला याद कर लिया। क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने तख़्ती पर लिखा। सुबहानल्लज़ी असरा बेअ़ब्देही लैलन। (इला आख़रे सूरः) चार रोज़ में क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने ख़्वाजा को क़ुरआन ख़त्म करा दिया और फ़रमाया "बाबा क़ुतबुद्दीन ख़ुदाए तआला ने तुम्हें तमाम इल्म बचपन ही में बख़्श दिया है कि तुम ख़ुदा के दोस्तों में से हो।" फिर ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन को हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन के हवाला किया और कहा कि "आप उनकी परवरिश फ़रमाएं कि क़ुतबुद्दीन आप ही के मुरीद हैं।" ख़्वाजा मुईनुद्दीन ने क़बूल किया और क़ाज़ी हमीदुद्दीन वापस तशरीफ़ ले गये।

यह क़ाज़ी हमीदुद्दीन मख़्दूम शैख़ुश्शुयूख़ शिहाबुल-हक़ वद्दीन सुहरवर्दी के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं। रास्ते में जा रहे थे कि एक चिड़या को देखा कि उसकी चोंच में बारह सूराख़ हैं और हर सूराख़ से जुदा-जुदा आवाज़ आती है। आपने जब उसकी आवाज़ सुनी तो मदहोश व बेख़ुद व मस्त हो कर रक़्स करने लगे। ख़िज़्र अलैहिस्सलाम हाज़िर थे। जब क़ाज़ी हमीदुद्दीन रक़्स से फ़ारिग़ हुए। ख़्वाजा ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह रक़्स जो आपने किया और यह सिमा जैसा कि आपने सुना आपसे पहले लोगों ने भी सुना है।" क़ाज़ी हमीदुद्दीन पर सिमा का कैफ़ तारी था। हज़रत ख़िज़्र से फ़रमाया कि कहीं से क़व्वालों को मौजूद कीजिए ताकि हम सिमा सुनें।" ख़्वाजा ख़िज़्र ने फ़रमाया कि जब से ख़्वाजा जुनैद बग़दादी ने तौबा की और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

अल्लाह की रहमत से वासिल हुए उसी रोज़ बग़दाद में सिमा मम्नूअ़ क़रार दे दिया गया है। जो शख़्स सिमा सुनता है उसे फांसी पर चढ़ाते और क़व्वालों को क़त्ल कर देते हैं। लेकिन ख़ानदाने चिश्त में ख़्वाजा जुनैद बग़दादी के बाद ख़्वाजा नासिरुद्दीन चिश्ती और ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन मौदूद ने सिमा सुना है और ख़्वाजा उस्मान हारूनी ने भी सुना है।

क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने सात गुलाम, ख़ुश इल्हान, बाज़ार से ख़रीदे उन्हें अपनी ग़ज़लें याद कराईं और वह सब गुलाम उन ग़ज़लों को दिलकश व बुलन्द आवाज़ से पढ़ने लगे। क़ाज़ी हमीदुद्दीन सिमा सुनते और रक़्स करते। जो गिरामी क़द्र मुफ़्तियाने वक़्त मोतरिज़ हुए और कहा कि सिमा शरअन मम्नूअ़ है जुनैद बग़दादी ने सिमा से तौबा की है।" क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने कहा कि ख़्वाजा जुनैद ने सिमा सुना है और जो बुज़ुर्ग उनके ज़माने में थे उन्होंने भी सिमा सुना है। जब अह्ले सिमा फ़ौत हो गये तो आपने तौबा कर ली लिहाज़ा उनकी तौबा हम पर हुज्जत नहीं जब कि जुनैद ने ख़ुद सिमा के मुबाह होने का फ़तवा दिया है कि जब आप से पूछा गया कि सिमा के मुतअल्लिक़ आप क्या फ़रमाते हैं तो फ़रमाया कि बन्दा अल्लाह के तक़र्रुब के लिए जो काम भी करे वह मुबाह है।" जब उलमा ने देखा कि क़ाज़ी हमीदुद्दीन सिमा पर फ़रेफ़्ता हैं। उस रिवायत के बमूजिब सिमा को अज़ सरे नौ जारी कर देंगे, तो उन से कहा कि दिल्ली में इल्म की क़िल्लत है और यहां इस्लाम नया-नया आया है। आपको बग़दाद जाना 'चाहिए' तो क़ाज़ी हमीदुद्दीन बग़दाद तशरीफ़ ले गये।

बग़दाद में उस वक़्त सात सौ उलमा अह्ले फ़तवा मौजूद थे। जब कि बग़दादी में क़ाज़ी हमीदुद्दीन के एक मुरीद थे जो बड़े मुअज़्ज़ज़ और साहिबे सरवत थे। आप उन्हीं के मकान पर फ़रोकश हुए। मकान का एक हुजरा बन्द था आपने पूछा कि उस हुजरा में क्या है। जवाब दिया कि बांसुरी बजाने वाला मेरा एक दोस्त है जिसका यही पेशा है। क़त्ल के ख़ौफ़ से हमने उसी हुजरा में बन्द कर रखा है।" क़ाज़ी हमीदुद्दीन बहुत ख़ुश हुए और कहा कि ऐ भाई मैं तो सिमा का शैदाई हूं उसने कहा नवाज़ को हुजरा से निकालो और कहो कि बांसुरी बजाए।" (यह वह वक़्त था कि) हज़रत जुनैद के विसाल को दो सौ बरस गुज़र चुके थे और किसी ने बग़दाद में सिमा न सुना था। (आपके इरशाद पर) ने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बजाने वाला हुजरा से बाहर आया और नय बजाई। क़ाज़ी हमीदुद्दीन सिमा में मदहोश हो गये। उधर क़ाज़ीए शहर और अह्ले फतवा उलमा को उसकी ख़बर पहुंची। तो क़ाज़ी ने इत्तिला भेजी कि जिस शख़्स ने सिमा सुना है उसे हाज़िर करो। जब क़ाज़ी का फ़रस्तादा आया और उसने क़ाज़ी हमीदुद्दीन की कैफ़ियत देखी तो क़सम खा कर बोला कि यह शख़्स ज़रूर सिमा को दोबारा राइज कर देगा। अल-क़िस्सा क़ाज़ी हमीदुद्दीन की जब वह हालत जाती रही तो क़ाज़ी के पयाम्बर से कहा कि ऐ अज़ीज़ जाओ और क़ाज़ी से कहो कि "कल मज्लिस का एहतमाम करें और उलमा को भी बुलाएं हमीदुद्दीन भी हाज़िर होगा। अगर हमीदुद्दीन सिमा का अह्ल होगा तो सिमा सुनेगा वरना जहां इतने आदमियों को तुमने फांसी पर चढ़ाया है हमीदुद्दीन को भी चढ़ा देना।" क़ाज़ी का फ़रस्तादा वापस गया और सारा माजरा बयान कर दिया। जिसे उन सबने क़बूल कर लिया। जब क़ाज़ी, उलमा, मुफ़्तियाने शहर, अकाबिर और बाला नशीन आला ओहदेदार वग़ैरहुम सब आ गये तो अह्ले फतवा ने दरयाफ़्त किया कि आप सिमा सुनते हैं। तो क्या उस दबे हुए फ़ित्ना को फिर उभार रहे हैं? क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने जवाब दिया कि "हां हम सिमा सुनते और उलमाए सलासा की रिवायत के मुताबिक़ सिमा को मुबाह कहते हैं। रहे इमामे आज़म, तो इमामे आज़म के क़ौल पर शराब हराम है मगर प्यासे को जब इंतिहाई प्यास में, पानी मयस्सर न हो तो शराब मुबाह है। अगर उसने बवक़्ते ज़रूरत (बक़द्रे ज़रूरत) न पी तो गुनहगार और अपने नफ़्स को हलाक करने वाला होगा जब कि नफ़्स का हलाक करना शरअन जाइज़ नहीं। इसी तरह इमामे आज़म के क़ौल के बमूजिब ग़मज़दों और दर्द मन्दों को सिमा जाइज़ है मगर बेफ़िक्रों और नफ़्स परवरों के लिए हराम है। फिर इमाम शाफ़ई के नज़्दीक अगर कोई शख़्स मलाले क़ल्बी के दूर करने के लिए सिमा से तो जाइज़ है ज़ब कि अह्ले सिमा के लिए सिमा, हर एक के नज़्दीक जाइज़ है ख़्वाज वह इमामे आज़म हों या इमाम शाफ़ई रहमहुल्लाहु तआला। अह्ले फतवा उलमा ने जब यह कलिमात सुने तो अर्ज़ किया कि ऐ क़ाज़ी हमीदुद्दीन आपने जो कुछ फ़रमाया है सब कुतुबे मोतबेरा से माख़ूज़ है मगर हमें अब कोई ऐसी दलील दरकार है जिससे मालूम हो कि आप भी दर्द मन्द हैं कि आपके दिल का मलाल, बग़ैर सिमा के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रज़वी किताब घर

शिफ़ा नहीं पा सकता।" क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने फ़रमाया कि मज़ामीर हाज़िर करें। इत्तिफ़ाक़न क़ाज़ी हमीदुद्दीन के मुरीद के घर में बहत्तर बांसुरियां और साज़ थे। सब मौजूद लिए गये। क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने फ़रमायाप कि ऐ "मज़ामीर! अगर हमारा दर्द दिल बेग़ैर तुम्हारी आवाज़ के ठीक नहीं होता तो बेग़ैर साज़िन्दा के बजने लगो।" (फिर क्या था) हर साज़ से आवाज़ आने लगी और तमाम हाज़िरीने मज्लिस हत्ता कि उलमा और मुफ़्ती साहिबान और क़ाज़ी साहिबान पर हालत तारी हो गई और सब रक़्स करने लगे। क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने फ़रमाया कि आप तमाम साहिबान सिमा को हराम कहते थे अब आपने सिमा के असरार देखे और अह्ले दर्द के मरज़ का मुआयना किया।" चुनांचे तमाम उलमा व मुफ़्तियाने किराम ने तहरीरी फतवा दिया कि मबाहुन लेअहलेही सिमा अह्ले सिमा के लिए हलाल है और उस पर दस्तख़त कर दिए। ग़र्ज़ कि इस वाक़या में भी ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी क़ुद्देसे सिर्रहु की मारेफ़त का बयान है।

नक़्ल है कि ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चालीस रोज़ मुतवातिर ख़्वाब में देखा और यूं कि मशाइख़ की अरवाह भी आपके हमराह हैं। और आप इरशाद फ़रमाते कि ऐ मुईनुद्दीन! बख़्तियार काकी खुदा के महबूब हैं उन्हें ख़िलाफ़त दो और ख़िरक़-ए-गलीम पहनाओ।" और एक रात हज़रत ज़ुल-जलाल का ख़्वाब में दीदार हुआ तो इरशाद हुआ कि ऐ मुईनुद्दीन! क़ुतबुद्दीन बख़्तियार को ख़िरक़-ए-गलीम इनायत करो और उन्हें ख़िलाफ़त दो इसलिए कि वह मेरा महबूब और मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दोस्त है।" चुनांचे ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन अभी नौजवान थे और दाढ़ी भी ख़ूब नुमायां न हुई थी कि ख़्वाजा मुईनुद्दीन ने आपको ख़िरक़ा पहनाया, अपना ख़लीफ़ा बनाया और फ़रमाया कि दिल्ली जाओ। हमने तुम्हें तमाम मशाइख़ का सरदार बनाया और हमने ख़ुदाए तआला से दुआ करते हैं कि तमाम दुर्वेश तुम्हारे गरवीदा हों। तुम्हारे रू-ब-रू बाअदब (बा नसीब) रहें और तुमसे फ़ुयूज़ व बरकात पाएं।"

ख़्वाजा जब दिल्ली पहुंचे तो उस वक़्त उम्र मुबारक सत्तरह साल थी। उधर क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने ख़्वाब में देखा कि दिल्ली में एक आफ़ताब तुलूअ़ हुआ और क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी के घर उतरा है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

जब आप बेदार हुए तो ख़्वाब को दोस्तों पर दोहराया और यह ताबीर ली कि आफ़ताब दुनिया भर को रोशनी बख़्शा है, अगर आफ़ताब न हो तो दुनिया में अन्धेरा रहे। ला मुहाला उस शहर में कोई साहबे नेमत व बाकरामत दुर्वेश पहुंचा है कि उसकी फ़ैज़ रसानी अतराफ़े आलम में ऐसी ही है जैसे तमाम आफ़ाक़ में सूरज की रौशनी। और वह दुर्वेश ख़्वाजा हमीदुद्दीन के मकान पर आएगा और वहीं क़याम करेगा। फिर खुद फरमाया कि मैं जानता हूं कि वह पुर नेमत व बाकरामत दुर्वेश ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार हैं। कि मेरे दिमाग़ में उनकी खुशबुए मुहब्बत आ रही है।

जब ख़्वाजा कुतबुद्दीन दिल्ली पहुंचे तो एक नानबाई के मकान पर क़याम फ़रमाया और उजरत पर काम शुरू कर दिया। क़हत का ज़माना था। बादशाह के ख़ज़ाने से कई मन आटा उस नानबाई के यहां आया कि रोग़नी रोटियां (काक) पकाए। नानबाई ने रोटियां तन्नूर में सेंकने के लिए रखीं और खुद सोने चला गया। इत्तिफ़ाक़न तमाम रोटियां जल गईं और फ़रमाने शाही के मुताबिक़ (हुकूमत के कारिन्दों ने) नानबाई के गले में दस्तार बांध कर सख़्ती और शिद्दत से खींचा कि क़हत के ज़माने में इतना खाना बरबाद कर दिया। ख़्वाजा ने फ़रमाया कि भाईयो इस नानबाई को छोड़ दो, मैं तुम्हारी रोटियां ठीक करके दिए देता हूं।" आपके इरशाद के बमूजिब उन लोगों ने नानबाई को छोड़ दिया और कहा कि तुम ही हमारी रोटियां ठीक कर के दिए देता हूं। ख़्वाजा ने तमाम रोटियां तन्नूर में दोबारा डाल दीं और जब वह रोटियां तन्नूर से निकालीं तो तमाम रोटियां सफ़ेद और ठीक थीं। बादशाह को ख़बर हुई तो आपकी मुलाक़ात को आया। ख़्वाजा ने फरमाया कि ऐ अज़ीज़! मैं बेचारा किस शुमार में हूं कि तुम मेरी मुलाक़ात को आए हो। बादशाह ने कहा ऐ ख़्वाजा! आप तमाम दुर्वेशों के बाला नशीन हैं। ख़्वाजा ने फ़रमाया कि जब तुझे मुझ पर इतना एतक़ाद है तो मैं खुदा से दुआ करता हूं कि दुनिया की मुहब्बत तेरे दिल से सर्द हो जाए और तू एक साहबे नेमत दुर्वेश बन जाए।" ख़्वाजा ने जूं ही यह बात फरमाई बादशाह के दिल से दुनिया की मुहब्बत जाती रही और वह अल्लाह वाला हो गया और उसकी नज़र अर्श से तहतुस्सरा तक जा पहुंची। ख़्वाजा कुतबुद्दीन को इसी वजह से काकी कहते हैं।

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

जब ख़्वाजा ने जली हुई रोटियां ठीक कर दीं (और उसकी शोहरत हुई) तो लोग गरोह दर गरोह ख़्वाजा की मुलाक़ात को आने लगे। ख़्वाजा इस नानबाई की दुकान से घबरा कर तशरीफ़ ले गये और क़ाज़ी हमीदुद्दीन के मकान पर पहुंचे। क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने आपको अपनी आग़ोश में लिया। खुश हुए और कहा कि मैं तो मुश्ताक़े मुलाक़ात था। कुछ ही दिन हुए कि हमारी मशामे जान को आपकी मुहब्बत की खुशबू पहुंची थी।" और फिर क़ाज़ी साहब ने क़व्वालों को हाज़िर किया और सिमा शुरू हुआ। ख़्वाजा पर सिमा की कैफ़ियत तारी हुई और बहुत मख़्लूक़ जमा हो गई। जब सिमा मौक़ूफ़ हुआ तो क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने ख़्वाजा से कहा कि मख़्लूक़ का खाना भी होना चाहिए।" ख़्वाजा ने अपनी दोनों आस्तीनें झाड़ दीं। जितने लोग वहां मौजूद थे, उन में से हर एक के रू–ब–रू दो–दो रोटी गर्म–गर्म, मआ हल्वे के मुहैया हो गईं। मख़्लूक़ और भी ज़्यादा मोतक़िद हो गई। मौलाना मौज जाज़िर ने कहा कि शरबत भी होना चाहिए। कोई शख़्स आध सैर शकर क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी के लिए लाया था। क़ाज़ी साहब ने दही शकर एक टोंटी वाले बर्तन में डाल दी और फिर सात बड़े प्याले पानी उसमें डाला और कहा कि हर शख़्स सैर हो कर आराम–आराम से पिए। हज़ारहा मख़्लूक़ ने सैर हो कर शर्बत पिया और सात का सात प्याले शर्बत उसमें बाक़ी रहा।

नक़्ल है कि जब सुल्तान शहाबुद्दीन का इंतिक़ाल हुआ और सुल्तान शम्सुद्दीन उसकी जगह बैठे तो ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन और क़ाज़ी हमीदुद्दीन की मुलाक़ात को हाज़िर हुए। क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने फरमाया कि ऐ शम्सुद्दीन तुम्हें चाहिए कि फ़क़ीरों, ग़रीबों, मिस्कीनों और दुर्वेशों से अच्छी तरह पेश आओ। मख़्लूक़े ख़ुदा पर मेहरबानी और रईयत की परवरिश करो कि जो शख़्स रईयत की परवरिश और मख़्लूक़े ख़ुदा पर मेहरबानी करता है अल्लाह तआला उसे दुनिया में ज़्यादा बाक़ी रखता है और उसके तमाम दुश्मनों को दफ़ा फ़रमाता है। सुल्तान शम्सुद्दीन ने उसे क़बूल किया।

नक़्ल है कि एक रोज़ क़ाज़ी सादा और क़ाज़ी एमाद कि अह्ले इल्म में से थे, मज्लिसे सिमा में हाज़िर हुए। क़ाज़ी हमीदुद्दीन सिमा सुन रहे थे कि ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन हल्क़–ए–सिमा में हाथ बांधे खड़े थे। उन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

दोनों हज़रात ने (मज़ाहन) कहा कि "अमरद यानी बेरेश नौख़ेज़ को मज्लिसे सिमा में न आना चाहिए।" ख़्वाजा कुतबुद्दीन ने तबस्सुम किया और अपने दोनों हाथों को अपने चेहरा पर फेरा। फ़ौरन बाल नमूदार हो गये। क़ाज़ी सादा और क़ाज़ी एमाद हैरत में डूब गये कि यह कैसी अजीब करामत व विलायत और नेमत है कि ख़्वाजा कुतबुद्दीन ने हमें दिखाई। दोनों सुल्तान शम्सुद्दीन के पास आए और आपकी दाढ़ी निकलने का तमाम वाक़या सुल्तान के सामने दोहराया। सुल्तान शम्सुद्दीन और ज़्यादा मोतक़िद हो गया और कहा कि ख़्वाजा कुतबुद्दीन और क़ाज़ी हमीदुद्दीन अह्ले सिमा हैं, कोई उन से कुछ न कहे।

नक़्ल है कि सुल्तान शम्सुद्दीन के भांजे शैख़ सअ़्दुद्दीन तंबूली (पान वाले) एक बा अज़्मत शहज़ादे थे। जिन्हें सुल्तान शम्सुद्दीन ने बेटा बना कर परवरिश किया था क़ाज़ी हमीदुद्दीन के पास शाहज़ादों की सी आन बान से हाज़िर आए और अर्ज़ किया कि "बन्दा चाहता है कि आपके मुरीदों के सिलसिले में दाख़िल हो जाए।" क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने फ़रमाया कि "हम दुर्वेश हैं और तुम शहज़ादे और माल व दौलत वाले हो। हमारे तुम्हारे माबैन कोई मुनासिबत और लगाव ही नहीं। वापस जाओ और जो लोग बादशाहों को दोस्त रखते हैं उनके मुरीद हो जाओ।" वह फ़ौरन वापस हो गया और कुछ अरसा के बाद एक गुलाम को साथ लिए क़ाज़ी के मकान पर बैअ़त के लिए हाज़िर आया। क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने फ़रमाया "कि अब भी तुमसे दुनिया की बू आती है।" शैख़ सअ़्दद्दीन तंबूली फिर लौट गये और कुछ अरसा बाद पैदल हाथ में एक गुलदस्ता लिए हुए क़ाज़ी हमीदुद्दीन के मकान पर आए। आपने फ़रमाया कि "ऐ सअ़्दुद्दीन तुम ख़ुश नसीब आदमी हो। आओ। अच्छे वक़्त पर पहुंचे। ऐ सअ़्दुद्दीन मेरे हाथ पर हाथ रखो। सात मरतबा कुल हुव्वलाह शरीफ़ पढ़ो और ज़मीन की तरफ़ देखो।" आपकी नज़र तहतसुस्सरा तक पहुंची। फिर फ़रमाया कि सात मरतबा कुल हुवल्लाह शरीफ़ पढ़ो और आसमान की तरफ़ देखो।" (उस से) उनकी नज़र अर्श से बालातर पहुंची। क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने फ़रमाया "आज इतना ही काफी है। अल्लाह ने चाहा तो मक़ामे मतलूब तक पहुंच जाओगे।" उसके बाद सअ़्दुद्दीन के सर पर टोपी रखी। और सात पैवन्द लगी हुई कमली अता फ़रमाई। शैख़ सअ़्दुद्दीन ने जब क़ाज़ी हमीदुद्दीन की गलीम पहनी तो उनका दिल दुनिया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned with CamScanner

की तरफ़ से ठण्डा पड़ गया और दुर्वेशी के दर्जे तक पहुंच गये।

इधर सुल्तान शम्सुद्दीन को ख़बर हुई कि मेरा भांजा क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी का मुरीद हो गया है तो वह अपनी शाहाना शान व शौकत से क़ाज़ी हमीदुद्दीन और ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन के पास हाज़िर हुए। वह दोनों हज़रात वुज़ू से फ़ारिग़ हो कर दोगाना तहीयतुल–वुज़ू अदा कर रहे थे। जब सुल्तान शम्सुद्दीन ने क़दमबोसी कर ली और अदब से बैठ गये तो बोले कि "बन्दा भूखा है।" क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने ख़ादिम से फ़रमाया कि खाना अगर मौजूद हो तो ले आओ।" सुल्तान ने कहा कि बन्दा को ग़ैब से खाना दीजिए। क़ाज़ी ने तबस्सुम किया और ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन से फ़रमाया कि बादशाह सलामत को ग़ैब से खाना दीजिए। ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन ने आस्तीन में हाथ डाला। दो सफ़ेद गर्म रौग़नी रोटियां निकालीं और सुल्तान शम्सुद्दीन के हाथ पर रख दीं। क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने उस जगह से जहां वुज़ू किया था। कुछ कीचड़ उठा ली वह हल्वा हो गई और बादशाह को दे दी गई। उसके बाद क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने शैख़ सअ़दुद्दीन से फ़रमाया कि पान भी होना चाहिए। शैख़ सअ़दुद्दीन ने आस्तीन में हाथ डाला और छालिया कत्था चूना लगा हुआ पान सुल्तान के हाथ पर रख दिया। यह पान भी आलमे ग़ैब से था। सुल्तान शम्सुद्दीन ने कहा कि मैं आपकी बारगाह का कुत्ता हूं। अगर तमाम लश्करी यह रोटी और हल्वा और पान खा लें तो बड़ा अच्छा हो।" ख़्वाजा ने फ़रमाया कि अपने लश्करियों से कहो कि अपने हाथ आसमान की तरफ़ कर लें। बादशाह के हुक्म के बमूजिब तमाम लश्करियों से कहो कि अपने हाथ आसमान की तरफ़ कर लें। बादशाह के हुक्म के बमूजिब तमाम लश्कर ने अपने हाथ आसमान की तरफ़ कर लिए। ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन ने अपनी दोनों आस्तीनें झाड़ीं हर शख़्स के हाथ पर दो–दो रोटी पहुंच गईं और उस कीचड़ से हल्वा पैदा हुआ। शैख़ सअ़दुद्दीन ने भी अपने हाथ झाड़े तो हर एक के हाथ पर छालिया, कत्था, चूना लगा हुआ पान पहुंचा। शैख़ सअ़दुद्दीन को इसी वजह से तंबूली कहते हैं। सुल्तान ने अपनी सोने के काम की टोपी सर से उतारी और कहा कि बन्दा शम्सुद्दीन चाहता है कि क़ाज़ी हमीदुद्दीन का मुरीद

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हो। क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने फ़रमाया कि हमीदुद्दीन कोई बाज़ीगर नहीं कि तमाशा दिखाए और मख़्लूक़ को अपना मोतक़िद बनाए। अगर तुम्हें मुझ पर एतक़ाद होता तो यूं हमारा इम्तिहान न लेते।" सुल्तान ने बहुत मिन्नत व ज़ारी की कि बन्दा से जो क़ुसूर हुआ है उसे मुआफ़ फ़रमाया जाए मगर हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने सुल्तान को मुरीद न किया। सुल्तान ने छः महीने तक ख़ानक़ाह के दुर्वेशों की ख़िदमत की लेकिन क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने सुल्तान को मुरीद न किया। ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन ने सुल्तान को अपनी बैअ़त में ले लिया।

ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन के मनाक़िब व ख़साइल और उनके फ़ज़ाइल कोई शख़्स लिखे तो दफ़्तर भर जाएं। लोग नक़्ल करते हैं कि ख़्वाजा की वफ़ात के वक़्त एक रोज़ क़ाज़ी हमीदुद्दीन की ख़ानक़ाह में सिमा था। बड़े–बड़े मशाइख़ और नामवर उलमा मौजूद थे और क़व्वाल यह शेअ़्र पढ़ रहे थे।

इस शेअ़्र पर ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन पर वजद तारी हो गया। आप खड़े हो गये और नारा मारना चाहा कि क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने ख़्वाजा का मुंह बन्द कर दिया और कहा कि क्या दुनिया को जलाना चाहते हो। ख़्वाजा ने मुंह बन्द कर लिया और उसी से आपका तमाम बदन फुंक गया। 14 रबीउल–अव्वल दोशंबा को चाश्त के वक़्त, और एक रिवायत के मुताबिक़ ज़ुहर के वक़्त 635 हिज. में ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन ने अपनी जाने हक़ को सौंप दी और इस दारे फना से आलमे बक़ा की जानिब रिहलत फ़रमाई।

क़ाज़ी हमीदुद्दीन से वफ़ात नाम–ए–ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन से मन्क़ूल है कि आपने फ़रमाया कि मुंकर नकीर आए और निहायत अदब से बैठ गये। इसी दौरान दो फ़रिश्ते और आ गये हक़ तआला का सलामे मरहमत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन को पहुंचाया। फिर एक वसीक़ा लिखा हुआ निकाला और ख़्वाजा को दे दिया। उसमें लिखा था कि ऐ क़ुतबुद्दीन हम तुम से राज़ी हैं और तुम्हारी बरकत के बाइस हम ने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के तमाम गुनहगारों की क़ब्रों से अज़ाब उठा लिया। इसलिए कि ज़िन्दों ने तुमसे बहुत फ़ैज़ उठाया है

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

रज़वी किताब घर

मुर्दे भी तुमसे फ़ैज़ पाएं और तुम्हारी क़द्र जानें।" उसके बाद फिर दो फ़रिश्ते पहुंचे और ख़्वाजा कुतबुद्दीन को अल्लाह तआला का सलामे मग़्फ़िरत पहुंचाया और मुंकर नकीर से कहा कि "फ़रमाने इलाही है कि हमारे क़ुतुब से सवाल मत करो। हमने खुद ही उन से सवाल कर लिया और उन्होंने जवाब दे दिया है तुम लौट जाओ।"

अल्हम्दुलिल्लाह कि यह रिसाला "सबअ़े सनाबिल" मनाक़िबे मशाइख़ के ज़िक्र पर मुश्तमिल, मुरत्तब हुआ। फ़क़ीर ने अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से लेकर ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तक मशाइख़े चिश्त के थोड़े–थोड़े हालात लिखे हैं। और मख़्दूम शैख़ फ़रीद गंज शकर क़ुद्दिसा सिर्रुहू से लेकर, अपने मुर्शिद तक कुछ न कुछ मनाक़िब, दूसरे सुंबुला में लिख दिए हैं। तमन्ना यह है कि जिस तरह मेरी ज़िन्दगी मशाइख़ की याद में बसर हुई यूं ही मेरी मौत भी उन्हीं हज़रात के ज़िक्रे ख़ैर में आए।

ख़ुदाया! "हमारे मशाइख़ और सादात के चेहरों को अपने वज्हे करीम के नूर से मुनव्वर फ़रमा। ख़ुदाया उनकी आंखों को अपनी ज़ाते क़दीम के जमाल से ठण्डा रख। इलाही उनके दरजात को आला इल्लीईन में बुलन्द फ़रमा। ख़ुदाया उन्हें हक़्क़ुल–यक़ीन की हक़ीक़त अता फ़रमा। ऐ ख़ुदा! उन्हीं नबियों के गरोह में उठा। ऐ ख़ुदा उन्हें अपनी रज़ाए अक्बर तक पहुंचा। सच्चाई की जगह में उनके क़ुदरत वाले रब के क़ुर्ब में। या अल्लाह उनकी पाकीज़ा और मुअज़्ज़ज़ रूहों को हम से राज़ी कर दे। या अल्लाह उन्हें हमारी जानिब से तस्लीम व सलाम पहुंचा। ऐ अल्लाह उनकी बरकात से हमें बरहावर कर और ऐ अल्लाह उनकी फ़ुतूहात हम पर दाइम रख।" और अर्ज़े आख़िर यह है कि जब मैं उनके मुआमलात की सच्चाई का मुताला करूं और उनकी रियाज़ात व इबादात पर नज़र दौड़ाऊं और उनके दरजात व मक़ामात को मालूम करूं तो (अगर मुझ में कोई महरूमी हो) अपनी महरूमी व बेनसीबी पर आगाह हो जाऊं और ख़ुद पसन्दी व ख़ुदिस्तानी की जानिब न दौड़ूं। और हमारी तौफ़ीक़ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ही की मदद पर है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सबअ़ सनाबिल शरीफ
पर चन्द शुबहात और उनके जवाबात

हज़रत मीर सैय्यद अब्दुल–वाहिद बिल–ग्रामी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने अपनी इस किताब सबअ़ सनाबिल के 120 में तहरीर फ़रमाया है कि "जिस रोज़ हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ के यहां मज्लिस सुरूद व सिमा होती है उस रोज़ हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाते हैं और लोगों के नअ़लैन (जूतों) की निगहबानी फ़रमाते हैं।"

और 227 पर तहरीर फ़रमाया है कि "एक शख़्स बैअ़त के इरादे से आया। ख़्वाजा के क़दमों पर अपना सर रखा और अर्ज़ किया कि बैअ़त के लिए हाज़िर हुआ हूं। ख़्वाजा पर कैफ़ियत तारी थी फ़रमाया कि अगर तुम कहो ला इलाहा इल्लल्लाह चिश्ती रसूलुल्लाह तो मैं तुम्हें मुरीद कर लूं। चूंकि वह शख़्स धन का पक्का और सच्चा था उसने फ़ौरन इक़रार कर लिया। ख़्वाजा ने बैअ़त के लिए अपना हाथ दिया और उसे बैअ़त कर लिया।

और 360 पर तहरीर फ़रमाया है कि "शैख़ उलू दैनूरी अह्ले सिमा थे अपने मुर्शिदाने बरहक़ का उर्स करते और उर्स के रोज़ सिमा सुनते। लोगों ने पूछा कि हज़रत शैख़ उर्स के रोज़ सिमा सुनते हैं। उसमें क्या राज़ है? शैख़ ने फ़रमाया कि हमारे पैग़म्बर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अली मुर्तज़ा नीज़ हमारे मशाइख़ ने सिमा सुना है। आज उर्स का रोज़ है।

और 364 पर तहरीर फ़रमाया है कि "सिमा नमाज़ से बेहतर है।" और 113 पर एक हिकायत नक़्ल फ़रमाई जिसमें हज़रत शैख़ सिराज सोख़्ता से मुतअल्लिक़ यह जुमला नक़्ल किया कि उन्होंने हज़रत शाह मदार से फ़रमाया कि "हमने तुम्हारे तमाम मुरीदों को गुमराह किया।" उस पर शाह मदार ने फ़रमाया। "मैंने गिनती के चन्द आदमी मुरीद किए हैं और आज की तारीख़ से किसी को मुरीद भी नहीं

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

करूंगा। रही खिलाफ़त वह मैंने न किसी को दी है और न अब दूंगा।"
इस तहरीर से सिलसिल–ए–आलिया मदारिया का मुन्क़तअ् होना साबित हो रहा है।

लिहाज़ा अब दरयाफ़्त तलब यह उमूर हैं।

1. क्या एक पैग़म्बर जलीलुल–क़द्र को हाज़िरीने महफ़िले सिमा के जूतों की निगरानी करने वाला क़रार देना दुरुस्त है? क्या इस बात में एक पैग़म्बर की तख़्फ़ीफ़े शान नहीं?
2. क्या हज़रत मीर बिलग्रामी अलैहिर्रहमा के नज़्दीक मुरीद होने वाले की आज़माइश के लिए ला इलाहा इल्लल्लाह चिश्ती रसूलुल्लाह का इक़रार कर लेना दुरुस्त है? हज़रत ने इस किताब को अपनी किताब में किस मस्लहत से नक़ल फ़रमाया ?
3. क्या सरकारे मुस्तफ़ा अलैहित्तहीयते वस्सना और मौलाए काइनात रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का सिमा सुनना साबित है?
4. क्या सिमा सुनना नमाज़ से बेहतर है?
5. क्या सिलसिला आलिया मदारिया मुन्क़तअ् है? क्या हज़रत मीर अलैहिर्रहमा की नक़ल पर एतमाद करके सिलसिला मदारिया के मुन्क़तअ् होने का फ़तवा देना दुरुस्त होगा?
6. आस्ताना आलिया बरकातिया मारहरा शरीफ़ से आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाह अलैह को सिलसिल–ए–बदीइया की भी इजाज़त हासिल थी।

   यह सिलसिला बदीईया सिलसिल–ए–मदारिया ही का नाम है या उसके अलावा कोई और सिलसिला है?
7. क्या ऐसी हिकायत क़ाबिले एतमाद हो सकती है जिसमें गुमराह करने की निस्बत एक वली की तरफ़ हो? अगर ऐसी हिकायत क़ाबिले एतमाद नहीं तो हज़रत मीर अलैहिर्रहमा ने कैसे एतमाद फ़रमाया?

https://t.me/Ahlesunnat HindiBooks

Scanned with CamScanner

जवाबात

जवाब : 1. इस किताब के स. 120 पर जो हिकायत दर्ज है उसमें शरअन कोई ख़राबी नहीं और न उसमें हज़रत ख़िज़्र अला नबीयेना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तौहीन है। अव्वलन हमारे उलमा का इसमें इख़्तिलाफ़ है कि हज़रत ख़िज़्र नबी हैं या नहीं? अगर वह नबी नहीं तो इसमें हैरत व इस्तेजाब की कोई बात ही नहीं। इसलिए कि यह उम्मत अगली उम्मतों से अफ़्ज़ल है। इस तक़्दीर इस उम्मत के औलिया अगली उम्मतों के औलिया से अफ़्ज़ल हैं। ख़ुदाए तआला का इरशाद है। कुन्तुम ख़ैरा उम्मतिन उख़रिजत लिन्नास। और इरशाद है।

"हज़रत महबूबे इलाही अलैहिर्रहमते वर्रिज़वान की अज़मते शान सब पर ज़ाहिर है। क्या बईद कि हज़रत महबूबे इलाही हज़रत ख़िज़्र अला नबीयेना व अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से भी अफ़्ज़ल हों। इस तक़्दीर पर क्या एतराज़? यह होता चला आ रहा है कि बड़ों की बारगाह में छोटे ख़िदमत के लिए हाज़िर ही रहते हैं। मुरीदीन के सामान की हिफ़ाज़त असल में पीर की ख़िदमत है।

सानियन : इस क़ौल पर कि हज़रत ख़िज़्र नबी हैं बज़ाहिर एतराज़ समझ में आता है मगर हक़ीक़त में कोई एतराज़ नहीं। इसलिए कि बेअदबी इस सूरत में है कि छोटा बड़े से कोई काम ले और उसे हुक्म करे कि मेरा यह काम करो। लेकिन अगर बेग़ैर फ़रमाइश के इस राहे शफ़्क़त बड़ा छोटे का कोई काम कर दे तो यह बेअदबी नहीं मिसाल के तौर पर एक पीर और उसके मुरीद सफ़र कर रहे हैं। मुरीद अपनी किसी ज़रूरत से कहीं चला गया। पीर उसके सामान की हिफ़ाज़त कर रहा है। मुरीद नमाज़ पढ़ रहा है पीर उसके जूतों की निगहबानी कर रहा है उसमें क्या बेअदबी है? मुरीद सो गया है पीर उसके सामान की जिसमें जूते भी हैं हिफ़ाज़त कर रहा है उसमें क्या ख़राबी है? मुरीद को तो ख़बर भी नहीं।

यही हाल इस महफ़िल में है कि सिमा में मस्रूफ़ दुनिया व माफ़ीहा से बेख़बर लोगों की अज़राहे शफ़्क़त हज़रत ख़िज़्र उनके जूतों की

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...फ़रमा रहे हैं तो क्या एतराज़? जेरे तर्बियत मुरीद की मिसाल ...जैसी है। परवरिश करने वाले मां–बाप बच्चों की क्या–क्या ...अंजाम देते। क्या यह बेअदबी है? इस हिकायत पर एतराज़ व ...व तर्बियत के आदाब से नावाक़ेफ़ी की बिना पर है।

...सालिसन : यह ख़ालिस तसव्वुफ़ की किताब है और जो किताब जिस ...की हो उसमें इस्तेमाल शुदह अल्फ़ाज़ के वही मानी मुराद लेने ज़रूरी ...जो उसकी इस्तिलाह के मुताबिक़ हैं। मन्तेक़ी कलिमा बोलेगा तो ...की अपनी इस्तेलाह के मुताबिक़ इस्म वादात का क़सीम मुराद होगा। और नहवी कलिमा बोलेगा तो उस से इस्म, फ़ेअ्ल और हर्फ़ का मुक़सीम मुराद होगा।

सूफ़ियाए किराम की इस्तेलाह में नअ्लैन से मुराद दुनिया व आख़िरत होती है इमामुल–मुकाशिफ़ीन मुहीयुद्दीन बिन अरबी अलैहिर्रहमा वर्रिज़्वान अपनी तफ़्सीर में आयते करीमा फ़अख़लओ में नअ्लैक में नअ्लैन की तफ़्सीर दुनिया व आख़िरत से की है। इस इस्तिलाह के मुताबिक़ यहां नअ्लैन से मुराद यह है कि हज़रत ख़िज़्र महफ़िले सिमा में मसरूफ़ वारफ़्तगाने शौक़ की दुनिया व आख़िरत की निगहबानी फ़रमा रहे थे। उसकी तफ़्सील बहुत तवील है मगर वाक़ेफ़ाने असरार के नज़्दीक अजला बदहीयात से है।

जवाब 2 : ला इलाहा इल्लल्लाह चिश्ती रसूलुल्लाह वाली हिकायत जो 227 पर है इसमें साफ़ तस्रीह है कि ख़्वाजा पर कैफ़ तारी थी। इससे साफ़ इशारा है कि हज़रत ख़्वाजा इस वक़्त किसी और हालत में थे जिससे ज़ाहिर है कि यह हालते सुकर की हालत थी और सूफ़ियाए किराम का इस बात पर इज्मा है कि हालते सुकर हालते तक्लीफ़ नहीं।

जवाब 3 : हज़रत शैख़ उलू दैनूरी क़ुदिसा सिर्रहू का क़ौल जो 360 पर मज़्कूर है कि हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू और हमारे मशाइख़ ने सिमा सुना है। यह सही है इससे मुराद हम्द व नात वअज़ व पन्द के अश्आर सुनना हैं। कई हदीसों में वारिद है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

सल्लम ने हज़रत हस्सान बिन साबित व अब्दुल्लाह बिन रवाहा और दीगर शोअ्राए सहाब ए–किराम से हम्द व नअ्त के अश्आर सुने।

हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के बारे में तो यहां तक वारिद है कि उनके लिए मस्जिदे नबवी में मिंबर रखते और उन्हें हुक्म फरमाते कि अपने अश्आर सुनाओ। उनके लिए दुआ फरमाते। अल्लाहुम्मा अय्यदहु बेरूहिल–कुदुस। इसी तरह हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के बारे में भी ऐसी बहुत सी रिवायतें हैं कि वह अश्आर सुना करते थे। सिमा के मानी सिर्फ़ यही हैं अश्आर का सुनना उन्होंने यह कब फरमाया है कि मज़ामीर के साथ सिमा सुनते थे। हराम मज़ामीर है।। अश्आर का किसी खुश आवाज़ से सुनना हराम नहीं। लिहाज़ा यह एतराज़ ही ग़लत है। हां अगर यह फरमाया होता कि मज़ामीर के साथ सिमा सुनते थे तो अल्बत्ता एतराज़ की गुंजाइश थी।

जवाब 4 : सिमा के नमाज़ से अफ़ज़ल होने के बारे में 264 पर जो हिकायत दर्ज है वह हज़रत मीर बिल–ग्रामी के असल अल्फ़ाज़ में यूं है। इमाम शम्सुल–अइम्मा गरगानी बा शैख़ुल–मशाइख़ शैख़ मौदूद चिश्ती कुदिसा सिर्रुहू गुफ़्त कि ऐ शैख़!

तरजमा : इमाम शम्सुल–अइम्मा गरगानी ने शैख़ुल–मशाइख़ शैख़ मौदूद चिश्ती कुदिसा सिर्रुहू से कहा ऐ शैख़! मैं फ़िक़्ह की रिवायत नहीं कहता हूं मस्अला शरई से बहस नहीं करता हूं तुम्हारे उसूल के मुताबिक़ पूछता हूं कि आपकी राय क्या है। सिमा बेहतर है या नमाज़? शैख़ ने फरमाया सुलूक की इस्तेलाह के मुताबिक़ पूछते हैं? शम्सुल–अइम्मा ने फ़रमाया कि हां शैख़ ने फरमाया कि आप उलमाए दीन से हैं। बेहतर जानते हैं कि अगर कोई शख़्स दो रकअत नमाज़ शराइत और अरकान के साथ जो शुरू में वारिद हैं पूरे इख़्लास के साथ अदा करे तो अल्लाह तआला की जानिब से क़बूल होगी या नहीं। एहतमाल रखती है अगर चाहे क़बूल करे चाहे रद्द करे। इस पर शम्सुल–अइम्मा ने फरमाया हां शैख़ मौदूद ने फरमाया वह क़बूल दर्द के दर्मियान है और सिमा अल्लाह तआला की जानिब एक कशिश है जो ऐने क़बूल में है और आप आलिम व मुज्तहिद हैं खुद इंसाफ़ करें। फ़कीर के दिल में यह बात सही व दुरुस्त

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...इस वजह से कि नमाज़े मकासिब में है (यानी अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ...का अतीया है) अगरचे बाज़ मवाहिब मकासिब का नतीजा हैं और बाज़ ...व एहसान। लेकिन सुरूद अल्लाह तआला की ऐन इनायत और कबूल ...कि इसमें रद का कोई शाइबा नहीं।

कोई भी दीनदार ज़ी इल्म जो शरीअत व तरीकत के मसाइल व ...हूल से वाकिफ़ हो वह जब यह पूरी हिकायत पढ़ेगा तो उसके ...नज़्दीक उसमें कोई एतराज़ की बात नहीं मिलेगी इसलिए कि यहां ...गुफ़्तगू है वह नमाज़ नफ़्ल के बारे में है। फराइज़ व वाजिबात के बारे ...में नहीं है कि वह महल बहस ही नहीं और जिस सिमा को नमाज़े नफ़्ल ...से बेहतर बताया वह सिमा है जो जज़्बा मिन जज़्बातिल-हक है। आजकल के कव्वाली सुनने के शौकीन बने हुए पीरों का सिमा नहीं।

और वाकिफ़े हाल पर ख़ूब ज़ाहिर है कि जो सिमा जज़्बा मिन जज़्बातिल-हक होगा उसके लिए बन्दा मज्बूर व मुज़्तर होगा। नीज़ जज़्बा हक की मुतावअत ही में बन्दे का नफ़ा है और उससे रुगरदानी करने में शदीद ज़रर और बहुत हलाकत का अन्देशा क़वी बल्कि अक्सर बल्कि मईकन। नीज़ इस सिमा को जो जज़्बा मिन जज़्बातिल-हक है नमाज़े नफ़्ल से बेहतर कहा अफ़ज़ल नहीं कहा। इसलिए कि दोनों में वाज़ेह फ़र्क है। एक चीज़ का किसी शख़्स के लिए बेहतर होना इस माना कर कि उसके लिए नफ़ा बख़्श है और बात है और किसी चीज का किसी चीज से मुतलकन अफ़ज़ल होना और बात है। नमाज अफ़ज़लुल-इबादात है मगर एक तालिबे इल्म के लिए मीज़ान व मनशअब और नहो मीर का ज़बानी याद करना नमाज़े नफ़्ल से ज़्यादा बेहतर व ज़्यादा नफ़ा बख़्श है इस बात से कौन इंकार कर सकता है? इसका यह मतलब कब है कि अगर किसी ने यह कह दिया कि तालिबे इल्म के लिए नमाज़े नफ़्ल से मीज़ान व मुनशइब और नहो मीर का ज़बानी याद करना ज़्यादा बेहतर और ज़्यादा नफ़ा बख़्श है तो उसका यह मतलब कहां हुआ कि उसने मुतलकन नहो और सर्फ की तालीम को नमाज़ से अफ़ज़ल कह दिया।

असरारे सुलूक से वाकिफ़ जानते हैं कि सालेकीन पर कभी ऐसी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

हालत तारी होती है कि वह सिमा के लिए मुज़्तर होता है इसी हालत में सिमा जज़्बा मिन जज़्बातिल–हक़ होता है। यही मवाहिबे इलाहिया में से है इसी को हज़रत शैख़ ने नमाज़े नफ़्ल से बेहतर बताया।

खुलासा यह निकला कि हज़रत शैख़ मौदूद चिश्ती कुद्दिसा सिर्रुहू ने सिमा को मुतलक़न हर नमाज़ से बेहतर नहीं बताया और न हर सिमा को। बल्कि इसी सिमा को नमाज़े नफ़्ल से बेहतर बताया जो जज़्बा मिन जज़्बातिल–हक़ है। मवाहिबे इलाहिया में से है। खुद बन्दे के इख़्तियार में नहीं जिसको बाद में बिल्कुल साफ़ फ़रमा दिया कि नमाज़े अज़ जुमला मकासिब है और सिमा अज़ जुमला मवाहिब।

शैख़ के कलाम में अगरचे नमाज़े नफ़्ल की तख़्सीस नहीं। मुतलक़न है। नगर कलामे मशाइख़ तो कलामे मशाइख़। अवामे मुस्लेमीन के कलाम को भी मुहमल हसन पर महमूल करना लाज़िम है। आलमगीरी में है।

इसलिए इस हिकायत में नमाज़ से नमाज़े नफ़्ल मुराद लेना ज़रूरी है (इसी लिए उर्दू में उसका तरजमा नमाज़े नफ़्ल ही किया गया है) बल्कि अगर बनज़रे दक़ीक़ देखा जाए तो खुद हज़रत शैख़ के कलाम में उस पर क़रीना वाज़ेहा मौजूद है कि नमाज़ से यहां मुराद नवाफ़िल ही हैं फ़राइज़ नहीं इसलिए कि यहां जिस नमाज़ के बारे में फ़रमाया ऐ मवाहिब के मुक़ाबला में मकासिब से क़रार दिया और नमाज़ फ़र्ज़ मवाहिब से है। लिहाज़ा यह गुफ़्तगू फ़राइज़ में है ही नहीं सिर्फ़ नवाफ़िल में है।

जवाब 5 : हज़रत सैय्यदना सनदुल–वासेलीन मीर अब्दुल–वाहिद बिलग्रामी कुद्दिसा सिर्रुहू अस्सामी अजिल्ला औलियाए किराम और अकाबिर उलमाए इज़ाम में से हैं। शरीअत व तरीक़त के जामे मुस्लिमुस्सुबूत बुजुर्ग हैं और उनकी यह किताब सबओ् सनाबिल शरीफ़ मक़बूले अनाम अवाम व ख़्वास है यहां तक कि बारगाहे रिसालत में मक़्बूल हो चुकी है अनवारुल–आरेफ़ीन में मौलाना मीर आज़ाद बिल–ग्रामी कुद्दिसा सिर्रुहू अस्सामी के हवाला से मआसरुल–किराम में यह वाक़या दर्ज है कि एक बार हज़रत मौलाना सैय्यद गुलाम अली आज़ाद दिल्ली हज़रत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

...की किताब घर

शाह कलीमुल्लाह चिश्ती की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत सैय्यदना मीर अब्दुल-वाहिद बिल-ग्रामी का ज़िक्र छिड़ा। हज़रत शाह कलीमुल्लाह ने हज़रत मीर अब्दुल-वाहिद के फ़ज़ाइल व मनाक़िब देर तक बयान किए। उसमें फरमाया कि मैं एक रात मदीना मुनव्वरा में सो रहा था। ख़्वाब में देखा कि मैं और सैय्यद सिबग़तुल्लाह हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मज्लिसे अक़्दस में बारयाब हु... सहाब-ए-किराम व औलियाए इज़ाम की एक जमाअत हाज़िर है उन्हीं में से एक शख़्स हैं कि हुज़ूर उनकी तरफ़ पूरे तौर से मुतवज्जेह हैं और मुस्कुरा-मुस्कुरा कर बातें फरमा रहे हैं। जब मज्लिस बरख़ास्त हुई तो मैंने सैय्यद सिबग़तुल्लाह से पूछा यह कौन बुज़ुर्ग हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उन पर इस दरजा मुतवज्जेह हैं। सैय्यद सिबग़तुल्लाह ने बताया कि यह बुज़ुर्ग मीर अब्दुल-वाहिद बिल-ग्रामी हैं और उनकी इस इज़्ज़त अफ़्ज़ाई का सबब उनकी किताब सबअ़ सनाबिल है जो बारगाहे अक़्दस में मक़्बूल हुई है।

यह वाक़या हज़रत शाह हम्ज़ा कुद्दिसा सिर्रुहू ने कशफ़ुल-अस्तार में भी नक़्ल फरमाया और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी अलैहिर्रमते वर्रिज़्वान ने भी इस वाक़या को अपने रिसाल-ए-मुबारका मक़ालुल-इरफ़ा में नक़्ल फरमाया है और इस वाक़या से सबअ़ सनाबिल शरीफ़ के मोतमद होने और हज़रत मीर अब्दुल-वाहिद बिलग्रामी के मुस्तनद होने पर इस्तिदलाल फरमाया है और अहकामे शरीअत हिस्सा दोम 193 में तहरीर फरमाया है कि सबअ़े सनाबिल शरीफ बारगाहे रिसालत में पेश हो कर मक़्बूल हो चुकी है और सबअ़े सनाबिल शरीफ वह किताब है जो बइत्तिफ़ाक़ उलमाए अहले आल इंडिया सुन्नी जमीअतुल-उलमा के दस्तूरे असासी में सुन्नियत के मेअ्यार में दाख़िल हो गई।

गर्ज़ेकि यह किताब और उसके मुसन्निफ दोनों बइत्तिफ़ाक़ उलमाए अहले सुन्नत मुस्तनद व मोतमद हैं इसमें साफ तस्रीह है कि जब हज़रत सिराजुद्दीन सोख़्ता ने फरमाया मैंने तुम्हारे तमाम मुरीदों को गुमराह कर दिया तो हज़रत शाह मदार ने फरमाया।

तरजमा : (शाह मदार ने फरमाया) मैंने गिनती के चन्द आदमी मुरीद

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

दिए हैं और आज की तारीख से किसी को मुरीद भी नहीं करूंगा। रही खिलाफत वह मैंने किसी को दी है और न अब दूंगा और जब हज़रत शाह मदार की वफात का वक्त आया तो आपने फरासते बातिनी से जाना कि मेरे मुरीद एक आरिफ के गुमराह किए हुए हैं। उन से यकीनन बदियानती ज़ाहिर होगी लिहाज़ा आपने अपने दस्ते मुबारक से बहुत ज़्यादा खुतूत लिखे और चारों तरफ़ उनको रवाना फरमा दिया कि हमने किसी को खिलाफत नहीं बख़्शी है।

हज़रत शाह मदार साहब के दस्तख़त का एक कागज़ हज़रत मख़्दूम शैख़ सअ्द के पास पहुंचा जिसमें हज़रत शाह मदार ने तहरीर फरमाया था कि हमने किसी को ख़िलाफ़त नहीं बख़्शी है। इसी बिना पर मख़्दून शैख़ सअ्द हज़रत शाह मदार साहब के मुरीदों को इस बैअत से बाज़ रखते। दयानत के मद्दे नज़र न कि उनकी एहानत की ख़ातिर और मख़्दूम शैख़ सअ्द के ख़ुलफ़ा भी लोगों को इस बैअत से लौटाया करते थे। चुनांचे मख़्दूम शैख़ कुद्दिसा सिर्रुहू को मैंने बचश्मे ख़ुद देखा।

इस सिलसिले में मुझ फ़क़ीर को जो कुछ सही ख़बरों से मालूम हुआ वही लिखा है और हमारे पास इस वाक़्या की सेहत और सच्चाई पर एक क़वी मुसद्दिक़ और रौशन दलील भी है और वह यह है कि शाह मदार के मुरीदों में से हज़ारों मुरीदों ने बेअ़त तोड़ दी और उस से बाज़ रहे तो अगर शाह मदार साहब उन मुरीदों की मुराजेअ़त पर रज़ामन्द न होते और अपने मुरीदों का दूसरे बुज़ुर्गों से पैवन्द जाइज़ न रखते तो यक़ीनन उन मुरीदों को उनकी जानिब से कोई नुक़्सान व ख़लल और बदला या सज़ा ज़रूर पहुंचती और उन बुज़ुर्गों पर कुछ एताब या गुस्सा और तंबीह ज़रूर होती और जब आपने उन बुज़ुर्गों पर कुछ एताब और गुस्सा न किया और न उन मुरीदों को कोई नुक़्सान व ख़लल पहुंचा तो मालूम हुआ कि आपने अपने सिलसिला को खुद ही दरहम बरहम कर दिया। (113, 114)

इस इबारत से साफ़ तौर पर ज़ाहिर हो गया कि हज़रत शाह मदार ने खुद अपना सिलसिला ख़त्म कर दिया जबकि हज़रत मीर अब्दुल–वाहिद

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

बिलग्रामी यह तहरीर फरमाते हैं कि जो कुछ सही ख़बर से तहक़ीक़ के साथ मुझे मालूम हुआ है वही लिखा है और वह खुद अपना चश्म दीद वाक़्या बयान करते हैं कि उनके मआसिर मशाइख़ शाह मदार के मुरीदों की बैअत तोड़वा कर मुरीद कर लिया करते थे। यहां तक तहरीर फरमाया कि हज़ारों हज़ार मुरीदों ने हज़रत शाह मदार की बैअत से बरगश्ता हो कर दूसरे मशाइख़ से मुरीद हुए फिर उस पर बतरीक़ बातनी यह दलील क़ायम करते हैं कि हज़रत शाह मदार जैसे जलाली बुज़ुर्ग से यह मुस्तबअद है कि उनके मुरीदीन उनका सिलसिला छोड़ कर दूसरे मशाइख़ से मुरीद हों और हज़रत शाह और मदार कुछ न करें।

अगर उन्होंने खुद अपने सिलसिले को ख़त्म न किया होता तो ज़रूर–ज़रूर उन मुरीदों को नीज़ उन मशाइख़ को जिन्होंने उनके मुरीदों को मुरीद किया एताब फरमाते और उनकी सरज़निश करते। उन्होंने हज़ारों हज़ार मुरीदों को दूसरे मशाइख़ से मुरीद होते हुए बर्दाश्त कर लिया यह इस बात पर दलील है कि वह उस पर राज़ी हैं और उन्होंने ख़ुद अपने सिलसिला को ख़त्म कर दिया वरना ऐसे जलाली बुज़ुर्ग जिन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुमानेअत के बावजूद हज़रत सिराजुद्दीन सोख़्ता को नहीं बख़्शा और उनको जलाया (इसी लिए उनको सोख़्ता कहते हैं) तो वह उन मुरीदों और मशाइख़ को कैसे बख़्श देते जो उन के सिलसिला को ख़त्म कर रहे थे। खुलास–ए–कलाम यह हुआ कि इस हिकायत पर एतमाद करना दुरुस्त है और उसकी रौशनी में यह कहना भी दुरुस्त है कि हज़रत शाह मदार का सिलसिला मुनक़ता है।

जवाब 6 : सिलसिला बदईया सिलसिल–ए–मदारिया ही का नाम है। रही मारहरा शरीफ़ से उसकी इजाज़त तो उसके मुतअल्लिक़ सैय्यदुल–उलमा हज़रत सैय्यद आले मुस्तफ़ा साहब क़िबला और हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म हिन्द मुस्तफ़ा रज़ा ख़ां साहब क़िबला अलैहिर्रहमते वर्रिज़्वान से दरयाफ़्त किया गया था तो उन हज़रात ने जवाब दिया कि इस सिलसिला में हम किसी को बैअत नहीं करते। रह गई इजाज़त तो वह बुज़ुर्गों से चली आ रही है उसको हम लोग बाक़ी रखे हुए हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner

जवाब 7 : हज़रत मीर सैय्यद अब्दुल–वाहिद बिलग्रामी ने खुद इस गुमराही की तफ़सील इस तरह बयान फ़रमाई है।

तरजमा : शाह मदार साहब के वह चन्द मुरीद बेग़ैर रुख़सत, बिला इजाज़त और बेग़ैर ख़िलाफ़त के मुरीद करते थे और सिलसिला बढ़ाते थे और अपना खलीफा बनाते थे। यही उनकी गुमराही है और यह सब शाह मदार की वफ़ात के बाद हुआ। आपकी हयाते ज़ाहिरी में मुरीद कुछ न कर सके। (113)

और हज़रत मीर सैय्यद अब्दुल–वाहिद बिलग्रामी कुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फ़रमाते हैं –

तरजमा : गुज़िश्ता औलियाए किराम जो कि ग़ौस और क़ुतुब थे आजकल उनकी औलाद दर शय सनद के बेग़ैर और बिला रुख़सत व इजाज़त महज़ फ़रज़न्दी की निस्बत की बुनियाद पर मख़्लूक़ को मुरीद करते हैं और मख़्लूक़ यह समझती है कि हम तो फलां क़ुतुब और ग़ौस की सरकार से ताल्लुक़ रखते हैं और हम तो उनके नाइब हैं हालांकि यह सरासर गुमराही है। (112)

इन सब इबारतों का हासिल यह निकला कि यहां गुमराही से मुराद यह है कि उसूल इरशाद व बैअत के ख़िलाफ़ बिला इजाज़त और बिला इत्तिसाल सिलसिला पीरी मुरीदी करते हैं। यहां गुमराही से मुराद फ़िक़्ही मानी नहीं बल्कि मुस्तलेहा सूफ़िया है। फिर यह कि बुज़ुर्गाने दीन के यहां इस क़िस्म के वाक़ेआत बहुत हैं। खुद इसी वाक़या में कि सिर्फ़ इस बिना पर कि अब्दुल–क़ादिर रोहेला ने बिला इजाज़त हज़रत शाह मदार की ज़ियारत कर ली थी तो उसके क़त्ल करने को शाह मदार ने ठान लिया और जब वह अपने मुर्शिद की पनाह में आ गया तो मुर्शिद ही को जला डाला यहां तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुमानेअत पर भी वह नहीं माने– और हज़रत मख़्दूम साबिर कलियरी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने हज़रत जमाल हांसवी के सिलसिला को मुन्क़ता कर दिया। जो तावील इस क़िस्म के और वाक़ेआत की है वही तावील उसकी भी होगी।

★★★

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned with CamScanner